राज भारती

लाडली दुल्हन

comicsmylife.blogspot.in

काले जादू के माहिर तांत्रिकों व प्रेत-लोक के

खलनायको के बीच खूनी संघर्ष!

चाहत की आग मे सुलगते असहाय किरदारो का हाहकार! और प्रेतलोक के मयावयी संसार का रोमांच है इस सनसनीखेज, प्रेत-गाथा मे।

comicsmylife.blogspot.in

उपन्यास : लंगड़ा प्रेत

उपन्यासकार : राजभारती

० : राजभारती

प्रकाशक : रवि पॉकेट बुक्स,

33,हरी नगर,मेरठ-250002

फोन : (0121)2531011

फैक्स न. : (0121)2521067

लेजर टाइपसैटिंग : यूनिक कम्प्यूटर सेंटर,मेरठ।

मुद्रक : न्यू रिषम आफरसैट,मेरठ।

लंगड़ा प्रेत: हॉरर उपन्यास : राजभारती

प्रसतुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाए काल्पनिक है। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कतई कोई सम्बन्ध नहीं है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। यद्यपि प्रूफ-संशोधन का कार्य अत्यन्त सावधानीपूर्वक किय गया है, तथापि मानवीय भूलवश तथ्य सम्बन्धी –त्रुटी रह सकती है जिसके लिए लेखक, प्रकाशक तथा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है। किसी भी कानूनी विवाद का निपटरा न्याय क्षेत्र मेरठ में होगा।

रवि पॉकेट बुक्स

comicsmylife.blogspot.in

दहशत के असहाय से भरपूर एक सनसनीखेज प्रेतगाथा

प्रिय पाठको,

'हॉरर श्रृखंला' में 'स्वाहा-।' के बाद रवि पॉकेट बुक्स से ही मेरी नवीनतश् पेशकश लंगड़ा प्रेत' आपके हाथों में है और मैं खुश हूं कि मेरे इस नवीनतश् प्रयास को भी रोमाचं के शैद्दाई पाठकों ने सराहा है। 'स्वाहा-।" मेरी आशाओं से भी अधिक पसन्द किया गया। इसका प्रमाण मुझे अब तक प्राप्त हो रहे प्रशंसा पत्र हैं । मैं उन पाठकों का आभारी है जिन्होंने 'प्रेत-कथाएं' से सम्बन्धित अपने अनुभवों क इस 'सीरीज' को और अधिक रोमाचंक बनाने को अपने सुझावों से मुझे नराज है। मेरा प्रयत्न रहेगा कि अब ऐसे कथानकों को अपना लेखन बिषय बनाने के बाद में ऐसी ही रचनाओं से आपको रोमांच की इन अनूठी घाटियों की सैर कराता रहेगा। 'हॉरर' उपन्यासों की श्रृखंला में मेरा एक और उपन्यास 'पिरागढी का प्रेत' भी प्रकाशित हो चुका है और सम्भवत: इस उपन्यास से पूर्व आप तक पहुच चुका होगा।

'लगड़ा प्रेत' उसी सनसनीखेज भूतहा कहानी का क्लाइमेक्स है जो आप 'स्वाहा-।' में पढ़ चुके हैं। लगंड़े प्रेत की चाहत, आक्रोश क प्रतिशोध की यह कथा आपको एकन बार फिर प्रेतलोक की अविश्वसनीय घटनाओं के भंवरजाल में ले जाएगी। चाहत की आग में सुलगते असहाय किरदारों का हाहाकार क प्रेतलोक के मायावी ससार में अब इस बार मी सब कुछ नया क रोमाचंक ही पाओगे

'मौत मुबारकं' के बाद 'समीर साहनी' के नए कारनामे को पढ़ने को लालायित 'समीर साहनी' को शौद्दार्ड़ पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि के थोड़ा इन्तजार और करें और मौत के सौदागरों के खिलाफ 'समीर साहनी' का आगामी 'ड्रग माफ माफिया' के नाम से शीघ्र ही आपके हाथों में होगा।

'लगंड़ा प्रेत' के बाद रवि पॉकेट बुक्स से ही प्रकाशित होने वाले मेरे 'हॉरर थ्रिलर' का नाम है 'अनहोनी'।

शेष फिर!

पता-
बी-198 वेस्ट पटेल नगर,
नई दिली-110008

आप ही का
राजभारती

comicsmylife.blogspot.in

लंगरा प्रेत

वो लम्बी तगड़ी देवकाय औरत तहखाने के दरवाजे तक रेखा के साथ आई।

सामने दो हथियारवंद निगरान मौजूद थे-वो उनको देखकर वापिस लौट गई। लंगड़ा प्रेत राकल आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता रहा। वे दोनों दरबान आगे-आगे चलने लगे।

प्रेतलोक की हर बात ही निराली थी।

रेखा जैसे किसी प्राचीन युग कंs किसी जालिम निर्दयी राजा के राज्य में पहुंची हुई थी। उन दो सशस्त्र निगराना के पीछे-पीछे जब राकल इस मायावी भवन के बड़े दरवाजे के सामने पहुंचा तो एक दरबान ने चींखकर कहा-

"दरवाजा खोल-राकल आया है। सरदार कोलाना के कारिन्दे से मिलना चाहता है ।"

यह ऐलान सुनकर छ: आदमी उस विशाल दरवाजे कें दाहिने ओर और छ: आदमी बायें ओर की कोठड़ी से बरामद हुए-और इन बारह आदमियों ने मिलकर उस वड़े और भारी दरवाजे को दरवाजा खुला तो सामने घोड़े पर सवार इस मायावी दुनिय के सरदार कोलाना का कारिन्दा नजर आया। वह सांवली रंगत का एक अजीब-से चेहरे का व्यक्ति था। राकल को देख वह फौरन घोड़े से नीचे उतर आया व गर्वित चाल चलता हुआ राकल के निकट पहुचा।

"हां बोल सरदार कोलाना के कारिन्दे कैसे आया?"

"क्या तू जानता है कि तुझसे कितनी बड़ी गलती हुई है?" सरदार कालाना का हरकारा बोला।

"तू सरदार का कारिन्दा है, कारिन्दा ही रह-सरदार न बन। जो पैगाम लाया है वह कह, बेकार बातें न कर।"

"काला चिराग कहां है?" हरकारे ने पूछा।

"कौन काला चिराग? यह नाम मेरे लिए नया है।" राकल अनजान बन गया।

"राकल-फिर बकाल भी तेरे लिये नया नाम होगा?" हरकारा उसे घूरते हुए बोला।

"बकाल मेरी बहन है।" राकल कुछ परेशान दिखने लगा।

"क्या तू जानता है कि इस वक्त बकाल कहां है?"

"क्या मतलब?" उसकी परेशानी बढ़ गई।

"मेरी बात का जवाब दे ताकि मैं तुझे सरदार का पैगाम सुना सकूं।"

"यही है। मेरे पास सुनहरे खण्डहर में।"

"और काला चिराग कहां है?"

"मैंने कहा ना कि मैं किसी काले चिराग को नहीं जानता।" "कहीं ऐसा न हो कि तुझे अपनी बहन बकाल की तलाश में सरदार कोलाना के पास जाना पड़े और फिरसरदार ऐसा ही जवाब देगा-कौन वकाल यह नाम तो मेरे लिए नया है।"

"तू कहना क्या चाहता है?" राकल ने कदरे गुस्से से कहा।

"जो मैं कहना चाहता हूं-वह तू अच्छी तरह समझ गया है, राकल! तुझे अगर अपनी बहन बकाल प्यारी हो तो काले चिराग को सरहद पर पहुंचा देना। तुझे डेढ़ दिन दिया जाता है। वक्त गुजरने के बाद तू यह बात अच्छी तरह जानता है कि क्या होगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"क्या होगा?" राकल यह बात अच्छी तरह जानता था, फिर भी सवाल किया उसने।

"न तू रहेगा और ना बकाल।"

"मैं इसे एलाने-जंग समझूं।"

"बिल्कुल-इसमें कोई शक नहीं।" कारिन्दे ने पुष्टि कर दी। "लेकिन यह एलाने-जंग उस वक्तही तो मुकम्मल होगा-जब तू सरदार कोलाना को जाकर बताएगा कि तूने राकल को पैगाम दे दिया है।" राकल बोला।

" तू ठीक कहता है।"

"और अगर पैगाम देने वाला वापिस ही न जा सके तब?" कारिन्दा उसका आशय समझ तेजी से बोला-"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। तू इस तरह की हिमाकत नहीं कर सकता। तू अच्छी तरह जानता है कि सरदार कोलाना कितना ताकतवर हुक्मरान है? फिर तुझे यह भी मालूम होगा कि तेरी बहन बकाल उसके कब्जे में है। वो ईट-से-ईट बजा देगा।"

राकल दुविधा का शिकार नजर आने लगा। अपनी बहन बकाल के बारे में उसे कुछ भी तो मालूम नहीं था कि वह कहां है और अगर वह वाकई सरदार के कब्जे में थी तो फिर इस कारिन्दे का किस्सा निपटाना-हिमाकत ही थी! बकाल की जिन्दगी खतरे में पड़ जानी थी। राकल को अपनी बहन से बहुत प्यार था और वह उसे किसी कीमत पर भी खोना नहीं चाहता था।

राकल के लिए जरूरी था कि वह कोई कदम उठाने से पहले वह अपनी बहन की गिरफ्तारी का सबूत मांगे। सबूत मिलने पर इस कारिन्दे को जाने दे और उसकी दी हुई मौहलत में ही सरदार के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाने की सोचे।

वह कारिन्दे सें बोला- "सरदार कोलाना के हरकारे! क्या सरदार ने बकाल की गिरफ्तारी का कोई सबूत भी भेजा है?"

"हां, भेजा है ।" हरकारा मुस्कराते हुए बोला और उसनें अपने लिबास में हाथ डालकर कोई चीज निकाली और राकल की तरफ उछाल दी।

रकाल के साथ आने वाले दरबानों में से एक ने इस चीज को लपक लिया और फिर बड़े सम्मान के साथ राकल को पेश किया। राकल ने इस चीज को उलट-पुलट कर देखा। यह बकाल की अंगूठी थी। यह अंगूठी राकल ने ही उमे दी थी। इस अंगूठी में नग की जगह उल्लू की आंख की पुतली लगी थी। यह आंख की किसी हीरे की मानिन्द ही चमक रही और इस मायालोक यह अंगूठी हर भाई, बहन के जवान होने पर उसे पहचानता था। किसी लड़की के हाथ में यह अंगूठी देखकर ही कोई लड़का, लड़की की तरफ आकर्षित होता था और बाद में अपना रिश्ता भिजवाता था।

इस अंगूठी को देखकर राकल को यकीन आ गया कि उसकी बहन वाकई सरदार कोलाना के कब्जे में है, क्योंकि इस इस अंगूठी को एक बार पहन लेने के बाद कोई भी लड़की शादी से नहीं उतारती थी। जाहिर था यह अंगूठी बकाल की उंगली से जबरदस्ती ही उतारी गई होगी।

राकल के तेवर बदल गए, पर वह अपना रोष दबाते हुए बोला- "सरदार कोलाना से कहना कि उसने मेरी बहन पर कब्जा करके अच्छा नहीं किया।"

"और राकल, क्या तूने काला चिराग को गिरफ्तार करके अच्छा किया है?" हरकारे ने आंखें दिखाई।

"वह मुजरिम है।"

"चल, तूने उसके अपने पास होने का इकरार तो किया। थोड़ी देर पहले तक तो तू उसके नाम से भी वाकिफ न था। वैसे, क्या मैं पूछ सकता हूं कि उसका क्या है?" हरकारे ने पूछा।

"वो खामखाह बकाल पीछे लगा हुआ है।"

comicsmylife.blogspot.in

"वह बकाल से मुहब्बत करता है-और मुहब्बत करना कोई जुर्म नहीं है।"

"उसकी यह जुर्रत पसन्द नहीं।"

"खैर, यह मसला मेरा है ना तेरा है। यह मसला काले चिराग और बकाल के बीच का है। मैंने तुझे सरदार का पैगाम दे दिया। उसकी दी हुई निशानी भी तुझे दिखा दी। अब तू बता क्या कहता है?"

"मैं कल सूरज निकलते ही काले चिराग को सरहद पर पहुंचा दूंगा।"

"ठीक है। बकाल की निशानी मुझे लौटा दे।" यह कहते हुए हरकारे ने अपना हाथ बढा दिया। राकल ने वह अंगूठी उसकी तरफ उछाल दी-जिसे उसने बड़ी दक्षता के साथ लपक ली।

फिर वह तेजी से वापिस मुड़ा-दौड़कर अपने घोड़े के निकट पहुंचा-उछलकर सवार हुआ- ऐड़ लगाई और यूं पलक झपकते ही आंखों से ओझल हो गया।

राकल ने एक ठण्डा और गहरा सांस लिया।

उसका दिमाग चकरा रहा था। वह सोचने लगा-यह सब क्या हो गया? सरदार ने कैसे जान लिया कि काला चिराग उसके कब्जे में है, फिर उसने बकाल को कहां से और कैसे अगवा कर लिया? लगता है, उसने बकाल को रेगिस्तान से अगवा करवाया है। वह जरूर इन्द्रजीत से मिलने गई होगी। इस पागल के इश्क ने तो उसे कहीं का नहीं छोड़ा। अब उसे काले चिराग को छोड़ना ही होगा, वरना सरदार कोलाना ऐसा सिरफिरा शख्स है कि वो सुनहरे खण्डहर पर चढ़ाई भी कर सकता है।

हरकारे के जाने के बाद उन बारह आदमियों ने यंत्रवत् ही प्राचीर के भारी फाटक को बन्द कर दिया। दरवाजे की आवाज होने पर राकल चौंका। वह वापिस मुद्रा और सीढ़ियां चढ़ने लगा। उसके सशस्त्र दरबान उसके आगे थे।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

फिर एक बार वही सपना-वही ख्वाब देखा था रेखा ने। उस दिन जब हवाएं चींख रही थीं। मूसलाधार बारिश हो रही थीं। अन्धेरी रात में दूर तक फैला हुआ रेगिस्तान। रेगिस्तान में भटकती हुई चली जा रही थी वह कि एक झोपड़ी उसके सामने आ जाती है झोपड़ी की छत पर बैठा हुआ था एक उल्लू और झोंपड़ी के दरवाजे पर बैठा था एक सांप।

जाने कब से वह देखती आ रही थी यह सपना और न जाने अब तक कितनी बार देख चुकी थी। बार-बार लगातार एक ही सपना और आखिर में उस झोंपड़ी से आती थी एक आवाज-दर्द भरी आवाज।

"डरी मत बहन-आओ अन्दर आ जाओ।"

सपने के बारे में उसने न तो कभी गंगा मौसी को बताया था और न ही नौकरानी माया को।

और उस रात की जब सबह हुई तो उसे उठाते नौकरानी माया ने कहा- "आपके एक दादा थे ना। दादा हरीओम चल बसे। सब लोग वहीं जाने की तैयारी कर रहे हैं।"

रेखा भी तैयार हुई। तैयार होकर नीचे गाड़ी में आकर बैठी। अमर ड्राइविंग सीट पर बैठा था। वह मौसी के साथ बैठ गई। मौसी ने बताया-'दादा ध्यान लगाये बैठें थे। उसी स्थिति में प्रभु से जा मिले। बस, एक साल की कसर रह गई ' एक साल और जी लेते तो सौ के हो जाते।

मौसी से ही रेखा को पता चलता है कि दादा हरीओम बड़े ही पहुंचे हुए व्यक्ति थे। सपनों का बड़ा सटीक अर्थ बताते थे।" और यह सुनकर चौंक ही तो गई रेखा। सोचा- "हाय दादा जी! आपने जाने में इतनी जल्दी क्यों की?"

दादा की अन्त्येष्टि के दाद अमर तो वापस लौट गया। वह और गंगा मौसी वहीं रह गयीं। तब दादा हरीओम के सात बेटों में से बड़े बेटे घनश्याम ने रेखा को देखते हुए गंगा मौसी से कहा-"इस लड़की की एक अमानत है मेरे पास।"

और उसने एक लिफाफा रेखा की ओर बढ़ा दिया और हिदायत दी कि उसे सबके सामने न खोले। अपने घर जाकर एकांत में खोले। उस लिफाफे में उसका एक ख्वाब बन्द है,यह भी बताया और यह भी कि उसका असली नाम रेखा नहीं-शीना है।

गंगा मौसी व रेखा-दोनों को ही जबरदस्त आस्वर्य हुआ, क्योंकि रेखा तो अपने पूरे जीवन में सिर्फ एक ही बार मिली थी-दादा हर्राओम से।

घर पहुचकर रेखा अपने बेडरूम में घुसी। फिर बाथरूम से नहा-धोकर बाहर निकली। फिर उसने बैग से लिफाफा निकाला ही था कि सहसा दरवाजे पर दस्तक हुई। फिर दरवाजा बड़े जोर से पीटा जा रहा था। साथ ही नौकरानी माया चींखे जा रही थी- "जल्दी दरवाजा खोलें, बीबी।"

दरवाजा खोलते ही विधुत करन्ट का-सा झटका लगा था रेखा को। माया के हाथ में एक पिंजरा था और उस पिंजरे में एक उल्लू बन्द था। माया ने बताया कि अभी-अभी एक आदमी आया था, वही दे गया है। बोला-शीना को दे दें। मैंने पूछा-कौन शीना तो बोला-अपनी रेखा बीबी को दे दें। बड़ा अजीब-सा आदमी था। काले कपड़े पहने हुए। लम्बे-लम्बे बाल। सांवले रंग का, लम्बा चेहरा, कानों में बालियां, एक हाथ में ताम्बे का मोटा-सा कड़ा और एक अंगुली में चांदी की पत्थर लगी अंगूठी।

माया ने पिंजरा वहीं रख दिया था।

रेखा ने माया से कहा कि वह पिंज़रे को नीचे ले चले। माया पिंजरे को उठाने लगी तो उल्लू ने उस पर झपटते हुए एक भयानक चींख मारी। माया ने घबराकर पिंजरा छोड़ दिया और वह तेजी से सीढ़ियां उतरती चली गई।

माया के जाने के बाद रेखा ने उल्लू को देखा-जो जर्द आंखों से उसे देख रहा था। फिर वह पिंजरे को वहीं छोड़ उसने अपने कमरे का दरवाजा बन्द किया और बेड पर आ बैठी। फिर बैग से दादा हरीओम द्वारा उसके लिए छोड़ा गया लिफाफा-उसने खोला।

लिफाफे में जो कागज था-उस पर कुछ लिखा हुआ नहीं था। उस पर पेन्सिल से एक स्केच बना हुआ था। वही-जो कई रातों से वह खातों में देख रही थी।

comicsmylife.blogspot.in

एक गोल झोपड़ी। झोंपड़ी की छत पर बैठा उल्लू। दरवाजे पर कुण्डली मारे बैठा सांप। उस स्केच को देखते ही उसके दिमाग में वह आवाज भी गूंजने लगी थी- "डरो मत! अन्दर आ जाओ।" रेखा ने कागज पलटकर देखा तो उस पर एक और रेखाचित्र दिखाई दिया। वह चित्र दरवाजे का था-बन्द दरवाजा था और दरवाजे के हैण्डल पर एक ताबीज लटका हुआ था।

वह दरवाजा उसी कोठी के नीचे वाले एक कमरे का था जो बरसों से बन्द था। फिर रेखा गंगा मौसी को अपने रोज के स्त्राव के बारे में बताती है और उन्हें दादा हरीओम द्वारा छोड़े गये लिफाफे के बारे में बताकर उन्हें उसमें से निकले कागज पर बनी तस्वीरें दिखाती है। पहले झोपड़ी, उस पर बैठे उल्लू और बाहर कुण्डली मारे बैठे सांप की तस्वीर। फिर पलटकर उसके पीछे बने दरवाजे व उसके हैण्डिल पर लटकते तावीज की तस्वीर।

और उस दूसरी तस्वीर के देखते ही गंगा मौसी का चेहरा पीला पड़ गया। मुंह से निकला- 'नहीं।'

मौसी उस दरवाजे को पहचान गई थी।

"मौसी, मैं नीचे वाला वह हमेशा बन्द रहने वाला कमरा-अन्दर से देखना चाहती हूं।" रेखा ने कहा।

"हाय नहीं रेखा, ऐसी बात सोचना भी नहीं।"

रेखा के पूछने पर मौसी बताती है-उन्हें उस कमरे को खोलने से मना किया गया है। जिस शख्स से उन्होंने वह मकान खरीदा था-उसी ने।

और फिर गंगा मौसी ने रेखा को उस कमरे के निर्माण व उसके बाद घटी घटनाओं की कहानी सुनाई।

(उस अजीबो-गरीब कहानी के बारे में जानने के लिए पढ़ें-रवि पॉकेट बुक्स में राज भारती का पूर्व प्रकाशित हॉरर उपन्यास-स्वाहा:)

और गंगा मौसी के मुंह से उस मकान के निर्माण व बेचे जाने की सारी कहानी सुनकर रेखा ने यह जाना कि टोने-टोटकों के माहिर रोशन अली की सलाह पर जब यह मकान अमर ने खरीदा था, तब रोशन अली ने एक ही बात कही थी-उस बंगले में उन्हें न तो कोई नुकसान पहुंचेगा और न ही कोई कष्ट। हां, नीचे वाले उस कमरे को हमेशा बन्द रखना होगा और हमेशा बन्द रहने वाले उस कमरे की हकीकत नौकरानी माया को भी पता न थी। उसे भी बस, इतना ही पता था कि उसमें काल्थबाड़ भरा पड़ा है।

गंगा मौसी से उस बंगले व हमेशा बन्द रहने वाले काले कमरे की कहानी सुनकर रेखा दहल उठी।

फिर अचानक ही माया घबराई हुई वहां आई और उसने बताया-वह मर गया।

रेखा और मौसी माया के पीछे-पीछे सीढ़ियों तक पहुंचीं और यह देख हक्की-बक्की रह गई कि वहां पिंजरे में खून-ही-खून पड़ा था। उल्लू का एक पंख खुला था। गर्दन अजीब तरह से मुड़ी हुई थी और पेट में छेद था। ऐसा लगता था-जैसे किसी ने किसी तेज धार से उसका पेट फाड़ दिया हो। मगर एक जरा-से पक्षी में बकरे जैसा कहां से आया भला?

और वहां दिख रहे थे-कंदमों के निशान-जों उल्लू के खून से होकर उसी हमेशा बन्द रहने वाले कमरे तक चले गये थे जिसके हैण्डिल पर काला ताबीज लटका हुआ था।

अमर घर लौटा तो रेखा ने उसे सारी बात बताई। यह सब सुनकर उसने माया को तुरन्त हुक्म दिया- "माया! सारे काम छोड़कर यह खून साफ कर दो।"

"साहव जी, अगर आप पिंजरे से उल्लू को निकालकर बाहर फेंक दें तो मे पिंजरा भी धो दूं।" माया बोली।

अमर ने पिंजरा खोला। हाथ डालकर उल्लू का फैला हुआ पंख पकड़कर उल्लू को बाहर खींच लिया और सोचा कि उस मरे हुए उल्लू को बराबर वाले खाली प्लॉट की तरफ उछाल देगा। मगर तभी एक जबरदस्त फड़फड़ाहट के साथ उल्लू का पंख अमर के हाथ से निकल गया। उल्लू उसके हाथ से निकलकर छत की ओर उड़ गया।

comicsmylife.blogspot.in

और यह भयानक घटनाक्रम यहीं खत्म न हुआ था। दूसरे दिन की शाम जब रेखा अपनी एक सखी रजनी से मिलने गई थी। अमर अपने आफिस में था। घर में गंगा मौसी व माया के अलावा कोई न था।

तभी घर की कॉलबेल बजी थी। माया ने दरवाजा खोला तो पलभर के लिए उसके सांसें रुक गई। सामने बरामदे में वही रहस्यमय व्यक्ति खड़ा था जो उसे उल्लू का पिंजरा दे गया था। वह बड़े गुस्से में था। माया को देखते ही वह बोला- "हमारा परिन्दा वापस कर दो।"

माया ने बताया कि वह तो उड़ गया, तो वह बोला- "शीना बीवी उर्फ रेखा बीबी को बुलाओ।"

माया ने बताया कि रेखा घर पर नहीं है, तो वह बोला-"खाली-पिंजरा ही वापस कर दो।" माया ने जल्दी से पिंजरा लाकर उसे दे दिया और उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम 'काला चिराग' बताया और कहा कि कोई रेगिस्तान में उसका इन्तजार कर रहा है। वह यहां वक्त बरवाद न करे।

फिर रेखा घर लौटी तो माया ने उसे सब कुछ बताया। और यह सब बातें अमर को भी बताई गई। फिर उस रात जब अचानक ही रेखा की आंख खुली तो रेखा के कदम अनायास ही नीचे वाले उस कमरे की तरफ बढ़ गये जो हमेशा बन्द रहता था। कमाल की वात थी उस कमरे का दरवाजा रेखा को लॉक्ड न मिला, परन्तु उस रात रेखा उस कमरे में जाने की हिम्मत न कर सकी। सुबह देर से उठी तो माया ने बताया, उस रोज दूध फट गया था। मौसी ने कहा था-लाल मिर्च डालकर दूध को उबाल सिंक में बहा दे, परन्तु माया ने दूध यूं ही फेक दिया था।

गंगा मौसी के कमरे में पहुंचने पर माया ने पाया-मौसी फोन पर बातें कर रही हैं। मौसी वताती है-बलदेव अंकल का।

रेखा भी बलदेव अंकल से बात करती है तो वह कहते हैं-जल्दी ही वह उसे लेने आयेंगे। बलदेव अंकल ने शादी नहीं की थी। वह अविवाहित थे। हालांकि अब वह पचास वर्ष के थे। गंगा मौसी उससे दो-चार वर्ष छोटी थीं। अपने जीजा जी की के बाद गंगा मौसी स्थाई रूप से अपनी बहन के साथ आकर रहने लगी थी। अमर उनकी बहन का ही बेटा था। फिर बहन भी चली बसी तो गंगा मौसी व अमर अकेले रह गये। कभी गंगा मौसी व बलदेव अंकल में जबरदस्त इश्क था, किन्तु खानदानी मतभेदों के कारण उनकी शादी न हो सकी। रेखा की बहुत जिद पर गंगा मौसी ने पहली बार रेखा को ही अपनी प्रेम कहानी बताई थी, परन्तु रेखा स्वयं अपने दिल की बात दिल में ही रखती थी।

आज बलदेव अंकल के फोन ने रेखा को फिर उलझा दिया था।

रेखा नहीं जानती थी कि बलदेव अंकल उसे यहां गंगा मौसी के पास क्यों छोड़ गये और उसके बार-बार चाहने पर भी उसे दिल्ली क्यो नहीं बुलाते? जब भी वह कुछ पूछती-वह कह देते-सब्र करो। जल्द ही सब कुछ बताऊंगा।

दोपहर खाना खाने के बाद रेखा के दिल में उत्कट इच्छा हुई नीचे वाले बन्द कमरे में जगाने-उसे अन्दर से देखने की। वह कमरे के निकट पहुंची, हैण्डिल पर हाथ रखकर उसने दरवाजा थोड़ा-सा खोला ही था कि भीतर से एक मर्दाना आवाज आई- "अभी नहीं, रात को आना।"

रात को अचानक ही उसकी आंख खुली तो वह उस कमरे तक अनायास ही, यन्त्रवत् जा पहुंची। फिर दरवाजे का हैण्डिल घुमाते हुए दरवाजा थोड़ा-सा खोला ही था कि आवाज आई- "अन्दर आ जाओ।"

और अन्दर पहुंचने पर जो दृश्य उसने देखा-वह हक्की-बक्की रह गई। उसे वताया गया था कि उस कमरे की दीवारों पर ही नहीं छत पर भी काला रंग करवाया गया था, किन्तु वह कमरा तो जगमगा रहा था। कमरे में अधेड़ उम्र का एक शख्स तड़क-भड़क लिबास में था। वह व्यक्ति रेखा से कहता है- "मैं तुम्हारा आभारी हूं। तुम्हारे कारण ही मुझे आजादी मिली है। न तुम यहां आतीं। न पिंजरे में वो यहां आता। न खून फैलता। न हम उसमें स्नान करते।

"फिर वह रेखा को चमड़े की जिल्द में पढ़ी एक किताब देता है और कहता है-इसे अपने कमरे में जाकर देखना। उसके बाद वह रेखा को वहां से जाने को कहता है।

किताब लेकर रेखा लौट आती हैं।

अगले दिन रेखा-मौसी व अमर को बताती है कि नीचे वाले कमरे का ताला खुला है, किन्तु वह अमर के साथ दिन में उस कमरे में जाती है तो वहां फिर से ताला लगा पाती है। हैण्डिल पर काले कपड़े में सिला ताबीज भी पहले की तरह लगा हुआ था।

comicsmylife.blogspot.in

वे दरवाजा खोलने की कोशिश करते हैं, किन्तु दरवाजा नही खुलता। वह हमेशा की तरह लॉक्ड था।

रेखा अविश्वास व दुविधा में फंसकर रह गई।

अपने कमरे में पहुंच चमड़े की जिल्द में मढ़ी वह रहस्यमय किताब निकाली और जब उसने डायरी के पन्ने पलटे तो डायरी में लिखा हुआ देखा। काली स्याही से लिखा एक-एक शब्द मोतिया-सा टंगा हुआ था। पड़ती चली गई वह...उन शब्दों को।

और तब उसे मालूम हुई अपनी हकीकत।

उसके दादा निहालचन्द थे और पिता कृष्णकांत। एक भाई भी है उसका-इन्द्रजीत, किन्तु उसका एक चाचा भी है-रमाकांत। रमाकांत ने दौलत के लालच में उसके भाई इन्द्रजीत को मरकने का इन्तजाम किया था और मुद्दत से इन्द्रजीत लापता था। उसके पिता कृष्णकांत चाचा की नीयत से वाकिफ थे। उन्होंने अपनी प्यारी बेटी शीना को कलेजेपर पत्थर रखकर खुद से दूर कर दिया था।

वह शीना ही रेखा है। बेटी की जान बचाने के लिए उसे गैरों में पलने भेज दिया। उसका नाम भी बदल दिया। यह सब कुछ डायरी पढ़कर जान गई रेखा और उसके दिलो-दिमाग में भूचाल-सा आ गया।

फिर एक और भी अजीब-सा वाकया हुआ। रेखा की नजरें डायरी के आखिरी पझे पर ही थीं कि देखते-हीं-देखते लफज उड़ने लगे और आखिर में डायरी एकदम कोरी हो गई। उसका हर पन्ना कोरा हो गया।

अपने पिता व अपने भाई के विषय में जान-उनके बारे में सोचते रेखा काफी जज्बाती हो उठी। उसने निश्चय किया कि वह अपने भाई को तलाश करेगी और पिता से मिलने दिल्ली जायेगी। दिल्ली जाने का निस्वय करने के बाद जब एक बार फिर रेखा ने उस डायरी को खोला तो एक पन्ने पर एक खून का धब्बा नजर आया। वह शंकित हो उठी।

फिर आनन-फानन में ही उसने अमर से कहकर दिल्ली के टिकट का इन्तजाम करा लिया, किन्तु रेखा के दिल्ली प्रस्थान से पहले ही बलदेव अंकल का दिल्ली से फोन आ गया। उन्होंने गंगा मौसी से रेखा को तत्काल दिल्ली भेज देने को कहा और बताया कि रेखा के पिता कृष्णकांत का किसी ने कह कर दिया है, किन्तु गंगा मौसी ने रेखा को दिल्ली के लिए विदा करते समय यह बुरी खबर सीधे-सीधे न बताई।

दिल्ली एयरपोर्ट पर वलदेव अंकल रेखा का प्रतीक्षक था। रेखा के सिर पर हाथ रखकर उसे हल्का-सा गले लगाते हुए वह बोले- "कैसी हो रेखा?"

पर रेखा जवाब देने की बजाय पूछ बैठती है- "मेरे पापा की मौत कैसे हुई"

वलदेव अंकल रेखा की उसके पिता कृष्णकांत की हत्या का वही विवरण बताते हैं जो जानते हैं।

मॉडल टाउन की वह कोठी-जहां रेखा के पापा की हत्या की गई थी, रिस्तेदारों व परिचितों से भरी थी। वहां रखा अपने चाचा रमाकांत को भी विलाप करते हुए देखती है।

अगले दिन कृष्णकांत के वकील ने उसकी वसीयत पढ़कर सुनाई तो रेखा के चाचा रमाकांत को जबरदस्त झटका लगा। भाई की जिस सम्पत्ति का वह दबाये बैठा था-वसीयत में उसका भी जिक्र था और गुमशुदा बेटे इन्द्रजीत के लौटकर आने पर सब कुछ रेखा का था।

अगले दिन नाश्ते के बाद रेखा अपने कमरे में गई। सूटकेस खोलकर उसने कपड़ों के नीचे से यह रहस्यमय डायरी निकाल ली। चमड़े की जिल्द से मढ़ी उस डायरी को वह साथ ही लायी थी।

डायरी खोली तो कुछ पेज उसे लिखे हुए नजर आये। पढ़ना शुरू किया तो अपने पिता की हत्या का सारा राज उसकी आंखों के सम्मुख स्पष्ट हो उठा और यह भी उसे मालूम पड़ा कि उसके पिता के यहां बरसों से काम कर रहा वफादार नौकर घनश्याम भी उसके चाचा रमाकान्त के हाथों बिक गया था। पिता की हत्या उनके सगे भाई और रेखा के चाचा रमाकन्त ने ही की थी।

फिर रेखा ने बलदेव अंकल को फोन करके नौकर घनश्याम पर अपना शक जाहिर किया और यह जानने पर कि

comicsmylife.blogspot.in

नौकर घनश्याम अपने मालिक कृष्णकान्त की हत्या के समय अपनी बेटी के एक्सीडेंट का बहाना करके जानबूझकर घर से दूर चला गया था। बलदेव अंकल घनश्याम के क्वार्टर में उससे पूछताछ करने पहुंचे तो वहां घनश्याम व उसकी पत्नी को मृत पाया। किसी तेज धारदार हथियार से उनकी गर्दन काट दी गई थी।

रेखा के पापा का चाचा रमाकन्त द्वारा हत्या की जा चुकी थी, रेखा को सोते-जागते अक्सर अपने पिता नजर आने लगे। मरकर उसके पिता की आत्मा को सुकून नहीं मिला था।

फिर उस रात चार बजे रेखा गहरी नींद में थी कि उसे दादा हरीओम ख्वाब में नजर आये। उन्होंने पिता की आत्मा की मुक्ति के लिए-स्वप्न में ही रेखा को एक मन्त्र बताया।

रेखा ने दादा हरीओम के बताये अनुसार मन्त्र का तीन दिन तक पाठ किया। फिर अगले दिन रेखा के दिल ने अकस्मात् ही उस डायरी को देखना चाहा। रेखा ने डायरी निकालकर उसके पृष्ठ उलटे-पुलटे।

अचानक ही एक पृष्ठ पर रेखा को नीचे वाले उस कमरे की तस्वीर नजर आई जिसके हैण्डिल पर काला ताबीज लटका हुआ था।

इसका मतलब क्या हुआ? वह सोच ही रही थी कि वह तस्वीर मंद पड़ गई और उसके स्थान पर वही रहस्यमय झोपड़ी सामने आ गई, जिसको छत पर गोल-गोल आंखों वाला उल्लू और दरवाजे पर एक सांप कुण्डली मारे बैठा था।

झोंपड़ी की तस्वीर स्पष्ट होते ही एक मर्दाना आवाज उसके जेहन में गूंजी- "डरो मत-आओ, झोंपड़ी के अन्दर आ जाओ।" फिर वह तस्वीर धुंधली पड़ गई और बंगले के निचले कमरे की तस्वीर फिर से नजर आने लगी। उसके बाद फिर वह तस्वीर गायब हुई और झोंपड़ी की तस्वीर उल्लू, सांप और मर्दाना आवाज।

ऐसा तीन बार हुआ। बंगले के निचले रहस्यमय काले कमरे के बाद उस झोंपड़ी तस्वीर दिखती और ओझल होती रही।

डायरी रेखा के हाथ में थी। वह यूं ही पन्ने पलटती रही कि एक पृष्ठ ऐसा आ गया जिस पर कोई हिदायत लिखी थी। रेखा ने वह हिदायत पड़ी तो खुशी से झूम गई। उसके दिलो-दिमाग की उलझन एकदम दूर हो गई।

और उस हिदायत के अब रेखा को सफर करना था और सफर की तैयारी करने मे रेखा ने देर न लगाई। उसने सफारी बैग तैयार कर लिया जिसमें उसने सिर्फ बेहद जरूरी चीजें ही रखी थीं। जिन्हें रखने के बाद भी बैग इतना हल्का था कि उसे कन्धे पर लटकाकर बड़ी आसानी से मीलों सफर किया जा सकता था।

सफर पर जाने से पहले उसने खुले वातावरण में घूमने का प्रोग्राम बनाया और अमर, गंगा मौसी, वह और माया चार बजे के लगभग पिकनिक मनाने निकल पड़े।

घर लौटने के बाद वह रात बीती। सुबह हुई। आदतन गंगा मौसी जल्दी उठी तो अजीब-सी बेचैनी-सी महसूस करने लगी। फिर क्या माया ने बताया कि रेखा बीबी का कमरा खुला हे, लेकिन वह अपने कमरे में नहीं है तो मौसी का दिल-धक्क से रह गया।

बहुत ढूंढा गया रेखा को, पर वह कहीं नहीं मिली। घर में भी-घर से बाहर भी।

लेकिन कोई यह नहीं जानता था कि रेखा घर से बाहर तो गई ही नहीं थी।

रेखा को डायरी के पृष्ठ पर से यही हिदायत मिली थी। रात के ठीक ढाई वजे वह बंगले के उसी रहस्यमय काले ताबीज वन्धें कमरे में द्वार पर पहुंच जाये। उसका सफर वहीं से शुरू होगा। रात को रेखा घड़ी में अलार्म लगाकर सोई। ठीक दो बजे घड़ी का अलार्म बजा और तुरन्त ही रेखा उठ गई। घड़ी का अलार्म बन्द कर फौरन बाथरूम पहुंची फिर बिस्तर ठीक किया। सब कुछ चेक किया। हर चीज करीने से थी।

ठीक दो बजकर पच्चीस मिनट पर अपने कमरे से वाहर निकली। सीढ़ियां उतरकर काले ताबीज वाले कमरे के सामने पहुंची तो कमरे के हैण्डील पर उसे हाथ भी नहीं रखना पड़ा।

comicsmylife.blogspot.in

दरवाजा खुद-ब-खुद खुल गया। जैसे दरवाजे के पीछे कोई रेखा का प्रतीक्षक था।

सामने अन्धेरा था। रेखा महज अन्दाजे से ही कमरे में दाखिल हो गई। उसके कमरे में दाखिल होते ही दरवाजा खुद-ब-खुद बन्द हो गया। धुप्प अन्धेरे में रेखा आगे बढ़ने लगी, मगर दो-तीन कदम अन्दर जाकर ही ठिठक गई। समझ नहीं पा रही थी कि वह आगे बढे या खड़ी रहे। अगर बड़े तो किस तरफ बढे? वह अन्धेरे में आंख फाड़े देख रही थी कि छत पर दूर कहीं रोशनी टिमटिमाती नजर आई, जैसे आकाश पर कोई सितारा टिमटिमा रहा हो। फिर देखते-ही-देखते सितारों की संख्या बढ़ती चली गई और चारों ओर मध्यम-सा उजाला फैलता चला गया।

और तब रेखा ने खुद को खुले आसमान के नीचे पाया। फिर रोशनी कुछ तेज होती चली गई। यूं लगा, जैसे चांद निकल आया हो। साथ ही ठण्डे हवा के झोंके रेखा के रेशमी बदन को छूते चले गये और तभी रेखा को अपने पांव किसी नर्म चीज में धंसते महसूस हुए तो वह चौंक गई।

वह किसी रेगिस्तान में 'आ पहुंची थी। जाने कहां आ गई थी? कौन-सा इलाका था

फिर उसके सिर पर एक बड़ा-सा साया लहराया और एक पक्षी पंखों की फड़फड़ाहट के साथ चींखता हुआ आगे निकल गया।

सब कुछ बड़ा ही अजीव-गरीब था। ऐसा-जैसे किसी अंग्रेजी फिल्म का हिस्सा हो।

सहसा कहीं से छम-छम की आवाज उभरी। आवाज की दिशा में उसने नजरें उठाई तो सामने से एक साया लहराता बता दिखाई दिया। साया करीब आया तो देखा-वह एक उटनी थी जिस पर कोई सवार नहीं था।

ऊंटनी उसके निकट आकर ठहर गई। फिर खुद ही बैठ गई और तभी रेखा के कानों में कहीं से एक आवाज आई- "ऊंटनी पर बैठ जाओ-यह तुम्हारे लिए ही भेजी गई है।"

रेखा ऊंटनी पर सवार हो गई। फिर वह ऊंटनी चली तो रफ्तार बढ़ाते-बढ़ाते-हवा से बातें करने लगी।

फिर सूरज एक लाल तवे-सा बहुत धीरे-धीरे आसमान पर उजागर होने लगा। दौड़ते-दौड़ते ऊंटनी की रफ्तार धीरे-धीरे काफी कम हो गई। फिर एक स्थान पर वह बैठ गई तो रेखा ऊंटनी पर से उतर गई।

अचानक परिदें की फड़फड़ाहट के साथ ही तेज-तेज चीखे की आवाज उभरने लगीं, किन्तु आसमान पर उसे सिर्फ किसी उड़ते हुए पक्षी का साया ही दिखाई दिया। धीरे-धीरे वह साया दूर होता चला गया। रेखा उसे दूर गायब होते हुए देख ही रही थी के पीछे से एक साया और उभरा।

और वह साया किसी देवकाय इन्सान का था, परन्तु यहां भी अजीब वात थी। केवल साया था। किसका साया था? कहीं कुछ नजर नहीं आ रहा था। फिर जैसे ही उस साये का सिर रेखा के कदमों तक आया तो रेखा को लगा-जैसे उसके पैरों मे आग लग गई हो। उसने घबराकर पीछे हटना चाहा, पर हटना न सकी। यूं लगा उसे-जैसे किसी जलते हुए तन्दूर में डाल दिया गया हो और वह सूखी लकड़ी की तरह तड़-तड़ करके बिखर गई हो।

लेकिन यह अहसास-यह यातना सिर्फ कुछ ही क्षणों के थे। फिर जब रेखा के हवास लौटे तो वह रेत पर नहीं, बल्कि ठोस जमीन पर खड़ी थी। उसे वहां लाने वाले साये का दूर तक कहीं पता नहीं था।

कुछ ही फासले पर उसे झोपड़ी दिख रही थी। वही झौंपड़ी-जिसकी छत पर उल्लू बैठा था। रेखा लपककर झोंपड़ी की ओर बढ़ती चली गई। फिर जैसे ही वह बिल्कुल निकट पहुंची-द्वार पर कुण्डली मारे बैठा सांप भी उसे दिखाई पड़ गया। सांप रेखा की ओर झपटा। रेखा डरकर भागना ही चाह रही थी कि भीतर से आवाज आई- 'डरो मत-आओ झोंपड़ी के अन्दर आ जाओ।"

रेखा डरती कैसे नहीं? वह सांप उसी की ओर आ रहा था, किन्तु अचानक ही वह मुड़कर दूसरी तरफ चला गया। फिर अचानक रेखा ने अपने कन्धे पर एक हाथ महसूस किया। उसने मुड़कर देखा तो पीछे मौजूद साये ने हाथ हटा लिया।

"कौन हो तुम?" रेखा ने पूछा तो उतने बताया-वह 'काला चिराग' है। फिर उसी ने बताया कि झोंपड़ी में उसका बड़ा भाई इन्द्रजीत-बड़ी ही यातनापूर्ण अवस्था में कैद है।

comicsmylife.blogspot.in

उसे किसने कैद किया है पूछने पर काला चिराग रेखा को बताता है-इन्द्रजीत को जादूगरनी बकाल ने कैद कर रखा है।

और फिर काला चिराग रेखा को बकाल के चंगुल में फंसने की दास्तान सुनाता है।

उसका भाई इन्द्रजीत जब चौदह-पन्द्रह साल का था-वह चाचा रमाकांत व उसके बेटों से काफी घुल-मिल गया था। पिता के न चाहने पर भी वह जिद करके चाचा के यहां जाने लगा था। चाचा के बेटों के साथ शिकार खेलने जाना उसका प्रिय शुगल था।

ऐसे ही एक बार यह शिकार करने गया था तो वापस नहीं लौटा। रमाकांत ने उसकी हत्या की सुपारी बदमाशों को दे दी थी और उसके न लौटने पर अपने भाई कृष्णकान्त को उताया कि उसे डाकू उठा ले गये।

रेखा की मां इस गम में रेखा के जन्म देने के बाद बहुत जल्दी ही चल बसी और कृष्णकान्त ने अपनी बेटी को भाई रमाकान्त की बुरी नजर से बचाने के लिये अपने से दूर रखकर पालना शुरू कर दिया।

किन्तु इन्द्रजीत मरा नहीं था। उसकी हत्या की सुपारी लेने वाले उसका काम-तमाम करने वाले ही थे कि जंगल में जड़ी-बूटी तलाश कर रहा जादूगर राजू मदारी उधर ही आ निकला।

राजू मदारी ने अपने जादुई चमत्कार व हिप्नोटिज्य से इन्द्रजीत को बचा लिया और उसे अपने साथ रख लिया। इन्द्रजीत राजू मदारी के मन्त्रपाश में बंधा उसके चंगुल से निकल भागने के असमर्थ हो गया।

राजू मदारी की बेटी कटारी, उम्र में इन्द्रजीत से दो-तीन साल बड़ी थी किन्तु वह हृष्ट-पुष्ट-खूबसूरत इन्द्रजीत की चाहत में अपना दिल हार बैठी, पर चाहकर भी वह इन्द्रजीत को अपनी मुहब्बत में गिरफ्तार न कर सकी।

एक दिन राजा बहरामनगर का कारिन्दा राजू मदारी के पास अपनी बेटी नयना की सगाई पर खेल-तमाशे दिखाने का प्रोग्राम प्रस्तुत करने के लिए आने का पैगाम भेजते हैं।

राजू मदारी इन्द्रजीत को साथ लेकर राजा साहब की गाड़ी में उनकी हवेली पहुंचता है।

वहां राजू मदारी के खेलों के दौरान इन्द्रज़ीत को देख राजकुमारी नयना अपना दिल उस पर हार बैठती है।

राजकुमारी नयना का वफादार ड्राइवर रघुवीर सिंह उसे योगी दयाल से मिलवाता है। योगी दयाल को नयना एक मोटी रकम देती है-ताकि वह इन्द्रजीत को राजू मदारी के सम्मोहन से मुक्ति दिला सके।

योगी दयाल के तांत्रिक अनुष्ठान से राजू मदारी चल बसा, किन्तु मरते-मरते वह 'देवा काली' को अपनी मदद के लिए पुकारता चला गया। 'देवा काली' अपनी चेली 'बकाल' को राजू मदारी की मौत का बदला लेने भेजता है तो बकाल योगी दयाल को तो मौत के घाट उतार देती है, इन्द्रजीत पर उसका दिल आ जाता है और वह उसे अपना कैदी बना लेती है।

"काला चिराग' उसी बकाल के इस्क में गिरफ्तार था। अत: वह इन्द्रजीत को छुड़ाकर-बकाल की खुद हासिल के लिए रेखा की मदद कर रहा था।

काला चिराग रेखा को बकाल के भाई राकल के विषय में भी बताता है। राकल वही लंगड़ा प्रेत था जिसे नीचे वाले काले ताबीज वन्धे कमरे से अनजाने में ही रेखा ने आजादी दिलवाई थी।

काला चिराग बताता है-राकल रंगीन मिजाज, शरारती और खुराफाती शख्त है, पर रेखा उससे मिलने की इच्छा जाहिर करती है। काला चिराग उसे पहले अपने भाई इन्द्रजीत से मिल लेने को कहता है।

(इन्द्रजीत के राजू मदारी का फिर बकाल के चगुल में फंसने की रोचक-रोमांचक-घटनाप्रधान जादुई चमत्कारी कथा का पूर्ण एक दिलचस्प विवरण पढ़ने के लिए 'रवि पॉकेट बुक्स' मै हॉरर एक एक्शन सम्राट उपन्यासकार राजभारती का पूर्व प्रकाशित उपन्यास- 'स्वाहा' अवश्य पढे)।

काला चिराग रेखा को इन्द्रजीत से मिलवाता है, किन्तु भाई की दुर्दशा देख रेखा का कलेजा चाक-चाक हो जाता

comicsmylife.blogspot.in

है।किन्तु इन्द्रजीत से रेखा व काला चिराग की बातें अभी अधूरी ही थीं कि वहां वकाल आ जाती है।

बकाल काला चिराग का प्रेम निवेदन ठुकरा अपने दो देवकाय अनुयायियों की मदद से उसे जंजीनरों में जकड़ लेती है। फिर वह रेखा को बताती है कि उसे उस तक काला चिराग नहीं लाया-उसके भाई राकल की इच्छा से ही वह यहां तक आई है।

फिर वह अपनी शक्तियों के बल पर रेखा को जबरन किसी प्राचीन भवन के खण्डहर में ले जाती है-जहां उसके भाई राकल का बसेरा था। वह रेखा को राकल के हवाले कर देती है।

काला चिराग भी रकाल का कैदी बन चुका था। बकाल अपने भाई से कहती है कि वह इन्द्रजीत कें बिना नहीं रह सकती और काले चिराग से वो उसे सख्त नफरत है। वह चाहती थी कि काले चिराग को आंसुओ की दीवार में चिनवा दिया जाये।

राकल हर-हालत मे रेखा को अपनी बनाना चाहता है, परन्तु रेखा उसे दुत्कारती व अपमानित करती है।

राकल रेखा पर कोई जादुई अमल करता है। वह चकराकर गिर जाती है और राकल अपना राजदण्ड अपनी बगल से निकालकर एक टांग पर उछल-उछलकर नाचने लगता है।

नाच बन्द होने पर रेखा एक उल्लू को अपने इर्द-गिर्द मंडराता-नाचता देखती है। उल्लू उस पर झपटता है। शायद वह रेखा की आंख ही फोड़ देता, पर रेखा उस पर अपना बैग घुमाकर मारती है। बैग इतनी ताकत व वेग से उल्लू से टकराता है कि उल्लू पलटकर दीवार से जा टकराता है।

रेखा उस कमरे से निकलकर भागती है और द्वार बाहर से बन्द कर चिटकनी लगा देती है।

किन्तु भाग पाने में वह कामयाब नहीं हो पाती है। कोई रेशमी फन्दा-उसकी गर्दन में आकर गिरता है और आनन-फानन में उसकी गर्दन में तग हो-उसे बेहोश कर देता है।

दो काली भुजंग औरतें रेखा को उठा-फिर से राकल के सामने ले जाती हैं। राकल अपने बल खाये राजदण्ड को छूता है तो उसके शरीर में भूचाल-सा आ जाता है।

वह उठ खड़ी हुई। उसका बैग और चाकू निकट ही पड़े थे। रेखा लपककर चाकू उठाना चाहती है, पर राकल अपने छड़ी से चाकू अपनी तरफ खींच अपने पांव के नीचे दबा लेता है।

फिर रेखा चाकू उठाना चाहती है तो राकल छड़ी से उसके सिर पर वार कर देता है। रेखा फिर से बेहोश हो जाती है।तब राकल दोनों काली भुजंग औरतों को आदेश देता है कि- रेखा को उठाकर कैदखाने में फेंक दो और उसे तीन दिन तक भूखा रखो।

कैदखाने में रेखा की बेहोशी टूटती है तो उसे दादा हरीओम की याद आती है। दादा हरीओम उसे शान्तचित्त रहने की सलाह देते हैं। उस कमरे में एक रोशनदान था। उस पर से एक गिलहरी कोई चीज कैदखाने में लुढ़काती है।

वह सुर्ख रंग का एक सेव था।

सेव खासा बड़ा था-बड़ा लजीज। उसे खाकर रेखा की ताकत-होशो-हवास-शक्ति लौट आती है।

दो दिन बाद राकल कैदखाने में रेखा से मिलने आता है। वह तो समझ रहा था कि भूख के मारे रेखा का बुरा हाल होगा, पर उसे चाक-चीबन्द देख हैरान हो जाता है।

राकल रेखा के सामने मुहब्बत का इजहार करता है।

रेखा चुभते हुए शब्दों में उसे दुत्कारती है-एक लंगड़े और बाजू टूटे शख्त के बारे में उस जैसी लड़की सोचे भी तो क्या?" राकल छड़ी उठाता है-रेखा को मारने के लिए।

तभी एक पहाड़-सी औरत वहां आती है-बताती है- 'राकल। सरदार कोलाना का कारिन्दा आया है।'

comicsmylife.blogspot.in

सरदार कोलाना का नाम सुनते ही राकल का उठा हुआ हाथ नीचे गिर जाता है।

वह रेखा से कहता है-

"मेरा इन्तजार कर-तुझे अभी आकर देखता हूं। फिर वह पलटकर उस पहाड़-सी औरत के साथ चल दिया।रेखा उसे जाते हुए देखती रही।

(यह तक की कथा-आप 'रवि पॉकेट बुक्स' में पूर्व प्रकाशित राजभारती के हॉरर- भयानक-लोमहर्षक उपन्यास 'स्वाहा:' में पढ चुके हैं। अब आगे की कहानी पढ़िये-प्रस्तुत उपन्यास 'लगंड़ा प्रेत' मे)

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

राकल ने फिर कैदखाने का रुख किया था।

उसे देखते ही देवकाय औरत ने कैदखाने का दरवाजा खोला और उसके पीछे-पीछे चल दी। वे उस कोठरीनुमा कमरे के दरवाजे पर पहुंचे-जहां रेखा कैद थी। उस देवकाय, काली, भैंगी औरत ने दरवाजे पर लगा ताला खोल दिया।

लंगड़ा राकल बेसाखी के सहारे खट्-खटु करता कमरे में दाखिल हुआ।

रेखा ने उसे देखा व खामोशी से देखती रह गई। उसकी ममझ में नहीं आया था कि यह लंगड़ा अभी तो उसके हाथों जलील होकर गया है और अब फिर आ गया है। यह ढीठपन की इन्तहा थी। राकल के चेहरे पर थकान व मायूसी के भाव देख रेखा समझी कि यह शैतान शायद अपने रवैये पर शर्मिन्दा है-और शायद अब उससे क्षमा मांगने आया है।

लेकिन ऐसा नहीं था। वह शैतान तो कोई और ही मंसूबा लेकर आया था।

राकल कुछ देर रेखा के सामने खामोश खड़ा रहा। फिर धीरे से बोला- "रेखा, बहुत बुरी खबर है-रेखा, बहुत बुरी खबर है।" "क्या हुआ?" रेखा को बरबस ही अपने भाई इन्द्रजीत का ख्याल आया था कि कहीं, भगवान न करे, उसे कुछ हो गया हो।" मेरा भाई तो सकुशल है।"

"हां, वह तो ठीक ही होगा। उसे क्या होना है राकल शुष्क स्वर में बोला- "वैसे यह सारा फसाद उसी का फैलाया हुआ है।"

"मेरे भाई ने-मेरे भाई ने क्या फसाद फैला दिया है, वो तो खुद एक मजलूम और तुम्हारी बहन की ज्यादतियों का शिकार हुआ शख्स है। भला वह क्या फसादा फैला सकता है?" किसी अज्ञात आशंका से रेखा का दिल धड़कने लगा था।

"उसने मेरा सिर झुका दिया है।" राकल ने शिकायती लहजें में कहा।

"आखिर कुछ पता तो चले कि ऐसा क्या किया है मेरे भाई ने?"

"न मेरी बहन तुम्हारे भाई की मुहब्बत में गिरफ्तार होती और न आज यह दिन देखना पड़ता। मेरी बहन को सरदार कोलाना ने अगुवा कर लिया है।"

बकाल के अपहरण की खबर सुन रेखा के दिल में अनार फूटने लगे। एक खुशी की लहर उठी जो उसके पूरे वजूद को लहरा गई। अफसोस भी हुआ कि उस चुड़ैल के अगुवा की खबर क्यों आई? उसकी मौत या कत्क की खबर क्यों न आई?

बहरहाल, वक्त खुशी दर्शाने का नहीं था। उसने संजीदगी अपनाते हुए पूछा- "पर क्यों?"

"काले चिराग की वजह से।"

"मैं समझी नहीं।"

"काला चीराग सरदार कोलाना का खास आदमी है। सरदार को किसी तरह मालूम हो गया होगा कि वो मेरे कब्जे में है-सो जवाब में उसने बकाल को अपने कस्बे में कर लिया और अब पैगाम भिजवाया है कि मैं काले चिराग को उसके हवाले कर दूं और अपनी बहन को ले जाऊं-वरना वह बकाल को मार देगा और हमला करके मेरे इलाके पर भी कब्जा कर लेगा।"

"तू यह सब मुझे क्यों बता रहा है?" रेखा चौकन्नी होते हुए बोली- "मै क्या करू?"

"मुझे तेरी मदद की जरूरत है।"

"मैं भला तेरी क्या मदद कर सकती हूं? मैं तो खुद तेरी कैदी हूं और मेरा भाई तेरी बहन का कैदी है।"

"मैं काले चिराग को आजाद नहीं करना चाहता-इसमें मेरा अपमान है-और अपनी बहन को भी सुरक्षित सकुशल वापिस लेना चाहता हूं।"

comicsmylife.blogspot.in

"रेखा ने उसके खेल को समझने की कोशिश करते पूछा- "मुझे क्या करना होगा, यह बता?"

"मेरा एक खैरख्वाह है, तुझे उस तक मेरा पैगाम पहुंचाना होगा। मेरा कोई आदमी अब सरदार कोलाना के इलाके में कदम नहीं रख सकता और मेरे दोस्त तक पहुंचने के लिए कोलाना के इलाके से गुजरना पड़ेगा। तू उसके इलाके से आसानी से गुजर सकती है। तुझ पर कोई शक भी नहीं करेगा।"

"ठीक है-मैं जाने के लिए तैयार हूं।" रेखा ने फौरन हामी भर ली। यही चाहती थी कि इस कैद से किसी तरह मुक्ति मिल जाए। यहां से निकलकर ही तो फरार का रास्ता मिल सकता था। रेखा अपने फरार के बारे में सोच रही थी तो राकल ने कुछ और ही सोच रखा था और उसने जो कुछ सोच रखा था-उसके बारे में अगर रेखा को जरा भी शक हो जाता तो वह इस कैदखाने से निकलती ही नहीं। राकल अपनी किस्म का इकलौता कमीना शख्स था। रेखा ने उसका प्रेम निवेदन मुस्कुराया था-कदम-कदम पर उसको जलील किया था। राकल उसे यूं आसानी से कहां छोड़ने वाला था।

"आ फिर मेरे साथ।" राकल ने चलने का इशारा किया।

रेखा ने अपना बिखरा हुआ सामान समेटा। उसका सामान ही क्या था-चन्द जोड़े कपड़े व कुछ जरूरत की चीजें। बैग में भरकर उसने जिप बन्द की। बैग अपने कन्धे पर डाला और बोली- "चल।"

राकल हमेशा की तरह अपने 'राजदण्ड' को बेसाखी बनाये,फर्श पर खट्-खट् करते आगे बढ़ा। रेखा उसके साथ हो ली थी। तहखाने की काली भुजंग खौफनाक औरत ने उन्हें बड़े दरवाजे तक पहुंचाया। झुककर सम्मान दर्शाया व दरवाजा बन्द करके सतर्क खड़ी हो गई। राकल रेखा के साथ अपने कमरे में पहुंचा। उसने अपनी पसन्द सम्भाली और अपने 'राजदण्ड' को तीन बार मसन्द पर मारा। खट्-खट् की आवाज पर दो गोल चेहरे वाली, जुड़वां बहनें-सी दिखतीं, दासियां पर्दा हटाकर अंदर आई।

उन्होंने आधा झुककर राकल का अभिवादन किया और रेखा को आश्चर्यचकित नजरों से देखा।

"क्या हुक्म है राकल?" उनमें से एक ने पूछा।

"सदर दरवाजे पर मेरा हुक्म पहुंचा दो कि सवारी और सवार मुझे तैयार मिलें-मैं अभी आता हू।"

"ठीक है राकल।" यह कहकर उन दोनों वे फिर सिर नवाया और पलटकर परदे के पीछे गायब हो गई।

कमरे में अब राकल और रेखा अकेले रह गए थे। रेखा खामोशी थीं-खामोश रही। खुद राकल ने भी कोई बात नहीं छेड़ी थी। उसके चेहरे पर संजीदा सोचपूर्ण भाव थे-और वह एकटक परदे की तरफ देखे जा रहा था। यूं लगता था जैस उसे किसी के बिछुड़ने का गम हो।

कुछ देर बाद वह अपने 'राजदण्ड' के सहारे उठा। 'राजदण्ड' को बेसाखी की तरह अपनी बगल में दबाया और रेखा की तरफ देखे बिना बोला-

"आ-अब रुख्यत होने का वक्त आ गया।"

रेखा कुछ नहीं बोली व चुपचाप उसके पीछे चल दी।

वे सदर दरवाजे पर पहुंचे तो एक दरबान ने ऊंची आवाज में कहा- "सकल आ गया है, दरवाजा खोला जाए।"

हमेशा की तरह छ: आदमी दायीं कोठरी व छ: आदमी बायीं कोठरी से बरामद हुए। उन्होंने बड़ी फुर्ती से मशीनी अंदाज में वह भारी विशाल दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही लंगड़ा राकल जो अन्तिम सीढ़ी पर खड़ा था, उतरकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजे के बाहर छ: सशस्त्र सवार सतर्क खड़े हुए थे। उनके पास ही दो ऊंटनियां सजी हुई बैठी थीं। रेखा को एक ऊंटनी पर सवार कराया गया। दूसरी पर राकल को बैठाया गया। फिर राकल ने एक सवार को निकट बुलाकर कुछ हिदायत दी-जिसे रेखा दूर होने के कारण सुन न सकी।

फिर वह सवार जिसे हिदायत दी गई थी-दोनों ऊंटनियों के सामने आया। उसने मुंह से एक अजीब-सी आवाज

comicsmylife.blogspot.in

निकाली। ऊंटनियां हिचकौले लेती उठ खड़ी हुई। फिर यह काफिला खण्डहरों के बीच से गुजरता हुआ मैदान में आ गया।

सबसे आगे एक घुड़सवार था-उसके पीछे रेखा। रेखा के बाद राकल और राकल के पीछे बाकी के पांच घुड़सवार और अब यह काफिला बड़ी तेजी से पश्चिम की तरफ अग्रसर था।

रेखा सोच रही थी कि राकल ने कहा था कि उसके दोस्त को उसका पैगाम पहुंचाना है ताकि वह सरदार कोलाना के सम्भावित हमले का मुकाबला कर सके और यह भी कि यह पैगाम वही पहुंचा सकती है। वह इसलिए कि लंगड़े राकल के उस दोस्त तक पहुंचने के लिए सरदार- कोलाना के इलाके से गुजारना पड़ता है, लेकिन न तो राकल ने उसके हवाले कोई पैगाम दिया था न ही इस सिललिस में कुछ बताया था और अब वह खुद भी साथ चल रही था-जबकि उसका खुद साथ जाना खतरे से खाली नहीं था।

समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है?

रेखा की ऊंटनी विधुतीय गति से उड़ी जा रही थी। दूर तक रेत ही रेत थी। रेखा की निगाहें इधर-उधर घूम रही थीं कि शायद उसे वह झोपड़ी नजर आ जाए जिसमें बकाल ने उसके भाई को कैद कर रखा था।

परिस्थितियों ने अजीब करवट ली थी। बकाल को सरदार कोलाना ने अगुवा कर लिया था। रेखा इस पर बहुत खुश थी। अब वह चाहती थी कि किसी तरह सरदार कोलाना से मुलाकात हो जाए तो वह उसे बकाल की करतूत बताये। बकाल ने इन्द्र की जो हालत बना रखी थी-सरदार उसे देखकर बकाल को सजा दे सकता था।

रेखा ने काले चिराग के बारे में भी सोचा। जाने उसका क्या होगा। बकाल के अपहरण के बाद-उन दोनों के बीच दुश्मनी और भी गहरी हो चुकी होगी। जाहिर था-बकात के दिल में अगर काले चिराग के लिए थोड़ी-बहुत जगह रही भी होगी तो इस वारदात के बाद अब वह भी न रही होगी।

यह काला चिराग भी विचित्र हस्ती है। खामखाह ही इस बुरी औरत के लिए मरा जा रहा है। ऐसा भी क्या इश्क बकाल जैसी चुड़ैल पर तो लानत भेजनी चाहिये। अब रेखा क्या जानती थी कि यह प्रेम-रोग क्या होता है? उसकी अपनी जिन्दगी में कभी कोई मर्द नहीं आया था। उसकी तो जिन्दगी ही ऐसे रंग में बीती थी कि वह इन भावनाओं से अछूत रही ।प्रेम व चाहत के बारे में कभी सोच ही नहीं पाई। अब मुहब्बत की ये दास्तानें उसे हैरान ही कर रही थीं। काले चिराग का ही नहीं, चुड़ैल बकाल की मिसाल भी उसके सामने थी। ऐसी होती है चाहत। आदमी इस कदर बेवस व मजबूर हो जाता है मुहब्बत में।

काले चिराग तो रेखा की बड़ी दया आती थी। वह अपनी चाहत के हाथों विवश होकर बकाल के सामने बिछा जाता था और बकाल उसे निरन्तर ठोकरें मारकर सामने से हटाए जाती थी। रेखा का बस चलता तो वह बकाल के हाथ-पांव बांधकर काले चिराग के सामने डाल देती और कहती कि लो अब इससे अपने सारे बदले ले लो।

वह ऐसी ही बातें जाने कब तक सोचती रही। ऊंटनी बदस्तूर अविश्वसनीय तेज गति से दौड़े जा रही थी।

अब वह अपने सामने कुछ अजीब-सा पथरीला इलाका देख रही थी-ऊंची-ऊंची पहाड़ियां.. छोटे-बड़े पत्थर-जगह-जगह पड़े हुए। आगे वाले सवार ने अब अपनी रफ्तार कम कर दी थी और फिर थोड़ा आगे जाने के बाद वह सवार रुक गया।

फिर यह काफिला ही अपनी जगह रुक गया।

रेखा को ऊंटनी से उतारा गया। लंगड़ा राकल भी दो सवारों की मदद से नीचे उतर आया। उसने अपनी चादर ओढ़ी और 'राजदण्ड' को बेसाखी की तरह अपनी बगल में दबाकर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

वह एक बिल्कुल ही निर्जन-वीरान इलाका था। राकल बड़े रहस्यमय अंदाज में आगे बढ़ रहा था। फिर वो एक बड़े से पत्थर पर-जिसमें कुदरती छोटी-छोटी सीढ़ियां थीं-चढ़ गया।

अब वह घूमा और उसने अपना 'राजदण्ड' अपनी बगल से निकालकर ऊपर उठाया। यह एक खास किस्म का इशारा था। इशारा पाते ही दो सशस्त्र सवार रेखा के निकट पहुंचे और उन्होंने रेखा के हाथ पकड़ लिए तथा उसे खींचते हुए आगे बढ़ने लगे।

comicsmylife.blogspot.in

अब रेखा को सहसा स्थिति की संगीनी का अहसास हुआ। उसकी छठी इन्द्री एकाएक जागी-उसे अहसास हुआ कि उसके साथ कुछ होने वाला है। वह एकदम गुस्से में आकर चींखती-सी बोली- "राकल, यह क्या बद्तमीजी है?"

"हा...हा...हा।" लंगड़े ने एक गगनभेदी कहकहा लगाया- "जो राकल का कहना नहीं मानता-उसे अपनी गुस्ताखियों की सजा भुगतनी ही पड़ती है।"

"लेकिन तू तो मुझे किसी को पैगाम देने के लिए कैदखाने से निकालकर लाया था?"

"पैगाम तो मैं तुझे दूंगा-मौत का पैगाम ।" यह कहकर वह फिर कहकहे लगाने लगा।

"काले चिराग ने तेरे बारे में ठीक कहा था कि तू एक शैतान प्राणी है।" रेखा का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

"हां-उसने ठीक ही कहा था-मैं वाकई खब्बीस चीज हूं। अब तू मेरी शैतानियत देख।" यह कहकर वह अपने सवारों से सम्बोधित हुआ- "इसे उठाओ और 'मुक्ति द्वार' में डाल दो।"

फिर जो कुछ हुआ-जैसे पलक झपकने में हुआ। राकल का आदेश पाकर दोनों सवार उसके हाथ खींचते हुए आगे बड़े और फिर एक जगह रुककर उन्होंने रेखा के पैर भी पकड़ लिये-उसे ऊपर उठाया-डण्डा-डोली के अंदाज में उसे झुलाया और फिर एक अजीब-सी आवाज निकालकर हवा में उछाल दिया।

रेखा जब नीचे गिरी-तभी उसे अहसास हुआ कि उसे कहां फेंका गया है। वह एक बहुत बड़ा व गहरा कुआ था और वह उसमें गिरती चली जा रही थी। यह 'मुक्ति द्वार' था। इस कुयें में फेंका जाने वाला जिन्दा नहीं बचता था- "मुक्ति पा जाता था।

राकल, रेखा को कुएं में फिंकवाने के बाद, उस पत्थरनुमा चट्टान पर खड़ा बेतहाशा कहकहे उगले जा रहा था। कहकहे थे कि रुकने ही में नहीं आ रहे थे। फिर अचानक उसके कानों से गुर्राहट की आवाज टकराई और यह आवाज कहीं निकट ही थी।

राकल के कहकहे एकदम सर्द पड़ गए। वह अभी तक अपनी एक टांग पर खड़ा था। उसने घबराकर अपना 'राजदण्ड' बगल में ले लिया और पीछे मुड़कर देखा तो सारा दृश्य ही एकदम बदला हुआ था।

वे खून के प्यासे भेड़िये थे-भारी-भरकम और संख्या में अनगिनत। इन भेड़ियों ने अपनी सुर्ख लपलपाती जुबानों और नुकीले पंजों-दांतों से उन छ: के छ: सवारों को आनन-फानन उधेड़ डाला जो लंगड़े राकल के साथ आये थे। यह सब इस कदर तेजी से व अचानक हुआ था कि वे सशस्त्र सवार अपने हथियार भी सीधे नहीं कर पाये। बस यूं महसूस होता था जैसे ये खूंखार भेड़िये हवा का परदा चीरकर अचानक ही कहीं से नमूदार हो गए हों।

सवारों को खत्म करने के बाद भेड़ियों ने घोड़ों और ऊंटनियों पर हमला कर दिया। राकल 'राजदण्ड' को बेसाखी बनाये उसी पत्थर पर खड़ा इन खूंखार भेड़ियों को देख रहा था। मासूम रेखा को मौत के हवाले कर कहकहे लगाने वाले इस लंगड़े प्रेत ने शायद यह नहीं सोचा था कि दूसरों को मौत देने वाले खुद भी मौत के जाल में फंस सकते हैं।

ये भेड़िये दस-पन्द्रह न थे-सैंकड़ों की संख्या में थे और इन भेड़ियों ने उसे चारों तरफ से घेर रखा था और अब किसी भी क्षण वे उस पर छलांग लगा उसकी भी बोटियां कर देने वाले थे। राकल ने बदहवासी पर काबू पाते 'राजदण्ड' अपनी बगल से निकाला और उसे हाथों में पकड़ ऊपर उठा लिया। वह अब बड़े अजीब से शब्द बोलता जा रहा था। कोई मंत्र पढ़ रहा था शायद वह। उसकी इस हरकत पर वे तमाम भेड़िये एक लम्हें के लिए एक दम पीछे हटकर अपनी जगह स्थिर हो गयें।

पर इन भेड़ियों की आंखें राकल पर थीं और वे राकल का जैसे बड़े गौर से जायजा ले रहे थे।

राकल का मंत्रोच्चारण जारी था। फिर उसके ऊपर उठे 'राजदण्ड' में से एक फड़फड़ाता हुआ उल्लू निकला-फिर इसके बाद एक-एक करके उल्लू निकलते गए। आसमान उड़ते हुए उन्तुओं से भर गया फिर राकल की आवाज पर इन उल्लूओ ने भेड़ियों पर हमला कर दिया।

लेकिन यह हमला कामयाब नहीं हो सका।

comicsmylife.blogspot.in

वे उल्लू जैसे ही भेड़ियों पर हमला करने के लिए नीचे आते। भेड़िये उनके पंख अपने जबड़ों में दबोच लेते और उन्हें चबाकर उड़ सकने योग्य न छोड़ते। उल्लू जमीन पर गिरते और दूसरे भेड़िये उन्हें चीर-फाड़कर मौत की गोद में पहुंचा देते।

राकल अपनी तिलस्मी फौज का यह हश्र देखकर कंपकंपा उठा।

अब आकाश पर एक भी उल्लू नहीं था। सब ही जमीन पर मुड़े-जुड़े और उधड़े हुए पड़े थे और वे खून के प्यासे भेड़िये फिर उस पत्थर को अपने घेरे में ले रहे थे जिस पर राकल खड़ा हुआ था। वे भेड़िये अपनी चमकती आंखों, लपलपाती जुवानों व खुले खौफनाक जबड़ों से-बड़ी दिलचस्पी के साथ राकल को देख रहे थे। जैसे कह रहे हों-हां, भई। अगर तेरे पास अपने बचाव के लिए कोई और भी चमत्कार हो तो उसे भी आजमा डालो। हमारे पास वक्त बहुत कम हैं।

राकल के पास अब करने की कुछ नहीं था। वह बड़ी मायूसी से उन भेड़ियों को देख रहा था। वह जानता था कि अब किसी भी क्षण ये भेड़िये उस पर छलांग लगाएंगे और चीर-फाड़कर बराबर कर देंगे।"

और जैसी कि राकल की तवक्की थी, भेड़ियों ने उस पर छलांग लगाई और वह पत्थर से लुढ़कता हूआ जमीन पर आ पड़ा, लेकिन भेड़ियों ने उसे नोंचा-खसोटा या झिनझोड़ा नहीं-बल्कि मिलकर उसके हाथ-पांव अपने जबड़ों में दबाए और उसे घसीटते हूए ले चले। राकल का बाबू तो पहले ही घायल था-रेखा ने ही बैग मारकर उसे जख्मि किया था। अब इन भेड़ियों के दांतों की गिरफ्त उसकी जान निकाले दे रही थी। भेड़िये उसकी पीड़ा की परवाह किए बिना आगे बढ़ते जा रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

लंगड़ा राकल एक भारी-भरकम शख्त था। भेड़िये जब उसे घसीटते हुए थक जाते तो ताजादम भेड़िये उनकी जगह ले लेते और राकल घसीटने लगने।

राकल अब दर्द व पीड़ा के कारण अपने होश खो चुका था, लेकिन भेड़ियों को इस बात की परवाह न थी कि राकल किस हाल में है। होश में है या होश गवां बैठा है। वे सधे हुए कुत्तों की तरह अपना सफर जारी रखे हुए थे।

यूं ये खौफनाक भेड़िये-पारी बदल-बदलकर रातभर सफर करते रहे और अब सुबह के लक्षण नुमायां होने लगे थे। सूरज का किनारा क्षितिज से उभरता हुआ नजर आ रहा था। उजाला फैलता जा रहा था।

भेड़िये अब राकल को रेत पर घसीटते ले जा रहे थे। फिर अन्तत: वे भेड़िये एक जगह पहुंचकर ठहर गये। यूं लगता था, जैसे किसी ने उन्हें रुकने का इशारा किया हो! वे राकल को छोड़कर पीछे हटे और एक-दूसरे से मिलकर खड़े हो गए और जोर-जोर से हांफने लगे।

लंगड़ा राकल औधे मुंह रेत पर पड़ा हुआ था। उसका बदन जगह-जगह से जख्मी था। भेड़िये अब उसकी तरफ से कतई लापरवाह थे-मानो उन्होंने अपने शिकार को निर्देशानुसार अपनी मंजिल पर पहुंचा दिया हो।

ये सारे-के-सारे भेड़िये अब उस उल्लू पर नजर जमाये हुए थे जो सामने झोपड़ी की छत रार बैठा था। वो उल्लू इन भेड़ियों को देखते ही बेचैन हो गया था। फिर एकाएक उसने उड़ने के लिए पर खोले। उसके उड़ते ही अग्रिम पंक्ति में खड़े कुछ भेड़िये एक-दूसरे से अलग होकर खड़े हो गये।

फिर जैसे ही उल्लू ने उन पर हमला करने को नीचे उड़ान भरी-उसी क्षण दो भेड़ियों ने उछलकर उसके परों को अपने जबड़ों में दबोच लिया। फिर जैसे ही वे दोनों भेड़िये रेत पर गिरे। उनके गिरते ही दूसरे भेड़िया ने उस उल्लू को दबोच लिया-और नोच डाला।

अव चार भेडिये अपने झुण्ड से निकले और उन्होंने झोपड़ी के दरवाजे की तरफ रुख किया-जहां एक सांप कुण्डली मारे व फन फैलाये इन भेड़ियों को अपनी तरफ आते देख रहा था। वे चारों भेड़िये सांप के निकट पहुचकर एक-दूसरे से दूर हो गये।

सांप के लिए चारों भड़ियों पर एक साथ नजर रखना मुस्किल हो गया। उसे अपनी जान खतरे में नजर आने लगी। उसने धबराकर सामने वाले भेड़िये पर हंमला कर दिया। अभी वह सांप आगे बढकर उस भेड़िये को काट नहीं पाया था कि पीछे से एक भेड़िये ने उसकी दुम अपने जबड़े में ले ली । फिर बाकी के तीनों भेड़ियों को उस सांप को उधेड़ देने में कोई दिक्कत पेश नहीं आई।

उल्लू और सांप को खत्म करने के बाद जैसे भेड़ियों का काम पूरा हो गया। उन चारों भेड़ियों ने अपनी थूथनी ऊपर उठाकर अजीव-सी आवाज निकालीं और फिर एक तरफ को दौड़ लगा दी! उनके आगे निकलते ही वाकी के भेड़िये भी उन चारों के पीछे मे लिए। भेडियों के इस विशाल झुण्ड के दौड़ने की वजह से रेत उड़ने लगी।

और फिर वे सब-के-सब भेड़िया रेत के बादल में इस तरह गुम है। गये जैसे वे रेत के बने हुए थे।

रेगिस्तान के बीच यह इकलौती झोंपड़ी जो उल्लू व सांप की निगरानी में थी, वही झोपड़ी थी जिसमें बकाल ने इन्द्रजीत को कैद कर रखा था और लंगड़े प्रेत की वह कामी चुडैल बहन यहीं आका इन्द्रजीत से अपनी काम-वासना शांत कराया करती थी और उमे निचोड़कर जाती थी कि इन्द्र के लिये हफ्तों हिलना तक दुश्वार हो जाता था।

इन्द्रजीत झोपड़ी में था और उसे कुछ मालूम नही था कि उसकी झोंपड़ी के आगे क्या तमाशा हो चुका है?

सुवह का वक्त था। वह गहरी नींद सो रहा था। फिर उसके कानों में गुर्राहट की-सी आवाजें आई। यह कुछ असाधारण-सी आवाजें थीं। इस तरह की आवाजें उसने आज तक नही सुनी थीं ।

वह घबराकर उठ बैठा। फिर जय तक उसके होश-हवास वहाल हुए और वह उठकर झोपड़ी के दरवाजे पा आने के योग्य हुआ-उस वक्त तक भेड़िये अपना काम दिखाकर जा चुके थे।

दरवाजे कें सामने नाग उधड़ा हुआ पड़ा था। उससे आगे उल्लू भी जमीन पर पंख फैलाये बेजान पड़ा था।

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत इन दोनों शैतान प्राणियों का यह हाल देखकर बहुत खुश हुआ और फौरन दरवाजे से बाहर निकल आया। बाहर निकला तो उसने रेत पर किसी जानवर के पंजों के बेशुमार निशान देखे।

और फिर उसकी घूमती नजरें राकल पर पड़ी। वह रेत में मुंह दिये अंधा लेटा था। इन्द्र तेजी से उसकी तरफ बढ़ा। राकल के कपड़े फटे हुए थे। उसके शरीर पर दांतों के बेशुमार निशान थे। वह बुरी तरह जख्मी था। उसकी एक टांग घुटने से ऊपर कटी हुई थी।

यह सब क्या था? प्रेत सुन्दरी बकाल के तिलस्मी निगरान उल्लू व नाग को किसने मारा था और यह लंगड़ा शख्स कौन है? इसे किसने जस्मी किया था? रेत पर ये हजारों पंजों के निशान किस जानवर के थे? यह सुबह-ही-सुबह क्या हो गया था?

वहरहाल, कुछ भी था। इन्द्रजीत को उल्लू व नाग के मरने की बेहद खुशी थी। वह अब कम से कम झोपड़ी से बाहर तो निकल सकेगा। बेशक वह फरार होने की जुर्रत नहीं कर सकता था, लेकिन झोपड़ी के बाहर घूम-फिर तो सकेगा।

इन्द्रजीत ने बड़ी मुश्किल से उस अजनबी लंगड़े को सीधा किया-तो उसे अपनी कमजोरी का अहसास हुआ था। उसमें जैसे ताकत ही न थी। वह चाहता था कि इस बेहोश शख्स को अपनी झोपड़ी में ले जाए, लेकिन उसे तो उसे सीधा करने में ही कितनी दिक्कत आई थी, तो उसे उठाकर या घसीटकर अन्दर ले जाना उसके बस का कहां था।

वह पलटकर झोंपड़ी में आया।

उसने सुराही से कटोरे में पानी निकाला और फिर उस अजनबी शख्स के पास पहुच गया। उसने बेहोश खस्ताहाल अजनबी के चेहरे पर पानी के छिटे मारने शुरू किये।

"अरे भई! ऐ भाई! होश में आओ।" वह उसे पुकारता भी जा रहा था।

आखिरकार इन्द्रजीत उसे होश में लाने में कामयाब हो ही गया। राकल की आंखे खुली तो उसने खुद को रेत पर लेटा हुआ पाया। वह बुरी तरह घायल था। जख्मो सें टीसे उठ रही थीं। ऊपर आकाश था व सामने एक अजनबी नौजवान बैठा हुआ था। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन इन्द्रजीत ने उसे रोक दिया ताकि वह कुछ देर यू ही लेटा रहे और पूर्णतया होश में आ जाए।

"कौन हो तुम?" इन्द्रजीत ने उसे हमदर्दी से देखते हुए पूछा।

"यही सवाल मैं तुमसे करना चाहता हूं।"

"मैं एक कैदी हूं।" इन्द्रजीत ने गहरी सांस ली।

"कैदी हो।" राकल चौंका-"इस रेगिस्तान में तुम्हें किसने कैद किया है?"

"बिकाल ने।"

"ओह !" राकल अपने होंठों पर जिहा फेरकर रह गया। "क्या तुम बकाल को जानते हो?"

"क्या तुम इन्द्रजीत हो।" राकल ने उसके सवाल का जवाब न देकर उल्टा सवाल कर डाला था। इन्द्र को एक अजनबी के मुंह से अपना नाम सुनकर हैरत हुई। उसने घबराकर पूछा-"तुम कौन हो?"

"मैं राकल हूं।" राकल ने अपना परिचय कराया।

"ओह!"

"क्या तू मुझे जानता है?"

"हां-मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुम मेरी जान के दुश्मन बकाल के भाई हो।"

"तू मुझे किस तरह जानता है?" राकल ने उसे कुरेदा। "यही सवाल मैं तुमसे करना चाहता हूं।"

comicsmylife.blogspot.in

"मुझे बकाल ने तेरे बारे में बहुत कुछ बता रखा है।" "और तेरे बारे में सब कुछ मुझे काले चिराग ने बताया है।" इन्द्र उसकी आंखों में झांकते डुए बोला।

"काला चिराग!" राकल एकदम घबरा गया- "ओह, गजब हो गया।"

"क्या हुआ ?"

"इतना दिन चढ़ आया-मुझे तो सूरज निकलते ही काले चिराग को सरदार कोलाना के सामने हाजिर करना था। ये भेड़िये मुझे कहां ले आए। मैं तो समझा था कि वह सरदार कोलाना की फोज है।"

"हूं-तो वह बाहर रेत पर भेड़ियों के पंजों के निशान है। क्या तुझे भेड़ियों ने जख्मी किया है और क्या यहां बकाल के निगरानों को भी उन्हीं ने मारा है?" इन्द्रजीत ने पूछा।

"हां-ऐसा ही हुआ है।"

"बकाल, काले चिराग को यहां से जंजीरों में बांधकर घसीटते हुए ले गई थी। वह बेचारा तो रास्ते में ही दम तोड़ गया होगा।"

"वह खब्बीस (शैतान) इतनी आसानी से मरने वाली चीज नहीं। काश, वो मर गया होता तो आज मुझे ये दिन न देखने पड़ते।"

"यह सरदार कोलाना कौन है?" इन्द्र ने पूछा।

"काला निराग सरदार कोलाना का दायां हाथ है।" राकल ने बताया- "सरदार कोलाना को किसी तरह मालूम हो गया कि काला चिराग मेरी कैद में है। उसने बकाल को अगुवा करवा लिया-और बदले में काले चिराग को मांगा। आज सुबह में काले चिराग को उसके हवाले करके अपनी बहन को ले आता, लेकिन अब तो खेल ही बिगड़ गया। उसने मुझे 'वायदा-खिलाफ' समझकर जाने क्या से क्या कर डाला होगा। वह बड़े गुस्से वाला सरदार है और एक बड़ी फौज का मालिक।"

इन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा-"तो बकाल का अपहरण कर लिया गया और अब वह सरदार कोलाना के कब्जे में है। यह सुनकर मुझे खुशी हुई है।"

"तेरे लिए खुशी की बात होगी-मेरे लिए नहीं। वह मेरी बहन है। मैं उससे बहुत मुहब्बत करता हूं।"

"तूने अपनी बहन को यह नहीं सिखलाया कि दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिये-वरना अंजाम वैसा ही होता है।"

"वह तो बड़ी मुबब्बत करती है।"

"वासना पुजारिन है वो।एक कामी कुतिया है। मुहब्बत में किसी का जीना हराम कर देना क्या जायज है?"

"तो वकाल की मुहब्बत पर गर्व होना चाहिये।"

"मेरासत्यनाश हो गया और तू इसे गर्व की बात कहता है।" इन्द्र खिन्न स्वर मं बोला- "उससे कह वह अपनी दुनिया-अपने लोक के काले चिराग से प्यार की पींछे बढ़ाये और मेरी जान बख्श दे।"

अब तो खुद उसकी जान खतरे में है।"

"भगवान करे, वह मर जाये।" इन्द्रजीत के दिल से बद्दुआ निकली, लेकिन होंठों पर नहीं आई। उसे अपनी वहन का ख्याल आया। उसे भी तो बकाल अपने साथ ले गई थी वह कहां है उसके बारे में इस लंगड़े ने कुछ नहीं बताया था।

"मेरी बहन कहां है?" उसने राकल को घूरते हुए पूछा।

"कौन, रेखा?" राकल ने ठण्डा सांस लिया।

comicsmylife.blogspot.in

"हां-वह खरियत से तो है।"

"मैं नहीं जानता।" यह कहकर उसने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।

"यह कैसे हो सकता है?"इन्द्र तीखे स्वर में वोला-"राकल तू मुझसे क्या छिपा रहा है।"

"मै कुछ नहीं छिपा रहा।" राकल नजरें चुराते हुए बोला- "बस, तू यूं समझ कि वह गुम हो गई है।"

"कहां गुम हो गई है?"

"मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानता।" राकल ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिए।

तब इन्द्र को अहसास हुआ कि यह लंगड़ा जख्मों से चूर और बड़ी खस्ता हालत में है। इसे तो झोंपड़ी में ले जाना चाहिये और इसके जख्मो का कोई इलाज करना चाहिये। यह सवाल-जवाब तो बाद में भी हो सकते हैं।

"आ-राकल उठ, मेरे साथ झोपड़ी में चल। तू बुरी तरह जख्मी है ।" इन्द्र के लहजे में हमदर्दी भर आई थी।

राकल ने आभारी निगाहों से इन्द्र की तरफ देखा। उसे 'इन्सान' की महानता का अहसास हुआ। बकाल ने एक 'इन्सान' को दिल देकर अच्छा नहीं किया, लेकिन अब क्या हो सकता था। मामला बहुत आगे बढ़ गया था।

इन्द्रजीत में जितनी शक्ति थी-उससे ज्यादा शक्ति लगाकर उसने लंगड़े राकल को उठने में मदद दी-फिर वह उसे किसी-न-किसी तरह झोंपड़ी में ले आया। वह उसे उठाकर बुरी तरह हांफने लगा था।

राकल उसे खामोशी से हांफते हुए देखता रहा। कुछ देर बाद जब इन्द्र की हालत सम्भली और उसकी सांसें संयत हुई तो उसने पूछा-

"सकल तेरे जख्म कैसे ठीक होंगे?"

"वह जो वाहर, सामने उल्लू मरा पड़ा है उसे मेरे पास लाओ।" राकल बोला।

इन्द्रजीत बाहर पड़े उल्लू को पंख से पकड़कर उठा लाया। भेड़ियों ने उसका सिर व बाजू चबा डाले थे।

"ले।" इन्द्रजीत ने उल्लू उसके करीब रख दिया।

"अब कुछ देर के लिए झोंपड़ी से चला जा।'

" वह क्यो?" इन्द्र ने हैरानी से पूछा।

"मै जो अपने जख्मो का इलाज करूगा, वह तू देख नहीं पाएगा।"

"अच्छा ठीक है। मैं बाहर चला जाता हूं।" यह कहकर वह बाहर निकल गया।

इन्द्रजीत के बाहर जाने के बाद लंगड़े राकल ने उस उल्लू का दिल उसके सीने से निकालकर अपने मुंह में रख लिया और उसे पान की तरह चबाने लगा। फिर उसने उल्लू के खून से अपने हाथ भरे और वह खून अपने जख्मो पर मलने लगा।

जब उसन उल्लू का खून अच्छी तरह अपने जख्मो पर मल लिया तो उसने आवाज दी-

"आ जा-इन्द्रजीत अन्दर आ जा।"

इन्द्रजीत अन्दर आया तो वह अन्दाजा नहीं लगा पाया कि राकल ने उल्लू की लाश के साथ क्या किया है। राकल ने मृत उल्लू की तरफ इशारा करते हुए कहा-

"इसे बाहर ले जा। रेत खोदकर गाड़ दे।"

comicsmylife.blogspot.in

"मेरे पास यहा खोदने को कुछ भी नहीं है।"

"अपने हाथों से रेत हटाकर, छोटा-सा गड़ा बना और फिर इसे रेत से ढक दे।"

इन्द्रजीत ने ऐसा ही किया। बाहर ले जाकर उसने उल्लू को रेत में दबा दिया और हाथ झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ।

इन्द्रजीत वापिस झोंपड़ी में पहुंचा तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि राकल के घाव तेजी से भर रहे थे और फिर कोई आधे घण्टे में ही वी पूर्णतया स्वस्थ व सामान्य हो गया। वह बहुत खुश था और उठकर बैठ गया था।

राकल को खुश देखकर इन्द्र बोला- "देख राकल मैंने तेरे साथ दुश्मनों का-सा सलूक नहीं किया।"

"मैं मानता हूं।" राकल उसका आभारी था।

"फिर मुझे सच-सच क्यों नहीं बता देता?"

"किस बारे में?"

"रेखा के बारे में। मेरी बहन के बारे में। मुझे बता दे कि वह कहां है?"

"आह!" रेखा का नाम सुनकर राकल ने एक सर्द आह भरी और खाली-खाली नजरों से इन्द्र को देखने लगा

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इन्द्र को क्या जवाब दे। उसने सिर झुका लिया। इन्द्रजीत जवाब का प्रतीक्षक था, पर जब राकल काफी देर तक कुछ नहीं बोला तो इन्द्र ने उसे पुकारा- "राकल।"

"सकल ने अपना सिर उठाया, फिर धीरे से बोला- "जो होना था, हो चुका। अब कुछ नहीं हो सकता।"इन्द्र को उसके जवाब पर हैरत हुई। वह कुछ समझ ही नहीं पाया था। यह उसके सवाल का जवाब भी तो नहीं था। इन्द्र को लगा जैसे राकल उसे सही जवाब नहीं देना चाहता, सो उसने भी आगे कोई सवाल नहीं किया।

एक लम्बी खामोशी के बाद राकल ही बोला था- "इन्द्रजीत, क्या यह मुमकिन है कि तू कुछ देर के लिए झोपड़ी से बाहर चला जाए।"

"हां, क्यों नहीं?" इन्द्र खड़े होते हुए बोला- "लेकिन वात क्या है?"

"जब तू थोड़ी देर बाद वापिस आयेगा तो सब-कुछ जान लेगा।" राकल ने जवाब दिया।

इन्द्रजीत उसके कहने पर झोपड़ी से बाहर चला गया। वह घूमकर झोपड़ी के पीछे चला गया और फिर कुछ देर वहां खड़े रहने के बाद जब वापिस आया और झोंपड़ी मे कदम रखा तो हैरान रह गया।

लंगड़ा राकल झोपड़ी में मौजूद नहीं था।

इन्द्र पलटकर झोपड़ी से बाहर आया। उसने चारों तरफ नजरं दौड़ाई, लेकिन उसे सकल कहीं जाता हुआ भी नजर नहीं आया। हां, एक उल्लू जरूर उड़ता हुआ दक्षिण दिशा में जाता नजर आया था।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

राकल इन्द्रजीत को धोखा देकर निकल गया था।लेकिन वह इस बात से बेखबर था कि खुद उसकी किस्मत ने उसके साथ कितना बड़ा फरेब किया था। उस पर कितनी बड़ी चोट लगाई थी।

और यह बात उसे सुनहरे खण्डहर पहुंचकर मालूम हुई। वहां का नक्शा ही बदला हुआ था। सरदार कोलाना ने सुनहरे खण्डहर की ईट से ईट बजा दी थी। अब यहां कुछ न बचा था। हर चीज तबाह हो गई थी। हर तरफ तबाही फैली हुई थी और सरदार कोलाना के हरकारे राकल की घात में बैठे थे।

सुनहरे खण्डहरों में जब वह अच्छी तरह घूम लिया और उसने अपनी वर्बादी के निशान हर तरफ देख लिए तो कोलाना के हरकारे उसके सामने आ गए। अपने महल व अपने इस मायालोक की बर्बादी देखकर राकल पहले ही अधमरा हो रहा था-सरदार कोलाना की हरकतों को देखकर उसके होश ही उड़ गये।

सरदार कोलाना के हरकारों ने उसे देखते-ही-देखते जंजीरों में जकड़ लिया और फिर जिस तरह काले चिराग को ले जाया गया था-वैसे ही राकल को ले जाया गया और उसे सरदार कोलाना के सामने ले जाकर डोल दिया गया।

सरदार कोलाना ने अपने लम्बे वालों पर हाथ फेरा और मुस्कराते हुए बोला- "आओ, फरेबी!"

"सरदार कोलाना देवा काली की कसम मैंने कोई फरेब नहीं दिया।"

"देख, देवा काली की अगर झूठी कसम खाएगा तो मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं। अभी खत्म कर दूंगा।"

"मैं सच कहता हूं सरदार! मैंने तुझम जो वायदा किया था-वह मैं हर कीमत पर पूरा करता। मैं सूरज निकलते ही काला चिराग को लेकर यहां पहुंच जाता, लेकिन 'मुक्ति द्वार' पर बेशुमार भेड़ियों ने मुझ पर हमला कर दिया और मुझे घसीटते हुए ले गये। रास्ते में मैं जख्मों की पीड़ा बर्दाश्त न कर सका और बेहोश हो गया और जब मुझे होश आया तो बहुत देर हो चुकी थी। अब सरदार तू ही बता कि इसमें मेरा क्या कसूर है?"

"तेरे बारे में काला चिराग सही कहता है कि तू बड़ा 'खब्बीस' है । तूने वाकई बड़ी शानदार कहानी गढ़ी है और ऊपर से देवा काली की कसम भी खा ली है।"

"मैं सच कहता हूं सरदार! तू मेरा यकीन क्यों नहीं करता?"

"चल, कहता होगा तू सच। अब मैं क्या करू-तू वक्त पर नहीं पहुंचा, लिहाज वो हो गया जो होना चाहिये था।"

"तुने मुझे कहीं का न छोड़ा-बिल्कुल तबाह कर दिया।" राकल नें जैसे प्रलाप किया।

"तू जानता है कि काला चिराग हमारा कितना खास और महत्त्वपूर्ण आदमी है। तूने उसे क्या सोचकर कैद किया?"

"वस सरदार! गलती हो गई मुझसे। मुझे माफ कर दे।" राकल दीन भाव से बोला।

माफी।" सरदार कोलाना ने एक पेशाचिक कहकहा लगाया- "जरूर! पर तुझे सिर्फ एक ही सूरत में माफी मिल सकती है।"

"वह क्या?"

"तुझे वकाल से हाथ धोने पड़ेंगे।"

"क्या तुझे वह पसन्द आ गई है? क्या तू उससे शादी करना चाहता है, सरदार?" राकल ने तेजी से पूछा।

इस पर सरदार कोलाना ने फिर एक जोरदार कहकहा लगाया, फिर बोला-"अहमक!"

राकल ने उसे उलझी-उलझी निगाह से देखा- "मैं समझ नहीं।"

"तू समझेगा भी नहीं। मैंने तुझे अहमक यूं ही नहीं कह दिया। अरे बेवकूफ वह काले चिराग की मुहब्बत है। तुझे बकाल को उसके लिए छोड़ना होगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"यह जुल्म है।" राकल ने विरोध दर्शाया।

"और तुम्हारी बहन ने जो 'आदम की औलाद' की जिन्दगी हराम कर रखी है-वह जुल्म नहीं है क्या?"

"मैं नहीं जानता।" राकल अनजान बन गया।

"लेकिन मैं बहुत कुछ जानता हूं। मैंने एक फैसला किया है।" "

वह क्या?" राकल ने धड़कते दिल के साथ पूछा।और अब जो सरदार कोलाना ने उसे अपना फैसला सुनाया ने राकल को जैसे सांप ही सूंघ गया। वह चींखकर बोला-"नहीं! ऐसा कदापि नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता।" सरदार कोलाना ने कदरे गुस्से से कहा- "और तू कौन है एतराज करने वाला?"

"मैं तेरे इस फैसले को मानूं या न मानू-लेकिन बकाल किसी कीमत पर राजी नहीं होगी। वह तो उसकी शक्ल तक देखने को तैयार नहीं।" राकल बोला।

"उसे बुलाओ।" सरदार ने हाथ से इशारा किया।

उसका इशारा पाकर दो दासियां तेजी से वाहर निकल गई और आनन-फानन में बकाल को कलाई से पकड़कर ले आई। वकाल ने जब अपने भाई को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखा तो उसे सख्त सदमा पहुंचा। राकल ने उसे दासियों के साथ खुश-खुश आते देखा तो वह सुलग ही तो उठा। उसकी तबाही में सीधे-

उसकी इस बहन का ही हाथ था और बकाल उसे खुश नजर आ रही थी।

"सरदार कोलाना की दासियों बकाल का हाथ छोड़ दो और इज्जत के साथ तख्त पर वैठाओ।" "सरदार कोलाना ने हुक्म दिया।

आदेश सुनते ही दासियों ने फौरन उसके हाथ छोइ दिए और फिर सिर नवांते हुए उसे तख्त पर बैठने का इशारा किया, लेकिन बकाल अपनी जगह खड़ी रही।

"क्या हुआ, आगे क्यों नहीं बढ़ती, क्या तुझे इज्जत रास नहीं।" सरदार कोलाना शुष्क लहजे में वोला।"जिसका भाई वर्करों में जकड़ा हुआ उसके सामने खड़ा हो-वह किस तरह बैठ सकती है, सरदार?"

"सरदार कोलाना की दासियों! राकल की जंजीरें खोल दो।"सरदार ने तुरन्त हुक्म दिया- "बकाल का एतराज माकूल है।"

सरदार के इस आदेश का भी तुरन्त पालन हुआ। राकल को मुक्त किया गया और फिर उसे भी एक कुर्सी पेश की गई। उसे सहारा देकर कुर्सी पर बैठाया। उसके कुर्सी पर वैठने के बाद बकाल ने भी आसन सम्भाल लिया, लेकिन उसके चेहरे पर परेशानी बनी रही।

सरदार कोलाना बोला- "हमने एक फैसला किया है। तेरी गैरमौजूदगी में तेरे भाई को अपना फैसला सुनाया तो उसने कहा कि तू इस फैसले को नहीं मानेगी, इसीलिए तुझे तलब किया गया है कि तुझे भी फैसला सुनाया जाए।"

"अपना फैसला सुना।" बकाल लापरवाही से बोली।

"राकल तू बता।" सरदार ने राकल की तरफ देखा।

"सरदार कोलाना तेरी शादी काले चिराग से करना चाहता है।" राकल ने बताया।

यह सुनते ही बकाल के होश उड़ गये। वह गुस्से से बोली- "ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

"कुछ ऐसा ही अभी तेरे भाई ने भी कहा था।" अब तुम दोनों मेरी बात कान खोलकर सुन लो। सरदार कोलाना ने निर्णायक अन्दाज में कहा- "मेरा फैसला सूरज की तरह अटल है। आज रात ठीक बारह बजे देवा काली के सायवान तले तुझे और काले चिराग को शादी के बंधन में बांध दिया जाएगा।" और वह अब फिर अपनी दासियों से सम्बोधित

comicsmylife.blogspot.in

हुआ- "सरदार कोलाना की दासियों! बकाल को अपने साथ ले जाओ और शादी की तैयारियां करो।"

सरदार कोलाना के दरबार में इस वक्त जितनी दासियां हाजिर थीं-सभी ने बकाल को अपने घेरे मे लिया और उसे अन्दर ले गई। बकाल तो जैसे जड़ होकर रह गई थी। यह भी नहीं सूझा था कि कैसी प्रतिक्रिया जाहिर करे?

बकाल के जाने के बाद कोलाना, राकल से मुखातिब हुआ- "अब तू बोल, तेरा क्या किया जाए?"

"यह तू अच्छा नही कर रहा, सरदार।"

"वह इन्सान की बच्ची कहां है, जिसे तेरी बहन ने तेरी सेवा में पेश किया था?" सरदार कोलाना ने सर्द-सी मुस्कान के साथ पूछा।

"उसे मैंने 'मुक्ति द्वार' में फिंकवा दिया।" राकल ने स्पष्ट- उदिता से काम लेते जवाव दिया।

"तेरी वहन ने उसके भाई पर कब्जा कर लिया और तूने उस बेचारी को मौत के हवाले कर दिया। फिर भी तू मुझसे कहता है कि मैं अच्छा नहीं कर रहा। क्या मैं पूछ सकता हूं कि तू और तेरी बहन ने अब तक जो किया है-अच्छा किया है?"

राकल इस बात का क्या जवाब देता। उसने अपना सिर झुका लिया।

"अव तुझे एक काम करना होगा।" उसे बोलते न देख सरदार बोला।

"हुक्म कर सरदार कोलाना।" राकल का सिर अभी भी झुका हुआ था।

"शादी मे शामिल होने के वाद तुझे उस 'आदम-जात' यानि इन्द्रजीत को स्वस्थ करना होगा और फिर उसे उसकी दुनिया में छोड़कर आना होगा।"

"मुझे मंजूर है सरदार कोलाना।" राकल एकदम बोला। "यह मत समझना कि इस तरह तू फरार का रास्ता पा जाएगा। तुझे अपनी 'रूह' को गिरवी रखकर जाना होगा। जब तू मेरे हुक्म को पूरा करके वापिस आएगा तो फिर सोचा जाएगा कि तुझे माफ किया जाए या नहीं।"

"मुझे यह भी मंजूर है।"

"फिर ठीक है।" कोलाना ने कहा और फिर अपने सेवकों से बोला..."सरदार कोलाना के सेवको! राकल को इज्जत से ले जाओ। इसे खास मेहमान का दर्जा दो।"

सरदार कोलाना के छ: सेवक आगे बड़े और राकल को बड़े सम्मान के साथ मेहमान खाने की तरफ ले गए।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

राकल के जाने के वाद सरदार कोलाना ने दरबार में मौजूद अपने सेवकों को जाने का इशारा किया और दरबार खाली हो गया।

अब वहां सरदार कोलाना अकेला रह गया था।

उसने तीन बार ताली बजाई। ताली की आवाज सुनकर 'वो' एक खम्बे की आड़ से निकला और मुस्कराता हुआ सरदार कोलाना के सामने आ खड़ा हुआ। सरदार कोलाना ने उसे अपने करीब ही मसन्द पर बैठा लिया। सरदार कोलाना के करीब बैठने का सम्मान यहां सिर्फ उसी को प्राप्त था। 'वो' सरदार कोलाना का दिमाग था..उसका दायां हाथ था...उसका सब कुछ था। 'वो' काला चिराग था। 'काले चिराग' तुझे बकाल मुबारक हो। आज की रात वह तेरी हो जाएगी।" सरदार ने मुस्कराते हुए कहा।

"मै तेरा गुलाम। तेरा शुक्रगुजार हूं।" काले चिराग ने आदरपूर्ण लहजे में जवाब दिया था।

"एक बात बता-मैंने जो किया ठीक किया।"

"इन्द्रजीत को मैं खुद उस दुनिया में छोड़कर आना चाहता हूं।" काले चिराग ने अपनी इच्छा जाहिर की।

"तेरा क्या ख्याल है कि उसकी 'रूह' गिरवी होने के वावजूद वह मेरे साथ धोखा करेगा।"

"उसने इन्द्रजीत की बहन को 'मुक्ति कूप' में फिंकवा दिया है। इस बात की क्या जमानत होगी कि वह उसे वाकई उस दुनिया तक छोड़ आएगा।" काले चिराग ने शंका व्यक्त की- "अगर उसने रास्ते में हाथ दिखा दिया तो फिर क्या होगा?"

"हां, यह बात भी तू ठीक कहता है। उस खब्बीस' (धूर्त शैतान) का कोई भरोसा नहीं। यूं भी इस अय्यार का जिन्दा रहना ठीक नहीं। फिर भी तेरा क्या ख्याल है-खत्म कर दिया जाए उसे?"

"हां। यही मुनासिब है।" काले चिराग ने सहमति दर्शाई- "अगर वह जिन्दा रहा तो बकाल को बहकाता रहेगा। मेरी जान का दुश्मन तो वह पहले ही था-अब तू भी उसकी फहरिस्त (लिस्ट) में आ गया है। माफी की सूरत में कुछ समय बाद फिर सिर उठाएगा। इसलिए बेहतर तो यही कि इस नाग के फन उठाने से पहले ही उसका फन कुचल दिया जाए।"

"ऐसा ही होगा।" सरदार कोलाना ने संजीदगी से सहमति दर्शाई-"लेकिन तू जानता है कि उसे खत्म करने के लिए काली देवा से इजाजत लेनी होगी।"

"मैं समझता हूं कि यह इजाजत बड़ी आसानी से मिल जाएगी-क्योकि उसके जुर्मों की पत्री काफी लम्बी है।" काले चिराग ने कहा।

"तू बेफिक्र हो जा। मैं देवा काली के दरबार में जाकर इजाजत नामा ले आऊंगा। तू तब तक अपनी दिलरूबा के साथ जश्न मना।" सरदार हंस दिया था।

"मैं तेरा गुलाम...तेरा शुक्रगजार हूं।" काला चिराग बोला। "जा कुछ देर आराम कर ले।"

काला चिराग जाकर सो गया।और फिर जब वह सोकर उठा तो सूरज ढल रहा था। साये फैल रहे थे। देता काली के सायबान वाले-में लोग एकत्रित होने शुरू हो गये थे।

और यह देवा काली का सायबान भी अजीब चीज था।

चार स्तम्भ खड़े थे। इन स्तम्भों पर न कोई छत थी और न ही सायबान नाम की कई चीज। चारों स्तम्भों के बीच एक छोटा-सा 'होज' था। इस हौज में पानी न था, आग भरी हुई थी। इस हौज की आग आज तक नहीं बुझी थी। बस, इसी स्थान का नाम देवा काली का सायवान था।

अन्धेरा होते ही इस हौज की आग से बेशुमार मशालें रोशन की गई और उन्हें मैदान में जगह-जगह गाड़ दिया गया। यूं शादी के समारोह-आयोजन का प्रारम्भ हुआ।

comicsmylife.blogspot.in

जब अन्धेरा खूब गहरा हो गया तो जंजीरी नाच' शुरू हुआ। सिर्फ लोहे की जंजीरें पहने कद्दावर बलिष्ठ खूबसूरत औरतें मैदान में उतरी और उन्होंने जंजीरों के एक-दूसरे से टकराकर 'जंजीरों के नाच' की शुरुआत की। एक खास अंदाज में उठते हुए कदम-जंजीरों की झंकार ओर कद्दारवर औरतों के खूबसूरत चमकते बदन-देखने वालों को मंत्र-मुग्ध किए दे रहे थे।

जब एक ग्रुप नाचते-नाचते थक जाता तो उसकी जगह नया ग्रुप ले लेता। चौदहवीं का चांद जब पूरे आबो-ताव व यौवन के साथ आकाश के माथे पर झूमर बनकर जगमगाने लगा और बारह बजने को हुए तो सरदार कोलाना ने एक मशाल उठाकर दुल्हा-दुल्हन को देवा काली के सायबान में लाने का इशारा किया।

थोड़ी देर बाद जब सरदार कोलाना की नजर देवा काली के सायबान की तरफ उठी तो वह यह देखकर परेशान हो गया कि वहां सिर्फ काला चिराग था। यह बड़ी अशुभ व बदशुगनी की बात थी। देवा काली के सायबान में तो दूल्हा-दुल्हन एक साथ जाकर खड़े होते थे।

फिर यह बकाल आखिर कहां गई?

सरदार कोलाना अपने आसन से उठा ता उसे उठता देखकर नाचने वाली औरतें ठहर गई। पत्थर हो गई। उन्होंने भी काले चिराग को देवा काली के सायबान में अकेले खड़े देख लिया था।

मैदान में नाच रुकते ही सन्नाटा छा गया। मशालें जल्दी-जन्दी जाने लगीं। मशालों की रोशनी खत्म हो गई, सिर्फ चांद की रह गई।

सरदार कोलाना तेज-तेज कदम उठाता देवा काली के सायवान के पास पहुंचा। काले चिराग का चेहरा, हौज में दहकती आग की वजह से लाल हो रहा था। उसके चेहरे पर गम व रोष के बादल छाये हुए थे।

"तू अकेला क्यों है ?" सरदार ने पूछा।

"वह चली गई। मेरी वकाल चली गई।"

"क्या कहता है। सरदार कोलाना के इलाके से कोई कैसे फरार हो सकता ह। यह वात तू अच्छी तरह जानता है ना ?"

"सरदार कालाना, तेरा गुलाम सव कुछ जानना है।" वह फरार नहीं हुई। काश वह फरार हो जाती।"

"फिर क्या हुआ?" सरदार चौंका।

"वह 'पिघल' गई। खत्म हो गई वह।" काले चिराग ने दर्दनाक खबर सुनाई।

"पिधल गई।" देवा वाली की कसम यह उसने क्या बेवकूफी की?" सरदार कोलाना परेशान हो गया।

"उसे मेरी सूरत से भी नफरत थी।" काला चिराग व्यथित स्वर में बोला-"वह भला मुझसे शादी क्यों कर लेती? यह मेरी भूल थी।"

"आ मेरे साथ। मुझे दिखा-कहां है वो?"

काला चिराग, सरदार कोलाना को उस कमरे में ले गया जहां बकाल 'पिघली' हुई पड़ी थी। बकाल का सुहाग जोड़ा मसहरी के एक तरफ पड़ा था-और महल में फर्श पर गहरे सुर्ख रंग का द्रव्य था, जैसे पिघली हुई आईसक्रीम, लेकिन यह द्रव्य बिल्कुल 'पारे' की तरह था यानि कि उसे मुट्ठी में भरें तो मुट्ठी में कुछ न रहे और हाथ भी खराब न हो।

बकाल ने अपनी जान अपने हाथों ले ली थी। काले चिराग से शादी से बचने के लिए आत्महत्या कर ली थी।

काला चिराग बेहद उदास था। अगर उसे यह मालूम होता कि बकाल उससे इस कद्र नफरत करती है कि 'पिघलने' की यातना तो झेल लेगी, लेकिन उससे शादी नहीं करेगी तो वह शादी की पेशकश को वापस ले लेता। यूं वकालं के जिन्दा रहने की सूरत में वह कम से कम उसकी शक्ल तो देख सकता था।

comicsmylife.blogspot.in

अब तो सारा खेल ही खत्म हो गया था।

बहरहाल, इस मायावी लोक की रस्म के अनुसार चांदी की एक गागर मंगवाई गई। काले चिराग ने उस 'पिघले' द्रव्य को गागर में उंडेला, उसके मुंह पर कपड़ा बांधा और इस गागर को अपने कंधे पर उठाकर सरदार के महल से निकलकर देवा काली के सायवान की तरफ बढ़ा।

देवा काली के सायवान में पहुंचकर काले चिराग ने गागर हौज की दीवार पर रख दी और फिर उसने इस जलते हुए हौज के सात चक्कर काटे। सात चक्कर पूरा करने के वाद उसने गागर उठाई और

उसे एक बार फिर अपने कन्धे पर रखकर चांद की दिशा में चल पड़ा।

उसके पीछे चार घुड़सवार चल रहे थे जो जरूरी सामान लिए हुए थें।

काला चिराग, बकाल के द्रव्य वाली गागर को लिए तव तक चलता रहा, जब तक चांद दुबलाने नहीं लगा। जव चांदनी फीकी पड़ने लगी तो वह एक रेत के टीले के निकट पहुंचकर रुक गया।

उसे रुकता देखकर वे चारों घुड़सवार भी फौरन उसके पास पहुंचकर घोड़ों से उतर गए। काला एक जगह चुनकर गागर अपने कन्धे से उतारकर रख चुका था। उन चारों घुड़सवारों ने रेत में लोहे की को जैसी लम्बी कीलें गाड़ी। इन कीलों में अपने साथ लाई जंजीरें अंधी और फिर इन चारों जंजीरों के सिरे कीलों के वीचो-बीच रखी हुई गागर की गर्दन में कस दिये। फिर वे चारों पीछे हट गये व एक कतार में सिर झुकाकर खड़े हो गये।

काले चिराग ने घुटनों के बल बैठकर अपनी मुट्ठी में रेत भरी और वह रेत अपने सिर में डाल ली। फिर उसने अपने हाथ पीछे करके कहा- "लाओ...।"

एक घुड़सवार आगे बढ़ा और एक बेलचा काले चिराग के हाथों में थमा दिया। काला चिराग बेलचा हाथ में लेकर खड़ा हो गया। फिर उसने वह बेलचा जोर से गागर पर मारा और सात कदम पीछे हटकर खड़ा हो गया।

बकाल तूने जिससे मुहब्बत की वह तुझसे नफरत करता रहा और जिसने तुझसे मुहब्बत की उससे तू नफरत करती रही और यही नफरत तुझे आसमानों में ले गई। तुझे क्या मिला-यह अब तू अच्छी तरह जान गई होगी। काश तुझे जिन्दगी गंवाने से पहले अक्ल आ गई होती। तुझे सच्ची मुहब्बत की पहचान हो गई होती। मैं तुझसे आज भी मुहब्बत करता हू और जिन्दगी भर इसी तरह करता रहूंगा। तू मेरे दिल में, मेरी आंखों में, मेरे ख्यालों में जिन्दा रहेगी। चांद-सूरज के मालिक से मैं तेरी मुक्ति की दुआ करता हूं।"

यह कहते-कहते उसकी आंखों से दो आंसू टपके और रेत में लीन हो गए।

फिर वह आगे बढ़ा। उसने गागर के निकट पहुंचकर बेलचे से गागर पर रेत डाला। सात वार रेत डालने के बाद वह पीछे हटा और बेलचा उस घुड़सवार के हाथ में दे दिया जिससे लिया था। इसके वाद वह एकतरफ सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

वे चारों घुड़सवार आगे बढे। उन चारों के हाथ में वेलचे थे।

वे बेलरों में रेत भर-भरकर उस गागर पर डालने लगे। थोड़ी ही देर में जंजीरें रेत मे दब गई और रेत गागर की गर्दन तक पहुंच गई। दफनाने की रस्म पूरी हो चुकी थी।

एक घुड़सवार ने अपना घोड़ा काले चिराग को पेश किया। काला चिराग उस पर सवार हो गया। वह घुड़सवार अपने एक साथी के साथ उसके घोड़े पर सवार हो गया था ओर यू वापसी का सफर शुरू हो गया।

□□□

□□□

comicsmylife.blogspot.in

सूरज उदय होने तक वे अपने इलाके में पहुंच गए।

सभी उन्हें अपने सामने से एक घुड़सवार बहुत तेजी से घोड़ा दौड़ाता आता नजर आया। जब वह निकट आया तो काले चिराग ने देखा कि वह सरदार कोलाना का खास मुहाफिज था-और उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"क्या हुआ?" काले चिराग ने पूछा।

"काला चिराग जल्दी चल, तुझे सरदार ने तलब किया है । वह काफी देर से तेरा प्रतीक्षक है।" वह हरकारा बोला।

"क्या तुझे इस इंतजार की वजह मालुम है?" कुछ सोच पूछा था काले चिराग ने।

"वही खब्बीस।" हरकारे ने जवाब दिया।

"क्या लंगड़े राकल ने कोई गड़बड़ की है?" काले चिराग ने उसका इशारा समझ, जानना चाहा।

"उस खब्बीस ने सरदार पर हमला किया और निकल गया।" हरकारे ने वताया।

"सरदार जख्मी तो नहीं हुआ।"

"हाथ जख्मी हुए हैं। आंखे बच गई।"

"ओह !" काला चिराग पहले ही क्या कम उदास था-इस सूचना ने उसे और भी उदास कर दिया। उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगाइ और फिर जैसे हवा में उड़ता हुआ सरदार कोलाना के महल पर पहुंच गया।

काले चिराग को कमरे मे आते देखकर, सरदार कोलाना ने हाथ के इशारे से दास व दासियों को कमरे से चले जाने का इशारा किया। वह एक ऊंची कुर्सी पर वैठा था और काले चिराग को देखकर मुस्करा रहा था।

"परेशान मत होओ। मै ठीक हूं।"

"वह आखिर कार अपनी शैतानियत दिखाने से बाज नहीं आया। आखिर यह सब हुआ कैसे ?" काले चिराग ने चिन्तित लहजे में पूछा।

"तेरे जाने के बाद जब मैंने बकाल के 'पिघलने' की इतला उस तक भेजी तो वह अपने कमरे में नहीं था। उसके गायब होने की इतला पर मैं परेशान हो गया। मैं यह देखने के लिए कि मामला क्या है, अपने कमरे से बाहर आया तो वह मेरी घात में था। बस, वो अचानक मुझ पर हमलावर हुआ। उसके हमलावर होते ही अचानक मेरी नजरें उस पर पड़ी ओर मेरे हाथ आंखों पर चले गए। मेरी आंखें बच गई। हां, हाथ जख्मी हो गए। खैर, वो बचकर कहां जाएगा? बहुत हो गई। अब हमें देवा काली के दरबार में जाना होगा।"

"पहले उसे 'सुनहरे खण्डहरों' मं न तलाश कर लें।" काले चिराग ने सुझाव दिया।

"अब्बल तो वो वहां जाएगा नहीं। अगर गया भी तो वहां उसका हाथ आना मुश्किल होगा-।" सरदार कोलाना ने कुछ सोचते हुए कहा।

"क्या पता हाथ आ ही जाए। हमें वहां जाकर देखना चाहिए। हाथ अगर न भी आया, तो यह अंदाजा तो हो ही जाएगा कि वो नहीं है। देवा काली को बताने में आसानी होगी!" काला चिराग बोला।

"तूने देवा काली को क्या समझा है?" सरदार कोलाना को गुस्सा आ गया।

"मैं तेरा गुलाम-मेरा यह मतलव न था।" काले चिराग ने फौरन सिर झुका लिया।

"अब तू इन बातों को छोड़ और देवा काली के दरबार में चलने की तैयारी कर।" सरदार ने हुक्म दिया।

"आज ही जाना होगा" काले चिराग ने पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

"हां।"

"तेरे हाथ जख्मी हैं, सरदार कोलाना।" काले चिराग ने चिन्ता व्यक्त की।

"इससे क्या फर्क पड़ता है?" सरदार कोलाना ने जवाब दिया। फिर कुछ सोचते हुए बोला- "ये जख्मी हाथ गवाही के काम आएंगे।"

"तू ठीक कहता है। तो मैं जाने के लिए सवारी का इन्तजाम करवाता हूं।" यह कहकर काला चिराग बैठक से बाहर आ गया। थोड़ी देर बाद ही वे तेज रफ्तार ऊंटों पर सवार देवो काली

के 'अग्नि मन्दिर' की तरफ उड़े जा रहे थे।

⌟⌟⌟

⌟⌟⌟

comicsmylife.blogspot.in

उड़ा तो 'वो' भी जा रहा था।

लेकिन उसका रुख 'सुनहरे खण्डहरों' की तरफ न था। वो उस रेगिस्तान की तरफ जा रहा था, जहां इन्द्रजीत की झोपड़ी थी। उधर काला चिराग और सरदार कोलाना-देवा काली के दरबार में पहुंचे तो इधर लंगड़ा राकल इन्द्रजीत की झोपड़ी की छत पर आ बैठा।

इन्द्रजीत अपनी झोपड़ी में सो रहा था। उसके पास काम ही क्या था। खाना और सो जाना। इस वक्त भी वह खाना खाकर सोया था। अचानक उसे यूं महसूस हुआ जैसे कोई भारी पक्षी उसके सीने पर आ बैठा है।

वह हड़बड़ाकर उठ गया।

उसने झोपड़ी में चारों तरफ देखा। कहीं कोई पक्षी न था। शायद वह खाब देख रहा था। वह उठकर खड़ा हो गया और अपनी झोपड़ी से बाहर निकल आया। जब से इस झोपड़ी के निगरान-उल्लू और नाग-मरे थे, तब से उसे झोपड़ी से निकलने में कोई दिक्कत नहीं थी। यह आजादी मिले अभी दिन ही कितने हुए' थे-और वह अब यही सोचता रहता कि जरा उसकी सेहत व ताकत बहाल हो जाए तो वह यहां से जाने के बारे में सोचे।

बाहर निकलकर उसने सामने दूर तक नजर डाली। न था। बस रेत के बबूले नाच रहे थे। वह यूं ही टहलता हुआ झोपड़ी के पीछे चला गया।

इन्द्रजीत के झोपड़ी के पीछे जाते ही वह उल्लू नीचे उतरा और झट से झोपड़ी के दरवाजे में दाखिल हो गया। इन्द्रजीत झोपड़ी का चक्कर काटकर वापिस आया। उसे प्यास महसूस हो रही थी। वह दरवाजे में दाखिल होकर जैसे ही सीधा खड़ा हुआ तो राकल को अपने सामने देखकर आश्चर्यचकित रह गया राकल तरह हांफ रहा था, जैसे कहीं बहुत दूर से दौड़ता हुआ आया हो। "राकल तू।" इन्द्रजीत ने हैरान होकर कहा- "तू उस वक्त कहां गायब हो गया था?"

"गायब होना और हाजिर होना हमारे लिए कोई मसला नहीं है।" राकल बोला- "मैं अब तुझसे आखिरी मुलाकात करने आया हूं।"

"पर क्यों?"

"इन्द्रजीत, मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। मैं जानता हू कि मेरा बुलावा किसी भी वक्त आ सकता है। सरदार कोलाना अब तक देवा काली के दरबार में पहुंच चुका होगा। मैंने जो कुछ किया है-उसकी सजा बहरहाल मुझे भुगतनी ही होगी। मुझे हर कीमत पर 'पिघलना' होगा।"

"पिघलना क्या मतलब?"

"तू नहीं समझेगा। जो कह रहा हूं तू बस सुनता जा।" राकल ने गहरे-गहरे सांस लेते हुए कहा- "तूने पूछा था कि तेरी बहन रेखा कहां है-और मैंने तुझे गोल-मोल-सा जवाब दे दिया था-यही कहा था कि वह गुम हो गई है।"

"हां। मुझे याद है। तूने यही कहा था और फिर इससे पहले कि हम इस बाबत और बात करते, तू गायब हो गया था।

"इन्द्रजीत!" राकल ने उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा- "एक बात बता। बकाल तेरे लिए क्या है?"

"बकाल मेरे लिए आग है जो मुझे जलाती है। वह दोधारी तलवार है जो मेरे वजूद को रक्त-रंजित करती है। वह गले में फंसी हई हड्डी है जिसे निगलना आसान नहीं और उगलना भी मुश्किल हैं।"

"इन्द्रजीत, तेरी आग अपनी ही आग में जल मरी। तेरी दोधारी तलवार खुद को लहुलूहान कर बैठी।" राकल के चेहरे पर पीड़ा के भाव उभर आए थे।

"मैं नहीं जानता कि तेरा मतलब क्या है?"

"नहीं जानता तो जान ले कि तेरी बकाल 'पिघल' गई। उसने खुदकशी कर ली।"

comicsmylife.blogspot.in

"देवा काली तेरी कसम-मैंने जो कुछ किया है उसे अच्छी तरह जानता हूं। मैंने तेरे बनाए हुए कानून को तोड़ा है और मेरे गुनाहों व जुर्मों की फहरिस्त खासी लम्बी है। मुझे हर सूरत में 'मरना' होगा। मैं इसके लिए तैयार हूं।" यह कहकर उसने पिंजरे में अपने पंख फड़फड़ाये।

"तू खुद 'पिघलना' पसन्द करेगा या तुझे 'पिघलाया' जाए। जिन्दगी ले ली जाए तुझसे।" देवा काली की आवाज गूंजी।

"खुद अपनी जान देना मेरे बस का नहीं।" राकल की आवाज बड़ी मुश्किल से निकली थी।

"ठीक है।" देवा काली ने कहा व फिर सरदार और काला चिरगा से पूछा- "तुम दोनों में से कोई यह काम करना चाहेगा?" "नहीं देवा काली।" उन्होंने समवेत स्वर में इंकार किया था। "ठीक है, फिर मैं बंदोबस्त करता हूं।" देवा काली ने कहा और फिर वह निकट खड़ी एक दासी से मुखातिब हुआ- "इसे पिघलाने की तैयारी करो...।"

देवा काली का हुक्म सुनकर वह दासी आगे बड़ी। गर्वित चाल चलती हुई पिंजरे के निकट आई। पिंजरे की खिड़की खोलकर उसने उस उल्लू को पकड़ लिया और खींचकर बाहर निकाल लिया।और अब वह उसके पंख पकड़कर बड़े इत्मीनान से चलती देवा काली के सामने आई देवा काली के सामने बड़े सम्मान झुकी और सीढ़ियां चढकर उस विशाल ऊंची 'शमा' हुई निकट पहुंच गई।

"इस खब्बीस को नीचे रख दे।" देवा काली ने हुक्म दिया।

देवा काली हुक्म दिया। दाशी ने चट-चट करके उल्लू के दोनो 'बाजू'(पंख)तोड़ दिये और उसे 'शर्मा' के नीचे रख दिया और खुद फौरन ही पीछे हट गई।

वह विशल शर्मा जरा तिरछी हुई और एकदम से बहुत सारा मोम जैसा द्रव्य उस उल्लू पर गिरा, सीधी हो गई। वह द्रव्य देखते-ही-देखते जम गया और उसने सफेद रंग अपना लिया। ऐसा लगता था जैसे वह उल्लू सफेद बर्फ का बना हो।

"उठा ले इस खब्बीस को।" देवा काली की आवाज गंजी। दासी ने झुककर दोनों हाथों से उसे उठा लिया। वह सीढ़ियां उतरकर सरदार कोलाना और काले चिराग की तरफ बड़ी। उसने बारी-वारी से उन दोनों को वह सफेद उल्लू देखने को दिया। उन दोनों ने उसे अपने हाथ में लेकर अच्छी तरह देखा और फिर दासी को वापिस कर दिया।

दासी ने उस सफेद उल्लू को एक छोटे-से चबूतरे पर रख दिया। "नाचो...।" देवा काली ने हुक्म दिया।

वह दासी हुक्म सुनते ही तेजी से दौड़ती हुई सीढ़ियों के नजदीक आई और फिर लहराकर नाचने लगी। उसके नाच शुरू करते ही तमाम स्तम्भों के साथ खड़ी हुई दासियां भी लहराकर देवा काली के सामने आ गई। वे सबकी सब गहरे सुर्ख रंग के लिबासों में थीं। उनके बल खाते गोरे बदन तलवारों की तरह चमकने लगे।

सरदार कोताना और काला चिराग के लिए यह नजारा इतना दिलकश था कि वेतो जैसे पलकें झपकाना ही भूल गये। फिर उनको होश उस वक्त आया जब देवा काली की कर्कश आवाज गूंजी- "बस।"

इस आवाज के साथ ही सारी दासियां जहां व जिस अंदाज में थीं-ठहर गई। फिर वे हवा के तेज झोंके की तरह अपनी-अपनी जगह पर पहुंच गई। अब वहां वह अकेली दासी ही रह गई थी जिसने राकल के पिंजरे से खींचकर निकाला था।

उसने अपने हाथ ऊंचे करके एक बार ताली बजाई। फिर हर दासी-एक-एक बार ताली बजाती गई। जब यह ताली की आवाज अन्तिम स्तम्भ--जो दरवाजे के निकट था-पर गूंजी तो वह दरवाजा खुला और दो लम्बे कद के गुलाम अन्दर दाखिल हुए। एक के हाथ में चांदी का गागर थी और दूसरे के हाथ में एक मशाल।

चांदी की गागर उस सफेद उल्लू को हटाकर उस छोटे-से चबूतरे पर रखी गई। फिर उस उल्लू को दोनों गुलामों ने अपने हाथों में उठा लिया। दासी वह मशाल लेकर सीढ़ियों की तरफ बढी। फिर उसने बुझी हुई मशाल को हाथ ऊंचा करके 'शमा' की 'लौ' से जलाया और तेजी से भागती हुई उन गुलामों के पास आई। उसने उस जलती हुई मशाल को उस जड़ उल्लू के नीचे रखा। मशाल का शोला इतना तेज था कि उसकी आच दिखाते ही वह उल्लू पिघलने लगा और देखते-ही-देखते 'पिघलकर' नीचे रखी हुई गागर में समा गया। तब उस गागर के मुंह पर एक काला कपड़ा बाध

comicsmylife.blogspot.in

दिया गया।

"इस खनीस को ले जाओ और इसकी बहन बकाल के नजदीक इसे भी जंजीरें पहनाकर दफना दो।" देवा काली ने सरदार कोलाना से कहा।

ये सुनकर वे दोनों उठे। काले चिराग ने उस गागर को अपने कंधे पर रख लिया और फिर वे दोनों देवा काली के 'अग्नि मन्दिर' से बाहर निकल आए। उनकी ऊंटनियां तैयार ही थीं। वे दोनों अपनी-अपनी ऊंटनी पर सवार हो गए। गागर काले चिराग ने अपनी गोद में रख ली थी। यूं वे दोनों खुश-खुश अपने इलाके की तरफ चल दिए।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत की झोपड़ी से निकलते ही हवा तो खैर 'वो' भी हो गया था। उसे यूं महसूस हो रहा था जैसे वह खुद न उठ रहा हो-कोई उसे उड़ाये ले जा रहा हो।

उसके कानों से निरन्तर देवा काली की कर्कश आवाज टकरा रही थी-

"राकल आ-राकल आओ।"

और फिर।

इस आवाज को सुनते-सुनते उसे यूं महसूस हुआ जैसे किसी ने अचानक उसके बार पकड़कर किसी छोटे-से दरवाजे में धकेल दिया हो और फिर उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। काला बादल-सा आ गया।

"देवा काली-तेरी कसम-राकल आ गया है।" एक ऊंचे कद का शख्त दरवाजे से अन्दर दाखिल हुआ। उसके हाथ में कोई चीज लटकी हुई थी-जो काली चादर से ढकी हुई थी।

"इसे इधर ले आ।" एक कर्कश आवाज आई।

वह एक लपलपाता शोला था। इm शोरने में एक छवि-सी लहराई थी और यह -आवाज भी वहीं से आई थी।

यह देवा काली का दरबार था।

एक बहुत बड़ा हॉल-जिसमें बेशुमार स्तम्भ थे। हर स्तम्भ के साथ एक दासी खड़ी हुई थी। सामने ही एक बहुत बड़ा स्टेज था। इस स्टेज पर बारह फुट ऊंची और तीन फुट मोटी एक शमां (मोमबत्ती) स्थापित की। यह शमां सारी की सारी सोने की बनी हुई थी। यह शमां प्रकाशमान थी और इसकी 'लौ' भी खासी बड़ी थी।

"लौ' के लपलपाते इस शोले में एक चेहरे की छवि दिखाई देती थी और इसी शोले से कर्कश अवाज आती थी।

यह देवा काली था।

सरदार कोलाना...और काला चिराग संगमरमर के फर्श पर आलती-पालती मारे बैठे थे। यह पूरा हॉल उसकी दीवारें, उसके तमाम स्तम्भ संगमरमर के थे। इस दरबार की अपनी एक छटा, अपना एक सौन्दर्य था, जिसे देखकर-देखने वाला मंत्र-मुग्ध-सा रह जाए।

देवा काली का हुक्म सुनकर वह देवकाय शख्स आगे बढ़ा और उसने काली चादर से ढकी चीज को संगमरमर के चबूतरे पर रख दिया।

"चादर हटा।" शोले से आवाज आई। सबने उसका चेहरा देखा। शमां की 'लौ' में हरकत हुई थी-वह जरा-सा लहराई थी-उसी में वह छवि दिखाई दी थी-उसी से आवाज आई थीं।

देवा काली के आदेश का पालन करते हुए उस देतकाय गुलाम ने चबूतरे पर रखी उस 'शे' से चादर एकदम हटा दी। यह एक पिंजरा था-जिसमें एक उल्लू बन्द था। उस देवकाय शख्त ने वह काली चादर अपने सिर पर 'साफे' की तरह बांधी और उलटे कदमों वापिस हो गया।

अब हॉल में सरदार कोलाना, काला चिराग और दासियों के सिवाय कोई न था। सरदार और काले चिराग की नजरें 'शमा' की 'लौ' पर थीं। पिंजरे में बन्द उल्लू एक टांग पर सीधा खड़ा था।

"राकल, क्या तू जानता है कि तूने और तेरी बहन बकाल ने क्या हंगामे खड़े कर रखे हैं?" देवा काली की तीखी आवाज सुनाई दी और साथ ही शमा की 'लौ' में उसके चेहरे की छवि लहराई- "खैर, यहां बकाल का क्या जिक्र? वह खुद अपने हाथों अपनी जिन्दगी गवां बैठी है। उसने अपने किए की खुद सजा पा ली। मगर अब तू बता। तेरे जुर्मों की पत्री भी कुछ कम नहीं हैं। तेरे साथ क्या किया जाए? तू इन दोनों को तो देख ही रहा है। ये दोनों मुझे तेरे बारे में बहुत कुछ बता चुके हैं। इनके बताए की रोशनी में अब तुझे सजा भुगतनी होगी। क्या तू इसके लिए है? तैयार अगर नहीं भी होगा, तब भी कोई बात नहीं। मैं तेरी गैर हाजिरी-में ही अपना फैसला सुना चुका हूं। अब तुझे भी खुद अपनी जान देनी होगी।"

comicsmylife.blogspot.in

खुश तो इस वक्त इन्द्रजीत भी था।

उसकी ऊंटनी हवा से वातें करती उड़ी जा रही थी और इन्द्रजीत इस नर्क से निकलकर अपनी दुनिया में पहुच जाने की कल्पना की खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

फिर जाने क्या हुआ कि उसकी तूफानी वेग से दौड़ती हुई ऊंटनी दौड़ते-दौड़ते एकाएक रुक गई। ऐसा लगता था जैसे किसी ने अचानक उसके पैर पकड़ लिए हों। इन्द्रजीत को एक जोरदार झटका लगा और वह ऊंटनी से नीचे आ गिरा।

और जब वह अपने कपड़े झड़ता उठा तो उसे अपने सामने चार जंजीरों से बंधी एक गागर दिखाई दी। यह बड़ा ही आश्चर्यजनक दृश्य था।

लोहे की चार मोटी कीलें, उनसे बंधी हुई जंजीरें, बीच में रखी गागर और इन चार जंजीरों से बंधी हुई गागर की गर्दन। गागर के मुंह पर लिपटा हुआ काला कपड़ा और चारों तरफ वीरान निर्जन रेगिस्तान। ऊंचे-नीचे रेत के टीले। तेज चलती हवा।

काले चिराग ने हालांकि इतनी रेत डाली थी कि जंजीरें रेत में दब गई थीं और गागर की महज गर्दन नजर आ रही थी, लेकिन अब उस पर से काफी रेत उड़ चुकी थी। शायद रेगिस्तानी तेज हवाओं ने उसकी रेत उड़ा दी थी। जंजीरें साफ नजर आ रही थी और गागर आधी रेत में दबी हुई थी।

इन्द्रजीत की समझ में नहीं आया कि क्या चीज है? इस गागर को यूं जंजीरों से क्यों बांधा गया है और इसके मुंह पर कपड़ा क्यों लिपटा हुआ है? पहला ख्याल यही आया था कि आगे बढ़कर देखना चाहिये कि कहीं इस गागर में खजाना तो नहीं छिपा हुआ है। दौड़ती हुइं ऊंटनी का अचानक यहां ठक जाना क्या अर्थ रखता है? शायद किस्मत उस पर मेहरबान हो गई है और उसे किसी विपुल खजाने का स्वामी बनाने पर तुली हुई है।

उसने दो कदम गागर की तरफ बढ़ाए-फिर उसे ऐसे ही ऊंटनी का ख्याल आया। उसने पीछे मुड़कर देखा व सहमकर रह गया। ऊंटनी का दूर तक पता नहीं था। वह वापिस पलटकर उस जगह जहां ऊंटनी खड़ी हुई थी। वहां से कहीं आगे जाने के निशान न थे। ऊंटनी जिधर से आई थी, उधर रेत पर अलबत्ता ऊंटनी के पैरों के निशान मौजूद थे। ऐसा लगता था जैसे ऊंटनी को किसी ने खड़े-खड़े उठा लिया हो।

दिल दहला देने वाली स्थिति थी। अब वंह अपनी दुनिया में कैसे पहुंचेगा? राकल ने कहा था कि यह ऊंटनी धुएं की दीवार पार करा देगी-और यूं वह अपनी दुनिया में पहुंच जाएगा, इसीलिए वह यह सफर ऊंटनी की ही मर्जी से कर रहा था। उसने ऊंटनी को अपनी मर्जी से किसी तरफ मोड़ने की कोशिश नहीं की थी। ज्यू-ज्यूं वक्त बीत रहा था, इन्द्र इस पर खुश था कि उसकी दुनिया करीब आती जा रही है, लेकिन फिर ऊंटनी के एक झटके से रुकने और उसके बाद उसके गायब हो जाने ने उसकी समस्त आशाओं पर पानी फेर दिया था।

अब सुनसान तपता रेगिस्तान था। वह था और उड़ती हुई रेत थी। यानि कि वह वक्त अब ज्यादा दूर नहीं था,जब मौत पंख फड़फड़ाती हुई उसके सिर पर मंडरा रही होगी।

वह फिर वापिस पलटा।

अब उसके सामने फिर वह गागर थी-काले कपड़े से बंधी व जंजीरों में जकड़ी। उसे खोलकर देखना चाहिये कि आखिर इसमें है क्या? इस सोच के साथ ही वह धीरे-धीरे कदम जमाता हुआ गागर के नजदीक गया। काला कपड़ा यूं गागर के मुंह पर बंधा हुआ था कि वह उसे आसानी से खोल सकता था। वह रेत पर घुटनों के बल बैठ गया था और गागर के मुंह पर बंधा कपड़ा खोलने लगा। कपड़ा खोलने के बाद जब उसने कपड़ा गागर के मुंह से हटाया और यह देखने के लिए आगे को झुका कि इसमें किस प्रकार का खजाना है तो उसे एकदम पीछे हट जाना पड़ा।

मगर देर हो चुकी थी।

उसमें खजाना नाम की कोई चीज न थी और उसमें से जो चीज बरामद हुई, उससे बचने के लिए पीछे हटना जरूरी था, लेकिन वे संख्या में इतनी थीं कि उनकी गिरफ्त से बचना मुमकिन नहीं था।

वे शहद की मक्खियों जैसी कोई चीज थीं। वे गागर से निकली भी शहद की मक्खी की तरह-वे सैकड़ों, बल्कि हजारों की संख्या में थीं-गहरे सुर्ख रंग की और सुनहरे परों वाली मक्खियां।

comicsmylife.blogspot.in

"खुदकुशी कर ली,बकाल ने-अरे यह क्या हो गया?" इन्द्रजीत की हालत अजीब हो रही थी। उसे तो जैसे अपने कानों पर यकीन नहीं आ रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह खुश हो या संजीदा हो जाए। दिमाग ही जैसे ठस्स होकर रह गया था। वह खाली-खाली निगाहों से राकल को देखने लगा। "हां इन्द्रजीत! मेरी बकाल मर गई।" राकल की आवाज में भर्राहट थी- "तेरी बकाल मर गई।"

"ओह! यह बहुत बुरा हुआ-या शायद अच्छा हुआ।" इन्द्र अन्तत: बोला।

"यह बहुत बुरा हुआ है, इन्द्रजीत और यह सब उस चमगादड़ के बच्चे की वजह से हुआ है।" राकल के तेवर बदले।

"कौन चमगादड़ का बच्चा? मैं समझा नहीं।"

"वही काला चिराग। मेरी बहन बकाल की-काले चिराग के साथ जबरदस्ती शादी की जा रही थी और यह उसे बर्दाश्त न था। उसने खत्म होना- 'पिघलना' मंजूर कर लिया, लेकिन उसकी होना मंजूर न किया। इन्द्रजीत, सच यही है कि वह तेरी थी-और तेरे सिवाय उसे कुछ सकूझता ही नहीं था। वह बड़ी मेहनत से एक अमल-एक अनुस्ठान कर रही थी-जिसके बाद तू हमेशा-हमेशा के लिए उसका जाता। वह मुझ पर मरती थी और अन्तत: तुझ पर कुर्बान हो गई। इन्द्रजीत, अब तू आजाद है। जा अपनी दुनिया में लौट जा। मेरे पास वक्त कम है। मुझसे अब कोई सवाल न कर। जा बाहर तेरे लिए सवारी मौजूद है-उस पर बैठ जा। वह धुएं की दीवार पार करा देगी और धुएं के उस पार तेरी दुनिया। चल उठ, जल्दी कर। देवा काली के दरबार में कार्यवाही शुरू हो चुकी होगी और अब बस किसी भी क्षण मुझे मौत का पैगाम दिया जाने वाला है। जा इन्द्रजीत-जा। देवा काली तेरी रक्षा करे। हो तक तो मुझे माफ कर देना। मैंने तेरी वहन रेखा को 'मुक्ति कूप' में फिंकवा दिया है। उसने मेरी वात नहीं मानी थी। मैं उसके जादू का शिकार था। आह! आ पहुंचा। ने अब जाता हूं।" वह बोलते-बोलते एकदम हो गया।

फिर जो कुछं हुआ, पलक झपकने में हुआ था। राकल एकदम सिमटा-उल्लू क रूप में दिखा जो पंख फड़फड़ाता हुआ झोंपड़ी के दरवाजे से निकल गया।

इन्द्रजीत भी लपककर वाहर आया था। उसने आकाश में दूर तक देखा, लेकिन कहीं कुछ नहीं था। तपता रेगिस्तान-सुनसान आकाश।

और फिर इन्द्रजीत की नजर झोंपड़ी के ठीक सामने उस सजी-सजाई ऊंटनी पर पड़ी जो शांत भाव से बैठी जुगाली कर रही थी। यानि कि सकल ने जो कुछ कहा था-कर गया था।

इन्द्रजीत ने अब समय नष्ट करना उचित नहीं समझा । उसने जल्दी-जल्दी अपनी जरूरी चीजें समेटीं और उस ऊंटनी पर सवार हो गया। ऊंटनी उसके बैठते ही उठी और हवा हो ली।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

देखते-ही-देखते वे इन्द्रजीत के चेहरे पर छा गई-कुछ ऐसे कि उसका चेहरा गायब हो गया। वे उसके चेहरे पर अपने तेज सुइयों जैसे डंक मार रही थीं। काटने की तीव्र पीड़ा से इन्द्र पर नीम बेहोशी छाने लगी और फिर कुछ ही देर बाद वह अपने होशो-हवास पूर्णतया खो चुका था।

लेकिन इन मक्खियों को इसकी क्या परवाह थी कि उनके काटने का इन्द्रजीत पर क्या असर हो रहा है? वह होश में है या बेहोश। उनका काम काटना था-वे काटे जा रही थीं। वे उसके पूरे बदन पर छा चुकी थीं और जो अमल वे कर रही थीं, वह एक तरह से मौत के ही बराबर था।

वे मक्खियां इन्द्रजीत के 'आधे चेहरे' की तरह उसके पूरे बदन को दीमकजदा करने पर तुली हुई थीं और इन्द्रजीत को नहीं मालूम था कि ये मक्खियां उसका क्या हश्र करने पर तुली हैं।

हश्र तो सरदार कोलाना और काले चिराग ने लंगड़े प्रेत राकल का देखा था और उन्हें बड़ा लुफ्त आया था। वे दोनों एक धूर्त को मारकर बहुत खुश थे और अब देवा काली के निर्देशानुसार उसे 'जंजीर करने' (दफनाने) जा रहे थे।

देवा काली के 'अग्नि मन्दिर' से निकलकर वे पहले अपने इलाके में पहुंचे थे-जहां उन्होंने राकल की 'गागर' को 'जंजीर' करने का बन्दोबस्त किया था और फिर वे उटों पर सवार होकर उस जगह की तरफ चल दिए थे, जहां उन्होंने वकाल की गागर को 'जंजीर'किया था । काले चिराग ने कहा भी था कि वह अकेला ही राकल की गागर को जंजीर कर आएगा, लेकिन सरदार कोलाना नहीं माना था। वह भी साथ आ गया था।

राकल वास्तव में जाते-जाते हाथ दिखा गया था। वह एक धूर्त फितरत प्राणी था और अन्त तक धूर्त ही रहा था। उसने अपनी धूर्तता दिखाई थी और मरने से पहले वह इन्द्रजीत के ताबूत में आखिर कील ठोंक गया था। ऐसे में इन्द्रजीत की मौत निश्चित थी। इन्द्रजीत पर यह मक्खियों का हमला उसी की कारस्तानी थी। वक्त तेजी से बीत रहा था। मक्खियां अपने काम पर लगी हुई थीं। इन्द्रजीत बदस्तूर बेहोश था और सरदार कोलाना तथा काला चिराग इस तरफ बड़े आ रहे थे। फिर वह वक्त भी आया कि उनकी रेत उड़ाती ऊंटनियां दिखाई देने लगी और देखते-ही-देखते वे बकाल के इस 'मकबरे' या 'कब्र' पर आ पहुंचे।

ऊंटनी पर बैठे-बैठे सबसे पहले काले चिराग की नजर बकाल वाली गागर पर पड़ी।

गागर रेत से बाहर थी और उसके मुंह पर कपड़ा बंधा हुआ न था। अरे, यह क्या हुआ? फिर उसकी नजर एक इन्सानी वजूद पर पड़ी जो एक जंजीर पर लटका हुआ था और सुर्ख रंग की मक्खियां उसके पूरे बदन पर छाई हुई थीं।

"मैं तेरा गुलाम...सरदार वह देख...।" काला चिराग अपनी ऊंटनी को बैठाते हुए बोला।

और जब सरदार कोलाना ने उस तरफ नजर की तो उसके मुंह से भी बेअख्तयार निकला-

"अरे यह क्या है?"

फिर वह भी अपनी ऊंटनी को जल्दी-जल्दी बैठाने लगा। इन दोनों की ऊंटनियों को बैठता देखकर पीछे आने वाले पांचों घुड़सवार-अपने घोड़ों से उतर पड़े। वे घोड़े छोड़कर आगे बड़े। काले चिराग ने ऊंटनी से उतरकर राकल की गागर रेत पर रखी और तेजी से आगे बढ़ा, लेकिन फौरन ही रुक गया। उसे एकदम खतरे का अहसास हुआ-मानव शरीर से चिपटी सुनहरे परों व गहरे सुर्ख रंग की हजारों मक्खियां उसने देख ली थीं। वह जानता था कि अगर इन मक्खियों को उड़ाने की कोशिश की गई तो वे इन दोनों को भी चिपट जाएंगीं और फिर पीछे आने वाले घुड़सवार भी उनकी लपेट में आ जाएंगें। आगे बढ़ते हुए सरदार कोलाना का हाथ पकड़कर उसने उसे भी आगे जाने से रोक दिया।

"यह कौन है?" सरदार आश्चर्यचकित था।" यह मक्खियां कहां से आई और यह गागर क्यों खुली हुई है?"

"सरदार-मैं तेरा गुलाम...मैं तेरे कुर्बान...मैं नहीं जानता कि यह कौन है-और यह मक्खियां कहां से आई हैं? अलबत्ता इतना अंदाजा जरूर कर सकता हूं कि किसी जिज्ञासा के मारे इन्सान...ने इस गागर का मुंह खोलकर देखा और इस मुश्किल में पड़ गया।" "क्या ये मक्खियां इस गागर से निकली हैं-क्या ऐसा भी हो सकता है?" सरदार के स्वर का लहजा चिन्तापूर्ण था।

"ऐसा ही हुआ लगता है।" काले चिराग ने जवाब दिया।" "जा, जरा जाकर देख तो, गागर के -अन्दर कुछ है या

comicsmylife.blogspot.in

नहीं। "अच्छा तू यहीं ठहर, मैं घूमकर उधर जाता हूं।"

काला चिराग गागर की तरफ बढ़ गया। वह उन मक्खियों से बचता-जरा घूमकर गागर के निकट पहुंचा-उसने डरते-डरते गागर में झांककर देखा। गागर बिकुल खाली थी।

काला चिराग सावधानी से चलता हुआ लौटकर सरदार के पास आया। उसने बताया- "सरदार! गागर खाली है।"

"ओह-यह तो बहुत बुरा हुआ।" सरदार कोलाना यह सुनकर फौरन पीछे हटते हुए बोला। उसके चेहरे पर गहरी चिन्ता के भाव थे।

"मैं तेरा गुलाम...मैं समझा नहीं।"

"यह मक्खियां उस बदनसीब इंसान को खत्म कर देंगीं। जो करना है जल्दी कर।"

"क्या करू, तू बता?"

"इन मक्खियों का तोड़ मक्खियां ही हो सकती हैं।" सरदार सोचपूर्ण लहजे में बोला।

"मक्खियों...?" काला चिराग ने जैसे अविश्वास से दोहराया-"लेकिन दूसरी मक्खियां आएगी कहां से?"

"राकल की गागर का मुंह खोल दे।"

"देख लो सरदार! कहीं मामला संगीन बनकर न रह जाए।" "फिर इस 'मानव' की जान कैसे बचेगी?"

"सरदार! यह भी तो हो सकता है कि यह 'मानव' अब तक मर चुका हो।" काले चिराग ने शंका व्यक्त की।

"अगर ऐसा होता तो मक्खियां इसका पीछा कब का छोड़ चुकी होतीं।"

"हां।" काले चिराग की मुंडी सहमति में हिली- "यह बात भी तू ठीक कहता है।"

"मैं अगर ठीक कहता हूं तो फिर देर न कर-गागर को उस 'मानव' के करीब रखकर उसका मुंह खोल दे। कपड़ा हटाते ही फौरन भाग आना।"

तब काले चिराग ने रेत पर से राकल की गागर उठाई व सतर्क अंदाज में चलता हुआ 'जंजीर' के पास पहुंचा-फिर गागर रेत पर रखी और बैठकर इसे गागर के मुंह पर से काला कपड़ा खोलने लगा। कपड़ा खोलकर एक झटके से अपनी तरफ खींचा व दौड़ता हुआ पीछे हट गया।गागर के मुंह से कपडा हटते ही एक तेज भिनभिनाहट की आवाज आई और इस गागर में से भी मक्खियां निकलनी शुरू हो गई। कुछ क्षणों तक ये मक्खियां गागर के ऊपर मंडराई और फिर इन काली मक्खियों ने सुर्ख रंग व सुनहरे पंखों वाली मक्खियों पर हमला कर दिया।

यह घमासान का संघर्ष था। सुर्ख मक्खियां पट-पट करके रेत पर गिरने लगीं। काली मक्खियों ने वह तबाही मचाई कि सब देखते रह गए।

जब सारी 'लाल मक्खियां मर गई तो इन काली मक्खियों ने उस मानव-शरीर यानि इन्द्रजीत पर हमला करने की ठानी और अभी वे उसके शरीर के ऊपर तेजी से चक्कर काट रही थीं कि वे एकाएक बून्द-बून्द होकर उस मानव-शरीर पर गिरने लगी जिसकी सूरत नजर नहीं आ रही थी।

यूं कुछ ही देर में वे सारी मक्खियां 'पिघल' कर इन्द्रजीत के बदन पर टपक पड़ी। उसका वटन 'सुर्ख द्रव्य' से ढक-गया। जिस तरह जहर का इलाज जहर से किया जाता है और लोहे को लोहा काटता है, कुछ वैसा ही काम इस वक्त इन मक्खियों ने किया था। इन मक्खियों ने न सिर्फ दूसरी मक्खियों को मार दिया था-बल्कि सुर्ख मक्खियों के काटने से जा क्षति इन्द्रजीत को पहुंची थी उसकी भरपाई भी हो गई थी।

काली मक्खियां सुर्ख घोल की सूरत में उसके बदन पर छा गई थी। इस सुर्ख द्रव्य ने इन्द्रजीत का सुकून पहुंचाया। सुर्ख मक्खियों के काटने से उसके बदन में जो आग भर गई थी-वह अब ठण्डी पड़ती जा रही थी। उसके होशो-हवास बहाल होते जा रहे थे।

comicsmylife.blogspot.in

कुछ देर बाद उसकी अचेतना समाप्त हो गई। होश-हवास पूर्णतया बहाल हुए तो उसने आंखें खोल दीं। आखें खुली तो उसने खुद को एक मोटी जंजीर पर पड़ा पाया। वह फौरन उठकर वैठ गया। वह उठा तो वह सुर्ख-द्रव्य किसी खाल की तरह उसके बदन से उतरता हुआ रेत पर आ रहा था। यह सुर्ख-द्रव्य, अन्तत: एक जगह एकत्रित होकर रेत में लीन हो गया। वह रेत में जज्ज हो फैला नहीं, बल्कि इस तरह गायब हुआ कि उसका निशान तक नहीं रहा। कुछ यही हाल उन सुर्ख मक्खियों का हुआ। वे सुर्ख बदन व सुनहरे परों वाली मक्खियां पड़े-पड़े सुर्ख में परिवर्तित हो गई-और हुककर एक-दूसरे में मिल गई और फिर यह द्रव्य भी रेत के सीने उतरता चला गया। कुछ देर बाद रेत पर किसी प्रकार का निशान भी नहीं रहा था।

यूं वे दोनों बहन-भाई अपने भारी वजूद के साथ जमीन की कोख में उतर गए। शायद यूं ही राकल और बकाल ने प्रेत, योनि से मुक्ति पाई थी।

इन्द्रजीत बड़े अचरज से उस सुर्ख द्रव्य को रेत में समाते देखता रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि उसके समूचे बदन पर यह सुर्ख खाल-सी क्या थी? वह तो असंख्य मक्खियों के आ चिपकने व काटने से बेहोश हो गया था और उन मक्खियों का कोई वजूद ही न रहा था।

फिर एक बात उसने और महसूस की थी कि अब उसके शरीर में किसी प्रकार की निर्बलता नहीं रही थी। वह स्वयं को चाक-चौबन्द महसूस कर रहा था।

उसने गर्दन घुमाकर अपने चारों तरफ का जायजा लिया और उसकी निगाहें काले चिराग पर आकर ठहर गई! उसने देखा- कालों चिराग थोड़े ही फासले पर खड़ा उसे ही हैरत भरी नजरों से देख रहा था-और उसके साथ ही एक और शख्स भी खड़ा था जो अपने रख-रखाव से सरदार मालूम होता था। वह भी एकटक उसे ही देख रहा था। इन दोनों के पीछे इन्द्र ने पांच मुहाफिज सैनिकों को भी देखा और दो ऊंटनियों व पांच घोड़ों को भी।

इन्द्रजीत फौरन उठकर खड़ा हो गया। काला चिराग कदम बढ़ा उसके करीब पहुंचा और बोला- "इन्द्रजीत तुम?"

"हां, मैं। मुझे देखकर आप हैरान क्यों हैं?"

"इन्द्रजीत-तुम यहां कहां? मेरा मतलब है कि तुम यहां कैसे आ गए? यहां आस-पास तुम्हारी कोई सवारी भी नजर नहीं आ रही है।"

"सब बताता हूं।" इन्द्र ने एक गहरी सांस ली। फिर सरदार कोलाना की तरफ इशारा करते हुए पूछा- "यह कौन है?"

"वह मेरे आका हैं-सरदार कोलाना। आओ मेरे साथ-तुम्हें उनसे मिलवाऊं।"

जब वे दोनों सरदार के पास पहुंचे तो उसने पूछा- "तू जानता है इसे?"

"हां-बहुत अच्छी तरह-यह मेरा रकीब (प्रेम प्रतिद्वन्द्वी) हैं।" काले चिराग ने हंसकर कहा।

"रकीब।" एक क्षण को सरदार कोलाना कुछ नहीं समझ सका। फिर समझ में आया तो उसने मुस्कराकर कहा- "ओह, तो यह है वो नौजवान जिस पर बकाल कुर्बान हो गई।"

"तू ठीक समझा सरदार।"

"इसे बता कि अब बकाल कहां है? यह उसका नाम सुनकर परेशान हो गया है।"

"हां-क्या हुआ बकाल को?" इन्द्रजीत वाकई परेशान हो गया था।हालांकि राकल ने बकाल की मौत के बारे में उसे बताया था, लेकिन इन्द्र को उस फरेबी की बात का यकीन नहीं आया था। काले चिराग ने कुछ कहने से पहले एक गहरा सांस लिया और फिर उसके चेहरे पर उदासी छा गई। फिर वह भारी स्वर में बोला-

"तुम्हारे लिए खुशखबरी है और मेरे लिए बुरी खबर।" इतना कह काला चिराग खामोश हो गया।

इन्द्रजीत बेचैन हो उठा, बोला- "तुम खामोश क्यों हो गए? आखिर कुछ पता तो चले-हुआ क्या है?" वह शायद बकाल की मौत की तस्वीक कर लेने को बेताब था।

comicsmylife.blogspot.in

"इन्द्रजीत! मेरी बकाल मर गई। उसने अपनी जान दे दे दी। वह मुझे छोड़कर चली गई।"

"ओह!" इन्द्र का मुंह खुला-का-खुला रह गया। उसके लिए इससे बड़ी खुशखबरी तो कोई दूसरी हो ही नहीं सकती थी। इस खुशखबरी को सुनकर तो उसे कहकहे लगाने चाहिये थे, लेकिन जाने क्यों वह इतना खुश न हो सका-जितना होना चाहिये था।

बकाल अगर उसके लिए एक यातना थी, तो इस काले चिराग के लिए उसकी जिन्दगी। वह काले चिराग की महबूबा थी। उसके लिए इसने न जाने क्या-क्या जतन किए थे। सो-इस वक्त इन्द्र को खुश होने के बजाय काले चिराग के दुःख में शरीक होना चाहिए था।

"मुझे अफसोस हुआ। "वह धीरे-से बोला।

"हैरत है-तुच्छें तो खुश होना चाहिये।"

"यह ठीक है कि उसने मेरी जिन्दगी बना दी थी। एक लम्बे समय तक उसने मुझे यातनाओं का शिकार बनाकर रखा, लेकिन मैं इनना संगदिल नहीं कि यह भूल जाऊं कि वह जिन्दगी थी। बहरहाल, यह सब कैसे हुआ ?" इन्द्रजीत ने जानना चाहा।

और काले चिराग ने बताया- "जब बकाल ने अपने भाई राकल के जरिये मुझे गिरफ्तार करवा लिया तो यह बात मेरे आका से छिपी ने रह सकी। उन्होंने बाकल का अपहरण करा लिया और राकल को कहलवा भेजा कि बकला चाहिए तो काले चिराग को डेढ़ दिन बाद सरहद पर पहुंचा दो। राकल किसी वजह से वक्त घर नहीं पहुंच सका तो मेरे सरदार ने उसके सुनहरे खण्डहरों की ईट-से-ईट बजा दी। फिर राकल को भी गिरफ्तार कर लिया गया। अब राकल की अपनी अहमियत खत्म हो चुकी थी। वह एक गुनाहगार और कैदी था। सरदार ने अपना फैसला सुनाया कि काले चिराग और बकाल की शादी कर दी जाए। शादी की तैयारियां पूरी हुई-तो खबर आई कि बकाल ने आत्महत्या कर ली। इन्द्रजीत-वह मेरी नहीं होना चाहती थी। वह तुम्हारी थी-तुम्हारी ही रही।" यह कहकर काले चिराग ने अपनी भीगी पलकें बन्द कर लीं। ..

"लेकिन मुझे तो उसकी सूरत से भी नफरत थी।" इन्द्रजीत ने स्वष्टवादिता से कहा।

"कुछ यही रवैया उस्का मेरे साथ था।" काले चिराग ने आंखें खोलीं- "वह मेरी शक्ल भी देखना नहीं चाहती थी, लेकिन मुझे उसके बिना चैन नहीं था। वह तो क्षण-हर पल मेरे मन-मस्तिष्क में रची-बसी रहती थी। अब भी बसी हुई है ।"

"और राकल का क्या हुआ।" इन्द्रजीत ने चर्चा बदलने पूछा।

"वकाल की मौत के वाद राकल ने मेरे सरदार पर हमला किया और वहां से निकल भागा। तब हमने दवा काली के दरबार में जाने का फैसला कर लिया और जहां जाकर राकल को उसके अंजाम तक पहुंचाया और अब इस वक्त हम दवा काली के हुक्म पर-राकल के अवशेषों को उसकी बहन वकाल के निकट ही जंजीर करके यानि दफनाने आए थे कि यहां तुम्हें मौत के मुंह में देखा, लेकिन इन्द्रजीत तुम यहां कैसे पहुंचे ?" काले चिराग ने पूछा।और इस पर इन्द्र ने अपनी विपदा सुनाते हुए कहा-

"उस दिन लंगड़ा राकल बेहद जख्मी हालत में मेरी झोपड़ी तक पहुंचा। उसे भेड़ियों ने जख्मी किया था। मैं उसे अपनी झोपड़ी में ले आया और वहां उसने अपने जख्मों का इलाज किया। वह ठीक हो गया तो मुझे धोखा देकर उड़ गया। उस वक्त उसने तुम्हारे सरदार का नाम लिया था और कहा था कि- "मुझे वहां होना चाहिये था।" खैर, दो-चार दिन वाद वह फिर वापिस आया। वह खौफजदा था और उसने मुझे कहा किए झोपड़ी के वाहर मेरे लिए ऊंटनी मौजूद है-जो धुएं की दीवार पार-मुझे मेरी दुनिया तक पहुंचा देगी। मैं फौरन उस पर सवार होकर निकल जाऊं। तब उसने यह भी बताया कि किसी भी क्षण उसके लिए देवा काली का बुलावा आ सकता है। फिर वह अचानक ही गायव हो गया।

"उसके जाने के बाद मैं ऊंटनी पर सवार हो चल पड़ा। मैं खुश था कि मैं आजाद हूं। एक लम्बा सफर तय करने के वाद मेरी ऊंटनी इसी जगह आकर अचानक रुक गई। मैं रेत पर आ गिरा। फिर जब मैंने उठकर सामने देखा तो जंजीरों से बंधी एक गागर को पाया। मैं आगे बढ़ा। पीछे मुड़कर देखा तो ऊंटनी गायब हो चुकी थी। मैं गागर के

comicsmylife.blogspot.in

निकट पहुचा। मेरा ख्याल था कि इसमें किसी प्रकार का खजाना है, पर जब मेंने गागर का मुह खोला तो बेशुमार मक्खियों ने मुझ पर हमला कर दिया और मैं दर्द की शिद्दत से बेहोश हो गया।"

"हूं।"इन्द्रजीत की आप बीती सुन, काले चिराग ने हुंकार भरी और फिर सरदार कोलाना से मम्बोधित हुआ- "सुना, सरदार।"

"हां । वह खब्बीस जाते-जाते इसे धोखा दे गया। अगर हम यहां नहीं पहुंचते तो यह अपनी दुनिया में पहुंचने से पहले किसी और दुनिया में पहुंच चुका होता। वह जानता था कि यहां पहुंचने पर गागर नजर आने पर यह उसे खोलकर जरूर देखेगा और यूं अपने अंजाम तक पहुंच जाएगा। वाह, तगड़े तू भी खुद चीज था। तेरे जैसे शातिर धूर्त हमारी दुनिया मैं दुर्लभ हैं।" सरदार कोलाना बोला। "आप लोगों ने मुझे कैसे बचाया? वे हजारों मक्खियां कहा गई और यह मेरे बदन पर सुर्ख खोल कैसा था-जो मेरे देखते-ही-देखते रेत में इस तरह घुस गया-जैसे विल में सांप।" इन्द्रजीत ने काले चिराग से पूछा।

"बस यूं समझो कि तुम्हारी जिन्दगी थी, जो तुम बच गए-वरना राकल ने तुम्हें मारने में कोई कसर न छोड़ी थी। तुम्हें उन सुर्ख मक्खियों से बचाने के लिए हमें राकल के गागर का मुंह खोलना पड़ा। उस गागर से निकलने वाली मक्खियों ने तुम्हारे वदन पर लिपटी मक्खियों पर हमला कर दिया। उन मक्खियों को मारकर खुद म्यान होल बनकर तुम्हारे वदन पर फैन गई।यूं तुम्हारे बदन की आग जो वकाल की मक्खियों ने लगाई थी, वह राकल की मक्खियों ने बुझा दी और फिर दोनों बहन-भाई का स्वाल रेत में उतर गया। यह नजारा तो तुमने खुद अपनी आंखों से देख लिया। इन्द्रजीत तुम तकदीर के धनी हो कि तुम्हें वकाल से मुक्ति मिल गई। न सिर्फ मुक्ति, बल्कि तुम्हारे चेहरे पर जो दीमक जैसी चीज लग गई थी वह भी दूर हो गई। उस अमल व तांत्रिक अनुष्ठान के प्रभाव भी खत्म हो गए जो उसने तुम्हें हमेशा के लिए अपना बनाना के लिए शुरू कर रखा था।" काले चिराग ने बताया। "मेरे लिए यह खुशखबरी है।" इन्द्र बोला- "लेकिन यह वात तुम इतने विश्वास के साथ कैसे कर रहे हो?"

काले चिराग ने मुस्कराकर कहा- "तुम्हें मेरे कहे पर यकीन आ जाएगा। जरा अपने चेहरे पर हाथ फेरकर देखो।"

इन्द्रजीत ने डरते-डरते अपने चेहरे पर एक हाथ फेरा और फिर उसने दोनों हाथों से अपने चेहरे का जायजा लिया। उसकी आंखें चमक उठीं। वह अपनी खुशी दवाये नहीं रख पा रहा था। उसका चेहरा वास्तव में ही साफ हो गया था। उसने अपने शरीर में शक्ति तो उठते ही महसूस की थी।

"मैं तुम्हारा बहुत उमर हूं।" वह बोला।

"शुक्रिया अदा करना है तो मेरे सरदार का करो, मेरे आका का करो जिनका मैं गुलाम हूं।" काले चिराग ने बड़ी श्रद्धा के साथ कहा।

इन्द्रजीत ने आभारी नजरों से सरदार कोलाना की तरफ देखा-और आदरपूर्ण स्वर में बोला- "सरदार कोलाना, मैं तेरा बड़ा अहसानमंद हूं।"

"यह सब मैंने अपने काले चिराग के लिए किया, पर अफसोस कि मैं उसकी बकाल उसको नहीं दिला सका।" सरदार ने उदास लहजे में जवाब दिया।

"अच्छा हुआ सरदार वह मर गई। अब मुझे अहसास होता है कि मैं खामखाह उसके पीछे लगा हुआ था। वह मेरी न थी। वह किसी और की थी, पर सरदार मैं भी क्या करता। तुम जानो-मुझे उससे बहुत मुहब्बत थी। मैं उसे अपने दिल से निकालना चाहता था, लेकिन वह निकलती ही न थी। मैं क्या करता मैं भी मजबूर थ। यह आशिक इस कदर मजबूर क्यों हो जाते हैं?" काले चिराग की आवाज भीग गई थी।

"बेवकूफ!" सरदार कोलाना ने उसे डांटा- "एक बकाल मरी है, मैं एक हजार वकालें तेरे लिए इकट्ठी कर दूंगा। गम क्यों करता है?"

"मैं तेरे कुर्बान...मैं तेरा।" काले चिराग ने आज्ञाकारी सेवक की मानिन्द सिर झुका लिया।

"अब क्या करना सरदार कोलाना ने गागर की तरफ देखते हुए कहा।

"जो तेरा हुक्म।" काला चिराग आदर से बोला।

comicsmylife.blogspot.in

"इन गागरों मे रेत भरकर दफन कर दो-फिर आगे की सोचते है।" सरदार बोला।

"ठीक है, सरदार।" काला चिराग ने कहा व आज्ञाघपालन में लग गया।

उसने बकाल वाली गागर की जंजीरें खोलीं-उसमें रेत भरी और इस गागर को जमीन पर औंधा रख दिया। फिर ऐसा ही उसने राकल वाली गागर के साथ किया। ये दोनों गागरें साथ-साथ रखी गई थीं। काले चिराग ने बकाल की गागर की जंजीरें कीलों सहित उखाड़ा लीं और उसकी गागर पर रख दी। राकल की गागर वने जंजीरें करने को भी जंजीरें व कीलें लाई गई थीं-वे उसकी गागर पर रख दीं। फिर उसने घुड़सवार को इशारा किया। इन घुड़सवारों ने देखते-ही-देखते इतनी रेत इन गागरों पर चढ़ा दी कि वहा एक ऊंचा-सा टीला बन गया।

इस सारी कार्यवाही को इन्द्रजीत खामोश खड़ा देखता रहा। गागरों को दफनाने का यह काम जब खत्म हो गया तो काला चिराग सरदार के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"अब बस्ती की तरफ कूच करो।" सरदार कोलाना ने हुक्म दिया।

"और इन्द्रजीत!" काले चिराग ने पूछा।

"ओह, हां!" सरदार ने इन्द्र की तरफ देखा- "इसका क्या करना है?"

"फिलहाल अपने साथ ही ले जाते हैं।"

"पर-यह बस्ती में तो नहीं जा सकेगा।" सरदार ने जैसे मजबूरी दर्शाई।

"फेर?"

"ऐसा करो, इसे 'ख्वाव-महल' में ले जाओ, लेकिन जरा होशियार रहना। मेरी बात तू समझता है ना।

मैं तेरा गुलाम...मैं तेरी सब बातें समझता हूं।" काले चिराग ने सीने पर हाथ रखकर तनिक झुकते हुए कहा।

"बस तो फिर रूख्सत हो।" सरदार ने हाथ से इशारा किया।

"तुझसे पहले मैं कैसे रूख्सत हो सकता हूं सरदार! पहले तू

रूख्सत हो।"

"अच्छा ठिक है।" यह कहते हुए सरदार कोलाना एक ऊंटनी पर बैठ गया।

ऊंटनी फौरन खड़ी हो गई।

सरदार कोलाना ऊटनी ऊंटनी पर सवार होते देखकर वे पांचों घुड़सवार उछल-उछलकर अपने घोड़ों पर बैठ गए व ऊंटनी के पीछे आकर खड़े हो गये।

सरदार कोलाना ने हाथ हिलाया-जवाब में काले चिराग व इन्द्रजीत ने भी हाथ हिला विदाई इशारा किया।

और फिर सरदार कोलाना पांचों सवारी के साथ देखते-ही-देखते रेत के बादल में गुम हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

अब इन्द्रजीत व काला चिराग अकेले रह गए थे।

काले चिराग ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा व बड़े अपनत्व से बोला-"आओ मेरे साथ।"

काले चिराग की ऊंटनी सामने ही बैठी हुई थी। वे दोनों उस पर सवार हो गए। ऊंटनी खड़ी हुई और इशारा पाते ही हवा हो ली।

अभी उन्हें सफर करते हुए कुछ ही देर हुई थी कि अचानक ऊंटनी को ठोकर लगी और वह जमीन पर गिर गई। वे दोनों उछलकर रेत के एक टीले पर गिरे और रेत में तेजी से धंसते चले गये। यह सब कुछ इस कदर तेजी और आनन-फानन में हुआ कि इन्द्रजीत चकराकर रह गया।

और फिर-जब उसको होश आया तो उसने अपने आपको एक हरे-भरे इलाके में पाया। ऊचे-ऊंचे घने पेड़ खूब हरी कोमल घास, दूर तक फैली रग-बिरंगे महकते फूलों की क्यारियां, पक्षियों की संगीतमय चहचहाट। एक मुद्दत वाद इन्द्रजीत ने ऐसा नजारा देखा था। उसके सामने तो हर वक्त सुनसान-तपता रेगिस्तान रहता था। उड़ती हुई रेत देख-देखकर उसका दिल ऊब गया था।

इस हरे-भरे महकते नजारे ने उसकी रूह में ताजगी भर दी। वह लम्बे-लम्बे और गहरे सांस लेने लगा। हालाकि ऊंटनी से काला चिराग और वह एक साथ गिरे थे, लेकिन इस वक्त वह अकेला ही था! काले चिराग का कहीं पता नहीं था। इन्द्रजीत अपने इर्द-गिर्द का जायजा लेने लगा।

जहां पर बैठा था-यह किसी विस्तृत व विशाल बाग का हिस्सा था। बेशुमार बृक्ष थे और इन्हीं पेड़ों मे से उसे किसी सफेद इमारत का दरवाजा नजर आया था।

तभी अचानक उसे काला चिराग नजर आया। काला चिराग उसी की तरफ आ रहा था और वह शायद इसी सफेद इमारत के- दरवाजे से निकलकर आया था। काला चिराग बहुत तेजी सें उसकी तरफ आ रहा था और फिर वह शीय ही इन्द्रजीत के पास पहुंच गया।

"आओ, इन्द्र।" उसने इन्द्रजीत को अपने साथ आने का इशारा किया।

यह हम कहां आ गये हैं और किरा तरह ?" इन्द्रजीत ने उसके साथ चलते हुए पूछा।

कहां आ गए हैं-यह तो बता सकता हूं? लेकिन किस तरह, यह समझाना मुश्किल है? मेरे साथ कुछ दिन रहोगे तो इस तरह के चमत्कारों व अनहोनियों के आदी हो जाओगे।" काले चिराग ने हंसकर कहा।

"अच्छा चलो, यही वता दो कि यह कैसी जगह है?"

"यह ख्वाब महल है। यह जगह तुम्हारे लिए सुरक्षित है।" काले चिराग ने कहा, फिर बोला "एक बात बुरा न मानना! कम से कम सवाल करो तो बेहतर है, क्योकि कुछ सवालों के जबाब मेरे पास नहीं हैं।"

"ओह!" इन्द्र मुस्करा दिया- "ठीक है। मै कम से कम सवाल करूगा।"

"यह हुई ना बात।" काले चिराग ने अपनत्व दर्शाया-"अब जरा तेज चलो।"

वे दोनों तेज-तेज चलते हुए उस सफेद इमारत यानि ख्वाब महल तक पहुंचे और उसमें दाखिल हो गए।

वह महल-सचमुच किसी हसीन ख्वाब-सा ही था। ऐसा असरत, ऐसा भव्य कि देखने वाला देखता ही रह जाए। हकीकत में तो ऐसे महल की कल्पना कर पाना भी कल्पाओं से परे की बात थी।

"इन्द्रजीत- तुमने एक लम्बा समय कैद में है। एक कठिन व यातनापूर्ण कैद मे। इस रेगिस्तान मे विना किसी के कैद से भी लम्बी सजा काटी है। अब तुम्हें आजाद होकर

"यकीन ही नहीं आ रहा।" इन्द्र के मुंह से बेअख्तयार निकला।

"वह सामने एक खूबसूरत हमाम है। वहां तुम्हें अपनी दुनिया जैसा ही सब कुछ मिलेगा। वहां जाओ। अपने आपको

comicsmylife.blogspot.in

आइने में देखो। तुम्हें यकीन आ जाएगा कि अब तुम किसी की कैद में नहीं हो।"

"वाह!" काले चिराग की इस बात पर इन्द्रजीत ने खुशी का नारा लगाया और फिर तेजी से उस हमाम की तरफ बढ़ गया। "इत्मीनान से गुसल करो। तब तक मैं तुम्हारे लिए खुशबूदार चाय का इन्तजाम करता हूं।" काले चिराग ने कहा और पलट लिया। इन्द्र हमाम में पहुंचा। बरसो बाद उसे एक खूबसूरत आधुनिक हमाम में नहाना नसीब हो रहा था। उसने पूरा शॉवर खोल दिया। गुनगुने पानी की फुवार ने उसके प्यासे बदन को तृप्त करना शुरू कर दिया। आंखें मादक से अहसास के साथ मुंद गई। उसके बदन के साथ उसकी रूह तक तृप्त होने लगी।

बड़ा तुत्क आया और करार मिला नहाने से। नहाकर जब वह आइने के सामने खड़ा हुआ नो खुद को देखता रह गया। उसे सहसा राजकुमार नयना की याद आई। राजू मदारी की कैद से आजाद होकर वह नयना की हवेली में था। तब भी इसी तरह नहा-धोकर यह आइने के सामने खड़ा हो गया था। उस वक्त वह नौजवान था और अब पूर्णतया जवान हो गया था और यह भी प्रभू कृपा थी कि काले चिराग की मेहरबानी से उसके चेहरे की दीमक साफ हो गई थी और उसमें ताकत भी आ गई थी। वह अगर खुद को उस दीमक खाई सूरत के साथ देख लेता तो यकीनन गिरकर बेहोश हो जाता।

बहरहाल, स्वास्थ्य तो उसका अब भी ऐसा कोई ईर्ष्या योग्य न था। वह काफी कमजोर था। धीरे-धीरे ही उसके चेहरे व शरीर की आभा लौटनी थी।

वह अभी आइने में खुद को निहार रहा था कि एक ख्याल ने उसे सहमा दिया। उस दिन-बरसों पूर्व-नयना की हवेली के महकते वाथरूम में उसे यही महसूस हुआ था कि बाथरूम में उसके साथ कोई है।

इस ख्याल के साथ ही उसे वकाल याद आ गई। बकाल भी क्या अजीब औरत थी न कैसी मनमोहिनी और होश हर लेने वाली...हो ना रुबा। बकाल ने उसे बाथरूम में देखा था और उस पर मर-मिटी थी। ऐसी मरी थी कि इन्द्र की जिन्दगी अए मौत बना दिया था। सच यही था कि बकाल अगर न मरती तो खुद इन्द्र की मौत करीव थी।

बकाल अनूठी थी और उसकी यह चाहत भी अनोखी थी। इन्द्रजीत के लिए उसकी चाहत एक सजा थी-एक यातनापूर्ण कैद थी। वह वकाल की वासना शांत करता रहा था। बकाल के अनूठे बलात्कार का शिकार बनता रहा था।

इन्द्रजीत अपना अतीत याद करके एकदम सहम गया। उसने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर आ गया।

बाहर काला चिराग उसका प्रतीक्षक था। इन्द्रजीत को आते देख वह अपनी कुर्सी पर सम्भलकर बैठ गया और एकटक इन्द्र को निहारने लगा।

"क्या देख रहे हो?" इन्द्रजीत बोला।

"नहाकर तो तुम्हारा रंग-रूप ही निखर आया है, इन्द्रजीत। साक्षात् कामदेव नजर आ रहे हो- सच- बहुत खूबसूरत जवान हो।"

"अब कह खूबसूरत रहा। मेरी खूबसूरती तो तुम्हारी बकाल दीमक वनकर चाट गई।" इन्द्र के मुंह से बेअख्तयार ही निकला था। फिर उसे ख्याल आया कि बकाल के बारे में काले चिराग के सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये थी। एक तो काला चिराग उस पर जान देता था -और फिर अब तो वह इस दुनिया में भी नहीं रही थी।

"तुम ठीक कहते हो।" काले चिराग ने फीकी-सी मुस्कराहट के साथ कहा।

"तुम्हें मेरी बात बुरी लगी।" इन्द्रजीत ने शर्मिन्दगी से भरे लहजे में पूछा।

"सच्ची बात का क्या बुरा मानना?" वह लापरवाही से बोला- "आओ, चाय पीओ।"

इन्द्रजीत एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। उसने ट्रे में एक कप देखा तो काले चिराग से पूछा- "ट्रे में तो एक कप है।" वह चाय बनाने लगा था।

"हां। यह तुम्हारे लिए है। मैं चाय नहीं पीता।" काले चिराग ने कहा- "तुम्हें चाय बनाते देखकर मुझे तुम्हारी बहन याद

comicsmylife.blogspot.in

आ गई है।"

बहन का जिक्र सुनकर इन्द्रजीत कुछ परेशान-सा हो गया। उसका हाथ रुक गया। उसने पूछा- "क्या तुम मेरी बहन रेखा के बोरे में कुछ जानते हो? वह इस वक्त कहां है?"

"हां-जानता हूं। तुम्हारी बहन रेखा को। बकाल ने उसे अपने लंगड़े भाई राकल की सेवा में पेश कर दिया था,लेकिन जिस तरह मैं वकाल को नहीं जा सका-उसी तरह राकल रेखा को हासिल नहीं कर सका । आखिरकार उसने गुस्से में पागल होकर तुम्हारी बहन को 'मुक्ति द्वार' में डलवा दिया।" काले चिराग ने बताया।

"यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई?" इन्द्रजीत ने पूछा।

"मुझे राकल ने बताई।"

"यह 'मुक्ती द्वार' क्या है?"

"तुम 'मृत्यु-कूप' यानि मौत का आ समझ लो।" काले चिराग न स्पष्ट किया- "इस जूये में फिंकवाया जाने वाला शख्त कभी जिन्दा नहीं बचता।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मेरी बहन रेखा मर गई।" इन्द्रजीत ने साफ जवाब चाहा।

"आसार तो यहीं बताते हैं।" काला चिराग धीरे से बोला। "लेकिन मुझे यकीन है कि मेरी बहन मर नहीं सकती। वह मुझे लेने आई थी। वह मुझे जरूर लेकर जाएगी।" इन्द्रजीत के लहजे में गजब का आत्म-विश्वास था।

"दिल तो मेरा भी यही कहता है कि वह जिन्दा है। वह मरने वाली चीज नहीं है। तुम दोनों जरूर अपनी दुनिया में जाओगे।" यह कहकर काला चिराग अचानक खड़ा हुआ और उसने अपने लिबास से एक चमकदार खंजर निकाल लिया।काले चिराग ने खड़े होकर जिस अंदाज में खंजर निकाला था वह अंदाज इन्द्रजीत को परेशान कर गया। उसने कप ट्रे में रखा व हैरान-परेशान नजरों से काले चिराग को देखने लगा।

"मैं अब चलता हूं।" काले चिराग ने खंजर उसकी तरफ बढ़ाते कहा "यह खंजर अपने पास सम्भालकर रख लो। हो सकता है किसी के तुम्हें इसकी जरूरत पड़ जाये।"

"यहां कोई खतरा है?" इन्द्रजीत बेचैन हो उठा।

"नहीं-खतरा कोई नहीं। यह तुम्हारे लिए बिल्कुल सुरक्षित जगह है। यह खंजर मैंने तुम्हें सतर्कता के नाते दिया है। तुम इस कमरे से निकलकर अगर बाग में जाना चाहो तो जा सकते हो, लेकिन वाग की चारदीवारी के बाहर कदम मत रखना। दूसरे कमरे के अलावा, महल के अन्दर भी जाने की कोशिश मत करना। सवाल न करने का अनुरोध में तुमसे पहले ही कर चुका हूं। लिहाजा सवाल कोई नहीं। अब तुम आराम करो।" यह कहकर वह महल की तरफ जाने लगा।

"मेरी बहन रेखा का क्या होगा?" इन्द्रजीतने पूछा और काला चिराग अपनी जगह ठिठक गया।

"रेखा की फिक्र मुझे खुद भी है। मैं उसके वारे में पता लगता हूं। तुम निश्चिन्त होकर सो जाओ। अगर कोई आशाजनक खबर हाथ लगी तो हम इकट्ठे ही जायेंगे उस 'मृत्यू-कूप' पर, ठीक है।" काले चिराग ने सहमति चाही।

"ठीक हे।" इन्द्रजीत ने सहमति में गर्दन हिलाई।

काला चिराग तेज-तेज कदम उठाता हुआ महल कें अन्दरूनी दरवाजे से अन्दर चला गया। दरवाजा जोरदार आवाज से बन्द हुआ और फिर दरवाजे के पीछे कुछ खट्-खट्-सी सुनाई दी। जैसे दरवाजे को ताला लगाया जा रहा हो।

इन्द्रजीत अब कमरे में अकेला रह गया था।लेकिन यह अकेलापन उसके लिए नया नहीं था। एक उम्र बीती थी एकान्त मे। वह इत्मीनान से चाय पीने लगा। चाय ने ताजगी पहुंचाई थी। चाय पीकर वह बिस्तर पर लेट गया। बेहद आरामदय बिस्तर था। थोड़ी ही देर में उसकी आंखो में नींद उतरने लगी। इस वक्त रेखा उसके ख्यालों मे थी। वह इसी के बारे में बड़ी चिन्ता के साथ सोच रहा था।

"जाने वह इस वक्त कहां होगी? वह बेचारी मुझे मुश्किल से निकालने आई थी- खुद ही मुश्किल का शिकार हो गई।

comicsmylife.blogspot.in

जाने अब उस पर क्या बीत रही होगी? 'मृत्यु-कूप' के वारे में काले चिराग का विस्वास है कि उसमें धकेला जान वाला कभी जिन्दा नहीं बचता। रेखा की जिन्दगी की आशा करना बेकार है, लेकिन इस 'मृत्यु कूप' पर जाकर देखना तो चाहिये।"

उसने काले चिराग से 'मृत्यु-कूप' पर चलने का अनुरोध का पौसला किया व आखें मूंद लीं।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

यह 'मृत्यू द्वार' या 'मृत्यु कूप' भी खूब था।वास्तव यह मौत का ही कुआ था।उस दिन राकल, रेखा को फरेब देकर 'मृत्यु कूप' तक ले आया था। फिर जब राकल के इशारे पर दी हथियारवंद सिपाही रेखा को उसके बाजूओं से पक्ककर खींचने लगे तो रेखा को खतरे की संजीदगी का अहसास।

रेखा की घटी इन्द्र जाग गई। उसे अहसास हुआ कि उसके साथ कुछ होने वाला है। वह बिफर उठी और राकल पर गुर्राई- "राकल यह क्या बद्तमीजी है ?"

"हा-हा-हा।" राकल ने कहकहा लगाया था- "जो राकल का कहा नहीं मानता-उसे अपनी गुस्ताखियों की सजा भुगतनी ही पड़ती है।"

"लेकिन तू तो मुझे किसी को पैगाम देने के लिए कैदखाने से निकालकर लाया था।"

"पैगाम तो मैं तुझे दूंगा। मौत का पैगाम।" यह कहकर वह फिर विक्षिप्त हंसी हसने लगा था।

"काले चिराग ने तेरे बारे में ठीक कहा था कि तू एक खब्बीस प्राणी है।" रेखा आपे से बाहर हो रही थी।

"उसने ठीक कहा था। मैं वाकई एक शैतान हूं। अब तू मेरी शैतानियत देख।" यह कहकर राकल अपने सवारों से मुखातिब हुआ था- "इसे उठाओ और 'मृत्यु द्वार' में डाल दो।"

फिर जो कुछ हुआ-पलक झपकने में हुआ।लंगड़े राकल का हुक्म पाकर दोनों सवार, के हाथ खींचते हुए आगे बड़े-फिर एक जगह रुककर उन्होंने रेखा के पैर पकड़कर उसे ऊपर उठाया-अरि डण्डा-डोली के अंदाज में उसे झुलाया और फिर एक अजीब-सी आवाज निकालकर उसे हवा में उछाल दिया। यूं रेखा जब नीचे गिरी तो उसे अहसास हुआ कि उसे कहा फेंका गया है। यह एक बहुत गहरा कुंआ था और वह उसमें गिरती चली जा रही है।

रेखा के साथ लंगड़े राकल के इस फरेब के वारे में पाठक पढ़ चुके हैं।

बहरहाल, रेखा की मुश्किलें कम नहीं हुई थी और राकल अपना रंग दिखा गया था। कुए के अन्दर गहरा अंधेरा था। रेखा को कुछ गहराई नहीं दे रहा था। उसने सहारा लेने को, कुछ पकड़ने को हाथ मारे, लेकिन उसके हाथ में कोई चीज नहीं आई। वह हाथ-पांव मारते-मारते चीखने लगी- "बचाओ...बचाओ...।"

रेखा की इन चींखों से कुएं की दीवारों में खलबली मच गई। कुएं की दीवारों में जगह-जगह छोटे-छोटे खोह थे और इन खोहों में कुएं के जीव-प्राणी आराम कर रहे थे। रेखा की चींखों ने इन प्राणियों को जगा दिया था।

इस प्रेतलोक के तो चप्पे-चप्पे पर रहस्य थे।

"अरे देखो-यह तो किसी इंसान की आवाज है।" किसी ने नीचे झांककर कहा।

"इंसान की बच्ची है।" नीचे वाले गार से आवाज आई। "अरे, इसे पकड़ो। इसे पानी में गिरने से बचाओ।"

रेखा को मालूम न था कि कुएं के ये प्राणी उसकी जिन्दगी बचाने के लिए प्रयत्नशील हैं। वह निरुत्तर चींखे जा रही थी- "बचाओ...बचाओ...।"

बचाने की कोई उम्मीद न थी। कोई उसे बचा भी कैसे सकता था? शायद वह बेअख्तयार ही चींख रही थी-अपना खौफ कम कर रही थी।

लेकिन कुएं के वे जीव क्षणभर में ही हरकत में आ गए थे। और फिर।नीचे गिरते हुई रेखा को अचानक यूं महसूस हुआ जैसे किसी ने उसे थाम लिया हो। फिर यह अहसास जागा कि वह नीचे गिरने की बजाय ऊपर की तरफ उठ रही है। नजर उसे कुछ भी नहीं आ रहा था। यही महसूस हो रहा था जैसे वह किसी तख्ते पर बैठी हो। उसने सिर उठाकर एकदम ऊपर देख । कुएं का मुंह उसे किसी सुराख की तरह नजर आ रहा था। इसी से उसे कुएं की गहराई का भी अंदाजा हो गया था।थोड़ा-सा ऊपर आने के बाद रेखा को महसूस हुआ, जैसे उसे कहीं बैठा दिया गया हो। उसने हाथों से टटोलकर देखा तो पथरीली-सी जगह महसूस हुई। उसके चारों तरफ अंधेरा था। ऊपर कुएं का मुहाना भी नजर नहीं आ रहा था।

comicsmylife.blogspot.in

कुएं की दीवार में बने इस छोटे से गार में जो गैर-इन्सानी प्राणी आबाद थे-वे दो मर्द और एक औरत थी। वे रेखा को देखकर बहुत खुश थे। रेखा इस गार के पथरीले फर्श पर बैठी थी और वे दोनों मर्द पागलों की तरह उसके गिर्द नाच रहे थे--जबकि औरत एक तरफ खड़ी हैरत से उसे देख रही थी।

यह खबर कि एक इन्सान की बच्ची कुएं में आ गई है-ऊपर से नीचे तक कुएं की हर खोह में फैल गई थी। यह गार कुएं के लगभग बीच में था। कुएं के प्राणी ऊपर व नीचे से रेखा को देखने आ रहे थे।

रेखा को कुछ मालूम न था कि उसके गिर्द क्या हो रहा है? उसे यह अहसास तो था कि उसके आस-पास कोई है-बोलने की आवाजें भी आ रही थीं, लेकिन ये लोग कौन-सी भाषा बोल रहे थे और क्या कह रहे थे-यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। बहरहाल, यह इसी में खुश थी कि वह कुएं में गिरने से बच गई थी। मौत किसी गोली की तरह उसके कान के पास से गुजर गई थी।

रेखा का खौफ कम हो गया था,लेकिन दिल किसी तरह भी ठिकाने पर नहीं आ रहा था। बदहवासी भी पूर्ववत: ही थी और वह गहरे-गहरे सांस ले रही थी। निश्चिन्तता के बावजूद उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। उसे अपना दम घुटता महसूस हो रहा था।

"ऐ तुम लोग इसे ऊपर क्यों उठा लाए हो-इसे कुए में क्यों नहीं गिरने दिया?" उस औरत ने जो खोह के एक कोने मे खामोश खड़ी थी-नाचते हुए मर्दों से पूछा।

"तू नहीं जानती कि यह कौन है?" एक मर्द ने जवाब दिया। "जानती हूं। 'इन्सान की बच्ची' है।"

"तो फिर ऐसा उल्टा सवाल क्यों किया?"

"इसका करोगे क्या?" औरत ने पूछा।

"क्या जरूरी है कि तू जिस बात को नहीं जानती उस बात को जाने।"

"बताने मे क्या हर्ज है?"

"क्या तूने कासगन का ऐलान नहीं सुना!"

"कैसा ऐलान? मुझे तो नहीं मालूम।"

"हां,तुझे कैसे मालूम होगा-तू कौन-सा कुएं से निकलीहै?" "कुछ बताओ तो...।"

"पहाड़ों के इस पार कासगन की बस्ती है और यह ऐलान होता रहता है कि अगर कहीं कोई आदमजात' नजर आ जाए तो उसे फौरन उसके सामने पेश किया जाए। यह 'इंसाफ को पकड़कर लाने वाले को मुंह मांगा इनाम देगा।"

"ओह, तो क्या तू इसे कासमन के सामने पेश करने का इरादा रखता हे?" औरत ने पूछा।

"तो और क्या?" वह झूम-झूमकर नाचने लगा।

"लेकिन इनाम का हकदार तो मैं हूं।" नीचे वाले गार का वाली बोला-"मैंने इसे पहचानकर बताया था कि यह इन्सान की बच्ची है।"

"सबसे पहले देखा तो मैंने था।" ऊपर वाले ने कहा। "तूने कैसे देखा था? हम सब तो सो रहे थे।"

"मैं इसकी चींख की आवाज पर जाग गया था। मैंने फौरन ही झांककर देखा था।"

अब उन दोनों में तू-तू-मै-मै होने लगी कि इनाम का असली हकदार कौन है? तब सबसे नीचे वाली खोह से एक को बुलाया गया। यह समस्या उसके सामने चली गई। उसने किया कि इनाम के हकदार दोनों हैं-वो भी जिसने पुष्टि की थी कि यह इंसान की बच्ची है।

इधर पंचायत लगी थी। फैसले हो रहे थे और उधर रेखा को कुछ भी मालूम न था कि उसके बारे में क्या तय हो रहा

comicsmylife.blogspot.in

है? उसके सिर की कीमत लग चुकी थी और अब वह किसी कासगन के हवाले की जाने वाली थी। उसकी हालत खराब थी। सांसें किसी तौर भी संयत नहीं हो पा रही थी। दम पुटने की अवस्था बढ़ती जा रही थी। वह अपने दोनों हाथों से गला पकड़कर लम्बे-लम्बे सांस ले रही थी।बुजुर्ग के फैसला देते ही रेखा एक तरफ-लुट गई। वह बेहोश हो चुकी थी।

"अरे, इसे क्या हो गया? देखो।" औरत ने सबका ध्यान रेखा की तरफ खींचा।

"क्या हुआ?" एक साथ कई आवाजें आई।

"यह हाश गंवा बैठी है। इसे जल्दी से पहाड़ों के उस पार ले जाओ-वरना यह मर जाएगी। हूं का वातावरण शायद इसे रास नहीं आया।" बुजुर्ग ने बेहोश को देखकर कहा।

फौरन ही उन दो मर्दों (कुएं के गैर इन्सानी प्राणियों)-जिन्हें इनाम का हकदार करार दिया गया था-ने रेखा को उठाया और सम्भालते हुए कुएं की तह मैं जाने लगे। वह बहुत गहरा आ था। इसे 'मृत्यु कूप' ठीक ही कहा जाता था। कुए की तह में कोई तेल जैसी चीज उबल रही थी। उससे आ उठ रहा था। इस उबलते द्रव्य में गिरते ही आदमी कण-कण हो जाता था। कुएं का वातावरण आम व्यक्ति के अनुकूल नहीं था।

रेखा शायद इसीलिए बेहोश हो गई थी।वे दोनो उसे सम्भाले हुए तह में जाने की बजाय-जहां तेल-सा द्रव्य उबल रहा था और उसकी गर्मी काफी ऊपर तक महसूस हो रही थी-एक गार में पुल गया। यह खोह खाली थी। यह दरअसल यहां बाहर निकलने का रास्ता था। वे दोनों उसे उठाये हुए, उड़ते हुए ही पहाड़ों की तरफ जा रहे थे।

पहाड़ उन्होंने उड़ते हुए हो पार किए थे और फिर वे रेखा को सम्भाले धीरे-धीरे नीचे आने लगे। फिर उन्होंने एक बहते झरने के निकट एक बड़े से पत्थर पर रेखा को लिटा दिया। यह एक महकते वातावरण वाला स्थान था। रेखा के हवास कुछ ही देर में बहाल हो गए। फेफड़ों में ताजा हवा पहुंची तो उसने फौरन आंखें खोल दीं।और आखें खुलने के वाद उसे जो कुछ नजर आया वह अविश्वसनीय था।

उसे कुएं में फेंके जाने के बाद के हालात याद आए। यह भी याद आया कि वह बेहोश हो गई थी, पर अब आंख खुली थीं, तो न घुप्प अन्धेरा था-ना कुएं का दमधोंटू वातावरण। यह एक खूबसूरत पहाड़ी इलाका था। सामने एक झरना बह रहा था। ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे। बिल्कुल ही अपनी धरती के पहाड़ी इलाकों जैसा दृश्य था।

रेखा उठकर बैठ गई और अब उसने अपने सामने एक पत्थर पर इन अजीबो-गरीब प्राणी को देखा। वे दो थे। कद मुश्किल से उनका एक डेढ़-दो फुट रहा होगा। उनके सिर के बाल जमीन तक पहुंचे हुए थे। छोटे-छोटे हाथ-पांव-मोटे होंठ-मुंह में दांत कोई न था-आखें गोल व हरे रंग की थीं।

रेखा को उठते देखकर वे दोनों भी पत्थर पर खड़े हो गये और खड़े-खड़े ही उड़ते हुए उसके निकट आकर रुक गये।

रेखा उन दोनों को अपने नजदीक देखकर सहम गई। उसने पूछा- "कौन हो तुम लोग?"

"डरो मत, हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचायेंगे।" उनमें से एक बोला। बड़ी बारीक-सी आवाज थी।

"यह कौन-सी जगह है?"

"यह कासगन की बस्ती है।" जवाब मिला- "वह तुम उस पहाड़ी पर जो चमकता हुआ महल देख रही हो-वहां रहता है वो। हमें वहां जाना है। तुम तैयार हो जाओ।"

और रेखा अभी समझ भी नहीं पाई थी कि कौन कासगन-कौन-सा चमकता महल और वहां क्यों जाना है कि उन दोनों ने उसके बाजू पकड़ लिए। रेखा को एक झटका लगा और वह शून्य में झूलती उड़ने लगी। वे दोनों ठिगने उसके बाजू पकड़े बड़े आराम से हवा मे उड़ रहे थे। यही लग रहा था जैसे रेखा उनके लिए कोई हल्की-फुल्की गुड़िया हो।

वे कुछ ही देर में उस चमकदार महल के सामने पहुंच गए। वह एक गुम्बदनुमा महल था। बहुत बड़ा। उसमें सिर्फ एक ही दरवाजा था और वह पूरा महल की तरह चमक रहा था। कुएं के प्राणी रेखा को सीढ़ियों पर छोड़कर दरवाजे पर पहुंचे। जाते हुए उनमें से एक ने कहा- "तुम आराम से सीढ़ियां चढ़ती हुई ऊपर आओ। हम जाकर दरवाजा खुलवाते हैं।"

comicsmylife.blogspot.in

हैरान-परेशान रेखा जब ऊपर पहुंची तो वह दरवाजा खुल चुका था। दरवाजे के अन्दर से बड़ी महकती हवा आ रही थी और एक भालाधारी व्यक्ति रंग-विरंगे कपड़े खड़ा था। वह उन दोनोंठिगनों से सवाल-जवाब कर रहा था।

रेखा करीब पहुंची तो भालाधारी उसे दिलचस्पी से देखने लगा और फिर उसने उन कुएं के प्राणियों से पूछा- "यह है वह?"

"हां।"

एक ने जवाब दिया।

"ठीक है। तुम इसे लेकर अन्दर आओ। मैं कासगन को इतला करवाता हूं।" यह कहकर वह भालाधारी अन्दर की तरफ चल दिया। उन दोनों ने रेखा के हाथों की उंगलियां पकड़ ली व फिर वे चिकने फर्श पर फिसलने लगे। वे बड़े आराम से रेखा के साथ चल रहे थे।

बाहर से यह गुम्बदनुमा महल सोने की तरह चमकता रहा था, तो अन्दर से इसके दरो-दीवार चांदी की तरह के थे। लगता था जैसे यह महल सोने-चांदी का बना हुआ हो।

थोड़ा आगे जाने के बाद सीढ़ियां आ गई जो नीचे की तरफ जा रही थीं और उस भालाधारी शख्स को उन्होंने उन्हीं सीढ़ियों से नीचे जाते देखा था। उसके अनुसरण में वे भी सीढ़ियां उतरने लगे।

वह एक गोल जीना था, जो बहुत गहराई तक चला गया था। रेखा सीढियां उतरते थकने लगी-जबकि वे दोनों उसकी उंगलियां पकड़े स्टिंग की तरह उछलते हुए मजे से सीढ़ियां उतरते चले जा रहे थे।अंतत: सीढ़ियां खत्म हुई।

रेखा ने इत्मीनान का सास लिया। सामने एक दरवाजा था जिस पर सुर्ख परदा लहरा रहा था। वह भालाधारी उन्हें इस दरवाजे पर खड़ा मिला। उसने इन तीनों को इशारे से अंदर जाने को कहा। कुएं के प्राणियों ने रेखा की उंगलियां छोड़ दीं और फिर वे तेजी से परदा हटाकर अंदर चले गए। उनके पीछे-पीछे रेखा भी अन्दर दाखिल हुई। रेखा ने सामने एक कुर्सी पर एक उम्रदराज, लेकिन एक बड़े ही प्रभावशाली व्यक्तित्व वाल व्यक्ति को बैठे देखा। दो दासियां उसके दायें-बायें खड़ी उसे मोर के पंखों वाले पंखों से हवा दे रही थीं। बिल्कुल राजसी ठाठ का माहौल था।

कुएं के प्राणी उस शख्स के कदमों से लिपट गये और फिर उनमें से एक बोला- "कासगन, देख, हम तेरे लिए क्या लाए हैं?" "हां, मैं देख रहा हूं।" उम्रदराज कासगन ने अपनी चमकती आंखों से रेखा की तरफ देखा- "यह तुम्हें कहां मिली?"

"इसे हमारे कुएं में फेंका गया था।" जवाब मिला।

"अच्छा, क्या तुमने इसे कुछ वताया है?" कासगन ने पूछा।

"नही, हमने इसे कुछ नहीं बताया।"

"बढिया।" उसने अपने दायें तरफ खड़ी दासी की तरफ देखा, उससे वोला- "इसे भीतर ले जाओ। हम अभी आते हैं।"

वह दासी रेखा को अपने पीछे आने का इशारा करके सफेद परदे के पीछे गायब हो गई। रेखा परदा हटाकर उसके पीछे हो ली थी। अन्दर एक छोटा-सा तालाब था और वह दासी तालाब के किनारे-किनारे चल रही थी। इस तालाब में कमल खिले हुए थे और बतखें तैर रही थीं।दासी तालाव का चक्कर लगाकर एक बरामदे में दाखिल हो गई। सामने ही एक दरवाजा था। दासी इस दरवाजे पर रुक गई और उसने रेखा को अन्दर जाने का इशारा किया।

रेखा ने डरते-डरते अन्दर कदम रखा। यह भव्यता से सजा एक बेहद खूबसूरत शयन-कक्ष था। आरामदय बिस्तर देखकर वह उसकी तरफ बड़ी व फिर इत्मीनान से उस पर लेट गई। इस मायावी लोक के अचरज अब उसे खौफजदा नहीं करते थे। वह बहुत थकी हुई थी। लेटते ही उसे नींद ने आ दबोचा।

कुछ ही देर में बह बेसुधी की नींद में थी।

comicsmylife.blogspot.in

ओर फिर।

वह जाने कव तक सोती रही थी। आंख खुली तो शयन-कक्ष में फानूस जगमगा रहे थे। वह अंगड़ाई लेकर उठकर बैठ गई। और अब शांतचित्त होकर उसने अपनी वर्तमान स्थिति के बारे में सोचा। यही सोचा कि अब न जाने उस पर क्या मुसीबत टूटने वाली है। वे बौने उसे यहां क्यों उड़ा लाए थे? यह कासगन आखिर क्या 'शै' है अब उसे क्या करना चाहिये?

अभी वह बिस्तर पर बैठी सोच ही रही थी कि क्या करे कि तभी कई दासियां कमरे में दाखिल हुइ। वे अपने हाथों में कुछ सामान उठाए हुए थीं।

बड़े खिले-खिले व मोहक थे इन दासियों के चेहरे और होठों पर भी बड़ी मनमोहक मुस्कान थी। इन दामियों ने अपने हाथ का सामान रखकर बारी-बारी से रेखा को सलाम किया।

रेखा को यूं अहसास हुआ जैसे वह किसी देश की शहजादी हो।

दो दासियां उसके कदमों में बैठ गई। एक ने उसके पांव उठाकर चांदी के गहरे थाम मे रखे और दुसरी दासी नें उसके पैर पर पानी डालना शुरू किया। यूं एक दासी जब रेखा के पैर धोने लगी तो उसे बड़ा अजीव-सा लगा। वह अपने पैर सिकोड़ते हुए वोली-

"अरे, यह क्या करती हो? हटो-मैं खुद धो लूंगी हाथ-पांव।" "यह कासगन का हुक्म है। अगर उसके हुक्म की तामील न हुई तो वो हमारी गर्दनें कटवा देगा। तुम हमारी जिन्दगी की दुश्मन न बनो।" एक दासी ने बड़ी शालीनता के साथ कहा।

इसके बाद कुछु कहने-सुनने की गुंजाइश न रही।

रेखा खामोश होकर बैठ गई और दासियां जल्दी-जल्दी अपने काम निपटाने लगीं। रेखा के हाथ-पांव धोने के बाद बड़ी नफासत से उसका मुंह धोया गया। लिबास बदला गया। उसके वाल वनाये गए। यूं जव वह पूरी तरह तैयार हो गई तो उसके सामने एक आइना लाया गया और रेखा आइने में अपने आपको देखकर हैरान रह गई। उसे बड़े लग्न से तैयार किया गया था। लिबास और बनाव श्रृंगार ने उसके सौंदर्य को चार चांद लगा दिये थे।

"यह मुझे आखिर किसलिए बनाया-संवारा गया है?" आइने मे खुद को निहारते था रेखा ने।

जवाव में रेखा के सामने से आइना हटा लिया गया। दासियां एक-एक करके कमरे से निकलीं। रेखा हैरान हुई कि उनमें से किसी ने भी उसके सवाल का जवाव नहीं दिया था। जब आखिरी दासी भी कमरे से दाहर निकलने लगी तो रेखा ने उसे टोका-"अरे-वात सुनो।"

वह दासी ठिठककर रुक गई व रेखा को अजनवी निगाहों से देखने लगा-बोली कुछ नहीं।

"तुमने बताया नहीं यह सब क्या है?"

"हम नहीं जानते।" वह बड़ी शालीनता से बोली और फिर फौरन कमरे से निकल गई।

दासियों के जाने के वाद वह उठकर खड़ी हो गई और अपना राजसी लिवास सम्भालकर कमरे में टहलने लगी। लिबास इतना भारी व नीचे तक लटका हुआ था कि उसके साथ चहलकदमी करना मुमकिन नहीं था।

वह कमरे में रखी ऊंची कुर्सी पर अपना लिवास समेटकर वैठ गई।

कुछ देर बाद एक दासी आई। उसने कासगन के आने का ऐलान किया। जब वह उम्रदराज लेकिन प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला कासगन कमरे में दाखिल हुआ तो रेखा उसके सम्मान में उठ खड़ी हुई। कासगन ने उसे वैठने का इशारा किया और खुद उसके सामने रखी दूसरी कुर्सी पर आ बैठा।

कागसन उसे एकटक निहारने लगा-जैसे सोच रहा हो कि वात कहां से शुरू की जाए। रेखा उसके वोलने की प्रतीक्षक रही, लेकिन जव वह खामोशी से उसे घूरता ही रहा तो रेखा ने नजरें उठाकर उसे देखा। कासगन की वड़ी-वड़ी आंखों

comicsmylife.blogspot.in

में एक अजीब-सी चमक थी। वह उसे ज्यादा देर तक न देख सकी और अपनी निगाहें झुका लीं।और वह बोला, उसने पूछा- "क्या नाम है तुम्हारा?"

"मैं रेखा हूं।" रेखा ने अपना नाम वताया।

और अब वह जैसे सीधे-सीधे अपने मकसद पर आते बोला था- "खूबसुरत नाम है। बहरहाल, रेखा! हम एक मुसीबत में गिरफ्तार है। हमें तुम्हारी मदद की सख्त जरूरत है।"

"मेरी मदद की?"रेखा हैरान हुई- "मैं भला आपकी क्या मदद कर सकती हूं।"

"तुम किसी को जिन्दगी दे सकती हो।" उस प्रभावशाली बूढ़े ने बड़ी अजीव बात कही।

"जिन्दगी-जिन्दगी तो ऊपर वाले के हाथ में है।"

"जानता हूं। पर तुम एक जरिया-एक माध्यम वन सकती हो।"

"आखिर संयुक्ति क्या है, कुछ पता तो चले ?"

"आओ, मेर साथ।" यह कहकर कासगन खड़ा हो गया। दो दासियों ने रेखा का पीछे से उसका भारी लिबास सम्भाल लिया। कासगन चला तो रेखा उसके पीछे-पीछे हैं? ली।

कासगन जिस दरवाजे सें आया था-उसी से वापिस हुआ। यह इस चमकते महल का अंदरूनी दरवाजा था, क्योंकि रेखा को जिस दरवाजे में लाया गया था-उसके सामने एक खूबसूरत तालाव था।

एक लम्बी राहदारी से गुजरने के बाद वो वायीं तरफ मुड़ा तो सामने ही एक सुनहरा दरवाजा दिखाई दिया। दरवाजा सोने का वना नजर आता था और दरवाजे पर फूल-बूटों के अलावा खूवसूरत पत्थर भी जड़े हुए थे।

दासियों ने इस सुनहरे दरवाजे के पट खोले व खुद पीछे हट गई। कासगन भीतर दाखिल हो गया और फिर जब रेखा कमरे में प्रवेश करने लगी तो दासियों ने उसको लिवास छोड़ दिया और वे खुद दरवाजे पर ही रुक गई। रेखा के अन्दर जाने के बाद उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया।

रेखा अपना लिवास घसीटती हुई आगे बड़ी। यह एक खासा बड़ा कमरा था और इस कमरे में मध्य में एक शीशे का ताबूत रखा हुआ था। इस ताबूत के अलावा कमरे में कोई और चीज नहीं सथी। ताबूत के ऊपर अलवता एक फानूस लटका हुआ था-जिसकी रोशनी ताबूत पर पड़ रही थी। बाकी कमरे में मलगजा-सा अन्धेरा था।

कासगन इस ताबूत के पास जाकर खड़ा हो गया और रेखा को मुड़कर रेखा। रेखा आगे बढ़ी और उसके बराबर जाकर खड़ी हो गइ।

रेखा ने ताबूत की तरफ देखा। ताबूत में एक शरीर लेटा हुआ था-जो सुर्ख रंग र्का रेशमी चादर से ढका हुआ था। वो जो कोई भी था-एक अच्छे लम्बे कद का व्यक्ति था।

कासगन ने ताबूत का ढक्कन खोल दिया व रेखा को आगे आने का इशारा किया। रेखा आगे आ गई तो कासगन ने उस शरीर के चेहरे से चादर हटा दी।

चादर हटते ही कमरे में उजाला-सा हो गया। वो जो भी था-एक खूबसूरत नौजवान था-साक्षात् कामदेव। यू लगता था जैसे अभी-अभी सोया हो। उसके होंठों पर एक मीठी-सी मुस्कान थी। चमकदार सुर्खी लिए बाल-लम्बी घनी पलकें-केसर मिले दूध-सी रंगत। जाने इस नौजवान के चेहरे पर क्या बात थी कि बस जी चाहता था कि उसे देखते ही रहो।

रेखा उसे मंत्र-मुग्ध सी देखे जा रही थी।

"रेखा, यह मेरा बेटा है रासमोन।" कासगन की भारी आवाज -पूंजी तो रेखा की तन्द्रा टूटी।

"जी।" वह एकदम घवराकर बोली।

comicsmylife.blogspot.in

"यह जिन्दा है-लेकिन मुर्दे से बदत्तर है।"

"यह क्या कहा आपने?" रेखा उलझ-सी गई थी।

"हां-मर गया होता तो सब आ जाता। यह न मरता है न जीता है।"

"इसे हुआ क्या है?" रेखा की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। "यह बेहोश है।" कासगन बाबा ने बताया।

"इसे कोई बीमारीहै?"

"नहीं, बीमारी कोई नहीं है।"

"ओह!" रेखा ने एक गहरी सांस ली, पूछा- "यह कब से बेहोश है?"

"एक मुद्दत हो गई। एक अरसा बीत गया। इतना लम्बा कि मेरे सब्र का पैमाना छलकने को है।"

"आपने कहा था कि मैं आपकी मदद कर सकती हूं। क्या आपने इसी सिलतिले में मदद की बात की थी?"

"हां-तुम मरे बेटे रासमोन की जिन्दगी बचा सकती हो। तुम चाहो तो यह होश में आ सकता है।"

"आखिर कैसे?" रेखा की उमझन बढ़ती जा रही थी। "आओ, मेरे साथ। मैं तुम्हें बताना हूं।" यह कहकर कासगन ने रासमोन का चेहरा ढका, ताबूत बन्द किया और फिर दरवाजे की तरफ बढ गया। रेखा ऐसा उसके पीछे हो ली थी। दरवाजे पर दासियां मौजूद थीं। रेखा के बाहर निकलते ही उन्होंने उसका सम्भाल लिया। रेखा अब इत्मीनान से बूढे कासगन के पाछे चलने लगी।

विभिन्न राहदारियों से होते हुए काशान अंतत: एक वड़े दरवाजे में दाखिल हो गया। इस दरवाजे पर दोनों तरफ भालेयारी रक्षक खड़े थे। रेखा ने भीतर पहुंचकर देखा, यह एक बड़ा कमरा था। इसमें एक शाही मसन्द मौजूद थी। कासगन इस मसन्द पर जा बैठा। फिर उसने अपने पास ही रखी एक खूबसूरत गद्देदार कुर्सी पर रेखा को दैठने का इशारा किया।

रेखा बैठ गई, तो बूढ़े कासगन ने तमाम दासियों को वाहर निकलने का इशारा किया।

जब दासियां बाहर चली गई और दरवाजा बन्द हो गया तो कासगन रेखा के तरेफ देखते हुए बोला-

"रेखा, मेरी आखिरी उम्मीद हो। अगर तुम रासमोन को न बचा सकी तो फिर कोई उसको नहीं बचा सकेगा और सारवरी अपने संकल्प में सफल हो जाएगी। मेरा बेटा मुझसे छिन जाएगा।"

"यह सारबरी कौन है? " रेखा ने पूछा- "और उसका आपके बेटे रासमोन से क्या सम्बन्ध है?"

"ठहरो, मैं तुम्हें शुरू से सारी कहानी सुनाता हूं ।" कासगन वोला और फिर उसन हालात बयान करते हुए कहा-"मेरे वेटे रासमोन को शिकार का बहुत शौक है। वह जब भी शिकार पर जाता मैं उसे सचेत करना नहीं भूलता कि बेटा, शिकार के लिए जिधर जी चाहे जाना-वस पश्चिम की तरफ न जाना और वह मेरे इस आदेश का हमेशा ध्यान रखता था, पर एक बार उसके जी में न जाने क्या आई कि वह पश्चिम की तरफ शिकार खेलने निकल गया और उस जादूगरनी के इलाके में पहुंच गया। वहां जादूगरनी कावेरी की बेटी सारबेरी ने रासमोन को देखा तो अपना दिल हार बैठी। उसने फौरन एक खूबसूरत हिरणी का रूप धारण किया और उसके सामने आ गई।

"...ऐसी खूबसूरत हिरणी को देखकर रासमोन दीवाना हो गया और उसने अपना घोड़ा उसके पीछे लगा दिया। वो हिरणी पर तीर -चलाना चाहता था, लेकिन वो तो छलावा थी। तीर चलाना तो दूर की बात उस पर नजर रखना मुष्किल हो रहा था। वह अभी यहां होती तो पलक झपकने में वहां। रासमोन उसके पीछे 'निषेध इलाके' में जा पहुंचा। यहां सारबरी की ख्वाहिश पर उसकी मां कावेरी ने अपने जादू का तीर मेरे बेटे पर चला दिया। वह जादूगरनी कावेरी के उस इलाके से किसी तरह निकल तो आया-लेकिन अपने महल तक पहुंचते-पहुंचते उसकी हालत खराब होने लगी। तमाम वैद्य हकीमों को बुलाकर दिखाया गया-लेकिन कोई भी उसका इलाज नहीं कर सका और यूं अंतत: वह अपने होश गवां बैठा। "...जब वैद्य-हकीम उसे ठीक न कर सके तो मैंने कई जादूगरों से सलाह-मशवरा किया।

comicsmylife.blogspot.in

तब सारे किस्से का पता चला। कावेरी के जादू का तोड़ के बादशाह त्रिमूर्ति के पास ह। वो तीन चेहरों वाला जादूगर इसलिए उसे त्रिमूर्ति कहते हैं। त्रिमूर्ति की शर्त है कि अगर कोई 'आदम जात' उसके तीनों से कहानी सुन ले तो वो उसे एक ऐसी चीज दे देगा -जिससे न सिर्फ को होश आ जाएगा-बल्कि उसकी कावेरी के इस जादू से भी जान छूट जाएगी।"

"यह तो कोई ऐसी शर्त नहीं है। कोई भी शास्त्र उसकी कहानिया सुनकर उससे जादू का तोड़ ला सकता है।" रेखा बोली।

"अब तक दस 'इन्सान' अपनी जान गवां बैठे हैं।" बूढे कासगन ने रहस्योद्घाटन किया।

"जान गवां बैठे हैं।" रेखा ने चकित भाव से दोहराया। "हां। दरअसल ये त्रिमूर्ति की एक शर्त और है कि जब वह कहानी सुन रहा हो तो वो 'इन्सान' बीच में बोलेगा नहीं। अगर बोलेगा तो। अपनी जान से जाएगा। नतीजा यह है कि अब तक दस 'इन्सान' त्रिमूर्ति की कहानियों की भेंट चढ चुके हैं। हमने उन 'इन्सानों' का किस तरह हासिल किया यह मैं ही जानता हूं। अब तुम मेरी उम्मीद का आखिरी चिराग हो-क्योंकि इस जादू की समय-सीमा दो बरस हैं और दो वरस पूरे होने में अव सिर्फ दस दिन बाकी हैं। इन दस दिनों में अगर उस जादू का तोड़ न हुआ तो रासमोन की 'रूह' पर जादूगरनी कावेरी का कब्जा हो जाएगा और फिर मैं जिन्दगी भर अपने बेटे का मुंह न देख सकूंगा।" यह कहते हुए बूढ़े कासगन की आंखों में आसू भर आए।

अब रेखा को सूरते हाल का पता चला। वह समझ गई कि के प्राणियों ने उसकी जान जरूर किसी इनाम के लालच में बचाई थी- जो उन्हे इस बूढ़े से हासिल हो गया होगा, पर अब वह क्या करे? क्या वह त्रिमूर्ति के सामने जाने से इंकार कर दे? हां, उसे ऐसा ही करना चाहिए।

वह बोली- "यह सब जान लेने के बाद आपका क्या ख्याल हे कि मै खुशी से त्रिमूर्ति की भेंट चढ़ जाऊं?"

"ऐसा न कहो। मैं तुम्हें कामयाब देखना चाहता हूं। तुम जरा अपने होशो-हवास बनाये रखना। पूरे इत्मीनान से उसकी कहानी सुनती रहना। बस, बीच में बोलना नहीं है।"

"जब दस इंसान खामोशी से उसकी कहानी नहीं सुन सके और मौत के घाट उतर गए तो इसका साफ-साफ मतलब है कि उसकी कहानी में कोई ऐसी बात जरूर है कि सुनने वाला बोले बिना नहीं रह सकता।"

"हां-शायद।" बूढ़े ने मुड़ी हिलाई।

"फिर वहां जाने की क्या-जरूरत हे? मैं क्यों अपनी जान गवाऊं। बेवकूफ समझा है।"

"देखो, बात न करो। कुएं के प्राणियों ने तुम्हारी जान मेरी खातिर बचाई है, वरना तुम तो मर ही चुकी थी और फिर तुम्हें मुझ बूढ़े का कुछ तो ख्याल रखना चाहिये। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम त्रिमूर्ति की कहानियां सुनने में कामयाब रहोगी। फिर देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या करता हूं। मैं यह सोने-चांदी का महल तुम्हारे हवाले कर। तुम हिम्मत तो करो। जरा जाकर तो देखो।" कासगन ने जैसे गुहार की थी।

"मैं नहीं जाऊंगी।" रेखा ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये दो टूक लहजे में कहा।और अब बूढ़े के तेवर बदल गए- "नहीं जाओगी तो जिन्दा फिर भी नहीं रहोगी।" उसने भी जैसे निर्णायक लहजा अपना लिया था।फिर उसने दो बार ताली बजाई। तत्काल ही दो दासियां दरवाजा खोलकर भीतर आ गई। बूढ़े कासगन ने उन्हें हुक्म सुनाया-"लामौस को लाओ।"

उसका यह आदेश सुनकर दोनों दासियां कांप गई। वे कांपती हुई ही उल्टे पांव वापिस हो गई। दरवाजा पुन: बन्द हो गया। रेखा ने बूढ़े कासगन के आदेश की प्रतिक्रिया को उन दोनों दासियों के चेहरों पर पढ़ लिया था। उसे अंदाजा हो गया था कि कासगन ने जरूर कोई भयानक आदेश दिया है। कोई ऐसा हुक्म-जिसकी इन दासियो को आशा नहीं थी।

रेखा ने बूढ़े पर नजर डाली। उसके माथे पर भी बल पड़े हुए थे-आंखों में गुस्सा भरा हुआ था और वह एकटक छत की तरफ देखे जा रहा था।

रेखा ने सोचा कि वह इस बूढे से पूछे कि वो क्या इरादा रखता है। यह लामौस कौन है? फिर सोचा-छोड़ो, लामौस को

comicsmylife.blogspot.in

सामने आने दो। जो होगा देखा जायेगा।"

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्तजार के क्षण बड़े जानलेवा रहे।

फिर कमरे का बड़ा दरवाजा खुला और एक कद्दावर काला भुजंग हकी कमरे में दाखिल हुआ। उसका कसरती स्याह बदन चमक रहा था। वो सिर्फ एक रेशमी सलवार पहने हुए था। सिर पर लाल रूमाल बंधा था और हाथ में चमड़े का लम्बा-सा कोड़ा था।

इस हब्शी के वाद एक कठहरा अन्दर दाखिल हुआ। इस कठहरे में पहिये लगे हुए थे और इसे छः गुलाम धक्का देकर ला रहे थे। इस कठहरे को कमरे के बीचो-बीच लाकर रोक दिया गया! यह एक ऊंचा लम्बा बॉक्स-सा था-जो तीनों तरफ से बन्द था। रेखा अंदाजा न कर सकी कि कठहरे में क्या है? उसने सोचा यह शायद चलती-फिरती काल कोठरी है और शायद उसे इसी में कैद करके यहां से ले जाया जाएगा।

"लामौस कितने दिन से भूखा है?" बूढ़े कासगन ने पूछा। "तीन दिन से मेरे आका!" हशी ने बड़े आदरपूर्ण स्वर में जवाव दिया।

"जरा हमें इसकी शक्ल दिखाओ।"

तब उस हब्शी की ने कोड़ा लहराकर कठहरे का रुख बदलने का इशारा किया। छः गुलामों ने फौरन कठहरा घुमाकर उसका रुख बूढ़े कासगन की तरफ कर दिया।

उसे देखकर रेखा के होश उड़ गये। सलाखों के पीछे एक भूखा शेर कटहरे में बेचैनी से चक्कर लगा रहा था। हब्शी ने अपना कोड़ा लहराया तो वह शेर बेअख्तयार दहाड़ा। शेर की दहाड़ ने रेखा के रहे-सहे हवास भी गुम कर दिये।

"इस लड़की को उठाकर लामौस के कटहरे में डाल दो।" बूढ़े कासगन ने बड़े सख्त लहजे में हुक्म दिया।

हुक्म सुनते ही वह हब्शी आगे बढ़ा। उसने रेखा की कलाई अपने मजबूत हाथ में थाम ली और उसे वेदर्दी से खींचता हुआ कठहरे की तरफ बढ़ा। इस बीच दो गुलाम कठहरे के ऊपर चढ़ चुके थे। उन्होंने रेखा को कठहरे में डालने के लिए उसकी छत से एक तख्ता खींच लिया।तख्ता हटते ही लामौस नामक इस शेर ने एक जोरदार दहाड़ मारी। पूरा कमरा गूंज गया। तब उस हब्सी ने रेखा को किसी गुड़िया की तरह अपने हाथों पर उठा लिया और फिर वह रेखा को उछालकर कठहरे के ऊपर खड़े गुलामों के हाथों में देने ही वाला था कि रेखा ने एक जोरदार चींख मारी-

"ठहरो।"

बूढ़े कासगन ने हाथ उठाकर हब्शी को रुकने का इशारा किया। हब्शी रुक गया, लेकिन उसने रेखा को अपने हायों से नहीं उतारा था।

"क्यों-क्या कहती है?"

"म...म...मै वहां जाने के लिए तैयार हूं। मुझे आमौस के हवाले न करो।" रेखा कांपते स्वर में गिड़गिड़ाई।

"इसे इज्जत के साथ नीचे उतार दो।" बूढे ने हब्शी को हुक्म दिया।

हब्शी ने बड़ी एहतियात व बड़े आदर के साथ रेखा को नीचे उतार दिया और खुद गर्दन झुकाकर खड़ा हो गया।

"जाओ-लामौस को ले जाओ।" कासगन हशी से सम्बोधित हुआ- "और इसे इसकी पसन्द की भरपेट खुराक खिलाओ।"

यह आदेश सुनते ही दोनों गुलाम कठहरे की छत से कूदकर नीचे आ गए और फिर जिस तेजी और फुर्ती से कठहरे को लाए थे, उसी तेजी व फुर्ती से वापिस ले गए।

कमरे का दरवाजा फिर बन्द कर दिया गया।रेखा कमरे के महल में खड़ी हांफ रही थी। एक दिल दहला देने वाला अनुभव हुआ था उसे। वह सोच भी नहीं सकती थी कि यह उम्रदराज व शालीन-सम्भ्रांत-सा दिखने वाला शख्स दिल से ऐसा क्रूर व निमर्म है। इसने एक नाजुक सी लड़की के लिए कैसी बर्वरता- पूर्ण मौत की सोची थी।

comicsmylife.blogspot.in

रेखा ने सोचा ऐसी वहशत भरी मौत से तो बेहतर त्रिमूर्ति की कहानियां सुनना है। खामोश रहकर जान बचा सकने का एक मोका तो हासिल होगा। हो सकता है कि वीच में न बोलने में सफल रहे। यूं उसकी जान भी बच सकती थी और इस बूढ़े से ईनाम भी पा सकती थी।

बूढ़ा कासगन अपनी कुर्सी से उठा। रेखा को सहारा देकर उसने उसे कुर्सी पर बैठाया। के होशो-हवास अभी तक गुम थे। सुनने की ताकत ही जैसे छिन गई हो।

रेखा को कुर्सी पर बैठाकर बूढ़े कासगन ने ताली बजाई। दरवाजा फौरन खुला और दो दासियां अंदर आकर सिर नवां कर खड़ी हो गई।

"शर्वत लाओ...।" कासगन ने हुक्म दिया।

दासियां उल्टं कदमों वापिस गई। आदेश पालन में ज्यादा देर नहीं लगी। चांदी के थाल मे शीशे का जग था-जिसमें लाल रंग का शर्बत भरा हुआ था और शीशे के ही अलति नाजुक गिलास भी थाली में रखे हुए थे। बूढे कासगन ने अपने हाथों से शर्बत का गिलास भरकर रेखा को पेश किया।

रेखा का गला सुख रहा था। कांटे से पड़ रहे थे। उसने कासगन से गिलास लिया व फिर एक ही सांस मैं गट-गट कर सारा शर्बत पी गई। मन-मस्तिष्क को बहका देने वाला यह शर्बत बहुत ही राहत वहा था। इसे पीते ही रेखा के दिल को करार आ गया। जब उसने खाली गिलास थाली में रखा तो बूढ़ा कासगन तब तक उसके लिए दूसरा गिलास भर चुका था।

रेखा अव घूंट-घूंट करके इस शर्बत को चुस्कने लगी।

दूसरा गिलास खत्म होने को आयत तो कासगन ने तीसरा गिलास भरना चाहा-लेकिन रेखा ने उसे इशारे से मना कर दिया। वह खाली गिलास थाली में रखते हुए बोलो-

"बस, बहुत है।"

"अब तुम अपने कमरे में जाओ-खाओ, पीयो, आराम करो। कल ठीक तीन बजे तुम्हें त्रिमूर्ति के दरबार में भेज दिया जाएगा।" यह कहकर उसने दो वार ताली बजाई। फौरन ही दरवाजा खुला, दो दासियां अंदर आई।

"पूरे सम्मान के साथ रेखा को इसके शयन-कक्ष में पहुंचाओ और इसकी हर जरूरत पूरी करो।" यह आदेश देकर बूढ़ा कासगन कमरे से निकल गया।

दासियों ने रेखा को उसके बेडरूम मे पहुंचाया। रेखा को अपना वह भारी लिबास काफी परेशान कर रहा था। उसने एक दासी से हल्का-फुल्का लिबास मांगा तो उसे फौरन ही एक 'नाइट सूट' पेश कर दिया गया।

उस शर्बत ने रेखा के मन-मस्तिष्क पर अच्छा असर डाला था। सारा तनाव, सारी चिन्ताएं जाती रही थीं। उसकी ख्याहिश पर उसे खाना पेश किया गया। खाना बहुत स्वादिष्ट था। रेखा ने खूब तृप्त होकर खाया।खाने इत्यादि से निवृत हो उसने दासियों को विदा किया व दरवाजा बंद करके टहलने लगी।

वह शेर के मुंह में जाने से तो बच गई थी, लेकिन अब त्रिमूर्ति उसका क्या हश्र करेगा? उसे इसकी चिन्ता सताने लगी थी। बूढ़े के बेटे रासमोन का चेहरा बार-बार उसकी नजरों के सामने आ रहा था। वह एक बहुत ही खूबसूरत नवयुवक था। इतना खूबसूरत कि उसके चेहरे से नजरें हटाना मुश्किल हो जाए। ऐसा खूबसूरत और मासूम-सा नौजवान किसी जादूगरनी कावेरी के जादू के असर में अपने होश गवां बैठा था। वह दो साल से इसी दयनीय अवस्था में था। अपने बेटे के लिए बूढ़े कासगन की बेचैनी व चिन्ता स्वाभाविक थी। वह तो अपने बेटे के लिए अपने इस सोने-चांदी के महल को भी कुर्बान कर देने को तैयार था। वह किसी भी तरह अपने बेटे को जादूगरनी कावेरी के जाल से मुक्त कराना चाहता था।

रेखा के दिल में रासमीन के प्रति हमदर्दी उमड़ने लगी। वह उसके लिए कुछ करना चाहती थी, लेकिन उसके बस में कुछ नहीं था।

पूरे हालात व पूरी कहानी ही बदल गई थी।

comicsmylife.blogspot.in

रेखा इस मायालोक में अपने भाई इंद्र को आजाद कराने आई थी। उसका भाई एक प्रेतनी बकाल के जादू में गिरफ्तार था। बकाल ने उसे बन्दी वना रखा था। यह कैसी दुनिया-कैसा लोक था कि यहां हर कोई इष्क में फंसकर पागलपन की सीमा को छूने लगता था और वह अपनी 'चाहत' को जबरदस्ती अपना बनाने की कोशिश करता था।

बहरहाल, कुछ भी था। इस हालात से अब रेखा को निपटना ही था।

बूढ़े कासगन ने बताया था कि सिर्फ दस दिन रह गये थे और अगर दस दिन तक कावेरी के इस जादू का तोड़ हासिल न किया गया तो रासमोन हमेशा-हमेशा के लिए सारवरी का हो जाएगा

"भगवान करे ऐसा न हो।" रेखा के दिल ने बरबस ही दुआ मांगी।

बूढ़े कासगन की ख्वाहिश पूरी करने का फैसला रेखा ने मौत के खौफ से किया था, लेकिन अब उसके अंदर से ख्वाहिश उभर रही थी। उसका जी चाह रहा था कि वह उसके लिए कुछ करे। "आखिर क्यों? क्या सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए?" रेखा नहीं जानती थी कि तीन मूर्ति कौन है। कासगन ने बताया था कि वो जादूगरों का बादशाह है और उसके तीन चेहरे हैं। इन तीन मुंहों से तीन कहानियां सुननी थीं। कहानियां सुनना तो एक दिलचस्प अमल है-लेकिन यह अजीब कहानियां थीं। कहानियां सुनने वाला कत्ल भी किया जा सकता था।

वह टहल-टहलकर थक गई-लेकिन उसकी समझ में कोई हल नहीं आया। अबल तो उसकी समझ में यह बात नहीं आई थी कि आखिर जादूगरों के बादशाह त्रिमूर्ति की कहानियां खामोशी से क्यों नहीं जा सकतीं। कहानियां सुनते हुए बीच में क्या बोलना जरूरी -जबकि यह शर्त भी मालूम हो कि बोलते ही जान जाएगी फिर भी लोग बोल उठते हैं। इसका मतलब था कि कहानियों के दौरान वह कोई ऐसी वात जरूर कहता है-जिसके जवाब में सुनने वाला बरबस ही बोल पड़ता है।

आखिर वह ऐसा क्या कहता होगा?

टहलते-टहलते व सोचते-सोचते रेखा थक गई तो बिस्तर पर गिर पड़ी।

रेखा को अपनी मजबूरियों का अहसास होने लगा था। कोई नहीं जो उसकी मदद करे। फिर सहसा उसे राकल याद आया। इस लंगड़े प्रेत की कैद में भी वह ऐसे ही हालात का शिकार थी। राकल उसे कैद में डालने के बाद भूल गया था और वह मारे भूख के निढाल हो गई थी। तब उस अर्द्धबेहोशी की स्थिति में उसे बड़े दादा हरिओम का ख्याल आया था। दादा हरिओम ही वह पहुंचे हुये शख्त थे जिन्होंने मरने से पहले उसके नाम एक खत छोड़ा था और इन हौलनाक घटनाओं का सिलसिला उस पत्र के साथ ही शुरू हुआ था।

लंगड़े प्रेत की कैद में रेखा को दादा हरिओम के आने का अहसास हुआ था और फिर उस कैदखाने के रोशनदान से एक गिलहरी ने एक सेब उसके ऊपर गिराया था। वह सेब ऐसा ताजा, मीठा व पौष्टिक था कि उसको खाने के बाद ही रेखा मौत के मुंह में जाने से बच गई थी।

हां-वह दादा हरिओम ही थे जिन्होंने उसे मौत का ग्रास बनने से बचा लिया था।

अब एक बार फिर रेखा मौत के दहाने पर आ गई थी। काश! दारा हरिओम उसकी मदद को आ जाएं। उसके दिल की गहराइयों से यह ख्वाहिश उभरी थी।

रेखा यही सब और यूं ही सोचते-सोचते सो गई।तब वह अनहोनी।

दादा हरिओम ख्वाब में आ गए थे। उनके चेहरे पर निश्चिन्ततापूर्ण मुस्कान थी। उनका मुस्कराता नूरानी चेहरा देखकर रेखा को बड़ा सकून-सा महसूस हुआ। उसने आगे बढ़कर दादा हरिओम के दोनों हाथ पकड़ लिए और वह अनुनय भरे स्वर में बोली-

"दादा मैं बड़ी मुश्किल में हूं।"

"क्या मुश्किल बेटा-मुझे बताओ?" दादा हरिओम ने अपना एक हाथ छुड़ाकर उसके सिर पर फेरा।

"आप तो सब जानते है! मैं क्या करू? कोई ऐसा अमल बता दीजिये कि मैं त्रिमूर्ति की कहानियां बिना मुंह

comicsmylife.blogspot.in

खोले-खामोशी से सुन सकूं।

"हर कहानी वाला यही चाहता है कि उसकी कहानी के दौरान कोई न बोले। अगर त्रिमूर्ति भी यही ख्वाहिश रखता है तो रेखा बेटी,चाहिये कि उसकी कहानी खामोशी से सुन लो।"

"दादा,मै तो खामोशी से सुन लूंगी। मैं क्यों बीच में बोलूंगी, लेकिन पहले जो दस 'आदम-जात' इन्सान उसकी कहानी -और यह जानते हुए भी कि बोलने की सजा मौत है-वे बिना नहीं रह सके और मौत के घाट उतर गये। तो दादा, मैं बोले बिना कैसे रह सकूंगी।"

"तुम क्या चाहती हो?"

"उसकी कहानियां खामोशी से सुनना चाहती हूं।"

"फिर तो एक ही तरकीब है।"

"वह क्या?"रेखा ने पूछा।

"तुम गूंगी हो जाओ।" दादा हरिओम ने मुस्कराते हुए कहा। "गूंगी बन जाऊं?"

"गूगी बनने का क्या फायदा होगा? मैं गुंगी बनने को नहीं-गूगी होने को कह रहा हूं।"

"वह किस तरह दादा?"

"मैं तुम्हें एक अमल बताऊंगा। जब तुम इस 'शब्द' को दोहराओगी तो, तुम्हारे बोलने की शक्ति समाप्त हो जाएगी। वो तीन चेहरों वाला शैतान तुम्हें कितना ही बोलने पर उकसाये और तुम बोलना भी चाहो तो बोल नहीं पाओगी। कोई अगर तुम्हारी गर्दन पर छुरी भी रख दे और कहे कि बोलो वरना कत्त किये देता हूं तो उस वक्त भी तुम्हारी जुबानी नहीं।"

"वाह, दादा जी। यह हुई ना बात।" उछल ही तो पड़ी थी-"आप अब मुझे जल्दी से वह 'अमल' बता दीजिये।"

"ठीक है-अब तुम मेरी बात पूरे ध्यान के साथ सुनो और समझ लो।"

और फिर पुण्यात्मा दादा हरिओम ने रेखा को जो कुछ भी समझाया, वह रेखा ने अच्छी तरह समझ लिया।

इसके तुरन्त बाद ही अचानक रेखा की आंख खुल गई। दादा हरिओम के आगमन का अहसास अभी भी उसके दिमाग में ताजा था। यही महसूस हो रहा था जैसे दादा हरिओम अभी-अभी उसके पास से उठकर गये हों। जाने यह मुलाकात स्त्राव में हुई थी या होशो-हवास में जागते हुए। बहरहाल, जैसे भी हुई थी हा गई थी। दादा हरिओम एक बार फिर कठिन घड़ी में उसकी मदद को आ गए थे-और क्या शानदार तरकीब बता गए थे।

अब रेखा को अपनी सफलता का पूर्ण विश्वास हो गया था। अब उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रही थी। वह बड़े सुकून से सो गई।

और देर तक सोती रही।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

और फिर।

सूरज चढ़ आने पर पदक दासी ने गुलाव की कली का स्पर्श रेखा के दमकते गाल पर करके उसे उठाया। कली की खुशबू व गाल पर नर्म-कोमल स्पर्श के अहसास ने उसकी बंद आखों को खोल दिया।आंख खुली तो उसने एक सुन्दर दासी को अपने ऊपर झुके हुए पाया। रेखा उसे देखकर मुस्कराई। दासी ने जवाब में मुस्करा- कर वह गुलाब की कली उसके हाथ में दे दी। रेखा ने कली को सूंघा-बड़ी ही मस्त कर देने वाली खुशबू थी। वह उठने लगी तो दासी उसे सहारा देने के लिए आगे बढ़ी।

रेखा मुस्कराते हुए बोली- "शुक्रिया! इसकी जरूरत नहीं है।"

"जरूरत है ।" दासी बड़ी शाइस्तगी के साथ बोली- "आप हमें अपनी किसी सेवा से ना रोकें।"

"अच्छा ठीक है। अगर तुम्हारी खुशी इसी में है तो ऐसा ही सही।" कहते हुए रेखा ने अपना एक हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया। दासी ने उसका हाथ बड़ी कोमलता से थामकर उसे बड़े प्यार से उठाया। रेखा बिस्तर पर उठकर बैठ गई तो दासी बोली- "अब आप नहा-धो लें। तब तक नाश्ता तैयार हो जाएगा। आपको याद होगा कि आज दोपहर तीन बजे आपको त्रिमूर्ति के दरबार में हाजिर होना है।"

"जानती हूं।" रेखा ने खुशगवार लहजे में कहा।

"जानती हैं तो फिर फौरन तशरीफ ले चलें। हमारे पास वक्त ज्यादा नहीं है।"

"ठीक है, चलो।" रेखा उठकर खड़ी हो गई।

रेखा जब हमाम में उतरी तो उसके साथ ही दो दासियां भी अंदर आ गई और उन्होंने रेखा को निर्वस्त्र करने के लिए अपने हाथ बढ़ाये।

"नहीं।" रेखा ने पीछे हटते सख्ती से कहा।

दोनों दासियां सहमकर पीछे हट गई।

"तुम दोनों जाओ-मैं अभी नहाकर आती हूं।"

"लेकिन।" एक दासी ने कुछ कहना चाहा।

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं।" रेखा उसकी बात काटते बोली- "मैं तुम लोगों की मौजूदगी किसी तौर भी बर्दाश्त नहीं करूगी।"

दासियां हमाम से बाहर निकल गई और रेखा ने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया।

रेखा नहाने के बाद जब आइने के सामने खड़ी अपने बाल सुखा रही थी तो एकाएक ही बूढ़े कासगन के बेटे रासमोन का ख्याल-जैसे उसके रेशमी बालों में चमकते मोती की तरह आ अटका। रेखा अपने रेशमी खूबसूरत बालों को झटकते-झटकते रुक गई। वह हालाकि सामने आइने मे अपना चेहरा देख रही थी, लेकिन उसकी कल्पना में कुछ और था-वह तो जैसे खुली आंखों से कुछ और ही देख रही थी।

हां-इस वक्त रासमोन ही था जो उसकी नजरों में समाया हुआ था। उसका कामदेव-सा चित्ताकर्षक चेहरा-जैसे उसके दिल में उतरा जा रहा था। वह बेखुद-सी हो अपने आपको ही भूली जा रही थी।

फिर जैसे उसे होश आ गया। उसने घबराकर इधर-उधर देखा। यह-यह उसे क्या हो गया था? यह कैसा अहसास था? यह कैसी सोच थी? वह कमरे में अकेली थी। यह देख उसे इत्मीनान हुआ। उसने अपनी घवराहट पर काबू पाया और जल्दी-जल्दी अपने बाल झटककर वाहर निकल आई।

कमरे में वे दोनों दासियां उसकी बेचैनी से प्रतीक्षक थीं। रेखा ने खुद को उन दोनों के हवाले कर दिया। उन दोनों ने रेखा को एक बेहद खूबसूरत लिवास पहनाया, उसे सजाया-संवारा और जब वह तैयार हो गई और उसने नाश्ता

comicsmylife.blogspot.in

इत्यादि भी कर लिया तो कासगन को सूचित किया गया।

सूचना मिलते ही, कासगन उसे अपने कमरे में तलब करने की बजाय स्वयं उसके कमरे में आ गया। रेखा एक ऊंची कुर्सी पर बड़ी शान से बैठी थी। उसका चेहरा खिला हुआ था। कासगन को देखकर उसने उठना चाहा-लेकिन कासगन ने उसे इशारे से उठने से रोक दिया-और फिर खुद आगे बढ़, उसके सामने आ, उसके सम्मान में झुका और फिर बोला-

"रेखा, मुझे माफ कर देना।"

"किस बात की माफी?" रेखा उलझ-सी गई- "मैं कुछ समझी नहीं।"

"मैंने कल तुम्हें लामौस के कठहरे में फेंकवाना चाहा था। मैं अपनी इस हरकत पर वेहद शर्मिन्दा हूं। तुम नहीं जानती हो कि तुम मेरे लिए क्या हो? तुम एक ऐसी आशा की किरण हो जिसके बाद अंधेरा-ही-अंधेरा है। तुम्हारे इंकार ने मुझे पागल कर दिया था। मैं अपने इस पागलपन के लिए तुमसे क्षमा चाहता हूं।" कासगन ने अनुरोध भरे लहजे में कहा।

"हां-आपके इस हुक्म ने मुझे दहला दिया था, लेकिन मैं आपके जज्बात को समझ सकती हू। आप एक बाप हैं। मेरे इंकार पर आपको गुस्सा आना स्वाभाविक था। आपको इस पर शर्मिन्दा होने की जरूरत नहीं।" रेखा ने खुले दिल से उसे माफ कर दिया। "तुम कितनी महान हो, रेखा?"

"मैं बहुत छोटी-सी चीज हूं। बहरहाल मैंने तय कर लिया है कि त्रिमूर्ति के दरबार में जाऊंगी। उसकी कहानियां सुनूंगी। मुझे यकीन है कि मैं वापिस आऊंगी, फिर आपके लिए खुशिया-रही-खुशियां होंगीं।"

" 'आकाशवाला' तुम्हें कामयाब करे।" कासगन ने भाव-विह्व स्वर में कहा- "तुम वापिस आ गई और आकाशवाले' की मेहरबानी से तुम जरूर वापिस आओगी-तो मैं तुमसे वायदा करता हूं कि तुम जो मांगोगी-वह मैं तुम्हे दूंगा।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये। आपका उस जादूगरनी के जादू से आजाद हा जाए। मैं आप दोनों को गले मिलते हुए देख लूं। बस, यही मेरा इनाम हैं।"

"आकाशवाला' तुम्हें सदा खुश रखे। तुम वाकई महान हो।" "बस आप बड़ा बनाकर मुझे मेरी नजरों में छोटा न करें।" रेखा ने मुस्कराते हुए कहा- "यह बताएं त्रिमूर्ति के दरबार में कब जाना है।"

"इंतजाम हो रहे हैं जाने के। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।" कासगन ने कहा।और फिर।जाने के इंतजाम पूरे होते ही कासगन को सूचना दी गई। तब वह रेखा के साथ अपने महल से वाहर निकला। रेखा ने अपने सामने एक खूबसूरत बागी को पाया-जिसमें दो खूवसूरत घोड़े जुड़े हुए थे।

कासगन ने सहारा देकर उसे वग्गी में बैठाया और फिर खुद भी उसके साथ बैठा गया। बग्गी के पीछे सशस्त्र घुड़सवारों का एक दस्ता था। यह छोटा-सा काफिला त्रिमूर्ति के इलाके की तरफ चल पड़ा। फासला तय करने के बाद जब बागी रुकी और रेखा, काशान के साथ बागी से नीचे उतरी तो उसने देखा कि सामने एक गगनचुम्बी ऊंची पहाड़ी है। इस पहाड़ी की चोटी पर कोई मन्दिर जैसा भवन बना हुआ था और वहां टक जाने के लिए पहाड़ी को ही तराशकर सीढ़ियां बनाई गई थीं।

"ऊपर जाना है।" कासगन ने ऊपर देखते हुए कहा। "चलिये।" रेखा आगे बढ़ी।

वे दोनों सीढ़ियां चढ़ने लगे। सशस्त्र घुड़सवारों का दस्ता बागी के पास ही रह गया था। सीढ़ियां बहुत ज्यादा थीं। ऊपर पहुंचने में बहुत वक्त लगा। सीढ़ियां चढ़ते-बढते रेखा की सांस फूल गयी, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि उम्र दराज होने के बावजूद कासगन पूर्ववत्: ही संयत व सामान्य था।

ऊपर पहुचकर रेखा अन्तिम सीढ़ी पर वैठ गई और लम्बे-लम्बे सांस लेने लगी।

"क्या हुआ?" कासगन ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"थक गई।" रेखा ने गहरे सांस लेते हुए कहा- "और अन्दर जाने से पहले चाहती हूं कि अपनी सांस ठीक कर लूं।"

comicsmylife.blogspot.in

"ठीक है, तुम यहां बैठो। मैं अंदर जाकर अपने आने की सूचना देता हूं।" यह कहते हुए कासगन दरवाजे की तरफ बढ़ गया। रेखा निचे देखने लगी। उसे नीचे खड़ी बग्गी और घुड़सवार नजर आ रहे थे, लेकिन बहुत छोटे-छोटे। इस वक्त वह बहुत ऊंचाई पर थी। फिर उसने उस मन्दिरनुमा भवन पर नजर डाली। भवन बड़े-बड़े सुर्ख पत्थरों से बना हुआ था और किसी किले की भाति मजबूत दिखाई देता था। भवना ऊंचा था, लेकिन प्रवेश द्वारा काफी छोटा था।

कासगन ने दरवाजे के निकट जाकर उसके लगे बड़े-से कुन्डे को दरवाजे पर तीन बार मारा। टन...टन...की आवाज हुई। फिर तत्काल ही दरवाजा खुल गया। अन्दर से एक तलवारधारी व्यक्ति बाहर निकला। उसने कासगन को ऊपर से नीचे तक बड़े गौर से देखा। फिर उसकी निगाह रेखा पर पड़ी। उसने दोबारा कासगन की तरफ देखा व धीमे स्वर में पूछा-

"कौन हो?"

"मैं कासगन हूं। तीन मूर्ति को मेरा पैगाम दो। मैं आ गया हूं। एक लड़की साथ लाया हूं।"

"लड़की वो है जो सामने बैठी है? पर वह वहां क्यों बैठी है?" तलवारधारी ने पूछा।

"इंसान की बच्ची है, थक गई है।" कासगन ने जवाब दिया। "अच्छा-अच्छा मैं समझा। मैं अभी जाकर त्रिमूर्ति को बताता हूं।" तलवारधारी पलटकर अंदर चला गया।

जब तक वह वापिस आया तब तक रेखा संयत-सामान्य हो चुकी थी। वह उठकर कासगन के पास पहुंच गई। तलवारधारी फिर प्रकट हुआ, बोला-

"आओ, मेरे साथ। त्रिमूर्ति प्रतीक्षक है, तुम दोनों का।" वे दोनों दरवाजे में प्रविष्ट हुये तो उस तलवारधारी व्यक्ति ने पलटकर दरवाजा बंद कर दिया और तलवार सम्भाले बाई तरफ बढ़ गया।घने वृक्षों के बीच-एक छोटी-सी पगडण्डी भीतर तक गई हुई थी। यह रास्ता इतना तंग था कि इस पर एक व्यक्ति ही चल सकता था। सो-पहले तलवारधारी आगे बढ़ा, फिर रेखा और उसके पीछे कासगन। पेड़ इतने घने थे कि थोड़ा-सा आगे जाते ही अन्धेरा गहराने लगा। फिर एक वक्त वह आया कि पूर्ण अंधकार छा गया। रेखा का चलने में कठिनाई आ रही थी। वह अब अन्धों की तरह अपने दोनों हाथ आगे को फैलाकर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ रही थी। तलवारधारी आगे जा चुका था। रेखा को रास्ता टटोलते देखकर रुक गया।

"नाक की सीध में चली आओ।" वह वहीं खड़ा-खड़ा बोला- "रास्ता बिल्कुल साफ है ।"

"लेकिन मुझे कुछ नजर नहीं आ रहा है।"

तब कासगन उसके आगे आ गया और उसने रेखा का हाथ पकड़ लिया और बोला- "अब तुम मेरे पीछे आराम से चली आओ।"

"क्या आपको रास्ता नजर आ रहा है?" रेखा ने पूछा। "हां-क्यों नहीं।" कासगन ने सहज में जवाब दिया।

जो रास्ता घने पेड़ों से शुरू हुआ था, वह अब एक सुरंग में बदल गया था। कुछ देर चलने के बाद रेखा को उजाला महसूस हुआ। तब उसे पता चला कि वह घने पेड़ों की बजाय किसी सुरंग में चल रही है।

सुरंग खत्म हुई तो एक बड़ा-सा कमरा नजर आया। यह कमरा चारों तरफ से बंद था। कोई खिड़की-कोई दरवाजा न था। अलबत्ता काफी ऊंचाई पर तीन तरफ बड़े-बड़े रोशनदान थे। रोशनी इन्हीं रोशनदानों में से कमरे में आ रही थी। कमरा बिल्कुल खाली था। फर्श सुर्ख ईटों का था और बीच में एक वर्गाकार जगह छोड़ दी गई थी जिसमें घास उगी हुई थी।

"बैठ जाओ।" तलवारधारी ने घास की तरफ इशारा किया और खुद तेजी से पलटकर सुरंग में दाखिल हो गया।

रेखा और कासगन घास पर बैठ गये। घास बहुत घनी थी। वे खामोश बैठे रहे।

"हां, कासगन, बोलो! कैसे जाना हुआ?" एक भारी आवाज कमरे में गूंजी।

comicsmylife.blogspot.in

रेखा ने चौंककर चारों तरफ देखा-रोशनदान पर भी नजर डाली-मगर उसे कोई नजर नहीं आया।

"त्रिमूर्ति तो जानता है कि मेरे बेटे रासमोन पर जादूगरनी कावेरी ने जादू कर रखा है। उसके इस जादू का तोड़ सिर्फ तेरे पास है। उस तोड़ को हासिल करने के लिए मैं अब तक दस 'इन्सान' तेरे दरबार में हाजिर कर चुका हूं।"

"और अब तू ग्यारहवां खिलाड़ी लाया है और वह भी एक लड़की।" कहकहे के साथ कहा गया।

"दस 'मानव' तेरी भेंट चढ़ चुके हैं-अब तू मुझ पर मेहरबानी कर।"

"मेरे पास मेहरबानी नाम की कोई चीज नहीं।" त्रिमूर्ति ने फिर एक भयानक कहकहा लगाया और बोला- "अगर यह लड़की मेरी कहानी सुन लेगी और बीच मे नहीं बोली ती मैं उस जादू का तोड़ कर दूंगा। दूसरी सूरत में तू जानता है, क्या होगा-?"

"त्रिमूर्ति, ऐसा न कहो? यह मेरी आखिरी उम्मीद है। अंगर यह तेरी शर्तो पर पूरी न उतरी तो मेरा बेटा हमेशा के लिए मेरे हाथों से निकल जाएगा।तु यह दात अच्छी तरह जानता है और तू यह बात भी अच्छी तरह जानता है कि रासमोन मेरा इकलौता बेटा है।"

"इकलौता बेटा है तो फिर मैं क्या करू? क्या मैंने उससे कहा था कि तू कावेरी के इलाके में चला जा-और सारबरी को अपना दीवाना बना ले। तूने उसे वहां जताने से क्यों नहीं रोका?" त्रिमूर्ति के लहजे में सख्ती भर आई थी।

"त्रिमूर्ति-मैंने नहीं रोका। मैंने तो उसे हमेशा उधर न जाने की हिदायत की, लेकिन होनी को कौन टाल सकता है ससमोन भटक गया और कावेरी के इलाके में जा निकला। उससे गलती हो गई-तू माफ कर दे।"

"ठीक है-अब तू जा। मेरा कहानी सुनाने का वक्त हो चुका है। तू इस 'मानव-पुत्री' को यहां छोड़ जा और पहाड़ी के कदमों में इस लड़की की लाश का इंतजार कर। जब दस 'इंसान' मेरी कहानी न सुन सके-और बीच में बोल पड़े तो-यह वेचारी मेरी कहानी क्या सुन पायगी? पहली कहानी में ही चल बसेगी।" त्रिमूर्ति ने फिर कहकहा लगाया। किसी की मौत की कल्पना ही उससे कहकहे लगवा रही थी।

"अच्छा रेखा! मैं चलता हूं। में तुम्हारी कामयाबी के लिए दुआ मांगत।" कासगन ने खड़े होते हुए कहा।

"आप बेफिक्र होकर जाएं। मैं जानती हूं त्रिमूर्ति मुझे खौफजदा कर रहा है, लेकिन में डरने वाली नहीं हूं। भगवान मालिक है, जो होगा देखा जाएगा!" रेखा ने शांत-संयत लहजे में कहा- "प्रभु ने चाहा तो जीत हमारी होगी।"

"ऐसा ही होगा। मैं पहाड़ी के नीचे तेरा इंतजार करूगा।" "इसकी नहीं कासगन इसकी लाश का इंतजार करना। जाओ, अब जल्दी से यहां से निकल जाओ।

कासगन ने कोई जवाब न दिया। वह गर्दन झुकाए सुरंग में प्रवेश कर गया। रेखा ने उसे हाथ हिलाकर अलविटा कहा। उसने भी जवाब में हाथ हिलाया और फिर वह अंधेरे में गुम हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

रेखा अव इस खाली कमरे में अकेली थी।

वह घास के कालीन बैठी त्रिमूर्ति का इंतजार करने लगी। आने वाले वक्त से वह अनजान थी और नहीं जानती थी कि हालात अब क्या करवट लेंगे? कासगन- ने त्रिमूर्ति के बारे में जो कुछ बताया था, उसके अनुसार वह तीन मुंह वाला अनूठा इंसान था। वह खुद सामने आएगा या महज उसकी आवाज सुनाई देगी? अभी तक तो सिर्फ उसकी आवाज ही सुनाई दी थी।रेखा को इस अजीबो-गरीब कमरे में बैठे खौफ-सा आ रहा था।

अन्देशे उसे हलकान कर रहे थे। पता नहीं क्या होने वाला था? जाने वह त्रिमूर्ति की कहानियां सुन पाएगी या नहीं? अगर न सुन पाई और बीच में बोल उठी, तो फिर तो उसकी लाश ही यहां से जाएगी। अगर वह मर गई तो उसकी जिन्दगी का मिशन ही अधूरा रह जाएगा।

वह अपने मे इंद्रजीत को मुक्त करने को ही इस अज्ञात प्रेत लोक में पहुंची थी। उसने अपने भाई को पा भी लिया था, पर फिर हालात न ऐसा पलटा खाया कि वह उससे दूर हो गई। वह निराश नहीं थी। उसे यकीन था कि वह अपने भाइ को जीवित व सकुशल ही अपनी दुनिया में ले जाएगी।

लेकिन अगर वह मर गई तो फिर क्या होगा?

कोई उसकी मौत के वारे मे जान भी नहीं सकेगा-वह सोचने लगी-उससे गलती हो गई। उसे चाहिये था वह कासगन से वायदा ले लेती किए उसकी मौत की सूरत में उसकी लाश को उसकी दुनिया में पहुंचा दिया जाए।

वह सम्भली। आखिर वह ऐसी निराशाजनक बातें क्यों सोच रही है? वह यहां मरने नहीं-मैदान मारने आई है। वह सशस्त्र होकर आई है। हरिओम दादा ने उसे इल्म का जो ब्रह्मास्त्र बल्ला है-उसके रहते भला कौन उसे शिकस्त दे सकता है?

"क्या सोच रही हो लड़की?" सहसा आवाज आई।

"कुछ नहीं। तेरी प्रतीक्षक हूं!" रेखा ने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया।

"क्या नाम है तेरा?"

"मेरा नाम रेखा है। राह बता मुझे और कितना इंतजार करना पड़ेगा?"

"बस, इंतजार खत्म हुआ। मेरा वक्त शुरू हो गया है। सामने दीवार की तरफ देख।"

रेखा ने सामने वाली दीवार पर अपनी नजरें गड़ा दीं। उसके देखते ही दीवार में रिक्तता पैदा होनी हो गई। एक दरवाजा-सा बन गया तो दाएं-बाएं सरकते दोनों हिसे ठहर गये।

सामने बिकुल अन्धेरा था। दीवार विभक्त हो जाने से थोड़ी-सी रोशनी अंदर आई-लेकिन उसे नजर अब भी कुछ नहीं आया था।

कुछ देर बाद एक काले रंग का तख्त-सा दूसरी तरफ से अन्दर आता महसूस हुआ-जो फिसला आ रहा था। इस तख्त पर तीन सिर रखे हुए थे जो आपस में जुड़े हुए थे। वह तख्त पैदा हुई रिक्तता के मध्य आकर रुक गया।

अब रेखा के सामने ताम्बे जैसे रंग का एक चेहरा था और इस चेहरे में दाएं-बाएं दो और चेहरे जुड़े हुए थे। उसकी आखें बड़ी-बड़ी और चमकदार थीं। वह बार-वार पलकें झपक रहा था। उसकी आंखों से ही पता चलता था कि वो जीवित है, वर्ना वह किसी बुत की तरह रहता।

एक विचित्र-अनूठी हस्ती रेखा के सामने थी। उसे देखकर ही खौफ आता था। रेखा की समझ में नहीं आ रहा था कि वो बोलेगा कैसे? उसकी कटी हुई आधी गर्दन तख्ते पर रखी हुई थी। सिर्फ चेहरा था और बस कुछ नहीं-वह भी भयावाह व तीन मुंह वाला। "हां-रेखा। फिर तू तैयार है।" चेहरे के होंठ अचानक हिले। आवाज निकली।

"हां,त्रिमूर्ति! मैं पूरी तरह से तैयार हूं।" रेखा ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"देख,लड़की। अब भी वक्त है। वापिस लौट जा। तू इतनी सुन्दर है कि मेरा जी नहीं चाहता कि तू मारी जाए। तू उस बूढ़े कासगन के हाथ कहां से लग गई?"

"तू यह सब छोड़ कि मैं कौन हूं और कहां से आई हूं? तू मुझ पर मेहरबान होने की कोशिश न कर। तेरा खुद का कहना है कि मेहरबानी नाम की चीज तेरे पास नहीं है। चल अव अपनी कहानी शुरू कर।" रेखा दो टूक अंदाज में बोलो।

"ठीक है, तू अगर मरना ही चाहती है तो मेरी बला से। मैं पहली कहानी शुरू करने से पहले तुझे एक वार फिर सचेत कर देना चाहता हूं।" इतना कह वह कुछ क्षण के लिए रुका।

इतनी देर में रेखा ने दादा हरिओम का दिया अमल मन-ही-मन दोहरा लिया।

"देख, मेरी कहानी बड़े ध्यान के साथ और जब तक मैं यह न कह दूं कि 'कहानी खत्म हुई'-बीच मे मत बोलना। अगर बीच में बोली तो यह तेरी हार होगी और तुझे मौत के घाट उतार दिया जाएगा। ठीक है।"

रेखा ने मुंडी हिला हामी भरी! बोली कुछ नहीं।

"अब मैं कहानी शुरू करता हूं। किसी देश में एक मल्लिका थी। बहुत खूबसूरत। उसे कहानी सुनाने का बहुत शोक था। वह हर रात एक कहानी सुनाती थी। उसकी कहानी सुनने को हर रात एक नौजवान को लाया जाता था। कहानी सुनाते हुये उस मल्लिका की शर्त भी यही होती थी, कि कहानी खामोशी से सुननी होगी-अगर बीच में बोले तो मौत के घाट उतार दिये जाओगे। इस तरह हर रोज एक खूबसूरत नौजवान कत्ल कर दिया जाता था। रेखा, तू जनती है क्यों?"

त्रिमूर्ति ने अचानक सवाल किया।"मुझे नहीं मालूम।" रेखा के होंठ बेअख्तयार हिले।

उसके होंठ जरूर हिले, लेकिन कोई आवाज न निकली थी। अगर होंठों की हरकत के अनुसार आवाज भी निकल जाती तो बाजी आरम्भ में ही उल्ट गई थी। वह शर्त हार जाती और उसे फौरन मौत की नींद सुला दिया जाता। भला हो, पहुंची हुई हस्ती, दादा हरिओम का कि उसने इस मुकाबले के लिए रेखा को तैयार करके भेजा था। उनके अमल ने ही रेखा को बचा लिया था।

रेखा की बोलने की ताकत खत्म हो चुकी थी। वह देख सकती थी-सुन सकती थी-लेकिन बोल नहीं सकती थी। रेखा को अब अंदाजा हुआ कि त्रिमूर्ति किस तरह सहसा धोखा देकर सुनने वाले को बेअख्तयार ही वोलने पर मजबूर कर देता है।

धूर्त त्रिमूर्ति का यह पहला वार था जिससे रेखा वच गई थी। जवाब न पाकर त्रिमूर्ति ने फिर कहना आरम्भ किया- "हां, तू भला कहां जानती होगी। हर रोज एक नौजवान इसलिए कत्ल कर दिया जाता था कि वो मल्लिका की कहानी के दौरान ही बोल उठता था। मल्लिका के शयन-कक्ष में जाने वाले किसी नौजवान को यह अन्दाजा नहीं हो पाता था कि वह किस किस्म की कहानी सुनाती है और जिस काम को वो आसान समझकर मल्लिका के पेश हो जाता है-वह काम इस कद्र जानलेवा कैसे हो सकता है? वह मल्लिका असल में जादूगरनी थी। उसने अपने महल में कई शेर पाल रखे थे-जो यूं ही आजाद घूमते-फिरते थे। कहानी सुनाने के दौरान भी कोई-न-कोई शेर उसके शयन-कक्ष में घुस आता था और वो मल्लिका के सामने किसी अजनबी नौजवान को देखकर बिगड़ उठता। वो उस नौजवान पर हमलावर हो जाता। मल्लिका एक तरफ डांटकर अपने शेर को रोकने की कोशिश करती-और दूसरी तरफ उस नौजवान से कहती कि फौरन इस शेर से माफी मांग लो कि आईदा तुम इधर नहीं आओगे, वर्ना यह तुम्हें चीर फाड़कर रख देगा और ऐसे में वह नौजवान एकदम घबराकर कहता कि- "मुझे माफ कर दो, मैं आईदा इधर नहीं आऊंगा।"

त्रिमूर्ति की कहानी जारी थी कि शेर की चर्चा के साथ ही एक शेर त्रिमूर्ति के पीछे से अचानक नमदार हुआ। शेर बिफरा हुआ था। रेखा सहम गई। त्रिमूर्ति ने उस शेर को डांटते हुए-अचानक ही रेखा से कहा--

"रेखा,जल्दी से कह दो कि तु आईदा इधर नहीं आओगी- वर्ना, यह तुम्हें चीर-फाड़कर रख देगा।"

"रेखा एकदम घबरा गई। अगर वह गूंगी न बनी, होती तो उसने बोल उठना था। यह सूरते-हाल ही कुछ ऐसी पैदा हो गई थी कि उसने शेर के हमले से बचने की कोशिश में बोलने की कोशिश भी की थी पर वह बोल न सकी थी। होंठ

comicsmylife.blogspot.in

पहले की तरह बस बेआवाज हिल कर रह गए थे और फिर। मारे खौफ के रेखा ने आखें मूंद ली थीं। वह क्षण दूर न था जब शेर ने उसे झन्झोड़ कर रख देना था, पर ऐसा हुआ नहीं। शेर के गुर्राने की आवाज भी नहीं आई। त्रिमूर्ति भी खामोश था। रेखा जैसे आखें बंद किए बैठी थी वैसे ही सहमी हुई बैठी रही।और फिर आखिर उसने डरते-डरते आखें खोली। शेर न जाने कहां गायब हो गया था और त्रिमूर्ति आखें फाड़े उसे बड़ी हैरत से देख रहा था।

त्रिमूर्ति की हैरत स्वाभाविक थी। उसकी यह चाल बड़ी खतरनाक थी। इस फरेब से बचना किसी के बस का नहीं था। तीन मूर्ति ने कहानी और कहानी का जाल कुछ इस तरह से बनाया था और भूत व वर्तमान को इस तरह मिलाया था कि कहानी के दौरान खामोश बैठना नामुमकिन था।

जाहिर था रेखा खामोश थी तो दादा हरिओम के बताये अमल के सदके। उसकी भी तो सिर्फ आवाज नहीं निकलती थी...सुनाई नहीं देती थी।

त्रिमूर्ति जादूगरों का बादशाह था। उसके लिए दिखावटी शेर के दिगरे पर दिखाना कोई कठिन काम न था। अप्रत्याशित रूप से ऐसे में कहानी सुनने वाले के होश एकदम उड़ जाते थे। शेर जैसे खुंखार जानवर के सम्भावित हमले से बचने को बोल उठना स्वाभाविक था, पर उसका यह मायाजाल भी बेकार साबित हुआ। रेखा की नजरें त्रिमूर्ति के चेहरे पर थीं और अब वह खुद को सम्भालकर यही सोच रही थी कि देखें त्रिमूर्ति अब क्या चमत्कार दिखाता है? कैसा फरेब देता है? अपनी कहानी को किन शब्दों के साथ और कौन-सा मोड़ देकर आगे बढ़ाता हैं।

रेखा ने देखा-त्रिमूर्ति के चेहरे से हैरत गायब हो गई-और उसकी जगह अब निराशा व हताशा के भावों ने ले ली थी। फिर कुछ ही क्षणों में त्रिमूर्ति के चेहरे के ये भाव भी जाते रहे। उसका चेहरा बेजान हो गया। उसकी आंखें भी पत्थरा गई।

फिर सहसा ही और धीरे-धीरे त्रिमूर्ति का चेहरा बाई तरफ घूम गया। अब रेखा के सामने त्रिमूर्ति का दूसरा चेहरा था। सामने आते ही इस चेहरे में सजीवता दिखाई दी।

"रेखा, तू बड़ी खुशकिस्मत है कि तूने मेरी पहली कहानी, बीच में बोले बिना ही सुन ली। अब मैं दूसरी कहानी शुरू करता हूं सुन।" त्रिमूर्ति अब अपने इस दूसरे मुंह से बोला था।

रेखा ने होंठ खोले बिना उसे दूसरी कहानी शुरू करने का इशारा किया।

दूसरी कहानी भी कुछ इसी किस्म की थी। उसकी कहानी में जगह-जगह फन्दे थे। खाइयां और खन्दकें थी-चमत्कार थे-फरेब भरे नजारे थे, लेकिन रेखा वह सव मुंह सीले सुनती रही। वह कुछ न बोली, कैसे बोलती? दादा हरिओम का आशीर्वाद अपना काम कर रहा था?

दूसरी कहानी भी नाकाम रही। दूसरा चेहरा पत्थरा गया। अव त्रिमूर्ति का तीसरा चेहरा सामने आया। यह चेहरा तीसरी कहानी के नाम पर तीसरा फरेब लाया। उसने तरह-तरह के हथकण्डे इस्तेमाल किए। रेखा की खामोशी तोड़ने को जिज्ञासा और उकसाने वाले सवालों की बौछार की, लेकिन रेखा गूंगी बनी बैठी रही। कभी बोली भी तो आवाज न निकली। वह पूरे इत्मीनान के साथ कहानी के नाम पर उसकी बकवास सुनती रही। फिर त्रिमूर्ति ने तीसरी कहानी की समाप्ति का ऐलान कर दिया। इस घोपणा के साथ ही रेखा का चेहरा खिल उठा। त्रिमूर्ति का मुर्झाया चेहरा देखने वाला था। फिर उसने धीरे से घोषणा की- "मै हारा, तू जीती।"

रेखा झूम उठी। उसने जल्दी-जल्दी से मन-ही-मन में आवाज वापिस लाने का 'अमल' पढ़ा और उसने जैसे ही अन्तिम वार वह 'मंत्र' दोहराया-जो दादा हरिओम ने उसे बताया था तो उसकी बोलने की शक्ति लौट आई

"त्रिमूर्ति, अब तू क्या कहता है?" उसने संजीदा स्वर में पूछा था।

"तू बहुत बड़ी जादूगरनी है-मुझसे भी बड़ी। मैंने आज तक मात नहीं खाई है, लेकिन तूने ऐसा कर दिखाया।" त्रिमूर्ति ने परास्त व उदास लहजे में जवाब दिया।

"भगवान के लिए जादूगरनी कहकर मेरा अपमान न कर।" रेखा बदस्तूर संजीदगी से वोली- "अब वह बात कर जिसके लिए मैं यहा आई हूं।"

"अब तू क्या चाहती है?" त्रिमूर्ति ने पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

"रासमोन के जादू का तोड़। कावेरी और उसकी बेटी सारवरी से उसकी आजादी।" रेखा ने बताया।

"ठीक है। अब तू जा। तू जो चाहती है वह हो जाएगा।" यह कहकर तीन मूर्ति बहुत तेजी से पीछे हटा। तख्ते पर रखी हुई गर्दन और उसके जड़े हुए तीन सिर अचानक पीछे हटकर अंधेरे में गायब हो गये।

इसके साथ ही वह दीवार भी फौरन निछाब्द आपस में मिल गई।रेखा कमरे में अकेली रह गई।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इस कमरे में एक ही रास्ता था जो सुरंग की तरफ जाता था। रेखा फौरन उठकर खड़ी हो गई और दरवाजे की तरफ बड़ी। सुरंग में गहरा अन्धकार था। रेखा कासगन का हाथ पकड़कर उस कमरे तक आई थी। अब उसे राह दिखाने वाला कोई न था।

लेकिन इस सुरंग को लेकर रेखा को यह अनुमान तो था कि रास्ता बिल्कुल साफ व सीधा है-और अगर वह सुरग में दाखिल होकर सीधी चलती जाए तो आसानी से बाहर पहुंच जाएगी। हिम्मत करके उसने सुरंग में कदम रखा और पीछे से जितनी रोशनी आ रही थी-उस रोशनी में वह तेज-तेज चलती गई। रोशनी धीरे-धीरे विल्कुल खत्म हो गई और घोर अन्धेरा छा गया।

रेखा न अपनी आंखें बन्द कर लीं। आंखें खुली रखने का भी कोई फायदा नहीं था। नजर तो कुछ आ नहीं रहा था। भगवान् का नाम लेकर वह चलती रही। यूं वह पेड़ों के बीच वाला अन्धकारमय रास्ता भी कट गया। रेखा अबू दरवाजा देख पा रही थी। इस दरवाजे पर उसे पीले रंग के कपड़े पहने एक ऊंचे कद का व्यक्ति नजर आया। वह सिर से पैरों तक ढका हुआ था। उसका चेहरा भी चादर में छिपा हुआ था। चादर भी पीले रंग की थी। उसके पैरों में लकड़ी की अंगूठे वाली खड़ाऊ थीं।

रेखा को देखते ही इस ढके-छिपे शख्स ने दरवाजा खोल दिया और रेखा का इंतजार करने लगा। जब रेखा करीब पहुंची तो उसने ढके हुए चेहरे से ही रेखा को देख लिया। हाथ के इशारे से उसे बाहर निकलने के लिए कहा और फिर खुद भी उसके पीछे चल दिया। दरवाजे से निकलते ही रेखा लगभग दौड़ती हुई सीढ़ियों तक पहुंच गई। उसने पहली सीढ़ी से नीचे देखा। कासगन बेचैनी से टहल रहा था। उसकी नजर जैसे ही रेखा पर पड़ी वह खुशी से दीवाना हो गया।

इधर से रेखा सीढ़ियां उतरने लगी तो उधर से कासगन सीढ़ियां चढ़ने लगा। रेखा उतनी सीढ़ियां उतर नहीं पाई थी जितनी सीढ़ियां कासगन चढ़ आया था।

"क्या हुआ?" बड़ी बेकरारी से पूछा था उसन।

"विजय!" रेखा ने एक लफज कहा और इस एक शब्द में ही ऐसा जादू था कि कासगन चींख ही तो उठा-

"शुक्रिया! तेरा लाख-लाख शुक्रिया।"

और फिर तभी उसकी नजरें उस ढके-छिपे शख्स पर पड़ीं जो बड़े इत्मीनान से एक-एक करके सीढ़ियां उतरता चला आ रहा था। "यह कौन है?" कासगन ने हैरत से पूछा।

"मैं नहीं जानती।" रेखा ने भी उसकी तरफ देखा- "यह दरवाजे पर मिला था, वहीं से साथ चला जा रहा है।"

वह ढका-छिपा शख्स उनके करीब आ गया था-पर वह बिना कुछ बोले पूर्ववत्: ही सीढ़ियां उतरता चला गया। रेखा व कासगन भी सीढियां उतरने लगे।

"त्रिमूर्ति ने क्या दिया?" कासगन ने पूछा।

"कुछ नहीं। बस अपनी शिकस्त कबूल की और कहा- "अब तू जा-तू जो चाहती है, वैसा ही हो जाएगा।"

"रेखा तुमने तो कमाल कर दिया, पर-पर यह मुमकिन कैसे हुआ?" कासगन को तो जैसे अभी भी यकीन नहीं आ रहा था। मारे के उसका दम फूल रहा था- "देखो, मैं न कहता था कि तुम मेरी उम्मीद का आखिरी चिराग हो। तुम जरूर कामयाब होओगी ।"

कामयाब तो मैं खुद को उस वक्त समझूंगी-जब रासमोन को होश आ जाएगा और वह उठकर आपके गले जग जाएगा।" ऐसा ही होगा, रेखा! मेरा दिल कहता है ऐसा ही होगा।" रेखा ने कुछ जवाब देना चाहा था कि उसके मुंह से निकला- "अरे।"

"क्या हुआ?"

"वो बागी में बैठ गया है।"

comicsmylife.blogspot.in

कासगन ने नजरें उठाई। उसे बग्गी में पीला लिबास नजर आया। वह ढका हुआ शख्स तेजी से सीढ़ियां उतर बग्गी में जा बैठा था।

जब रेखा और कासगन बग्गी के निकट पहुंचे तो उस ढके- छिपे शख्म ने एक तरफ होकर जैसे उनको जगह दी। बग्गी में तीन आदमी बड़े आराम से बैठ सकते थे। रेखा से पहले कासगन ने चढ़ना चाहा तो उस मुंह ढके शख्त ने कासगन को बग्गी में बैठने से रोक दिया। वो बोला कुछ नहीं, सिर्फ हाथ का इशारा किया।

कासगन ने फौरन पीछे हटकर रेखा को बैठने का इशारा किया। रेखा बग्गी के एक कोने में बैठ गई। मुंह ढका दूसरे कोने में बैठा था। उसने हाथ के इशारे में बग्गी चलाने को कहा तो कासगन ने अपने सशस्त्र दस्ते को बग्गी के आगे आने को कहा और फिर उसने उन्हीं में से एक के घोड़े को अपने लिए चुन लिया और खुद बग्गी के पीछे आ गया।

"चलो।" कासगान ने चिल्लाकर हुक्म दिया।

उसके हुक्म के साथ ही यह छोटा-सा काफिला अपनी मंजिल की तरफ चल पड़ा।बग्गी तेजी से दौड़े जा रही थी। रेखा बग्गी की खिड़की से कभी पीछे घोड़े पर आते कासगन को और कभी पीले कपड़ों में छिपे उस शख्स को देख रही थी-जो बग्गी के एक कोने में दूबका बैठा था।

बड़ा ही रहस्यमय था यह ढका-छिपा शख्स। रेखा और कासगन ने उससे कोई सवाल करने का प्रयत्न नहीं किया। उन्हें शायद यही आशा थी कि इस चादर के पीछे उनकी मुश्किल का हल मौजूद है। जाहिर था वो शख्स त्रिमूर्ति के भेजे ही उनके साथ था।

वह रहस्यमय 'मुंह ढका' खामोश था और रेखा ने भी खामोशी ही श्रेयकर समझी। यह काफिला अपना सफर तय करके कासगन की बस्ती में पहुंच गया।बग्गी के रुकते ही 'मुंह ढका' फौरन नीचे उतर गया। कासगन का स्वर्ण-महल काफी ऊंचाई पर था। महल तक जाने के लिए संगमरमर की सीढ़ियां थीं। वो शख्स तेजी से सीढ़ियां चढ़ने लगा। रेखा व कासगन को उसका अनुसरण करना पड़ा।

महल हालांकि कासगन का था, लेकिन वो ढका-छिपा शख्त सीढ़ियां चढ़कर महल में कुछ इस तरह दाखिल हुआ जैसे वही महल का मालिक हो और दिलचस्प बात यह रही थी कि महल के दरवाजे पर भालेधारी रक्षक ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसने झुककर उस 'ढके-छिपे' शख्त का अभिवादन करके उसे भीतर जाने की इजाजत दे दी थी।

उसके पीछे-पीछे रेखा व कासगन भी अन्दर दाखिल हुए। वो बहुत तेज चल रहा था। उसके इस कद्र तेज चलने से यह अहसास ही नहीं होता था कि उसका मुंह ढका हुआ है। पता नहीं वो मुंह पर पड़ी चादर में से देख कैसे रहा था? पक्के फर्श पर उसकी लकड़ी की खड़ाऊ बहुत जोर-जोर से बज रही थी।

वो महल के विभिन्न रास्तों से होता हुआ-अंतत: उस कमरे के दरवाजे पर पहुंच गया-जिसमें रासमीन एक शीशे के ताबूत में बंद था।

उसने पलटकर रेखा व कासगन की तरफ देखा जो तेजी से कमरे की तरफ आ रहे थे। वो उन दोनों के निकट पहुंचने से पहले ही कमरे में दाखिल हो गया।

उसने रासमोन के ताबूत के गिर्द सात चक्कर लगाए। फिर उसे खोले बिना ही ताबूत के बीचो-बीच खड़ा हो गया। रेखा व कासगन भी अन्दर आ चुके थे। अब स्पष्ट हो गया कि इस 'मुंह-ढके' को जादूगरनी कावेरी के जादू के तोड़ के लिए ही भेजा गया था।

'मुंह-ढके' शख्स ने अपने दोनों हाथ लिबास से बाहर निकाले जो बलिष्ठ व घने बालों से ढके हाथ थे। वो और अपने पैरों से लकड़ी के खड़ाऊं निकाल लिए। फिर उसने उन दोनों खड़ाऊ को एक साथ तीन बार धीरे-धीरे ताबूत के शीशे पर मारा और फिर उसने अपने दोनों हाथ बुलन्द किए और इस बार पूरी ताकत से खड़ाके शीशे के ताबूत पर मारीं।

खड़ाऊं ताबूत पर किसी भारी हथोड़े की तरह पड़ी। शीशे का ताबूत खील-खील हो गया।

लेकिन रासमोन का जिस्म पहले की तरह ही हवा में स्थिर था।

comicsmylife.blogspot.in

उस ढके-छिपे शख्त ने उसके जिस्म को अपने हाथों पर लिया और उसे फर्श पर रख दिया-और स्वयं भी बैठ गया। एक खड़ाऊं उसने पैर के अगूंठे में डाल ली और दूसरी खड़ाके उसने रासमोन के मुंह पर रख।

बस, फिर क्षण ही लगे। इधर खड़ाऊं मुंह पर रखी गई, उधर रासमोन ने दो तीन गहरे-गहरे सांस लिए और फिर इस तरह आंखें खोल दीं-जैसे गहरी नींद से जागा हो। रासमोन ने फौरन उठना चाहा-लेकिन 'ढके' शख्त ने उसे अपनी खड़ाऊं का दबाव डालकर उसे उठने से रोक दिया।

और इसके बाद उसने खड़ाऊं-रासमोन के बदन के हर भाग पर फिराई और फिर उठते रासमोन को भी साथ उठने का इशारा किया। रासमान खड़ा हो गया तो उसने रासमोन के सिर पर हाथ रखा-और देर तक रखे रहा। यूं लग रहा था जैसे वह सिर पर हाथ रखे कुछ 'पढ़ने' मे मस्त हो।

जब तक वह रहस्यमय शख्स रासमोन के सिर पर हाथ रखे खड़ा रहा-संसमोन की आंखें बंद रहीं और फिर जैसे ही उसने हाथ हटाया-रासमोन ने आंखें खोल दीं। सबसे पहले उसकी नजरें अपने बाप कासगन पर पड़ीं और वह बेअख्तयार उनसे लिपट गया। यह वह क्षण था जिसके लिए रेखा ने अपनी जिन्दगी दांव पर लगा दी थी। वह बाप-वेटे को ' गले लगते देखकर खुद पर काबू न रख सकी। आंसुओं से उसकी आंखें भीग गईं।

और जब कासगन भावावेश में यूं अपने बेटे को लिपटे हुए था और रेखा इस मिलन को देखकर आंसू बहा रही थी तो उस छिके रहस्यमय व्यक्ति ने अपनी दोनों खड़ाऊं अपने हाथ में पकड़ी और निखाब्द चलता दरवाजे से बाहर निकल गया। उसके यूं निकल लेने का किसी को अहसास भो नहीं हुआ?

रेखा ने अपने आंसू पोंछे तो वह रहस्यमय व्यक्ति कमरे में मौजूद नहीं था। रेखा दरवाजे की तरफ भागी, लेकिन तब तक वह उसकी पहुंच से बहुत दूर जा चुका था। काश जाने से पहले वह अपनी सूरत तो दिखा जाता, लेकिन वह तो जिस तरह रहस्य में लिपटा हुआ आया था वैसे ही वापिस भी चला गया। उसके बारे में रेखा कुछ भी नहीं जान सकी।

"कासगन, वो चला गया।" रेखा ने कमरे में वापिस आकर ऊंची आवाज में कहा।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इस आवाज पर सबसे पहले रासमोन चौंका।उसने अपने बाप के कन्धे से सिर उठाया तो अपने सामने रूप लावण्य व यौवन के एक ठाठें मारते सागर को देखा। उसे तो कमरे में अपने बाप के अलावा किसी और की मौजूदगी का अहसास तक नहीं था। अब जब रेखा पर निगाह पड़ी तो बस उसे देखता ही रह गया।

हकीकत में रेखा अगर सुन्दर थी तो वह खुद भी किसी से कम न था। उसे देखने वाला भी बस देखता ही रह जाता था रेखा और रासमोन की जब नजरें मिलीं तो यूं महसूस हुआ जैसे कहीं दूर पहाड़ों पर बिजली कौंधी हो। दूर तक रोशनी-ही-रोशनी हो गई और फिर ठंडी सी पड़ने लगीं।

"बाबा, यह कौन है?" रासमोन अपने बाप से अलग होकर रेखा की तरफ बढ़ा।

"रासमोन, क्या तू जानता है कि तू दो साल बाद जागा है।" "बाबा...दो साल...।" रासमोन रेखा को भी भूल गया। "हां, दो साल!" कासगन उसे प्यार व हसरत भरी नजरों से निहारते हुए बोला- "और इन दो सालों में मैंने तेरे लिए क्या-क्या न किया, लेकिन कावेरी के जादू का तोड़ नहीं ला सका। तब यह लड़की किस्मत से मेरे हाथ लग गई। इसे 'मुक्ति द्वार' वाले कुएं का प्राणी मेरे पास लाया था। यह इंसान है। यह इतनी मेहरबान साबित हुई है कि इसने अपनी जिन्दगी दांव पर लगाकर तेरी जिन्दगी बचा ली। कितनी महान है यह लड़की रासमोन इसे सजदा कर।" रासमोन अपने बाप का हुक्म सुनकर फौरन ही रेखा के कदमों में झुकने लगा। रेखा बड़ी तेजी से हटी और बरबस ही चींखी। "नहीं-ऐसा न करो। मेरी नेकी बर्बाद न करो।"

रासमोन सीधा हो गया। रेखा ने मन-ही-मन शुक्रिया अदा किया था। उसकी निगाह में यह अनर्थ था। हकीकतन-रासमोन को पहली नजर देखने पर ही रेखा के दिल में अजीब से अहसास जागे थे। इस समय भी वह जैसे अपने आप में न थी। वह जब भी रासमोन को देखती तो दिल बरबस हुई तेजी से धड़कने लगता और जब रासमोन को अपनी तरफ देखते पाती तो पलकें बेअख्तयार ही झुक-झुक जातीं।

रेखा को अपने इस अहसासों का अहसास था। वह सोचने लगती-

यह उसे क्या हो गया है? कहीं रासमोन उसके दिल में तो नहीं उतर गया? कहीं उसे उससे मुहबत तो नहीं हो गई? क्या इसे ही मुहब्बत कहते हैं?

"बाबा! इनका नाम क्या है?" रासमोन ने अपने बाप से पूछा। "यह रेखा ह।" कासगन ने बताया।

"रेखा।" रासमोन ने यह नाम बड़े प्यार भरे लहजे में दोहराया- "रेखा--में तुम्हारा दिल से आभारी हूं।"

"अब क्या ख्याल है-उस जादूगरनी के इलाके की तरफ फिर जाएंगे?" रेखा ने हंसकर पूछा।

"भूल कर भी नहीं।" रासमोन ने कान पकड़े- "तौबा मेरी।" रेखा का मन उससे अपनत्वपूर्ण बातें करने को कर रहा था। वह फिर उसी बेतकन्तुफी से बोली-

"क्या कावेरी की बेटी सारबरी ऐसी ही हसीन थी कि उसे देखते ही अपने होश गवां बैठे।"

रासमोन लजा-सा गया-फिर एक मंद-सी मुस्कान उसके होंठों पर नाच गई। इस सवाल का जवाब वह अपने बाप की मौजूदगी में कैसे दे सकता था।

"रेखा! वो-वो कहां चला गया?" कासगन को उस रहस्यमय शख्स का ख्याल आया तो उसने पूछा।

"मैंने उसे जाते नहीं देखा। वो हमें खुशी देकर चला गया। खामोशी से निकल गया।" रेखा ने बताया।

"बाबा! कौन था वह?" रासमोन ने पूछा।

"मेरा तो ख्याल है कि जादूगरों का बादशाह त्रिमूर्ति था। कासगन बोला- "त्रिमूर्ति खुद।"

"त्रिमूर्ति ।" रेखा चकित हुई- "त्रिमूर्ति कैसे हो सकता हैं। उसके तो तीन मुंह हैं और...और...क्य न चेहरों के अलावा वो कुछ नहीं है।"

comicsmylife.blogspot.in

"रेखा! वह त्रिमूर्ति है। जादूगरों का बादशाह। वो कोई भी रूप अपना सकता है।"

रेखा ने गहरी सांस ली- "चलो, वो अब जो भी था..,था। वो रासमोन को कावेरी के जादू से मुक्ति दिला गया है। त्रिमूर्ति ने अपना वायदा निभा दिया।"

"एक वायदा मैंने भी तुमसे कर रखा है।" कासगन ने हंसकर कहा।

"वह क्या?" रेखा उसकी सूरत देखने लगी।

"क्या भूल गई? मैंने कहा था कि तुम अगर त्रिमूर्ति के दरबार से कामयाब वापिस आ गई तो तुम जो मांगोगी-वह मैं तुम्हें दूंगा। अब वह वायदा निभाने का वक्त आ गया है। बोलो, क्या मांगती

रेखा कुछ क्षण सोचती रही। फिर उसने रासमोन की तरफ देखा। रासमोन भी तो उसे ही निहार रहा था। रेखा ने मुस्कराते हुए पूछा- "मैं क्या मांगू रासमोन?

"रेखा, मुझे मांग लो।" रासमोन ने कहना चाहा, पर उसके होंठों पर जो बात आई वह कुछ यूं थी- "अपने दिल का कहा मानो...जो वो कहे, वह मांगो।"

"दिल।" रेखा खोये हुए अंदाज में बोली- "मेरे दिल में तो बस मेरा भाई बसा है-जो आपकी इस दुनिया में खो गया है। मैं तो उसे ही ढूंढने निकली थी।"

"आह! मैं भी कितना खुदगर्ज हूं। तुम में सिर्फ अपनी कहता रहा। तुमसे तुम्हारी सुनी ही नहीं। न यह जाना कि उस 'मुक्ति द्वार' में कैसे पहुंची? वहां तुम्हें कौन धकेल गया? माफ करना मुझे माफ कर देना।"

"बाबा, इस कमरे से बाहर चलें। यहां कब तक ठहरे रहेंगे? इन्हें कुछ देर आराम करने दें।" रासमोन ने कहा और दरवाजे की तरफ बढा।

कासगन को भी रेखा के आराम का ख्याल आया। यह बातें तो बाद में भी हो सकती थीं। वह अपने बेटे के पीछे कदम उठाते बोला- "आओ,रेखा।"

फिर कासगन के आदेश पर सेविकाओं ने रेखा को उसके शयन-कक्ष में पहुंचा दिया।

सूरज डूबने को था। रेखा खिड़की से पर्दा हटाकर दूर पहाड़ों में डूबते सूरज का नजारा करने लगी। सोचें उभरने लगीं।

पता नहीं यह कौन-सा सूरज था। अपनी धरती का सूरज या इस मायावी लोक का चांद! वह कहां-से-कहां आ गई थी। जाने उसका भाई किस हाल में होगा। अपने भाई इंद्रजीत को उसने रेगिस्तानी झोपड़ी में छोड़ा था और वहां से प्रेतनी बकाल रेखा को पकड़कर ले गई थी और बेबस इंद्रजीत कुछ भी नहीं कर सका था। फिर बकाल ने रेखा को अपने भाई राकल, यानि लंगड़े प्रेत की सेवा में पेश कर दिया था। लंगड़े प्रेत राकल ने रेखा को पाने को जाने कितने यत्न किये थे-लेकिन वह नाकाम रहा था और अपनी इस शिकस्त का इंतकाम लेने के लिए उसने रेखा को 'मुक्ति द्वार' कहे जाने वाले कुएं में फिंकवा दिया था। यह रेखा की खुश किस्मती थी कि कुएं में बसे प्राणियों ने उसे कुएं में -गिरते हुए देख लिया था और उबलते हुए पानी में जाने से बचा लिया था।

वर्ना रेखा इस घड़ी इस खूबसूरत बेडरूम में जीवित सकुशल न बैठी होती। उसकी हड़िया तक पिघलकर अपना वजूद खो बैठी होतीं।

रेखा इस कल्पना से ही कांप गई।

सूरज पहाड़ों के पीछे अस्त हो चुका था। अंधेरा तेजी से फैलता जा रहा था। रेखा ने पर्दा बराबर कर दिया-घूमी तो देखा कि कमरे में दो कन्नीजें फानूस रोशन कर रही थीं। वे फानूस रोशन करके रेखा की तरफ आई व सिर नवांकर बड़े आदर से बोली-

"हमारे लिए कोई सेवा?"

comicsmylife.blogspot.in

"कोई नहीं। मैं थोड़ी देर आराम करना चाहती हूं।" रेखा बोली। फिर उसने पूछा- "महल में क्या हो रहा है?"

"चिरागा (रोशनिया) किया जा रहा है। रात को जबरदस्त जश्न मनाया जाएगा।" एक दासी बोली- "आप कुछ देर सो लें-फिर आपको जश्न के लिए तैयार किया जाएगा।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब तो हमें नहीं मालूम। हमें तो वस आपको तैयार करने को कहा गया है।"

रात को महल में बड़ा जबरदस्त जश्न मनाया गया। बस्ती का हर व्यक्ति आमंत्रित था। रेखा को कीमती शानदार लिबास पहनाकर सबसे खूबसूरत और सबसे ऊंची कुर्सी पर बैठाया गया। नाच व संगीत जारी था। हर तरफ रंग-ओ-नूर की बारिश हो रही थी। रेखा का सौंदर्य आखों को चुंधिया रहा था। रासमोन उसके बराबर दूसरी कुर्सी पर जो उससे जरा नीची थी-बैठा था, जबकि कासगन एक छोटे से तख्त पर विराजमान था।

आने वाले मेहमान रेखा के कदमों में तोहफे ढेर कर रहे थे। सबसे अंत में कासगन ने अपना तोहफा भेंट किया। यह हीरों का लश्कारे मारता हार था। कासगन ने अपने हाथों से रेखा को यह हार पहनाया तो रेखा का सौंदर्य और अधिक जगमगा उठा। रासमोन उसे देखता ही रह गया।

रेखा ने उसकी तरफ नजरें उठकर देखा तो वह रासमोन की नजरों को ताव न ला सकी और उसने फौरन अपनी निगाहें झुका लीं। उसका दिल अनायास ही धड़क उठा। यह उसे क्या होता जा रहा था?

जश्न खत्म हुआ तो कासगन उसके साथ ही उसके कमरे में आ गया। वह रेखा से उसकी आप बीती सुनना चाहता था। रेखा ने उसे अपनी कहानी सुनी दी। वह कौन है-कहां से आई है-और उसे 'मुक्ति द्वार' नामक कुएं में क्यों फेंका गया? रेखा ने हर वह बात बता दी-जो कासगन जानना चाहता था।

उसकी हादेसों भरी दास्तान सुनकर कासगन ने एक गहरी सांस लेते हुए पूछा- "अब तुम क्या चाहती हो?"

"किसी भी तरह अपने भाई तक पहुंचना चाहती हूं।" रेखा ने बताया।

"कब जाना चाहती हो?"

"मेरा बस चले तो अभी।"

"खैर, यह तो मुमकिन नहीं है।"

"फिर सुबह-ही-सुबह।"

"कुछ दिन हमारे साथ रहो।" कासगन ने अनुरोध किया। "नहीं रह सकती।"

"मुझसे कुछ मांगोगी भी नहीं?"

"आपने इतना कीमती हार दे दिया। अब इसके बाद मांगने को क्या रह गया?"

"यह तो कुछ भी नहीं। तुम कहो तो यह सोने का महल तुम्हारे हवाले कर दूं।"

"नहीं, शुक्रिया। मैं सोने-चांदी के इस महल का क्या करूगी? मुझे अपनी दुनिया में जाना है और वहां यह महल जा नहीं सकता।" रेखा ने हंसकर कहा।

"एक बात कहूं बुरा तो नहीं मानोगी?"

"नहीं मानूंगी। आप कहें जो कहना चाहते हैं।"

"मैंने रासमोन की आंखों में तुम्हारे लिए चाहत की रोशनी देखी हैं और...और...।" वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। संकोच आड़े आ गया था।

comicsmylife.blogspot.in

रेखा ही बोली- ' 'मैं जानती हूं आप क्या कहना चाहते हैं?" "जब जानती हो तो फिर रह क्यों नहीं जाती। मेरे लिए, मेरे बेटे के लिए, हम सबके लिए रुक जाओ। तुमने देखा है-इस थोड़ी-सी अवधि में ही यह पूरी बस्ती तुम्हारी आभारी हो गई है। तुमने इस बस्ती को नई जिन्दगी अदा की है।"

"मैं तुम सबकी शुक्रगुजार हूं लेकिन मेरी अपनी मजबूरियां हैं। मुझे हर हालत में अपनी दुनिया में जाना है। वहां कुछ लोगों से अपना हिसाब करना है।" रेखा कुछ भी तो नहीं भूली थी। "ठीक है। जैसी तुम्हारी मर्जी।" कासगन उदास लहजे में बौला- "बहरहाल, हम जिन्दगी भर तुम्हें न भूल सकेंगे।" वह उठ खड़ा हुआ- "मैं अब चलता हूं-तुम आराम करो। आसमान वाले ने चाहा तो सुबह तुम्हारे जाने का कुछ-न-कुछ बन्दोबस्त हो जाएगा।मैं कुएं के किसी प्राणी को बुलाता हूं।"

"कासगन मैं भी तुम्हें कभी न भूलूंगी।"

कासगन के जाने के बाद रेखा ने अपना भारी जड़ाऊ लिबास उतारा और राहत की एक गहरी सांस ली। फिर उसने हाथ-मुंह धोये और एक खिड़की का पर्दा हटाकर रेशम जैसे बिस्तर पर आ लेटी। पूरे चांद की रात थी। खिड़की से चांद झांक रहा था। चांदनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। वह लेटे-लेटे चांद को निहारने लगी। चांद को निहारते वह उसी में खो चली थी कि सहसा किसी ने खिड़की के शीशे पर खट्-खट् की।

रेखा चौंक गई। अब चांद गायब हो चुका था और चांद की जगह एक चेहरा नजर आ रहा-था। चांद-सा चेहरा। यह चेहरा रासमोन का था।

रेखा फौरन उठकर बैठ गई। फिर बिस्तर से उठी और वह शीशे की खिड़की खोल दी।

"रासमोन तुम!"

"मैं देख रहा था कि तुम सो रही हो या जाग रही हो।" रासमोन मुस्कराती निगाहों से ही उसे देखते बोला।

रेखा। मुस्कराई- "मैं जाग रही थी। बड़ी देर से चांद को देख रही थी।" उसने बताया।

"तुम्हें चांद अच्छा लगता है?"

"हां-बहुत।"

"और मैं?" रासमोन ने दिल ही-दिल में पूछा, पर उसका यह सवाल उसके मन में ही रह गया। पूछ नहीं पाया।

"तुम बाहर क्यों खड़े हो-अन्दर आ जाओ।" रेखा ही उसे बोलते न देख, बोली।

"क्या यह नहीं हो सकता कि तुम बाहर आ जाओ। खुली फिजा में। "

"हां, हो क्यों नहीं सकता। ठहरो, मैं बाहर आती हू।" रेखा बोली। जैसे वह भी रासमीन से मिलने को लालायित हो।और फिर लिबास दुरुस्त करने के बाद जब वह दरवाजे से बाहर निकली तो रासमोन घूमकर राहदारी में पहुंच चुका था। बाहर अभी तक चिरांगा (रोशनियां) हो रहा था। बड़ा मनमोहक रामां था। वे दोनों टहलते हुए तालाब की तरफ निकल गए। तालाब के किनारों पर भी चिराग रोशन थे-जिनका प्रतिबिम्ब पानी में बड़ा दिलफरेव-रहा था। बतखें एक कोने में एकत्रित होकर शायद सोने की तैयारीया कर रही थी।

"बाबा ने कुएं के प्राणियों को बुलवाया है। वे तुम्हारे जाने में इंतजाम कर रहे हैं।" ससमान ने खामोशी तोड़ी।

"रासमोन, यह खबर तो तुमने बहुत अच्छी सुनाई। इसका मतलब है कि मैं सुबह तक यहां से रुखस्त हो जाऊंगी।"

"बाबा ने तुमसे कुछ कहा था।" क्षणिक खामोशी के बाद रासमोन ने झिझकते हुए पूछा।

"तुम्हारे बाबा सें मेरी बहुत-सा बातें हुई। तुम्हारा इशारा न जाने किस तरफ है?"

"तुम बस, आज रात की मेहमान हो।" रासमोन ने बड़ी हसरत से कहा

comicsmylife.blogspot.in

"हां।" रेखा सहज भाव में बोली। फिर रासमोन की तरफ देखते हुए पूछा- "क्यों?"

"जाने वाला रुक नहीं सकता?" रासमोन नजरें चुराते बोला। "शायद रुक सकता है-लेकिन कितने दिन? एक दिन-दो दिन-ज्यादा-से-ज्यादा दस दिन। फिर जाना होगा और जब जाना ही मुकद्दर है तो फिर देर करने का फायदा...?" रेखा कुछ क्षणों तक खामोश रही, फिर बोली- "रासमोन, मुझे जाने दो। कोई ऐसी बात न करो कि मैं उलझन में पड़ जाऊं।"

रासमोन चलते-चलते रुक गया। चांद की रोशनी सीधी रेखा के चेहरे पर पड़ रही थी। उसका सौंदर्य खिल उठा था। रासमोन उसके चांद-चेहरे में ही खो गया था जैसे। उसे रेखा के अनुरोध पर हैरत हुई थी।

और फिर रासमोन ने बड़े जज्बाती अंदाज में कहा- "रेखा, क्या यह नहीं हो सकता कि तुम मुझे अपनी दुनिया में ले जाओ?" रासमोन ने सीधे शब्दों में अपनी चाहत नहीं दर्शाई थी, पर उसका यह अनुरोध ही उसका प्रेम-प्रदर्शन था और उसका यह अंदाज भी रेखा के मन को भा गया था। खुद रेखा के दिल में भी तो रासमोन के प्रति ऐसी ही भावनाएं थीं।

"वह क्यों?" रेखा ने भोले व अनजान बनते हुए पूछा। "मालूम नहीं।" रासमोन ने फिर नजरें चुराई।

"कमाल है।" रेखा ने शोखी में बात उड़ानी चाही-"जाना भी चाहते हो-और तुम्हें मालूम भी नहीं कि क्यों ?"

"तुम रुक जो नहीं रही।" रासमोन एकदम बोला।

"इसकी वजह मैं तुम्हें बता चुकी हूं।" रेखा संजीदा होते हुये बोली।

"फिर मैं क्या करू?" रासमोन ने उसकी से जानना चाहा।"कुछ नहीं। बस, हंसी-खुशी अलविदा कह दो।"

"नहीं कह सकता।" रासमोन ने जज्बात से भीगी आवाज में कहा और एकदम मुड़ा और तेज कदमों से वापिस जाने लगा। "रासमोन!" रेखा ने पुकारा।

रासमोन नहीं रुका-ना पलटा-बस चलता रहा।

"रासमोन मेरी बात सुनो।" रेखा ने आर्त्मायता से द्वारा। रेखा उसे पुकारती रही-पर वह तेज कदमों से आगे--आग बढ़ता रहा। यहां तक कि वह महल के अन्दरूनी दरवाजे में प्रवेश करके गायब ही गया।

रेखा अपने कमरे में लौट आई।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

रेखा के लिए यह अजीब रात थी। बड़े अजीव अंदाज में गुजरी।

वह करवटें बदलती रही। सोना चाहा-पर सो न सकी। बार-बार रासमोन का चेहरा सामने आता था। यही अहसास कचोटता रहा कि उसने रासमोन का दिल तोड़ा है।

वैसे उसका यूं मायूस होकर चला ज़ाना ही अच्छा। वह रुक जाता तो जाने और क्या-क्या कहता और उसके कहे वे शब्द रेखा के पांवों की जंजीर बन जाते। रेखा को अहसास था कि वह एक मायावी लोक में और गैर-इन्सानी प्राणियों के बीच है। सो- 'एक इंसान' व 'गैर इंसान' का मिलाप भी मुमकिन नहीं। फिर उसे तो हर कीमत पर अपनी दुनिया में वापिस जाना था। वहां-जाकर अपने चाचा रमाकांत से उसकी ज्यादतियों व गुनाहों का हिसाब लेना या। रमाकांत उसके बाप कृष्णकांत का कातिल था। उसके भाई इंद्रजीत को इस नर्क मे धकेलना की जिम्मेवारी क उसी पर थी। वह अभी इन बखेड़ों में कैसे फंस सकती थी?

यही सब सोचते-सोचते जाने कब रेखा को नींद आ गई। और फिर!

प्रात: उजाला फैलने के बाद एक दासी में गुलाब की कली से उसके गालों पर स्पर्श करके उसे जगाया।

रेखा जागी तो दासी का मुस्कराता चेहरा सामने था। दासी ने अभिवादन किया व फिर बोली- "जल्दी तैयार हो जाएं-कासगन आपके प्रतीक्षक हैं।"

रेखा ने बिस्तर छोड़ दिया। हाथ-मुंह धोये और फिर दासियों ने उसे तैयार होने में मदद की और रेखा दासियों के साथ-विभिन्न रास्तों से होती हुई कासगन कें कमरे में पहुंच गई। कासगन उसे देखकर खड़ा हो गया।

"आओ, रेखा! नाश्ता कर लो।" उसने मेज की तरफ इशारा किया।

मेज पर वि ाभिन्न व्यंजन चिने हुए थे। रेखा ने अपनी पसन्द का नाश्ता किया।

"रेखा, मैंने कुएं के वासियों को बुलवा लिया है। वे बाहर मौजूद है। वे लोग तुम्हें उस 'मुक्ति द्वार' तक पहुंचा देंगे। उससे आगे ये लोग नहीं जा सकते।" कासगन ने बताया।

"ठीक है, मै वहां तक -पहुंच गई तो फिर आगे जाने की कोई-न-कोई राह निकल आएगी।" रेखा बोली।

"आओ, चलें।" कासगन -उठ खड़ा हुआ।

वे महल के दरवाजे पर पहुचे। रेखा ने वहां एक रखी देखी। कुर्सी खाली थी व उसके ही कुएंके वासी थे। वे दो थे और वे दोनों वही थे जो रेखा को 'मुक्ति द्वार' यहां तक उड़ाकर लाए थे।

रेखा ने दरवाजे से बाहर कदम रखा और इधर-उधर नजर दौड़ाई।

"रासमोन कहां है?" रेखा ने पूछा।

"वह अपना कमरा बंद करके सो रहा है।" कासगन ने बताया- "वह रातभर जागता रहा है। मैंने उसे उठाया नहीं, कहो तो उठा दूं।"

"नहीं-नहीं-उसे सोने दीजिए।" रेखा बोल उठी।

कासगन बोला- "रेखा इस कुर्सी पर बैठ जाओ। ये दोनों तुम्हें उड़ाकर ले जाएंगे।"

रेखा खामोशी से कुर्सी पर बैठ गई।

"अच्छा, रेखा जाआ। आसमान वाला तुम्हारी हिफाजत करे।" कासगन की आवाज भर्रा गई। वो अपने अश्रु रोकने की कोशिश कर रहा था।

"अच्छा, कासगन असमान वाला तुम्हारी भी हिफाजत करे।" रासमोन से कह देना- "वो मुझे याद आता रहेगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"लो, वह आ गया, रेखा।" कासगन ने दरवाजे की तरफ इशारा किया।

रेखा ने मुड़कर देखा-रासमोन इधर ही आ रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे। चेहरे पर उदासी थी। रेखा को वो मजनूं की तस्वीर नजर आया। साफ लग रहा था वो बिस्तर से उठकर सीधे इधर आया था।रेखा के दिल की धड़कनें बरबस ही तीव्र हो गईं। वह मंत्र-मुग्ध सी ही कुर्सी से उठी व रासमोन की तरफ बढ़ गई। कासगन वहीं खड़ा था। रेखा इतनी आगे बढ़ गई थी कि कासगन उन दोनों की बातचीत नहीं सुन सकता था।

अब उनके पास कहने-सुनने को रह ही क्या गया था? यह आखिरी मुलाकात थी। कुछ ही देर बाद-रेखा को उड़ जाना था। "रासमोन, अच्छा हुआ तुम आ गये।" रेखा मुस्कराते हुए, अपनत्व से बोली।

"सोचा तो था कि जाते हुए न देखूंगा, लेकिन दिल ने बगावत कर दी। मजबूर होकर आ गया।"

"कितना अच्छा है तुम्हारा दिल?" बेअख्तयार ही बोली थी रेखा।

"और मैं?" बड़े शोक से पूछा गया।

"तुम बहुत बुरे हो।"

"वह क्यो?" रासमोन हैरान हुआ था।

"रात को कितनी आवाजें दी तुम्हें, लेकिन तुमने पलटकर भी नहीं देखा।" रेखा ने जैसे शिकायत की।

"तुम भी अभी वैसा ही करोगी। यहां से चली जाओगी-और मैं आवाजें देता रह जाऊंगा।" रासमोन ने उदास-सी मुस्कान के साथ कहा।

"यह मेरी मजबूरी है।" रेखा ने गहरी साँस ली।

"तुम मेरी दुनिया में आई ही क्यों थी?" रासमोन भर्राई आवाज में वोला।

"मैं कहां आई?" रेखा बलात् ही मुस्कराई- "मुझे तो लाया गया था।"

"लाया गया था तो मुझे सोने देती क्यों मुझे जादू से मुक्त कराया?"

"तुम्हें अफसोस है कि जादूगरनी सारबरी के न हो सके?" रेखा ने शोखी से कहा।

"शायद हां कम-से-कम वह मेरी तो हो जाती।"

"अफसोस क्यों करते हो फिर चले जाना शिकार पर?" रेखा ने जैसे सुझाया- "उसे तो अब भी तुम्हारी इंतजार होगी।"

"जाते हुए ऐसी बातें न करो।" रासमोन उसकी आंखों में झांकते बोला।

"अच्छा! अब मुझे इजाजत दो। अब चलती हूं। मेरी कोई बात बुरी लगा हो तो माफ करना।"

"रेखा।" रासमोन ने पुकारा।

रेखा पलटते-पलटते रुक गई और उसे सावालियां नजरौं से देख।

"यह कबूल करो।" रासमोन ने अपने लिबास से सुर्ख गुलाब की एक ताजी कली निकाली।"

"वाह! कितनी खूबसूरत कली है यह-कितना हसीन तोहफा है। बाप के दिये हीरों के हार से भी भारी।" रेखा प्यार भरी इस भेंट पर वास्तव में ही खुश हो गई थी-"मैं इसे खुशी से कबूल करूगी।"

"ऐसे नहीं।" रेखा ने कली लेने को हाथ आगे बढ़ाया तो रासमोन ने अपना हाथ पीछे कर लिया।

comicsmylife.blogspot.in

"फिर कैसे?"

"मै इसे अपने हाथों से तुम्हारे वालों में सजाना चाहता हूं।" रेखा ने क्षणभर को सोचा। बड़ी मासूम-सी ख्वाहिश थी। उसने बिना कुछ कहे अपनी गर्दन। रासमोन के चेहरे पर एकाएक गुलाब से खिल उठे। उसने प्यार से वह महकती कली रेखा के रेशमी बालों में टांक दी।

"रेखा-यह कली उस वक्त तक नहीं मुर्झायेगी-जब तक मैं जिन्दा हूं। जब यह कली मुर्झा जाए तो समझ लेना कि मैं इस दुनिया में नहीं रहा।" रासमोन ने भावभीने लहजे में रहस्योद्घाटन किया। "रासमोन मेरी दुआ है कि यह कली मेरे पास सदैव यूं ही तरो-ताजा रहे।"

"आसमान वाला तुम्हें हमेशा खुश रखे। जाओ, बस अब चली जाओ।"

रेखा ने नजर भरकर रासमीन को देखा। रासमोन की खूबसूरत आकर्षक आंखों में नमी आ गई थी। इससे पहले कि उसकी आंखों में आंसू भर आएं-वह जल्दी से पलटी और जाकर फिर कुर्सी पर बैठ गई।

"ले जाओ इसे।" कासगन ने कुएं के प्राणियों को क्या दिया। वे दोनों बोने तेजी से कुर्सी की तरफ बड़े। दोनों दाएं-बाएं होकर अपने कंधे से लगाए और देखते-ही-देखते वे शून्य में ऊपर उठते चले।

रेखा ने पहले कासगन की तरफ व फिर रासमोन की तरफ देखकर हाथ हिलाया।कासगन ने जवाबी हाथ हिलाया, लेकिन रासमोन बुत बना खड़ा रहा। जैसे पत्थर का हो कुएं के वे बौने अजीब से प्राणी कुर्सी को बहुत तेजी से उड़ाये लिए जा रहे थे। रेखा मुड़कर उस वक्त तक पीछे देखती रही जब तक वे दोनों नजर आते रहे। फिर बीच में एक पहाड़ आ गया-और जब वह पहाड़ सामने से हटा तो फिर पीछे कुछ नहीं था।

अब वहां एक हरा-भरा इलाका था-घने पेड़ थे-झरने थे। उड़ते पेक्षी थे। नहीं था तो वह सोने का महल नहीं था।

रेखा ने भीगी आंखों को बंद किया तो दो आंसू उसके गालों पर बह निकले। उसने आसू पोंछकर अपने बालों में अटकी हुई गुलाब की कली निकाल ली। कली हाथ में लेकर कोमलता से ही अपने फूल की पत्ती से होंठ उस गुलाब की कली पर रख दिए।

बहुत तेजी से उड़ी जा रही थी। वे दोनों विचित्र बौने कुर्सी अपने कन्धों पर उठाये हुए थे।पहाड़ी सिलसिला पार होते ही वह कुर्सी अब नीचे की तरफ जाने लगी। फिर रेखा को एक चट्टान में बड़ा-सा सुराख नजर आया। इस सुराख के नीचे एक झरना उबल रहा था। कुर्सी अब उस बड़े से सुराख की तरफ बढ़ रही थी।

फिर कुर्सी उस बड़े से सुराख में दाखिल हो गई। यह दरअसल एक गार था और इस रास्ते से 'मुक्ति द्वार' में पहुंचा जाता था। सो, वे गार से निकलकर कुए में पहुच गए।

रेखा ने नीचे झांककर तो उसे खौलता हुआ तेल-सा नजर आया-जिससे धुआ उठ रहा था।

कुर्सी अब ऊपर उठने लगी। कुएं में गहन अंधकार था। उसने सिर ऊपर उठाकर देखा तो बहुत ऊपर एक छोटा-सा सुराख दिखाई दिया।

यह 'मुक्ति द्वार' का मुहाना था।रेखा का दम घुटने लगा। इस कुएं की फिजा बड़ी दमघोटू थी।

"और तेज उड़ो। इस कुएं से जल्दी निकलो।" रेखा ने बेचैन होकर कहा।

दोनों बौने काफी तेज उड़ रहे थे। रेखा की परेशानी महसूस कर उन्होंने अपनी गति और भी तेज कर दी। रेखा ऊपर 'मुक्ति द्वार' के मुहाने की तरफ देख रही थी-जो धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था।फिर वह वक्त आया कि कुर्सी 'मुक्ति द्वार' से बाहर निकल आई। उन दोनों बौनों ने कुर्सी को एक पत्थर पर उतार दिया-और वे खुद सीधे खड़े हो गए।

रेखा ने गहरे-गहरे सांस लेकर अपने हवास बहाल किए और चारों तरफ नजर दौड़ाई। यह वही जगह थी जहां से उसे 'मुक्ति द्वार' नामक कुएं में फेंका गया था और यह वही पत्थर था जिस पर खड़े होकर उस लंगड़े प्रेत' ने उसे कुएं में फेंकने का हुक्म दिया था। अब उस पत्थर पर उसकी कुर्सी रखी हुई थी।

comicsmylife.blogspot.in

"हम यहां ज्यादा देर नहीं रुक सकते-हम जाते हैं।" कुएं के प्रार्थी ने कहा।

"ठीक है, जाओ।"

दोनों अजीबो-गरीब बड़े-बड़े कानों वाले बौनों ने पत्थर पर खड़े-खड़े ही कलाबाजी खाई और सीधे 'मुक्ति द्वार' में जा गिरे। उनके गायब होने के बाद रेखा अकेली रह गई और यह एक अजीबो-गरीब मंजर था। एक अति सुन्दर जवान लड़की-अति आकर्षक राजसी लिबास में-एक शाही कुर्सी पर किसी शहजादी की तरह बैठी थी और दूर-दूर तक कोई नहीं था। न इन्सान न गैर इंसान। यह एक पथरीला इलाका था। छोटे-बड़े पहाड़ दूर तक फैले हुए थे।

अब वह क्या करे?

यही सोचते हुए रेखा कुर्सी से उठकर पत्थर पर खड़ी हो गई और यूं अब जो उसकी परेशान निगाहें जमीन पर गई तो वह हैरान रह गई।

नीचे जमीन पर लंगड़े प्रेत राकल का 'राजदण्ड' पड़ा हुआ था। वह इस छड़ी को अच्छी तरह पहचानती थी। यह छड़ी सांप की तुरह बल खाई हुई थी। वह पत्थर से उतरकर नीचे पहुंची-और वह छड़ी उठा ली।

यह 'राजदण्ड' यहां क्यों है? यह छड़ी तो उस शैतान 'प्रेत के हाथ में थी। वह उसे यहां क्यों छोडू गया? यह छड़ी तो उसकी बेसाखी का काम देती था।

रेखा का दिमाग तेजी से सोचने लगा।

क्या हुआ राकल को? कुछ तो यकीनन घटा था। फिर जैसे-जैसे रेखा अरपने इर्द-गिर्द नजर डालती गई-उसके सामने नये-नये सुराग आते गए। उसने जगह-जगह मरे हुए उल्लू देखे। ऐसा लगता था कि जैसे इन उल्लू को किसी खुंखार जानवर ने झन्सोड़ा हो। फिर उसने करीब ही घोड़ों की लाशें देखीं-वह भी क्षत-विक्षप्त अवस्था में थीं। आस-पास जो मंजर फैले हुए थे-उनसे यही महसूस होता था जैसे यहां घमासान संघर्ष हुआ हो।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

घमासान संघर्ष तो हुआ ही था।

रेखा को क्या मालूम था कि उन खूनी क्षणों में क्या कुछ हो गया था। उसकी जान का दुश्मन राकल और उसके भाई इंद्रजीत की जान की दुश्मन बकाल-अब इस दुनिया में नहीं रहे थे और उसका भाई इन्द्रजीत पूर्णतया स्वस्थ हो गया था। इन्द्रजीत का दीमकजदा चेहरा बिल्कुल साफ हो गया था और अब वह अपने हमदर्द काले चिराग के साथ था। काला चिराग उसे 'ख्वाब महल' ले गया था।

और जहां, इस वक्त इन्द्रजीत बिस्तर पर लेटा रेखा के ही बारे में सोच रहा था। फिर वह अपनी बहन के बारे में सोचते-सोचते उनींदगी में चला गया। उसने ख्वाब में देखा कि उसकी बहन रेखा एक बड़े से पत्थर पर एक खूबसूरत कुर्सी पर शहजादी की तरह बैठी है और उसके निकट ही 'मुक्ति द्वार' है।

इस ख्वाब को देखते ही इंद्र की आंख खुल गई। वह समझ नहीं पाया कि यह किस किस्म का ख्वाब था। पत्थर पर कुर्सी और कुर्सी पर शहजादियों की तरह शोभामान रेखा। तब उसे ख्याल आया कि वह अपनी बहन के बारे में ही सोचते-सोचते सो गया था-शायद इसीलिए वह ख्वाब में आ गई थी।

इन्द्रजीत व्याकुल हो उठा।

उसका दिल इस ख्वाब को महज एक खाब मानने को तैयार नहीं था। यही महसूस हो रहा था जैसे उसने जागते में रेखा को देखा है। वह ख्वाब इतना ही स्पष्ट व सजीव था। अब उसके अन्दर बेचैनी पुकार-पुकारकर कह रही थी कि 'मुक्ति द्वार' की तरफ चलो। वह बिस्तर से उठ गया।

उसने मुंह-हाथ धोये। मुंह हाथ धोते हुए वह यही सोच रहा था कि काले चिराग को कैसे बुलाये। बहन का ख्याल बुरी तरह बेचैन कर रहा था। वह काले चिराग के बारे में ही सोचते हुए स्नानागार से बाहर निकला तो हैरान रह गया।

काला चिराग बड़े इत्मीनान से कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह इन्द्रजीत को बाहर निकलते देखकर मुस्कुराया और वोला- "क्या बात है इन्द्रजीत तुम कुछ जल्दी उठ गये?" "अच्छा हुआ तुम आ गये। मैं यही सोच रहा था कि तुम्हें कैसे बुनाऊं?"

"खैरियत तो है-कोई गड़बड़ हो गई क्या?"

"नहीं, गड़बड़ कोई नहीं हुई। मैंने एक अजीब ख्वाब देखा और मेरी आंख खुल गई।"

"ख्वाब! क्या बकाल ख्वाब में आ गई?"

इन्द्रजीत ने हंसकर कहा- "नहीं बकाल तो नहीं, अलबत्ता मेरी बहन ख्वाब में आ गई।"

"रेखा को देखा, तुमने ख्वाब में।" काला चिराग की उत्सुकता जागी-क्या कह रही थी, वह खाब में?"

"बड़ा अजीब ख्वाब देखा है मैंने। रेखा एक बड़े से पत्थर पर कलात्मक कुर्सी पर शहजादियों की तरह बैठी है और उसके करीब ही 'मुक्ति द्वार है।"

"बस, इतना ही देखा?"

"हां।"

"उसने कुछ कहा नहीं?"

"वह शाही कुर्सी पर शाही लिबास पहने शहजादियों की तरह जरूर वैठी थी-लेकिन उसके चेहरे पर परेशानी के भाव थे। वह इधर-उधर नजरें घुमाकर देख रही थी।" इन्द्र ने बताया।

"तुम्हें यह अहसास कैसे हुआ कि उसके नजदीक ही 'मुक्ति द्वार' है।"

"यह मुझे खुद नहीं मालूम, लेकिन जब मेरी आंख खुली तो यह अहसास, यह सोच मेरे दिमाग में मौजूद थी कि रेखा 'मुक्ति द्वार' के निकट बैठी है।"

comicsmylife.blogspot.in

"मुक्ति द्वार नामक कुएं के आस-पास का इलाका पथरीला है और यह भी सही है कि उसके करीब छोटे-बड़े पत्थर बिखरे पड़े हैं। कुछ पत्थर तो छोटी चट्टानों जितने हैं।" काले चिराग ने सोचपूर्ण लहजे में कहा- "एक बात बताओ, क्या तुम समझते हो कि तुमने सच्चा ख्वाब देखा है।"

"बिल्कुल! मेरा दिल पुकार-पुकारकर कह रहा है कि रेखा 'मुक्ति द्वार' पर मौजूद है।"

"ठीक है। फिर समय नष्ट नहीं करते, फौरन चलते हैं।" "क्या अपना सामान समेट लूं?"

"नहीं, कुछ मत समेटो।" काले चिराग ने खड़े होते हुए कहा-"बस, यहां से निकल चलने की फिक्र करो।"

"तो फिर चलो। मैं चलने के लिए तुमसे भी ज्यादा बेकल हूं।"

"आओ फिर मेरे साथ।" यह कहकर काला चिराग, इस 'ख्वाब महल' के भीतरी दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसे उधर जाते देखकर इन्द्रजीत को हैरत क्योंकि काले चिराग ने साफ शब्दों में उसे अन्दर न जाने को था। अब वह खुद ही उसे महल के अंदर ले जा रहा था।

"महल के अंदर कहां जा रहे हो? वहां जाने को तो तुमने मना किया था?" इंद्रजीत पूछे बिना नहीं रह सका।

"साथ ही, मैंने एक बात और भी कही थी।"

"वो क्या?"

"यही कि तुम्हें सवाल करने की इजाजत नहीं है।" काला चिराग ने मुस्कराकर याद दिलाया।

"ओह, हां! अच्छा ठीक है-नहीं करता सवाल। ऐसे सवाल करने का क्या फायदा जिनका जवाब न मिले?"

दरवाजे पर पहुंचकर काले चिराग ने दरवाजा खोला और इन्द्र को अपने पीछे आने का इशारा किया। जब वे दरवाजे से बाहर निकल आए तो काले चिराग ने दरवाजे में एक मोटा-सा ताला लगा दिया और चाबी हवा में उछाल दी जो फौरन ही गायब हो गई। फिर उसने इन्द्रजीत का हाथ थाम लिया और -

"इन्द्रजीत, मेरे साथ दौड़ना।"

इन्द्र को भला क्या एतराज हो सकता था, लेकिन उसे ज्यादा नहीं दौड़ना पड़ा। दौड़ लगाते ही उसके सामने अंधेरा-सा छा गया। बहुत गहरा अंधेरा था-ऐसा अंधेरा कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा था।

फिर-कुछ देर बाद ही उसकी आंखों के सामने से अचानक अधेरा छंट गया। उसने खुद को एक पथरीले इलाके में पाया। उनके सामने ही एक छोटी-सी चट्टान थी। वे उस चट्टान की ओर से निकले कि सामने एक बड़े पत्थर पर रेखा को राजसी परिधान में एक कुर्सी पर बैठे देखा तो इन्द्रजीत को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आया। उसने सोचा-वह पहले ख्वाब देख रहा था या अब देख रहा है। उसने फोरन अपनी बांह पर चुटकी ली, पीड़ा का अहसास हुआ। "इन्द्रजीत, तुम्हारा ख्वाब तो वाकई सच निकला।"

वे दोनों अभी रेखा से दूर थे और पत्थरों की ओट में छिपते, कभी वाहर निकलते रेखा की तरफ बढ़ रहे थे।

रेखा-इर्द-गिर्द का जायजा लेने के बाद पुन: कुर्सी पर आ बैठी थी। लंगड़े प्रेत, राकल की छड़ी उसके हाथ में थी और वह यही सोच रही थी कि अब क्या करे? किसे अपनी मदद के लिए पुकारे? तभी उसकी नजरें अचानक सामने उठीं तो उसका ऊपर का सांस ऊपर और नीचे का नीचे रह गया। हैरत से आंखें फैल गई। एक अविश्वसनीय नजारा उसके सामने था। गजब ही तो था कि उसका भाई इन्द्रजात और उसका हमदर्द काला चिराग हंसते-मुस्कराते उसकी तरफ बड़े चले आ रहे थे।

रेखा से रुक पाना कठिन हो गया। उसने राकल का 'राजदण्ड' परे फेका और पत्थर से धड़धड़ करती नीचे आ गई। हवा के तेज झोंके की मानिन्द ही वह इन्द्र के पास पहुंची थी। "मेरे भाई!" कहते हुए वह इन्द्र के गले लग गई और सिसक पड़ी।

comicsmylife.blogspot.in

"ओ मेरी रेखा-मेरी प्यारी बहन रेखा।" इन्द्र ने उसे अपने बाजुओं में समेट लिया।

काला चिराग बहन-भाई के मिलन के इस हृदयविदारक दृश्य को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था। इंद्रजीत भी तो भावावेश में रो पड़ा था।

"भई, यह आखिर कब तक रोते रहोगे? यह तो खुशी के क्षण हैं।" काले चिराग ने हंसकर कहा।

तब इन्द्र ने रेखा को अपने से अलग किया, खुद को सम्भाला व फिर रेखा से सम्बोधित हुआ- "इनसे मिले यह इस अचरज लोग के हैं-नाम है काल चिराग।"

"इन्हें मैं कैसै भूल सकती हूं।" रेखा ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा। फिर काले चिराग से पूछा- "आप कैसे हैं?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं। मैं ही नहीं, तुम्हरा भाई इन्द्रजीत भी बिल्कुल ठीक है। क्या तुमने इसका चेहरा गौर से देखा?"

काले चिराग के कहने पर रेखा ने फौरन अपने भाई के चेहरे की तरफ देखा। यह देखकर कि इन्द्र के चेहरे पर जो दीमक-सी लगी हुई थी, बिव्कुल साफ हो गई है-उसे बहुत खुशी हुई। इस वक्त उसका भाई बहुत प्यारा लग रहा था। एकदम फिल्मी हीरो। "अरे, वाकई...।" उसके मुंह से निकला- "भाई, यह कैसे हुआ?"

"यह हम बाद में बताएंगे। पहले तुम यह बताओ कि तुम्हें यह रत्नजडित कुर्सी और यह शाहाना लिबास कहां से मिला? तुम्हें तो 'मुक्ति द्वार' में फेंका गया था। तुम जिन्दा कैसे बच गई? कहीं तुम रेखा की 'आत्मा' तो नहीं हो?" काले चिराग ने हंसकर पूछा। "मैं एक जिन्दा हकीकत हूं। यह ठीक है कि मुझे उस नर्क कुण्ड में फेंका गया था और यह भी सच है कि उस कुए में धकेला गया शख्स कभी नहीं बच सकता। मैं अगर बच गइ तो इसे मेरी किस्मत समझे या फिर एक चमत्कार।"

"आखिर यह सब हुआ कैसे?" इन्द्र ने पूछा।

"इसे ही समझो, इन्द्र! इत्मीनान से बताऊंगी। एक लम्बी कहानी।" रेखा ने मुस्कराकर कहा।

"रेखा, तुम यह न समझो कि तुम्हारे पास ही सुनाने को बहुत कुछ हैं। हमारी सुनोगी तो हैरान रह जाओगी।" इन्द्र बोला। "ठीक है-ठीक है।" काला चिराग बोला- "यह सुनने-सुनाने का सिलसिला यहां नहीं। 'ख्वाब महल' में पहुंचकर ही सुनी जायेंगीं ये आप बीतियां।"

"यह 'ख्वाब महल' कहां है?" रेखा ने पूछा।

"करीब ही है। तुम यह बताओ, यह कुर्सी भी साथ ही जाएगी?" काले चिराग में पूछा।

"जी तो नहीं चाहता ऐसी कुर्सी छोड़ने को।" रेखा बोली- "पर अब ऐसा मोह भी नहीं है कि जहमत उठाई जाये।"
"अक्लमंदी की बात है।" काला चिराग हंसते हुए बोला-"छोड़ो इसे-आओ चलें।"

फिर वे तीनों घूमकर उस चट्टान की ओट में आ गये जहां वे पहले पहुंचे थे।

"तुम दोनों मेरे हाथ पकड़ लो और हाथ पकड़कर आंखें बन्द कर लो- "काले चिराग ने अपने दोनों हाथ आगे कर दिये।

रेखा ने बायां और इन्द्र ने दायां हाथ पकड़ लिया। फिर उन्होंने जैसे ही आंखें बन्द कीं-एक झटका-सा लगा। ऐसा लगा जैसे धरती फट गई हो और वे नीचे गिरते चले जा रहे हों, पर यह स्थिति कुछ क्षणों से ज्यादा नहीं रही। फिर काले चिराग की आवाज उभरी- "अब औखें खोल दो ।"

इन्द्रजीत ने आंखें खोलीं तो उसेने खुद को महल में पाया। रेखा साथ ही थी। रेखा के लिए यह जगह नई थी।

"तो यह है 'ख्वाब महल'?" वह चारों तरफ निगाहें दौड़ाते बोली-और फिर आगे बढ़कर एक कुर्सी पर बैठ गई।

इन्द्रजीत और काला चिराग भी कुर्सियों पर बैठ गए।

comicsmylife.blogspot.in

"यह किसका महल है?" रेखा ने पूछा।

"बस, अपना ही समझो।" काले चिराग ने मुस्कराकर कहा। "जब मैं अपनी दुनिया से आई थी तो आपने मुझे इसी तरह के एक महल में ठहराया था-जहां मैं रातभर डरती रही थी। पूरी रात सो नहीं सकी थी। मैं जब भी आंख बंद करती थी-खुद को एक अन्धेरे हाल में पाती-जहां बेशुमार चमगादड़ें उड़ती हुई नजर आती।"

"वह मेरी गलती से हुआ, लेकिन यहां ऐसा कुछ नहीं होगा।" काले चिराग ने मुस्कराकर कहा।

"यहां बाहर निकलने में पाबन्दी तो नहीं।" रेखा ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"नहीं। लेकिन वाग की चारदीवारी से बाहर जाने की इजाजत नहीं और न ही इस कमरे से महल के अंदर जाने की जरूरत है।" काले चिराग ने खुलासा किया।

"चलो, यह तो तय हुआ।" रेखा ने निश्चिन्तता दर्शाई- "अब मुझे हालात से भी आगाह कर दो। आखिर हमें एक-दूसरे की कहानी जान लेनी चाहिये।"

"तुम्हें कहां तक की कहानी की घटनायें याद हैं?" काले चिराग ने पूछा।

रेखा याद करते बोली- "तो मैं अपनी सुनाती हूं। भाई हम तीनों इसी तरह रेगिस्तान में उस झोपड़ी में थे जिसमें भाई इन्द्रजीत कैद थे-और चुड़ैल बकाल से छुटकारे के रास्ते सोच रहे थें कि वो बला अचानक आ चढ़ी और पहले तो उसने आपको जंजीरों में जकड़ा और कुछ सवार आपको घसीटते हुए ले गए। उसके बाद वकाल अपने साथ ले गई। इस तरह हम तीनों जुदा हो गए।"

"मुझे बकाल के भाई राकल के लोगों ने गिरफ्तार किया था। राकल ने मुझ कैदखाने में डाल दिया। वहां से सरदार कोलाना ने मुझे आजाद करवाया और लंगड़े राकल के ठिकाने सुनहरे खण्डहर की ईट-से-इंट बजा दी।" काले चिराग ने बताया।

"बकाल मुझे भी अपने भाई राकल के पास ले गई और उसके संरक्षण में देकर चली गई। राकल मुझे अपनी बनाना चाहता था-जो मुझे मंजूर न था। नतीजे में मुझे कैद में डाल दिया गया और कई दिन भूखा प्यासा कमरे में बंद रखा। वहां दादा हरिओम की पुण्यात्मा ने मेरी मदद की और मुझे मरने नहीं दिया। दो-तीन दिन बाद जब राकल ने कमरा खुलवाया तो उसका ख्याल था कि मैं भूख से इतनी निढाल हो चुकी होऊंगी कि उसका कहा फौरन मान लूंगी-लेकिन जब उसने मुझे आशा के विपरीत सकुशल व स्वस्थ देखा तो वह हैरान रह गया।

"तब पता चला कि बकाल को सरदार कोलाना ने अगुवा करवा लिया और उसके बदले उसने काले चिराग यानि आपको मांगा है । राकल ने मेरे बारे में फैसला कर लिया था कि मुझे मौत के मुंह में झोंक देगा। इसलिए वह मुझे धोखे से सुनहरे खण्डहर से निकाल लाया और मुझे 'मुक्ति द्वार' नामक मौत के कुएं में फिंकवा दिया।"

रेखा ने अपनी आपवीती कह सुनाई।

"रेखा, मैं हैरान हूं कि तुम बच कैसे गई?" काले चिराग ने कहा।

"बस, ऊपर वाले ने बचा लिया।" रेखा आभारी-सी बोली- "कुएं में गिरते वक्त मेरी चींखों ने कुएं के बौने प्राणियों को जगा दिया। उन्होंने मुझे बचाया और फिर इनाम के लालच में कासगन की बस्ती तक पहुंचा दिया। वहां एक अजीबो-गरीब कहानी मेरी प्रतीक्षक थी।"

और फिर कासगन की बस्ती में रेखा के साथ जो बीती वह सविस्तार उन्हें सुना डाला। हर बात बता दी मगर वह बात छिपा ली जो कभी छिपाये नहीं छिपती। रासमोन उसको भा गया था। उसने रासमोन का जिक्र तो किया लेकिन यह नहीं बताया कि वो उस पर मर मिटा था और खुद भी उसके आकर्षण में बंध गई थी। रेखा की आपबीती खत्म हुई तो काला चिराग अपनी कहानी ले बैठा।

लंगड़े प्रेत राकल के सुनहरे खण्डहर की तबाही-उसकी गिरफ्तारी-सरदार कोलाना के सामने उसकी पेशी-फिर बकाल के साथ उसकी शाँदी-वकाल की आत्महत्या-उसकी अन्तेयष्टि-राकल का सरदार कोलाना को घायल करके निकल जाना-देवा काली का दरबार-राकल की सजा-ए-मौत-फिर उसकी भी अन्तेयष्टि-और उसी अवसर पर

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत का मिल जाना-इन्द्र को सुनहरी पंखों वाली मक्खियों का काटना-इन्द्रजीत का भला-चंगा होना-बकाल और लंगड़े राकल का जनीन में उतर जाना-उनका भयावह अंजाम-और इन्द्रजीत का काले चिराग के साथ 'ख्वाब महल' में आना।

रेखा व काले चिराग के बाद इन्द्रजीत ने अपनी आपबीती छेडी और उसने वह सारी बातें रेखा को सुना दीं जिनसे वह वाकिफ न थी।

इन्द्रजीत की आपबीती सुनकर अब पूरी कहानी, रेखा के सामने आइने की तरह चमकने लगी। वह खुश थी कि उसने अपने भाई इन्द्रजीत को पा लिया। अब वह यही चाहती थी कि जैसे भी शीघ्र-अति-शीघ्र अपनी दुनिया में लौट जाए ताकि अपने चाचा रमाकांत से उसके एक-एक जुल्म का हिसाब ले सके।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

एक-दूसरे के हालात जानने के बाद-रेखा बोली- "काले

चिराग, साहब! अव आप हम पर एक अहसान और कर दें। हमें हमारी दुनिया में दें।

काले चिराग ही कोई जवाब नहीं दिया। वह बड़े नाटकीये व रहस्यमय अंदाज में कुर्सी से उठा और बिना कुछ कहे, महल के भीतर दरवाजे से अन्दर चला गया और फिर दरवाजा खटाक् से बन्द हो गया।

रेखा ने अपने भाई की तरफ देखा, फिर चिन्तित स्वर में बोली- "इन्हें क्या हुआ?"

"शायद हमारी वापसी का जिक्र पसन्द नहीं आया है।" इन्द्रजीत बोला- "और मुझे तो लगता है कि वह हमें इस कमरे में बन्द कर गया है।"

"हाय, नहीं।" रेखा विचलित हो उठी- "मैं जाकर दरवाजा देखूं

"हां, देखो, पर यह ख्याल रखना कि दरवाजा खुला हुआ हो तो बाहर निकलने की कोशिश न करना।" इन्द्र ने उसे सचेत किया। रेखा उठ गई व भीतरी दरवाजे की तरफ बढ़ी। उसने दरवाजे को अपनी तरफ खींचकर देखा। दरवाजा नहीं खुला। शायद उधर से कुच्छी लगी हुई थी।

"दरवाजा तो बन्द है, भाई।" वह परेशान हो उठी थी। "अच्छा, मैं महल का बाहरी दरवाजा देखता हूं।" इन्द्र उठकर बाहरी दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

इन्द्र ने बाहर वाला दरवाजा अपनी तरफ खींचकर देखा। दरवाजा फौरन खुल गया।

"यह दरवाजा तो खुला हुआ है।" उसने बहन को बताया। "शुक्र है।" रेखा ने ठण्डी सांस लेते कहा।

"कैद का खतरा तो टल गया।" इन्द्रजीत ने भी राहत की सांस ली थी। उसने सुझाव दिया- "आओ, बाहर चलें। बाग में चलकर बैठते हैं।"

रेखा उसकी तरफ बढ़ गई। फिर वे दोनों ही सीढ़ियां उतरकर बाग में पहुंच गए और एक घने साये तले घास पर बैठ गए। कुछ क्षण चुप्पी में बीते। फिर रेखा, इन्द्र के चेहरे की तरफ देखते बोली "भगवान की बड़ी कृपा हुई है भाई कि आपका चेहरा ठिक हो गया है, वर्ना मैं तो बहुत चिन्तित थी।"

"रेखा। मैंने बड़ी यातनापूर्ण जिन्दगी गुजारी है। पीछे पलटकर देखता हूं तो रूह तक कांप जाती है।"

"यह सब हमारे शैतान चाचा रविकांत की वजह से है। न वह आपकी हत्या का पड्यंत्र रचता न आप इन हालात का शिकार होते।"

"रेखा, यह दौलत इंसान को ऐसा निमर्म क्यों बना देती है?" इन्द्र खोये हुए अंदाज में बोला।

"दौलत है ही ऐसी जालिम चीज-अच्छे भले आदमी को पागल कर देती है।"

इन्द्र ने तर्क दिया-"तो फिर हमरा बाप क्यों न पागल हुआ। क्या उनके पास चाचा रविकांत से कम दौलत है?"

बाप के जिक्र पर रेखा कुछ क्षण खामोश रही। उसके चेहरे पर दुःख के बादल छा गये, वह कुछ क्षण भाई की सूरत देखती रही, फिर बोली- "भाई, एक बात बताऊं। मैंने यह बात आपको पहले इसलिए नहीं बताई कि आप पहले ही हौलनाक यातनाएं झेल चुके थे और मैं आपके दुःख बढ़ाना नहीं चाहती थी।

"ऐसी क्या बात है, रेखा रेखा की संजीदगी ने इन्द्र को परेशान कर डाला था।

"भाई।" रेखा अपना होंठ चबाते बोली- "हमारे मम्मी-पापा अब इस दुनिया में नहीं रहे है।"

"क...क...क्या...?" यह खबर इन्द्र प्र बिजली बनकर गिरी।

इन्द्रजीत जब अपने मांदबाप से बिछुड़ा था तो उसकी उम्र बारह-तेरह साल की ही थी। बरसों उसे अपन मां-बाप या

comicsmylife.blogspot.in

परिवार की कोई खबर न थी और जहनी तौर पर शैतानों का गुलाम बने रहकर-उनके बारे में कुछ सोच ही नहीं पाया था।

"मम्मी को क्या हुआ, रेखा उसने भर्राये गले मे पूछा। "भाई, मम्मी को तो आपका गम ले बैठा। आपके अपहरण के बाद वह तो मुश्किल से तीन माह ही जीवित रहीं। सुना है-वह बस हर वक्त आपकी तस्वीर लेकर घूमती रहती थी। जब उनका देहान्त हुआ-तब भी उनके सीने पर आप ही की फ्रेम लगी फोटो थी और नजरें दरवाजे की तरफ।"

यह सुनकर इन्द्र की आंखों से लांसू बह निकले। वह घुटनों में मुंह देकर सिसक-सिसककर रोने लगा। उसे रोता देखकर खुद रेखा भी सब्र न कर सकी। वह भी बेअख्तयार रोने लगी।

"दिल का दर्द आंसू बनकर बह रहा था।

"और पापा।" इन्द्रजीत ने रोते-रोते पूछा।

रेखा के आसू थम गए। उसने सिर उठाकर अपने भाई की तरफ देखा व बोली- "पाप की हत्या कर दी गई।"

"हत्या! किसने हत्या की उनकी?"

"हमारे चाचा रविकांत ने ।" रेखा सर्द लहजे में बोली। "उसने...उसने मेरी हत्या करवाने की साजिश कीं-मेरी मां को मार दिया-मेरे बाप को कझ कर दिया।" इन्द्र ने अपने आंसू पोंछ डाले व फुंफकारती आवाज में बोला- "रविकांत फिक्र मत करो। अव तुम्हारी मौत और वह भी ऐसी भयानक कि दुनिया देखे तुमने दूर नहीं है।"

"हा, भाई! उसको छोड़ना नहीं है। उसने हमें तबाह कर दिया है।"

"मैं उसे देख लूंगा।" इन्द्र भी अपना रोष नहीं दबा पा रहा था।

"अरे भई, किसे देख लोगे? मैं तो यहां हूं और मैने तुम लोगों का कुछ बिगाड़ भी नहीं है।" अचानक काले चिराग की आवाज आई। वह पेड़ों के झुण्ड से वाहर आया था। जाने वो वहां दुबका इनकी बातें सुन रहा था या फिर उन्हें तलाश करता हुआ इधर आ निकला था।

"आप आ गए?" रेखा मुस्कराने की कोशिश करते हुए बोली- "आप कहां चले गए थे ?"

"मैं अपने सरदार कोलाना के पास गया था। उससे इजाजत लेनी जरूरी थी।"

"ओह! मिल गई इजाजत?"

"हां! लेकिन इन्द्रजीत तुम किसको देख लेने की बात कर रहे थे?" उसने पूछा।

"है एक शैतान शख्स हमारी दुनिया का। उसने हमें कहीं का नहीं छोड़ा।"

"अपने चाचा रविकांत की बात कर रहे हो?" काले चिराग धीरे से पूछा।

"हां, उसी की। लेकिन तुम उसे कैसे जानते हो ?"

"मै कैसे जानता हूं। भला यह भी पूछने वाती बात है।" काले चिराग ने मुस्कराकर कहा- "मुझसे यह पूछो कि मैं क्या नहीं जानता।"

"यानि कि सवाल करने की इजाजत है...।" इन्द्रजीत ने फौरन कहा।

"नहीं-नहीं...।" काले चिराग ने घबराकर कहा- "तुम्हारा कोई भरोसा नहीं। पता नहीं क्या पूछ बैठो?"

"बस, घबरा गये।" इन्द्र उसकी बौखलाहट से आनन्दित होते बोला।

"अब आपने क्या तय किया?" रेखा ने वातचीत का रुख मोड़ा।

comicsmylife.blogspot.in

"किस बारे में?"

"हमारे यहां से जाने के बारे में।"

"अभी तो आप लोग अंदर चले-खाना इत्यादि खा लें। फिर कुछ करते हैं।"

"मुझे तो भूख नहीं है।" इन्द्र बोल उठा।

"भूख तो भइया, मुझे भी नहीं है।"

"अरे, आखिर ऐसा क्या हुआ कि दोनों की भूख उड़ गई?" काले चिराग ने बारी-बारी से उनकी तरफ देखा था।

"कुछ नहीं हुआ।" रेखा अब उसे क्या बताती कि उसने अपने भाई को क्या खबर सुनाई है? वह अपना जाती दुःख उसे बताती भी तो क्यों?

बात टालने के लिए वह उठेकर खड़ी हो गई और इन्द्र से बोली- "आओ, भाई, अन्दर चलें।"वे तीनों अन्दर आए।

मेज पर खाना सजा हुआ था। दोनों में से किसी ने भी खाने की तरफ नहीं देखा। इन्द्रजीत बिस्तर पर आ लेटा और रेखा कुर्सी पर बैठ गई।

काले चिराग ने उलझन भरी निगाहों से उनकी तरफ देखा, फिर बोला- "ठीक है-मैं अब चलता हूं। सूरज डूबते ही आऊंगा। तब तक आप दोनों आराम करें। भूख लगे तो खाना मौजूद है। खा लेना। खाना ताजा और गर्म मिलेगा।"

"मैं जानती हूं।" रेखा बोली।

"हां, तुम तो जानती ही हो।" काले चिराग ने मुस्कराकर दिखाया- "तुम तो पहले भी देख चुकी हो।"

"वह कैसे?" इन्द्र की निगाहें अपनी बहन की तरफ उठ गई थीं।

रेखा ने बताया- "जब मैं अपनी दुनिया से यहां पहुंची थी तो काले चिराग साहब में इसी तरह के गुक महल में मुझ महमान रखा था। आपके बारे में और आपकी कहानी सुनाई थी और फिर उसके बाद ही मुझे आपसे मिलाने ले गए थें।"

"ओह, हां! मुझे याद आ गया।" इन्द्र ने गहरी सांस ली थी। "खैर, अब मुझे इतना और बता दो कि तुम कहां पहुंचना चाहोगे?" काले चिराग ने पूछा!

"क्या मतलब?" रेखा बोली- "अपंनी दुनिया में पहुंचेंगे और कहां?"

"अपनी दुनिया में तो जाओगे-लेकिन किस जगह पहुंचना चाहोगी?" काले चिराग ने अपना आशय स्पष्ट करते पूछा- "क्या उस मकान में जहां से तुम्हें लाया गया या सावनपुर की अपनी पुश्तैनी हवेली में या अपने पिता की माडल टाऊन वाली कोठी में। फिर एक समस्या यह भी है कि तुम भाई-बहन दोनों एक ही स्थान पर पहुंचना चाहोगे या अलग जगहों पर। यह सब बातें तय कर लो। अंधेरा होते ही मैं आ आऊंगा। फिर तुम दोनों को तुम्हारी इच्छानुसार ही जहां चाहोगे पहुंचा दिया जाएगा।" काले चिराग ने कहा और फिर महल के भीतरी दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वे दोनों ही उसे देखते रह गये।काला चिराग एक कद्दावर शख्स था। ढीला-ढाला काला लिबास-कंधे पर पड़े हुए लम्बे-लम्बे वाल। देखने में ही रहस्यमय काले चिराग के ब्यक्तित्व में एक अजीब-सा आकर्षण था।

वह थोड़ा-सा दरवाजा खोलकर भीतर समा गया और फिर दरवाजा खटाक् से बंद हो गया।उसके जाने के बाद, रेखा, सोचपूर्ण लहजे में बोली- "भाई, काले चिराग ने सवाल तो ठीक उठाया है।"

"कैसा सवाल?"

"यही कि हम सावनपुर जाएं-दिल्ली पहुंचे या फिर बंगलौर का रुख करें।"

comicsmylife.blogspot.in

"तुम बताओ, क्या करना चाहिये?"

"मेरा जी तो यह चाहता है कि जिस 'भूतहा कमरे' से यहां ट्रांसफर हुई हू-वहीं वापिस पहुंचूं और आपको भी अपने साथ ले जाऊं।" ने अपनी इच्छा जाहिर की।

"यानि बंगलौर-गंगा मौसी के घर में।"

"हां।" रेखा ने जवाब दिया, पर फिर अगले ही क्षण वह सोच-पूर्ण लहजे में वोली- "मगर...मगर, अगर मैं आपके साथ उस घर के उस 'काले कमरे' से निकली तो गंगा मौसी और अमर को सन्तुष्ट करना मुस्किल हो जाएगा। मैं उन्हें क्या बताऊंगी? बताऊंगी भी तो कौन यकीन कर लेगा? सभी हमारा मजाक उड़ाएंगे या पागल समझेंगे।" रेखा खुद ही हंस भी दी-"सच कहू भैया! मुझे तो खुद इन हालात पर विश्वास नहीं आ रहा। यह सब एक ख्वाब-सा होता है। सच, अभी भी लगता है जैसे में कोई ख्वाब देख रही हू-औरजब आख खुलेगी तो सारी हकीकत सामने आएगी और सारा फरेब खुल जाएगा।"

इन्द्रजीत ने गहरी सांस ली- "कहती तो ठीक हो। कोई यकीन नहीं करेगा, पर हमें जरूरत ही क्या है कि हम दुनिया वालों को अपनी कहानी सुनाते फिरें। हमें किसी से सनद लेने की क्या जरूरत है? अपनी कहानी भी सुनाएं और झूठे भी कहलाएं।"

"चलो, एक बात तो तय हो गई कि अपनी दुनिया में जाकर यहां हम पर जो कुछ बीता है, वह किसी को नहीं सुनाएंगे। जरूरत के अनुसार कोई ऐसी कहानी गढ़ लेंगे कि लोगों को यकीन आ जाए और उनकी जिज्ञासा शांत हो सके। अब सवाल यह है कि हम दोनों एक साथ चलें या अलग-अलग!

"अलग-अलग ही जाना होगा।" इन्द्र जैसे निर्णायक लहजे में बोली- "अगर हम एक साथ ही उस 'काले कमरे' से प्रकट हुये तो सारे लोग घर छोड़कर भाग जाएंगे।"

"ठिक कहते हैं आप। ऐसा ही कहते है। मैं अब आपको अकेला नहीं छोड़ सकती। मुझे डर लगता है।"

"किस बात का डर।"

"अगर हमने अलग-अलग जाने की इच्छा व्यक्त की तो यह काला चिराग हमें जाने कहां-से-कहां पहुंचा दे हो सकता है, यह हमें जुदा कर दे।" दूध का जला, छाछ फूक-फूंककर पीता है वाली बात थी। रेखा ने आशंका व्यक्त की- "यह आपको तो हमारी दुनिया में पहुंचा दे-लेकिन मुझे यहां से न जाने दे।"

"यह शख्त फरेबी नहीं लगता।" इन्द्र ने असहमति जताई- "अगर इसे हमें जुदा ही करना होता 'तो फिर मिलाता ही क्यों? फिर यह तुम्हारी बड़ी इज्जत करता है रेखा।"

"हां। इतना तो मैं भी जानती हूं कि यह राकल की तरह नहीं है। इस पर विश्वास किया जा सकता है। ऐसा कभी नहीं हुआ है कि इसकी नीयत पर शक किया जाए।"

रेखा बोली- "बहरहाल हमें काले चिराग पर विश्वास करना होगा। यह हमारी मजबूरी भी है। हम उसके ही रहमो-करम पर हैं।" वे काफी देर तक बैठे इसी समस्या पर विचार-विमर्श करते रहे। अंतत: उन्होंने एक संयुक्त फैसला ले लिया। क्या करना है, कैसे करना है, यह सोच लिया?

सब तय करने के बाद, वे थोड़ा आराम करने के लिए सो गये।

फिर जब रेखा की आंख खुली तो शाम होने को थी। उसने इन्द्रजीत' को जगाया। मुंह-हाथ धोने के बाद रेखा की जिद करने पर इन्द्रजीत ने थोड़ा-बहुत खाना भी खा लिया। रेखा ने भी उसका साथ दिया था।

सूरज ढलते ही काला चिराग आ पहुंचा। वह खामोशी से आकर बेठ गया। रेखा ने उसे गौर से देखा। वह नजरें नीची किये गर्दन झुकाये किसी गहरी सोच में थी।

"क्या हुआ ?" रेखा ने पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

"कुछ नहीं।" उसने नजरें उठाकर खाली-खाली निगाहों से रखा को दखते हुए कहा।

"फिर इतने उदास क्यों नजर आ रहे हो?"

"विदा की बेला है-क्या मुझे खुश होना चाहिये?" वह उदास-सा ही बोला।

"आपको तो होना ही चाहिये।" रेखा ने जैसे उसकी प्रशंसा की- "आप हमारे हमदर्द हैं। हमारे मुक्तिदाता है।"

काले विराग के होंठों पर फीकी-सी उभरी, उसने एक गहरी सांस ली फिर बोला- "खैर, रेखा हुए: क्या इन्द्रजीत! मैं तुम दोनों से ही कहना चाहूंगा कि मेरे किसी रवैये से तुम्हें कोई दुःख पहुंचा हो तो मुझे 'गैर इन्सानी प्राणी' समझकर माफ कर देना।" "आपने हम दोनों का बहुत ख्याल रखा। हम दोनों ही आपके आभारी हैं। हमें शर्मिन्दा न करें। हां-अगर हम दोनों से कोई गुस्ताखी हो गई हो तो उसे दिल से माफ कर दीजियेगा। 'इन्सान' बहरहाल, खता का पुतला है।" रेखा बोली।

"अब तुम मुझे शर्मिन्दा कर रही हो? मैं...।"

रेखा उसकी बात काटते बोली- "मैं एक तुच्छ-सा तोहफा आपकी भेंट करना चाहती हूं। आशा है, आप इंकार नहीं करेंगे।" और उसने कासगन का दिया हीरों का हार गले से उतारकर अपने दोनों हाथों पर रखा-और हाथ काला चिराग के सामने कर दिये। "अरे, यह कैसे हो सकता है और यह तुम्हें दिया किसने? मैं इसे कबूल नहीं कर सकता।"

"इसके अलावा हमारे पास आपको देने के लिए कुछ नहीं है।" इन्द्र बोला।

"कुछ देने की जरूरत भी नहीं है। अपनी दुनिया में जाकर 'अच्छे शब्दों' से याद कर लेना-बस, यही मेरे लिए सबसे कीमती है।" काले चिराग ने हंसते हुए कहा।

"हम जब तक जीयेंगे आपको याद रखेंगे। आपको भला कौन भूल सकता है?" रेखा ने कहा व वह हार दलेरा अपने गले में पहनलिया।

"आप लोगों ने क्या तय किया? किस तरह जाना है और कहां जाना है काले चिराग ने पूछा।

"हम लोगों ने तय तो कर लिया है-लेकिन आपसे पूछना भी जरूरी है कि आया ऐसा हो भी सकता है या नहीं?"

"हर वह वात मुमकिन है जो आप चाहें। मेरी तरफ से खुली आजादी है। आप वताएं क्या चाहती हैं?"

तब रेखा ने उसे अपना वह मन्तुवा बताया, जो उन्होंने आपस में तय किया था। काला चिराग खामोशी से सुनता रहा। फिर बोला- "ठीक है।आप लोग चलने की तैयारी करें।"

काला चिराग ने तैयारी में इन्द्र की मदद की। उसने इन्द्र को कई जोड़ी कपड़ों से भरा एक बेग उपलब्ध कराया। रेखा को भी उसकी जरूरत की चीजें दीं, फिर वे तीनों उठ खड़े हुए।

"रेखा, अभी बैठो। पहले मैं इन्द्रजीत को इसकी दुनिया मे पहुंचा दू-क्योकि तुम अलग-अलग अपनी दुनिया में जाना चाहते हो।"

"ठीक है।"

"आओ, इन्द्रजीत। उठाओ अपना बेग और चलो अपनी दुनिया में।"

इन्द्र ने अपना बेग उठा लिया! वह रेखा के करीब आया और- धीरे से बोला

"अच्छा, रेखा! मैं चलता हूं। तुम डरना मत। भगवान ने चाहा तो सब ठीक ही रहेगा।"

"भगवान ठीक ही करे। अच्छा, विदा।" रेखा ने दिल कड़ा करके कहा।

इन्द्र व काला चिराग महल के भीतरी दरवाजे से बाहर निकल गए। उनके जाने के बाद दरवाजा खटाक् से बन्द हो

comicsmylife.blogspot.in

गया। दरवाजा बन्द होते ही रेखा का दिल कांपने लगा। खौफ की एक सर्द लहर-सी उसकी रीढ़ की हडी में दौड़ती चली गई। उसे बस यही अंदेशा था कि कहीं काला चिराग धोखा न दे जाये। बहरहाल अब कुछ नहीं हो सकता था। उसने आखें बन्द कर-प्रभु से लौ लगा ली और सकुशल अपनी दुनिया में व अपनै घर पहुंचने की दुआ मांगने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

सूरज कब का डूब चुका था। बाहर अन्धेरा फैल चुका था। रेखा ने पर्दा हटाकर बाहर झांका तो उसे -तारों भरा आकाश नजर आया। चांद भी निकल आया था-लेकिन वह सामने नहीं था।चांदनी पूरे बाग पर बरस रही थी। काला चिराग काफी देर वाद वापिस आया। वह पसीना-पसीना हो रहा था। उसके काले कपड़े जगह-जगह से भीगे हुए थे।

रेखा ने राहत की सांस ली थी। अन्देशें जाते रहे थे। उसने पूछा- "क्या हुआ?"

"तुम्हारा भाई सकुशल अपनी दुनिया में पहुंच गया है।" काले चिराग ने बताया।

"आप-आप पसीने से नहाये हुये हैं।" रेखा के स्वर में सहानुभूति भर आई थी।

"यह- पसीना नहीं है।" काले चिराग ने मुस्कराकर कहा। "फिर क्या है?" रेखा संयत होता दिल फिर धड़कने लगा था।

"छोड़ा, इस बात को।" काला चिराग बोला- "अपना बेग उठाओ, मेरे पास आ जाओ।"

रेखा खामोशी से उठी और अपना बेग कन्धे पर रखकर उसके पास जा खड़ी हुई।

काले चिराग ने अपना सीधा हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया, बोला- "मेरा हाथ पकड़ लो।" रेखा ने निसंकोच उसका हाथ थाम लिया-जो बर्फ की तरह ठण्डा था।

"अब ऊपर छत की तरफ देखो।" काले चिराग ने कहा। रेखा ने कुछ कहे बिना ही अपनी नजरें छत पर जमा दीं। "क्या नजर आ रहा है?" काले चिराग ने पूछा।

"छत।" उसने जवाब दिया।

"और अब?"

"छत गायब हो गई है। तारों भरा आसमान दिखाई दे रहा है।

और तभी-रेखा को महसूस हुआ जैसे काले चिराग ने अपना हाथ झटककर छुड़ा लिया हो। वह कुछ देर तक खामोशी से खड़ी रही-इसी इंतजार में कि काला चिराग शायद कोई सवाल करे। लेकिन काले चिराग ने कोई सवाल नहीं किया। काला चिराग उसके नजदीक होता तो सवाल करता-वह तो कब का जा चुका था।

अब रेखा को अहसास हुआ, जैसे आसपास कोई नहीं है-वह अकेली खड़ी है। तन्हाई के अहसास के साथ ही अचानक रेखा के जिस्म में सर्दी की लहर दौड़ गई। यह सर्दी की लहर किसी खौफ की वजह से न थी, बल्कि यह सर्दी तो उसे अपने चारों तरफ वरसती महसूस हो रही थी। जहां वह खड़ी थी, वहां घुप्प अंधेरा था। ऐसा कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा था।

उसने अपना एक हाथ बढ़ाकर ऐसे ही अन्धों की तरह लहराया। कुछ टटोलने की कोशिश की-लेकिन उसके हाथ कुछ नहीं आया। बस हाथ 'शून्य' में-हवा में-लहराकर रह गया। अब उसने चारों तरफ घूमकर देखा। वह अन्धेरे में आंखें फाड़ें देख रही थी कि उसने एक बारीक से सूराख से रोशनी आती महसूस की। इस सूराख का रूप दरवाजे में चाबी के सुराख का सा था।

और अब सहसा ही, एक खुशी की लहर रेखा के सिर में पैरों तक दौड़ गई। वह जान गई कि वह इस वक्त कहां है। वह उत्तेजित-सी ही आगे बड़ी और उसने झुककर उस 'की-होल' में झांका।बाहर, सामने जितना भी हिस्सा नजर आया व उसका जाना-पहचाना था। मारे खुशी के उसके दिल की धड़कनें तेज हो गई। दिल इतने जोर से धड़क रहा था कि वह उसकी धड़कन की आवाज साफ सुन सकती थी।

उसने भगवान् का शुक्रिया अदा किया।

इस वक्त वह उस कमरे में मौजूद थी-जिसकी दीवारें काली थी-और दरवाजे पर एक ताबीज लटका हुआ था। यानि वह जहां से गई थी-वहीं वापिस आ गई थी।

comicsmylife.blogspot.in

यहां का मौसम शायद बदल गया था। रेखा बारिशों के मौमस में गई थी-अब शायद सर्दियां आ गई थीं। रेखा ने धड़कते दिल के साथ-टटोलकर दरवाजे के हैण्डल पर हाथ रखा और उसे हल्का-सा दबाया। उसे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि दरवाजा खुला हुआ था।

खुशी होती भी क्यों न-इस दरवाजे के उस तरफ मां सी ममतामयी गंगा मौसी थी-जो उस पर अपनी जान छिड़कती थी। अमर भाई थे जो उसका बेहद ख्याल रखते थे। माया जी, जिसकी सेवाओं का मूल्य नहीं था।

रेखा को कोई अंदाजा नहीं था कि इस वक्त रात के कितने बजे हैं। बरामदे की लाइट जल रही थी-लेकिन यह लाइट तो सारी रात ही जलती रहती थी। उसने कान लगाकर आहट लेनी चाही, लेकिन बाहर कोई आहट नहीं थी।

रेखा कुछ क्षणों तक खड़ी सोचती रही। बाहर तो उसे निकलना ही था। सोचने की बात तो यह थी कि बाहर निकलकर वह अपने कमरे का रुख करे या गंगा मौसी के कमरे का। वह जानती थी कि उसका कमरा न होगा-उसे गंगा मौसी ने जरूर 'लॉक' करवा दिया होगा-और उसकी चाबी उन्हीं के पास होगी।

सर्दी के कारण उसका बदन कांपने लगा था। उसने हैण्डल दबाकर बहुत धीरे से थोड़ा-सा दरवाजा खोला और गर्दन निकाल कर इधर-उधर देखा। बरामदे में कोई नहीं था। सन्नाटा व्याप्त था। वह जल्दी से बाहर निकली व 'दरवाजा बन्द कर दिया और दरवाजे पर खड़े होकर गहरे-गहरे सांस लेने लगी और फिर। वह गंगा मौसी के कमरे के दरवाजे पर पहुंची और यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही-जब उसने गंगा मौसी का दरवाजा थोड़ा-सा खुला देखा। अंदर लाइट जल रही थी। ऐसी सर्दी में दरवाजे के खुले रहने का क्या मतलब? वह निस्शब्द आगे बढ़ी, लेकिन उसके दिल ने अपनी गवाड़-धाड़ बन्द नहीं की।

खुले दरवाजे से उसने देखा कि गंगा मौसी तकिया लगाये, बेड पर लेटी हैं-हाथ में कोई खुला उपन्यास है जो बेड पर अंधा रखा है। शायद गंगा मौसी पड़ते-पड़ते थक गई थी।

रेखा ने सोचा कि मौसी कहीं पढ़ते-पढ़ते सो न गई हों, लेकिन ऐसा नहीं था। रेखा ने उनकी आंखों की तरफ गौर से देखा। आंखें खुली हुई थीं और वह किसी सोच में डूबी हुई छत को घूर रही थी। गगा मौसी का सिर दरवाजे की तरफ था! यानि अगर रेखा दबे पांव उनके कमरे में दाखिल होती तो वह रेखा को न देख पाती। एक शोख मुस्कान रेखा के होंठों पर नाच गई और उसने बहुत धीरे-से दरवाजा खोलकर कदम अन्दर रखा। उसका दिल अब फिर जोर-जोर से धड़कने लगा था। वह यही चाहती थी कि गंगा मौसी के पलटकर देखने से पहले वह मौसी की आंखों पर हाथ रख दे, पर...। उसने अभी दो कदम आगे बढ़कर-उनकी आंखें बन्द करने के लिऐ अपना हाथ आगे बढ़ाया ही था कि मौसी उसकी तरफ देखे बिना ही बोली-

"माया, मेरी कॉफी में चीनी ज्यादा तो नहीं डाल लाई?" शायद दरवाजा ज्यादा खुलने की वजह से ज्यादा हवा आई-उसी से उन्होंने अंदाजा लगा लिया कि माया ही कॉफी लेकर आई है।

रेखा ने कोई जवाब दिये विना जल्दी से हाथ बढ़ाकर उनकी आंखें बंद कर लीं। आंखों पर हथेली टिकते ही पहले तो उनके चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव उपजे, पर फिर तुरन्त ही ये अप्रसन्नता दूर भी हो गई। जाहिर था-माया तो उनसे कोई ऐसी हरकत करने की घृष्टता कर नहीं सकती थी। उन्होंने नाबल छोड़कर आंखों पर रखे गये हाथ को छुआ-और आश्चर्य कि उन्हें रेखा का हाथ पहचानने में दो क्षण भी न लगे।

उनके चेहरे पर प्रसन्नतापूर्ण आश्चर्य के भाव फैल गए। "मेरी बच्ची यह तुम हो-अगर मैं कोई सपना देख रही हूं तो फिर यह सपना कभी न टूटे और अगर यह खाब नहीं हकीकत है तो फिर रेखा-मेरी वच्ची मुझे आवाज दो। मुझे मौसी कहकर पुकारो।"

"मो...सी...!" रेखा ने धीरे से बड़े चाव से पुकारा।

रेखा की आवाज सुनते ही उन्होंने फौरन उसका हाथ अपनी आंखों से हटा दिया। आंखों से हाथ हटाया तो रेखा की मनमोहिनी सूरत गंगा मौसी के सामने थी। उन्होंने उसका हाथ खींचकर उसे अपने ऊपर गिरा लिया और उसे अपनी बांहों में भरकर बेअख्तयार रो पड़ी।

रेखा ने भी भावावेश में उन्हें भींच लिया था-और खुद भी अपने अश्रु रोक नहीं सकी थी।

"ओह, रेखा...मेरी बच्ची..! तू कहां चली गई थी।" रोते-रोते गंगा मौसी ने उसका सिर उठाकर उसके गालों को चूमा।

comicsmylife.blogspot.in

"मैं कहीं नहीं गई थी। आपके पास ही थी, मौसी। आपके आस-पास।"

"रेखा...रेखा...अभी कुछ क्षण पहले मैं तेरे ही बारे में सोच रही थी।" मौसी भरी आवाज में वोली- नावल पढ़ते-पढ़ते अचानक तू याद आ गई थी और टूटकर याद आई थी।"

"देख लें...आपने इधर याद किया-उधर मैं हाजिर हो गई।" वच्चों की सी चपलता भर आई थी रेखा में स्वर में।

"रेखा, तूने मुझे बहुत तड़पाया है।"

"मौसी, मैं जानती हूं! बस, आप माफ कर दें।"

"मैं तुझे कभी माफ नहीं करूगी।" मौसी ने उठते हुए कहा। देखें, मौसी इतना गुस्सा न करें। गुस्सा आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं।" रेखा उनके पांव दबाते हुए बोली।

"एक शर्त पर माफ करूगी।"

"मंजूरू। जल्दी बताएं शर्त।"

"आइदा तू मुझे इस तरह छोड़कर नहीं जाएगी।"

"ठीक है, मौसी। मैं आपसे वायदा करती हूं कि अव कभी आपको इस तरह बिना बताये छोड़कर नहीं जाऊंगी। अगर जाऊंगी भी तो कैड-वाजे के साथ।"

"हां,यह ठीक है।"

गंगा मौसी ने 'हां, ठीक है' कह तो दिया-फिर उसके शब्दों को मतलब समझ में आया तो वह चौंकी। फिर मुस्कराते हुए बोली- "ऐं, क्या कहा?" उन्होंने आंखें तरैरकर रेखा को पूरा। "कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं।" रेखा मासूम बन गई। "हां-इसी तरह जाओगी-बैंड-बाजे के साथ-तो मैं तुम्हें सौ बार भेजने के लिए तैयार हूं।"

और अपने गाल पीटने व आखें तरेरने की रेखा की वारी थी। वह बोली- "कुछ तो भगवान् से डरो मौसी! ऐसा जुल्म तो न करो मुझ पर...।"

"क्यों मैंने क्या कहा?" मौसी घबरा-सी गई।

"बड़े आराम से मेरी सौ शादियां करा दो।" रेखा ने आंखें चमकाते जवाब दिया।

"हे, राम।" गंगा मौसी ने बौखलाहट में अपना सिर पीट लिया।

रेखा ने साइड टेबल पर रखी घड़ी पर निगाह डाली,ग्यारह बज रहे थे।

"मौसी, इतनी सर्दी में अपने कमरे का दरवाजा खुला क्यों छोडू रखा है ?" रेखा ने पूछा।

"वो निगोड़ी माया मेरे पास ही थी। शाम से ही सिर दर्द हो रहा था और वह मेरा सिर दबा रही थी। हम दोनों तुम्हारी ही बातें कर रही थीं। दर्द कुछ कम हुआ तो वो बोली मैं कॉफी बनाकर लाती है। उसके जाने क बाद मैंने नावल उठा लिया। दो पेज पढ़े, फिर पढ़ने को दिल न चाहा। अचानक तुम्हारी याद आई और मैं तुम्हारे बारे में सोचने लगी। माया ही शायद ठीक से दरवाजा बंद करके नहीं गई और शायद हवा से थोड़ा खुल गया। तुम दरवाजा खोलकर आई तो मैंने यही समझा कि माया कॉफी लेकर आई है।"

"पर मौसी आपने मेरा हाथ पहचाना खूब!" रेखा उसकी बात काटते बोली।

"अरी पगली! तेरा इतना प्यारा हाथ, भला मैं भूल सकती हूं।" मौसी उसे प्यार से निहारते बोली।

"माया आने वाली होगी।" रेखा बदस्तुर मूड में बोली- "मैं कही छिप जाती हूं। मजा आएगा। पर छिपू कहां?" उसने कमरे मे निगाहें दौड़ाई।

comicsmylife.blogspot.in

"मेरे लिहाफ में छिप जाओ।" मौसी भी आंख-मिचौली के मूड में आ गई।

"नहीं, मौसी! अगर में अचानक उसके सामने लिहाफ में से निकल तो वह डर जाएगी। चीख मारकर बेहोश हो जाएगी।" "हां, डर तो बहुत जाएगी वह। पर-पर...रेखा, यह तो बताओ, तुम आई किधर से हो?" गंगा मौसी को इस बात का ख्याल ही अब आया था।

"ताबीज वाले कमरे से।" रेखा ने मुस्कराकर कहा।

"ताबीज वाले कमरे से।" मौसी हैरान रह गई।

"हां, मौसी!"

"और तुम गई भी वहीं से थी?" मौसी ने पूछा।

"हां, मौसी। माया आने वाली होगी। बाकी बातें बाद में। मैं बाथरूम में चली जाती हूं। मुझे सर्दी लग रही है। आपकी शाल ओढ़ लेती हूं। वह कॉफी लेकर आए तो उसे सोने को कहकर भेज देना।"

रेखा गर्म शाल ओढ़कर 'बाथरूम' में चली गई और जाते-जाते रह गई- "मौसी, मेरे लिए कॉफी बचाकर रखियेगा।"

"अच्छा...अच्छा।" गंगा मौसी ने मुस्कराते हुए कहा। बस, कुछ क्षणों का ही अन्तर रहा। इधर रेखा ने 'बाथरूम' का दरवाजा बंद किया और उधर नौकरानी माया कॉफी का मग लेकर अन्दर आई और आते ही वोली-

"बड़ी बीवी यह दरवाजा क्यों खुला है?"

"माया-तुम खुद ही तो ठीक बन्द करके नहीं गई थी-खुला छोड़ गई थी-वह हवा से और भी खुल गया और अव पूछ मुझसे रही हो।" गंगा मौसी प्यार से बोली थी।

"ओह! गलती हो गई। खैर! लीजिये कॉफी। मैं आपके लिए बड़ी जबरदस्त कॉफी बनाकर लाई हूं।" माया ने मग उनकी तरफ बढ़ाते हुए कहा- "इस वक्त मुझे रेखा बीबी बहुत याद आ रही हैं। वो बड़ी शौकीन थी कॉफी की।"

"हां, माया !" गंगा मौसी ने गहरा सांस लिया- "तुम दुआ करो कि वह वापिस आ जाये।"

"मैं तो हर वक्त दुआ करती हूं बड़ी बीबी उनके लि । पता नहीं कहां चली गई?"

"भगवान् ही जाने।" मौसी बोली- "अच्छा, माया! तुम अब जाकर सो जाओ। मेरी तबियत अब ठीक है।"

"जी, बड़ी बीवी। मैं जाती हूं। आप दरवाजा अंदर से बन्द कर लें।"

उसके जाने के बाद गंगा मौसी ने फौरन उठकर दरवाजा बंद किया और फिर बाथरूम का दरवाजा बजाया। रेखा बाहर निकल आई और मौसी से लिपट गई।

"मेरी मौसी...प्यारी मौसी...अच्छी मौसी।" वह झूमती हुई बोली।

"चल तेरी कॉफी आ गई है पी ले। माया भी तुझे याद करके गई है।" गंगा मौसी उसे लिपटाये-लिपटाये वेड पर ले आई। उसे बेड पर बैठाया। कॉफी का मग उसके हाथ मैं दिया और खुद लिहाफ ओढ़कर बैठ गई। रेखा ने भी लिहाफ अपने ऊपर ले तिया। "मौसी आप नहीं पीयेंगी कॉफी।"

"नहीं, तू पी।"

रेखा ने एक लम्बा बूट भरा, फिर पूछा- "मेरा कमरा बंद है।" "हां! चावी मेरे पास है। तुम्हारे कमरे की रोजाना सफाई करवाती हूं कि जाने तू कब, किस दिन लौट आये।"

रेखा ने कुछ कहने को मुंह खोला ही था कि एकाएक टेलीफोन की घंटी बजी। उन दोनों ने ही एक-दूसरे की तरफ सवालिया नजरों से देखा। दोनों की ही आखों में खौफ व हैरत के मिले-जुले भाव थे।

comicsmylife.blogspot.in

यह बात ही खौफ व हैरत वाली थी। रात के ग्यारह वजे थे। ठिठुरती रात में इस वक्त यह काल किसकी हो सकती है? गंगा मौसी हैरान थी।

"मौसी-इस वक्त किसका फोन हो सकता है?" रेखा ने पूछा। वह भी तो उलझन का शिकार थी।

"समझ में नहीं आ रहा।" फिर वह एकदम चौंककर बोली- "अरे, कहीं अमर का न हो। वह किसी की शादी में गया हुआ है।"

रेखा, फोन के ज्यादा निकट थी-उसने रिसीवर उठाकर मौसी की तरफ बढ़ा दिया।

"हैल्लो।" मौसी माउथ पीस में बोली।

"हैलो, गंगा। कैसी हो?" उधर से पूछा गया।

"बलदेव, यह तुम हो।" गंगा मौसी के लहजे में खुशी भर आई थी- "हे भगवान्! आज का यह दिन कितना शुभ है।"
"गंगा, इस वक्त दिन नहीं रात है और वह भी आधी होने को है।" उधर से कहा गया।

"ओह हां, चलो रात सही।" मौसी वदस्तूर चहकी- "आज की यह रात मेरे लिए बड़ी मुवारक है।"

रेखा ने जल्दी से हाथ के इशारे से मना किया कि मौसी उसके बारे में कुछ न बताये। गंगा मौसी ने उसका मंतव्य समझकर गर्दन हिला दी।

"वह क्यों?" बलदेव राज ने पूछा।

"तुम्हारा फोन जो आया है।" गंगा मौसी ने वात का रुख बदल दिया।

"मैं तो फोन करता ही रहता हूं।"

"इस बार तो तुमने कई दिन बाद फोन किया है।"

"गंगा, पूछोगी नहीं कि इतनी रात गये मैंने फोन क्यों किया है?" बलदेव राज अपनी उत्तेजना दबा नहीं पा रहा था।

"तुमने इतनी रात गये फोन किया है तो जरूर कोई खास बात होगी।"

"हां, बड़ी खास बात है। बड़ी खास खुशखबरी है, गंगा! ऐसी कि सुनोगी तो उछल जाओगी।"

"हे भगवान्! ऐसा क्या हो गया? जल्दी बताओ।"

"इस खुशखबरी कें मिलते ही मैंने तुम्हें फोन किया है। मेरा जी चाह रहा था कि यह खुशखबरी फौरन किसी को सुनाऊं। तुम्हारे अलावा कोई नजर नहीं आया सो फौरन तुम्हारा नम्बर घुमा दिया। "प्रमोशन हो गई। क्या अपने कालेज के प्रिन्सिपल बन गये हो?" गंगा ने अन्दाजे का तीर फेंका।

"अरे नहीं भई, अपना इन्द्र आ गया है। इन्द्रजीत! अपने कृष्णकांत का बेटा...रेखा का भाई।" बलदेव राज ने जैसे धमाका किया।

"ऐं क्या कहा? क...क...कौन आ गया है ?" गंगा मौसी को जैसे अपने कानों पर विश्वास न आ रहा था।

"इन्द्रजीत की बात कर रहा हूं। रेखा के भाई इन्द्रजीत की। कृष्णकांत के बेटे की।" बलदेव राज ने दोहराया।

"हे राम, सच।" गंगा मौसी यह खबर सुनकर उछल पड़ी। उन्होंने जल्दी से माउथपीस पर हाथ रखकर रेखा बताया- "तुम्हारा भई इन्द्रजीत आ गया है।"

"हें वाकई।" रेखा ने दिखावटी आश्चर्य दिखाया। उसने मन ही मन शुक्रिया अदा किया कि इन्द्र योजनानुसार अंकल बलदेव राज के पास दिल्ली पहुंच गया है।

comicsmylife.blogspot.in

"हां गंगा।" उधर से बलदेव राजा ने कहा- "सच कह रहा हू।

"किस तरह पहुंचा? कहां था इतने बरस?" गंगा मौसी ने बेकरारी से पूछा।

"यह लम्बी कहानी है। फिर कभी सुनाऊंगा। मुझे उसके आने की बहुत खुशी है। अब मैं उस शैतान रमाकान्त को नाकों चने चबवा दूंगा। अच्छा, यह बताओ, रेखा की कोई खैर-खबर मिली।"

"नहीं-कुछ नहीं।" गंगा मौसी ने रेखा की तरफ देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"कुछ समझ में नहीं आता कि यह लड़की कहां गायब हो गई। अगर वह पत्र न छोड़ जाती-फिर तो यही शक होता कि कहीं रमाकांत ने ही तो कोई हाथ नहीं रख दिया। भगवान् करे, वह लौट आये और जहां कहीं भी हो, सकुशल हो।"

"बलदेव राज, फिक्र न करो। इन्द्र आ गया है तो मेरा दिल कहता है कि रेखा भी आ जाएगी।"

"भगवान् ऐसा ही करे। कोई खबर मिले तो मुझे फौरन बतायें।"

"तुम्हें नहीं बताऊंगी तो और किसे बताऊंगी।" गंगा मौसी ने जवाब दिया।

फिर बलदेव राज ने कुछ औपचारिक शब्द कहे व सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। गंगा मौसी ने खुशी से झूमते हुए रिसीवर रेखा को दिया और बोली-

"रेखा! इतनी ढेर सारी खुशियां मुझे एक दिन में मिल गई हैं, कहीं मैं खुशी से मर ही न जाऊं। रेखा, मैंने तो सोचा था कि तुम्हारे बलदेव अंकल की दी इस खुशखबरी के जवाब में मैं भी उन्हें खुशखबरी सुना दूं। तुम्हारे लौट आने की खुशखबरी। तुमने मना क्यों कर दिया था।"

"ऐसे ही। कल अंकल को फोन पर दे देना यह खुशखबरी।" "अच्छा, अव तुम यह बताउगे कि तुम कैसे प्रकट हुई हो इस घर में?" मौसी ने पूछा।

"मौसी, मैं कोई भूत-प्रेत या जिन्न तो हूं नहीं जो प्रगट होऊंगी।" रेखा ने मुस्कराते हुए कहा।

"रेखा, सच है कि कभी-कभी ऐसा ही सन्देह होने लगता है।" मौसी ने संजीदगी से कहा।

"हाय, मौसी! मुझे डराए नहीं, प्लीज। मैं कोई जिन्न नहीं।"

"फिर तू उस 'काले कमरे' से कहां गायब हो गई थी और अब तीन महीने वाद कैसे आ गई हो?" मौसी ने उसे घूरते पूछा।

"अरे, मुझे-गये तीन महीने हो गये?" रेखा को हैरत हुई थी। "यानि कि तुम्हें यह भी मालूम नहीं?" मौसी चिन्तित नजर आने लगी।

"नही, में तो यह कह रही थी कि तीन माह हो गये मुझे यहां से गये हुए-और मुझे लगता है पैसे अभी दस-पन्द्रह दिन ही हुए हैं।" रेखा ने बात बनाई। वैसे इस बात पर दह हैरान थी। हकीकत में ही उसके अपने ख्याल से दस-पन्द्रह दिन से ज्यादा नहीं हुए होगे। "तुझे लगते होंगे दस-पन्द्रह दिन, मुझे तो यूं लगता हे जैसे तीन साल बाद वापिस आई है तू।"

"मौसी! यह आपका प्यार दे। " रेखा ने लाड़ से कहा। "रेखा, सच बता इस बीच में क्या मैं कभी याद आई थी ?" "क्यों नहीं, मौसी? सच आप बहुत याद आई।" रेखा ने उनके कंधे पर सिर रखते हुए कहा- "बार-बार याद आई।" "पर कुछ तो बता रेखा, कि तू इतने दिन रही कहां?" मौसी इस खतरनाक विषय की तरफ पलट गई।

"मौसी! इस बारे में अगर आप कुछ न ही पूछे तो अच्छा है।" रेखा संजीदा होते बोली- "मैं आपसे झूठ नहीं बोलना चाहती और अगर मैंने सच बताया तो आपको यकीन नहीं आएगा। आप सुबह ही मुझे किसी मनोचिकित्सक या फिर पागलखाने ले जाएंगी।" "ऐसी अविश्वसनीय बात है?" मौसी ने उसकी आखों में झांका।

comicsmylife.blogspot.in

"हां, मौसी। ऐसी ही अविश्वसनीय बात है। मैं जिन हालात से दो-चार हुई है-वह सब मुझे भी किसी भयानक ख्वाब से महसूस हो रहे हैं। जब में ही शक-झुके की शिकार हूं तो फिर आपको कैसे यकीन आएगा भला?" रेखा ने बड़े सहज भाव से समझाया। "अच्छा, चलो छोड़ो! इस बावत हम फिर कभी बात करेंगे। फिलहाल तू ये तो बता कि तू इस घर में कैसे दाखिल होगी? मेरा मतलब है माया को कैसे सन्तुष्ट करेगी?"

"कोई मुस्किल नहीं है। माया अपने कमरे में जा चुकी है। अमर भैय्या हैं नहीं। आप मेरे साथ बाहर चलो और मुझे घर से बाहर निकाल दरवाजा भीतर से बन्द कर कमरे में लौट आओ। मैं थोड़ी देर बाद ही बेल बजाऊंगी और साथ ही गेट खटखटाऊंगी। माया अभी सोई न होगी। वही उठकर गेट खोलेगी और मैं इस घर मे दाखिल हो जाऊंगी। इस तरह घर में मेरी एन्ट्री का सीन पूरा हो जाएगा। माया ही मेरी आमद की खबर आपको देगी। भागकर मुझसे पहले आप तक पहुंचेगी। क्यों?

"चलो, तुम्हारा दाखिला तो हो गया। अब कहानी क्या सुनाओगी कि कहा चली गई थी? इस बारे में क्या बताओगी। तू जानती है कि अमर तो बाल की ख्याल निकालने बालों में से है।" गंगा मौसी चिन्तित स्वर में बोली।

"आप यह सब मुझ पर छोड़ दे, बस!" रेखा बोली-"आप बस इतनी कोशिश करना कि अमर भैया कम-से-कम सवाल करें।" "ठीक है तो फिर चलो। मौसी उठ खड़ी हुई- "शुरू करो अपना यह नाटक! और हां, मेरी यह शाल उतार दो। माया तुम्हें मेरी यह शाल ओढ़े देखकर परेशान हो जाएगी।"

"हाय, मौसी! मैं तो ठण्ड से मर ही जाऊंगी।" रेखा सिकुड़कर बोली।

"कुछ नहीं होगा, तुम्हे। कुछ मिनट की तो बात है।" मौसी बोली-"घर में आते ही यही शाल तुझ पर डाल दूंगी।"

और फिर गंगा मौसी, रेखा के साय खामोशी से बाहर आई। रेखा को घर से बाहर कर गंगा मौसी ने दरवाजा बन्द किया और पलटकर अपने कमरे में आ गई।मौसी कमरे में पहंची ही थी कि घर की 'कालवेल' बजी-साथ ही गेट खटखटाने की जोरदार आवाज गूंजी। अब रुक-रुककर 'बेल' बज रही थी और जोर-जोर से दरवाजा खटखटाया जा रहा था। नौकरानी माया अभी-अभी सोई थी। वह जानती थी कि अमर साहब कभी भी आ सकते है। उक्के लिए गेट कौन खोलेगा? इसलिए वह चाह रही थी गंगा मौसी के पास बैठकर ही अमर साहब का इंतजार करे-पर गंगा मौसी ने उसे अपने कमरे में भेज दिया था और जिस बात का डर था वही हुआ, यानि अपने कमरे में आते ही वह सो गई। वह गहरी नींद सोती थी। ऐसे में जरूरत पड़ने पर गंगा मौसी को ही उठना पड़ता था। वही जाकर माया को जगाती। तब कहीं दरवाजा खुलता।

आज, इस वक्त भी ऐसा ही हुआ। बेल बजती रही। दरवाजे पर ठक्-ठक् होती रही, लेकिन सोई पड़ी माया के कानों पर जू तक न रेंगी। तब गंगा मौसी ने जाकर उसके कमरे का दरवाजा बजाया। उसे आवाजें दी। तब कहीं जाकर उसने अपना दरवाजा खोला। आंखें मलती हुई बोली-

"जी, बड़ी बीबी।"

"बड़ी वीबी की बच्ची! दरवाजे पर जाकर देख कौन है? अमर आया होगा।"

"ओह अच्छा।" यह कहकर उसने तकिये के नीचे से चावी निकाली और चादर ओढ़ती हुई बाहर गेट की तरफ भागी।

उसने गेट के करीब पहुंचकर पूछा-"कौन?"

"मै हूं।" रेखा सर्दी की वजह से कांपने लगी थी। उसकी आवाज भी कांपती हुई निकली। "माया तत्काल पहचान नहीं पाई। "मैं, कौन?" उसने फिर पूछा।

"माया दरदाजा खोला। मैं हूं रेखा।" रेखा जल्दी से बोली। "अरे, रेखा बीबी आप।" रेखा की आवाज पहचानते ही, माया पर कम्पन छा गया। मारे खुशी के हाथ-पांव फूल गये।

गंगा मौसी बरामदे में खड़ी थी। माया ने उन्हें देखकर वहीं से आवाज लगाई- "खड़ी वीबी रेखा बीवी।"

"हैं, क्या कह रही हो?" गंगा मौसी ने अनजान बनकर पूछा। "गेट पर रेखा बीबी हैं.. बड़ी बीबी! रेखा बीबी।" माया खुशी नहीं समेट पा रही थी।

comicsmylife.blogspot.in

"अरी,तो फिर जल्दी से दरवाजा खोल-वहां खड़ी क्या कर रही है?"

"ताला खोल रही हूं बड़ी बीबी।" वह वाकई ताला खोल रही थी, लेकिन उसके हाथ काबू में नहीं थे। मारे खुशी के कांप रही थी। चाबी ताले मे जा ही नहीं रही थी।जैसे-तैसे उसने गोट खोला और बेअख्तयार होकर उससे गले मिलने आगे बढ़ी--लेकिन फिर फौरन ही उसे अपनी हैसियत का ख्याल आ गया। वह तो इस घर की नौकरानी थी। उसने रेखा के हाथ पकड़े बोली-

"रेखा बीबी आप।"

रेखा ने अपने हाथ छुड़ाका उसे फौरन अपने गले से लगा लिया।

"तुम कैसी हो गाया?" उसने अपनत्व से पूछा।

माया कुछ बोल न सकी। भावावेश ही वह तो रोने लगी थी। इस बीच धीरे-धीरे चलती गंगा मौसी उनके पास पहुंच गई थी। रेखा माया को छोड़-लिपट गई- मौसी!"

"अरे, मेरी बच्ची। मेरी रेखा! कहा चली गई थी तू।" गंगा मौसी नाटक भूल सचमुच ही सिसक उठी थी। उसने ऐसे वेग से रेखा को भींख था जैसे मुद्दतों बाद अभी मिल रही हो।अजीब भावव्हिल दृश्य था। गंगा मोती को रोते देखकर उसकी आंखों से भी बिन बादल बरसात शुरू हो गई।तब गंगा मौसी को सहसा होश आया कि रेखा को सर्दी लग रही होगी। उन्होंने रोते-रोते जल्दी से अपनी आंखें पौंछी और अपनी शाल उतारकर जल्दी से रेखा को ओढ़ा दी और फिर उसे अपने साथ लगाये-लगाये अपने कमरे में ले आई।

बाहर अच्छी सर्दी थी। तेज ठण्डी हवा चल रही थी। पांच-सात मिनट में ही रेखा कों कंपकंपी हो गई थी। मौसी ने उसे बेड पर बैठाकर उसके गिर्द लिहाफ लपेट दिया।

"मैं कॉफी वनाकर लाती हूं।" गाया बोली।

"हां, जाओ। जल्दी करो ओर देखो एक अण्डा भी उबाल लाना।" मौसी तेजी से वोली।

"मै यूं -लाती हूं।" माया ने चुटकी बजाकर कहा और हवा के तेज झौंके की तरह बाहर निकल गई।

माया के कमरे से निकलते ही बाहर गेट पर गाड़ी के हार्न की आवाज सुनाई दी। माया जो रसोई की तरफ जा रही थी, एकदम पलटी और फिर दौड़ते हुरा गेट पर पहुंची।

"कौन है?" उसने जैसे सतर्कतावश ही पूछा था।

"दरवाजा खोलो, माया।"

माया ने ताला खोल, दोनों पट खोल दिये। अमर गाड़ी अन्दर ले आया। माया ने गेट बंद कर ताला लगाने में बड़ी फुर्ती दिखाई थी और इससे पहले कि अमर गाड़ी लीक करके अपने कमरे का रूख करता-माया दौड़ती हुई उसके सिर पर पहुंच गई।

"क्या हुआ? माया, खैर तो है।" अमर उसकी यह हड़बड़ाहट देखकर परेशान हो गया।

"साहब जी, खैर है...सब खैर है...बल्कि कुछ ज्यादा ही खैर है।" वह वेपनाह खुश थी।

"माया, क्या हो गया? तेरी कोई लाटरी-वाटरी लग गई है क्या" अमर हंस दिया था।

"अरे, नहीं-साहब जी! बड़ी जबरदस्त खुशखबरी है आपके लिए।"

"मेरे लिए।" अमर हैरान हुआ"

"साहब जी, हम सबके लिए।"

comicsmylife.blogspot.in

"कहां है वो खुशखबरी?" अमर ने मजाक में पूछा।

"साहब जी, बड़ी बीबी के कमरे में जायें और वहां जाकर देखें कि कितनी जबरदस्त खुशखबरी है?"

माया की बेताबी व बेकरारी ने ही अमर की जिज्ञासा को हवा दी थी। वह तेज-तेज कदमों से गंगा मौसी के कमरे की तरफ चल दिया। माया किचन की तरफ बढ़ गई!

गंगा मौसी का दरवाजा बंद था। अमर ने हल्का-सा धक्का दिया तो वह फौरन खुल गया और दरवाजा खुलते ही उसे जो कुछ नजर आया वह उसके होश उड़ा देने के लिए काफी था।

सामने रेखा लिहाफ ओढ़े बैठी थी। वह बेअख्तयार ही आगे बढ़ा और मारे खुशी के लगभग चीखते हुए बोला- "अरे, रेखा। तुम।"

"जी, भाई! मैं।" रेखा ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। अमर उसका हाथ 'थामते हुए बोला- "वाकई! यह तो बड़ी जवरदस्त खुशखबरी है-हम सबके लिए।"

"ओह।" गंगा मौसी मुस्करा दी- "यानि कि माया ने तुम्हें बताया नहीं था।"

"कमबख्त ने सिर्फ इतना ही सताया कि एक जबरदस्त खुशखबरी आपके कमरे में है और मै...मैं भी कहां अंदाजा लगा पाया था कि यह खुबशुरत हो सकती है।"

"यानि कि भाई मूझे भूला ही बैठे है-। " रेखा ने जैसे शिकायत की।

"तुम्हें कौन भूल सकता है रेखा।" अमर संजीदगी से बोला- "हम तो रोज ही उस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करते थे-लेकिन कुछ समझ में नहीं आता था। तुम्हारी वह रहस्यमयी गुमशुदगी और फिर तुम्हारा वह खत। अगर वह खत न मिलता तो हम पुलिस की मदद जरूर लेते।"

"इसका मतलब है कि मेरा पत्र छोड़ू जाना ठीक रहा।" "हां। इससे हमें यह निश्चिन्तता तो रही कि तुम जहां भी गई हो-अपनी मर्जी से गई हो।"

तभी दरवाजा एक दस्तक के साथ खुला और ट्रे उठाये माया ने अन्दर कदम रखा।

"क्या लाई हो, माया?" अमर ने उसकी तरफ देखते पूछा। "कॉफी लाई है साहब जी! क्या आप भी अण्डा लेंगे।"
"नहीं, सिर्फ कॉफी। मैं खाना खाकर आया हूं।"

माया ने जल्दी से अण्डा छीलकर छुरी से उसके चार टुकड़े किए। उन पर हल्की-सी काली मिर्च डाली और प्लेट रेखा की तरफ बढ़ा दी। रेखा ने अण्डा खाकर कॉफी का मग हाथ में ले लिया व धीरे-धीरे दो चुस्कियां लीं- "भई वाह!" वह माया से बोली- "सच ही में तुम्हारा जवाव नहीं। बहुत उम्दा कॉफी बनाई है।"

"हाय! बीबी आप मुझे बहुत याद आती थी।"

"कोई खास वजह।"

"ऐसी दी प्यारी-प्यारी बातें सुनने के लिए।" माया ने मासूमियत से कहा। माया की इस बात पर तीनों ही हंस दिये थे।

माया कमरे में रुकना चाह रही थी। वह रेखा की कहानी सुनना चाह रही थी। अपनी जिज्ञासा मिटाना चाहती थी। उसे रेखा से वहुत लगाव था। रेखा ने उसे कभी नौकरानी नहीं समझा था। माया के साथ रेखा का रवैया हमेशा दोस्ताना रहा था, पर यह ऐसा मौका था कि वह चाहते हुए भी अपनी मर्जी से कमरे में रुक नहीं सकती थी और उसे किसी ने रुकने को कहा नहीं-सो वह तुरन्त कमरे से निकल गई।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

कुछ देर खामोशी रही।वे कॉफी चुस्कते रहे और फिरइस खामोशी को अमर ने तोड़ा। उसने रेखा से पूछा- "क्या हुआ था तुम्हारे साथ? तुम कहां चली गई थी?"

रेखा को अमर की पूछताछ से ही खतरा था। उसके पास अमर के सवालों के जवाब नहीं थे। जाहिर था-अगर सच-सच बता देती तो किसी ने भी उसकी आपबीती पर विश्वास नहीं करना था। खास तौर पर अमर ने तो यही सोचना था कि- "यह अपने चेहरे-मोहरे से तो पागल दिखाई नहीं दे रही-लेकिन बातें पागलों वाली कर रही है।"

अमर को आरम्भ में ही गंगा मौसी ने टोक दिया। वह एकदम बोली थी- "अरे, अमर! अब आ गई है तो सब बता देगी कि कहां गई थी? अभी तो यह खुद ही अपने आपे में नहीं है। फिलहाल तो इसे आराम की जरूरत है।"

"आपने ठीक कहा, मौसी! इसे आराम करने दिया जाए। सुबह बातें होगी।" यह कहकर अमर उठने लगा।

"भाई, अब ऐसी भी आराम की जरूरत नहीं है।" रेखा एकदम बोली- "आप कुछ देर तो बैठें।"

अमर रुक गया। कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। इसी बीच गंगा मौसी ने उसे रेखा के भाई इन्द्रजीत के भी दिल्ली में बलदेव राज के यहां पहुंचने की खुशखबरी सुना दी।

इन्द्रजीत के बारे में सुनकर अमर उछलते हुए बोला था- "मौसी! सच-सच बताएं! आज सुबह आपने किसका मुंह देखा था?"

"क्यों?" मौसी उसे घूरने लगी।"देखिये ना-आज का दिन कैसा शुभ दिन है? खुशखवरी पर खुशखवरी चली आ रही हैं।" अमर हंसकर बोला।

"तुम्हारा ही तो देखा था।" मौसी ने मजाक किया।

"मजाक न करें। मेरे से पहले तो माया आपके पास आती है।"

"हां। वाकई उठते ही सबसे पहले मैं माया की ही शक्ल देखती हूं। लेकिन वह तो मैं रोज ही देखती हूं। आज मैंने सुबह-सुबह रेखा की तस्वीर देखी थी। यह मुझे आज बहुत याद आ रही थी।" कुछ देर बैठकर अमर अपने कमरे में चला गया।

इस बीच माया बर्तन उठाकर ले गई थी। गंगा मौसी ने उसे रेखा का कमरा खोलने व ठीक करने को कह दिया था। उसे कह दिया गया था कि रेखा का कमरा ठीक करने के बाद वह अपने कमरे में सोने के लिए चली जाए।अमर के जाने के बाद गंगा मौसी की अचानक बलदेव राज का ख्याल आया।

"क्यों रेखा, तुम्हारे दलदेव अंकत को फोन करें-अव तो गुथरी आमद सब पर खुल गई है।" उन्होंने रेखा से कहा। शायद बलदव को यह खुशखबरी देने को वेचैन हो रही-थी यह।

"वारह से ऊपर हो रहे हैं मौसी।" रेखा घड़ी पर नजर डालते बोली- "अब तक तो अंकल सो चुके होंगे।"

"ट्राई करके देख लेते हैं-कग पता जाग ही रहे हो। उन्होंने खुशखवरी सुनाई है तो इधर से भी उसका जवाब जाना चाहिये। हम क्यों पीछे रहें।" मौसी बोली।

"चलिये ठीक। मजा आएगा।" यह कहकर रेखा नम्बर डायल करने लगी।संयोग से नम्बर फौरन लग गया। पहली घन्टी बजते ही रेखा ने रिसीवर मौसी की तरफ बढ़ा दिया- "घन्टी बज रही है।" मौसी ने रिसीवर सम्भाल लिया।

तीसरी घंटी पर उधर किसी ने रिसीवर उठाया। जब हैल्लो कहा तो गंगा मौसी ने आवाज फौरन पहचान ली। वह बलदेव राज ही था।

"अभी सोये नहीं बलदेव?"

"अरे, गगा तुम। इस वक्त? खैर तो है?" वह परेशान हो उठे थे।

"भई, हम भी कम नहीं तुमसे?" गंगा मौसी के लहजे में अल्हड़-सी शोखी भर आई थी।

comicsmylife.blogspot.in

"अच्छा! वैसे यह तो मुझे मालूम है, तुम बड़ी चीज हों।" "प्रोफेसर वलदेव राज! मुझे'चीज' न कहना। मैं गंगा हूं। एक सभ्रान्त-सुशील महिला।" का अल्हड़पन बड़ा ही अजीब था।

"अच्छा, सभ्रान्त और सुशील महिला! आप कुछ कह रही थीं।"

"तुम इस वक्त क्या कर रहे हो?" गंगा ने पूछा।

"हम सब इन्द्रजीत को घेरे बैठे हैं।" बलदेव राज ने बताया- "नई पुरानी यादें ताजा कर रहे हैं।"

"अच्छा, अब आने पक धमाके की खबर सुनो-मेरी रेखा भी वापिस आ गई हैं।" यह खबर बलदेव राज के लिए वाकई धमाकाखेज थी। वह -तो जैसे बुत बनकर रह गया था। उसे बोलते न देख मौसी बोली- "बलदेव...बलदेव...।"

"म...मैं सुन रहा हूं।" बलदेव राज मुश्किल से ही बोल पया था- "कब आई?"

"तुम्हरि । काल के आधे घन्टे बाद।" मौसी ने सविस्तार बताया-"...अचानक 'बेल' बजी। माया सो चुकी थी। उसे जाकर उठाया। मेरा ख्याल था कि अमर होगा। वह एक शादी में गया हुआ था। गेट खोला तो अमर के बजाय रेखा निकली। बलदेव, मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मुझे किस कद्र खुशी हुई...।"

'वाकई यह तो बड़ी धमाकाखेज खुशखबरी है। लगता है रमाकांत के दिन पूरे हो गए।" बलदेव राज ने शुष्क स्वर में कहा,फिर जैसे खुद को सम्भालते पूछा- "कहां है रेखा?"

"यह मेरे पास बैठी है लिफाफ में...।" मौसी ने रिसीवर रेखा की तरफ बढ़ा दिया।

"प्रणाम,अंकल।" रेखा ने चहकती आवाज में प्रणाम किया। "जीती रहो, बेटी।" बलदेव राज भी कम उत्तेजित नहीं था- "रेखा, तुम सकुशल तो हो।"

"हां, बलदेव अकल! बिल्भुल सकुशल हूं। सकुशल, सलामत और खश।"

"शुक्र है भगवान् का! पर तुम चली कहां गई थी?"

"अकल-मैं आपको बताऊंगी...सब सुनाऊंगी आप...।" रेखा ने टालने के लिए कहा- "सुना है, भैय्या आपके पास हैं-कैसे हैं वह,?"

"हां-लो बात करो...।" बलराज वोला और फिर उसकी आवाज सुनाई दी- "इन्द्र, लो अपनी बहन से बात करो-मैंने तुम्हें रेखा के बारे में बताया था ना...।" फिर कुछ देर बाद इन्द्रजीत की आवाज उभरी। रेखा को इन्द्र के बारे में सब मालूम था, पर उन्हें पहली वार बातचीत कर रहे होने का हामा करना था।

"रेखा! मेरी बहन! कैसी हो तुम?" इन्द्र ने बेकरारी से पूछा था- "कितना खुशनसीब हूं मैं कि मेरी एक बहन भी है। आह! जवाव दो बहना! मैं तुम्हारी आवाज सुनने को बेताब हूं।"

"मैं ठीक हूं भैय्या। भगवान् बड़ा कृपालू है जो यह दिन दिखाया। जी चाहता है कि उड़कर आपके पास पहुच जाऊं...आपको नजर भर देखूं।"

"मेरी भी यही ख्वाहिश...।"

"भैय्या आप वलदेव अंकल के यहां कैसे पहुंच गए?" रेखा ने अनजान बनते जिज्ञासा दिखाई।

"रेखा, मैं तो मॉडल टाउन अपने घर पहुंचा था। अपना घर बंद पाया। एक चौकीदार था-उसी के साथ यहां अंकल के घर पहुंच गय। रेखा, मेरी वहन! यहां तो दुनिया ही बदल चुकी है। वीरान और उजाड़ हो गई है। न मम्मी रहे न पापा रहे। शुक्र है कि तुम हो। जीने की कोई आस तो है। वर्ना मैं तो जीते जी मर जाता। मैं तुम्हें देखने के लिए बेचैन हूं मेरी बेहन! अब तुम् यह बताओ तुम दिल्ली आओगी या मैं वंगलौर आऊं " इन्द्रजीत न अपना रोल बड़ी खूबी से निभाया था।

"आप ही बंगलौर आ जाएं, भैय्या। यहां गंगा मौसी से भी आपकी मुलाकात हो जाएगी, फिर मैं आपके साथ ।दिल्ली

comicsmylife.blogspot.in

चलूंगी।" "ठीक है। मैं कल बंगलौर पहुंच रहा हूं-फ्लाइट कमफर्ट होते ही तुम्हें फोन करूगा। तुम एअरपोर्ट आ जाना।" इन्द्र ने फौरन ही अपना फैसला सुना दिया।

"ठीक है।" रेखा बोली- "अब मिलने पर ही होंगी बातें। मुझे आपसे ढेर-सी बातें करनी हैं, भैय्या।"

"ओ० के० गुडनाइट।" इन्द्र ने कहा व सम्बन्ध विच्छेद कर लिए।रेखा देर तक रिसीवर थामे खामोश बैठी रही।

"क्या सोचने लगी?" मौसी ने पूछा।

"आ-हां।" रेखा चौंकी व फिर उसने रिसीवर रख दिया। "जरूर अपने भाई के बारे में सोचने लगी होगी।" मौसी मुस्कराई - "पहली वार देखोगी अपने भैथ्या को जो यकीनन अपने चाचा के जाल से बच निकला है। मैं तुम्हारी मनोस्थिति को समझ सकती हूं।"

एक झेंपी-सी रेखा के होंठों पर कौंधी- "हां, मौसी जाने किस हाल मे होंगे भैय्या?खैर,अब मै अपने कमरे में चलूं।" उसने इजाजत चाही।

"आज मेरे पास ही क्यों नहीं सो जाती?" ममता भरे स्वर में बोली गंगा मैसी।

"जैसा आप कहें, पर में थोड़ी देर के लिए अपने कमरे में हो आऊं। मुझे अपना कमरा बहुत याद आ रहा है। फिर कपड़े भी बदलने हैं मुझे।"

"हां,जाओ।" गंगा मौसी ने विरोध नहीं किया था।

रेखा ने अपना बेग उठाया और बाहर निकल आई।

वह सीढ़ियां चढ़ अपने कमरे में पहुंची और कुछ क्षणों तक इस कमरे को निहारती रही।

बड़ी राहत-बड़ा सुकून महसूस कर रही थी वह।

उसने एक गहरी सास ली व अपना बेग खोला। बेग में दूसरी चीजों के अलावा दो तोहफे भी थे। पहले उसने हीरों वाला हार निकाला-और आइने के सामने खड़े होकर उसे अपने गले में डाला। उसकी खूबसूरत गर्दन एकदम जगमगा उठी।

उसे सरदार कासगन की याद आई जो उसे अपने मायावी लोक में रोकने का, ख्वाहिशमंद था। कासगन के साथ ही उसका बेटा रासमोन भी याद आना स्वाभाविक था। रासमोन की याद पर उसके दिल की धड़कनें तेज हो गई। रासमोन भी उसे कहां आने दे रहा था, पर अपने दिल के हाथों मजबूर होकर उसके आखिरी दीदार करने महल से बाहर आ गया था। दूसरा हसीन तोहफा रासमोन ने ही तो रेखा को दिया था।

रेखा ने बेग में हाथ डालकर वह गुलाब की कली निकाल ली जो रासमोन ने उसके बालों में लगाई थी। उसने कहा था कि यह कली कभी नहीं मुर्झाएगी-अगर मुर्झा जाये तो समझना कि रासमोन इस दुनिया में नहीं रहा।'

वह कली अभी भी वैसी ही तरोताजा थी। उसकी महक से पूरा कमरा महक उठा था।

रेखा धीरे-धीरे चलती हुई आइने के सामने आई और फिर उसने वह गुलाब की कली अपनी जुल्मों में लगाने के लिए हाथ ऊपर उठाये तो आवाज आई-

"ठहरो, यह कली मैं खुद अपने हाथ से तुम्हारी जुल्कों में सजाऊंगा।"और यह आवाज रासमोन की थी।

रेखा के हाथ उठे के उठे रह गये।

उसने चौंककर आइने में देखा फिर फौरन पलटकर पीछे नजर डाली...दरवाजे की तरफ देखा। आइने में कोई था न पीछे कोई था और दरवाजा तो उसने अन्दर आकर बंद कर लिया था-बह वैसे ही बंद था।

फिर वह आवाज!

comicsmylife.blogspot.in

वह आवाज निसन्देह रासमोन की थी, लेकिन रासमोन यहां कहां? तो क्या यह रेखा का भ्रम था । ये शब्द, यह ख्वाहिश तो रासमान ने उसे विदा करते वक्त जाहिर की थी। शायद रासमीन की आखिर ख्वाहिश उसे याद आ गई थी। उसने यह सोच जहन से झटक दी और साथ ही कली को बालों में लगाने का इरादा निरस्त कर दिया।

उसने कली एक नाजुक से फूलदान में सजा दी और फूलदान में पहले से लगे प्लास्टिक के फूल दूसरे फूलदान में ट्रांसफर कर दिए। उसने यह फूलदान अपने वेड के साइड टैवल पर रख दिया। यह ऐसी जगह थी जहां इस महकती कली ने हमेशा उसकी निगाहों में रहना था।

हीरों का हार भी गले से उतारकर उसने अलमारी के लॉकर में रख दिया।

वह बाहर निकली, दरवाजा बन्द किया व गंगा मौसी के कमरे का रुख किया।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

अगले दिन इन्द्रजीत बंगलौर पश्च गया था।

रेखा और अमर उसे एरपोर्ट लेन गये थे। शाम की फ्लाईट अपने वक्त पर पहुंच गई थी। दूसरों की नजरों में वे पहली बार एक-दूसरे मैं मिल रहे थे-सो ड़ामा करने के लिए उन दोनों ने ही पहचान की निशानियां तय कर ली थीं। उन्हीं निशानियों के सदके दोनों ने अमर के सामने एक दूसरे को 'आसानी से' पहचान लिया। इन्द्रजीत ने अपनी छोटी बहन को गले से लगाया और फिर उसे निहारते हुए बोला- "तुम्हें पहचानने के लिए तो किसी निशानी की जरूरत न थी।"

"क्यों भैय्या?"

"तुम्हारी सूरत मम्मी मे बहुत मिलती है। मेंने तुम्हें तुम्हारे नीले सूट से नहीं-तुम्हारी शक्ल से पहचाना है।"

"फिर तो मुझे यही बताना चाहिये था कि मैं मम्मी की हमशक्ल हूं।" रेखा ने हंसते हुए कहा।

"और क्या! जाने बलदेव अंकल को इस बात का क्यों ख्याल न रहा।" इन्द्र ने अमर की तरफ देखते ईए कहा, फिर उससे मुखातिब हुआ- "आप यकीनन मिस्टर अमर है?"

"जी,जनाब।" अमर ने भी अपनत्व से कहा व अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"देखा,मैंने कैसे पहचाना।" इन्द्र ने बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाया।

"मैं हैरान हूं। आपने वाकई कमाल किया है।" अमर शालीनता के साथ बोला।

"कोई कमाल नहीं किया।" रेखा ने निकास द्वार से बाहर निकलते हुए कहा- "आप शायद भूल गये हैं अमर भाई कि मेंने फोन पर आपके सामने ही भैय्या को बताया था कि मेरे साथ आप होंगे।"

यह सुनकर वे दोनों ही हंस दिये थे।वे गाड़ी में रवाना हुए। गाड़ी घर के गेट में दाखिल तो गंगा मौसी बाहर बरामदे में मौजूद थी। रेखा ने इन्द्र को बारे में बता दिया। इन्द्र गाड़ी रुकते ही उतरा व तेजी से चलता बरामदे तक पहुंचा। गंगा मौसी को प्रणाम कहा व फिर अपना सिर उनके सामने नवां दिया। गंगा मौसी ने उसके सिर पर हाथ रखा और ढेरों दुआएं दे डालीं।

गंगा मौसी के पीछे माया खड़ी थी। वह बड़ी दिलचस्पी से इन्द्रजीत को देख रही थी। गौर वर्ण इन्द्रजीत का व्यक्तित्व नीले सूट में खासा निखरा हुआ था और वह किसी भी नवयौवना को फिल्मी हीरो की तरह भा जाने वाला आकर्षण तो रखता ही था।

"भैय्या यह माया है। इतने लजीज खाने बनाती है कि आप यहां से जाने का नाम नहीं लेंगे।" रेखा ने परिचय कराया-- "और मेरी तो सहेली है।"

"खूब। पर रेखा, हमें यहां से जाना तो होगा।" इन्द्र ने फ्राखदिली दिखाई- "ऐसा करेंने कि माया को अपने साथ ले चलेंगे।"

"यह ठीक है।" रेखा हंस दी। फिर माया से बोली- "माया, मैक का सामान इनके कमरे में पहुंचा दो।"

"जी, बीबी।" माया गाड़ी की तरफ बढ़ गई।

गंगा मौसी, इन्द्र को अपने कमरे में ले गई। मौसी दोनों वहन-भाई को एक साथ देखकर बहुत खुश थी। उन्होंने चाय इसी कमरे में एक साथ पी। फिर रेखा इन्द्र को अपने कमरे मे ले गई। इन्द्र ने एक निरीक्षणात्मक निगाह कमरे में चारों तरफ दौड़ाई, फिर बोला- "अच्छा तो यह है तुम्हारा कमरा?"

"हां, भैथ्या।"

"अच्छा है। तुमने वड़े सलीके से डेकोरेट कर रखा है।" "थैंक्स फार कम्पलीमेन्टस।" रेखा चहकी।

इन्द्रजीत की नजर सहसा गुलाब की कली पर पड़ी- "बड़ी खूबसूरत कली है।" वह बेड पर बैठकर कली को देखने

comicsmylife.blogspot.in

लगा- "कितनी खुशबू है इसमें। कमरे में कदम रखते ही इसकी खुशबू महसूस हुई थी।"

"जी,भैय्या!" रेखा मुस्कराई- "यह हमारी दुनिया की नहीं है।"

"फिर?"

"यह रासमोन ने मुझे दी थी। विदाई तोहफा।" रेखा ने बताया।

"वहुत हसीन तोहफा है।"

रेखा एक गहरा सांस लेकर रह गई। इस तोहफे के पीछे जो राज था, वह भाई को कैसे बताती? वह कैसे कहती कि इस कली में रासमान के दिल की धड़कनें बंद हैं?

"उधर दिल्ली के क्या हालात हैं, मैया?" रेखा ने मतलब की बात की तरफ आते पूछा।

"चाचा रमाकांत ने वसीयत के खिलाफ कर रखा है। उसका ख्याल है कि यह वसीयत जाली है...हमार पापा के देहान्त के बाद उनका कोई वारिस नहीं रहा....कि तुम पापा की बेटी नहीं हो...क्योंकि उनकी जो बेटी हुई थी,उसका देहान्त हो गया था...कि तुम उनकी 'नकली बेटी' हो और यह सारा ड्रामा उसने अपने दोस्त की जायदाद हथियाने के लिए खेला है।"

"ओह।" रेखा ने गहरा सांस लिया।

"हां-मुकद्दमा चल रहा है। बलदेव अंकल कह रहे थे कि अव तक यह सावित करना वाकई मुश्किल था कि तुम पापा की असली संतान हो। रमाकांत ने तो तुम्हारे 'डेथ सर्टीफिकेट' का विवरण भी अपने दावे के साथ लगा रखा है, जो पापा ने शायद तुम्हारी मौत को हकीकत दिखाने को जाने कैसे 'शमशान भूमि' में दर्ज कराया था। ऐसे में अदालत को यह यकीन दिलाना मुश्किल होता कि एक बाप ने अपनी बेटी की मौत का ड़ामा क्यों रचाया। ऐसा काम कोई होशमंद नहीं कर सकता। कानूनी प्याइंट से हमारा यह एक कमजोर पहलू था। मुकद्दमे की बुनियाद ही इसी पहलू पर थी कि तुम पापा कृष्णकांत की असली बेटी हो या नहीं और अगर असली वेटी हो तो उनकी जमीन-जायदाद की वारिस हो और अगर तुम उनकी बेटी नहीं हो तो फिर उनकी जायदाद का कोई वारिस नहीं। ऐसे में सारी जमीन-जायदाद हमारे चाचा रमाकांत के नाम ट्रांसफर हो जाती।

"...एक तरफ तो यह मुकद्दमा चल रहा है, दूसरी तरफ हमारा चाचा तलाश में है ताकि तुम्हारी हत्या करवा के उस जाली वारिस से भी मुक्ति पा ले, इसीलिए बलदेव अंकल ने पापा के कल के बाद तुम्हें फौरन वंगलौर भेज दिया था।"

"हे, भगवान्!" रेखा बोली- "यह हमारा चाचा भी कैसा हिंसक आदमी है। जायदाद के लालच ने तो उसे भेड़िया वना दिया है, भैय्या। इंसान इस कदर भी गिर सकता है और वह भी सगा चाचा।"

"मुझे चाचा के इन इरादों का कुछ-कुछ अन्दाजा शुरू से ही था, इसीलिए मैं सावनपुर जाता रहता था। चाचा, पापा को शुरू से ही धोखा देते आ रहे थे। मैंने आने-जाते, जमीनों का हिसाब-किताब मांगना और देखना शुरू किया तो वह फौरन खटक गये। पापा को तो जमीन-जायदाद और रुपये-पैसे से खास टिलचस्पी थी नहीं-इसलिए उन्होंने अपने भाई से कभी जमीनों की आमदनी का हिसाब नहीं मांगा था। साल-दो-साल में चाचा जो भी पापा के ब्रीफकेस में रख देता था-वही लेकर लौट आते थे। चाचा को चेक करने वाला कोई नहीं था,जब मैंने चेकिंग शुरू की तो उसके कुछ ही समय बाद चाचा ने मुझे जंगलों में कल्द करने की साजिश रची कनौर मुतमईन हो गये कि चलो, राह का यह कांटा निकला। वह शैतान यही भूल गया था कि मौत और जिन्दगी तो प्रभु ने अपने हाथ में रखी है। भगवान् ने मुझे मेरी मुस्किलों में भी जिन्दा रखा और अब एक बार फिर मैं उससे हिसाब लेने आ गया हूं।"

"वलदेव अंकल अब क्या कहते हैं ?" रेखा ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"उनका ख्याल है कि मे अभी रमाकांत के सामने न आऊं। यही वंगलौर में रहूं तुम्हारे पास।" इन्द्र ने बताया- "और सच ही में वह हमारे वहुत बड़े हमदर्द हैं। पापा के सच्चे दोस्त। अपना फर्ज वह बड़ी होशियारी व ईमानदारी से निभा रहे है। उन्होंने रेस्तरां को वहुत अच्छी तरह सम्भाला है। लकिन रेखा, यह वक्त छिपकर बैठने का नहीं है। रमाकांत ने एक मुकद्दमा किया है, मैं उस पर छः मुकद्दमे दायर करूगा। उमने मेरे बाप को मारा है-मै उसके तीनों बेटों को खत्म कर दूंगा और यह सारे काम इतनी दूर बैठकर नहीं हो सकते। माडल टाऊन वाला हमारा बंगला बंद पड़ा है। मैं उसी

comicsmylife.blogspot.in

में जाकर रहूंगा।" इन्द्र ने पुख्ता निश्चय के साथ कहा।

"और मैं भैय्या रेखा ने जानना चाहा।

"तुम यहीं रहोगी। उस वक्त तक जब तक मैं तुम्हें दिल्ली न बुलवाऊ।"

"नहीं। मैं यहां किसी कीमत पर भी न रहूंगी।" रेखा ने विरोध किया- "मैं आपके साथ चलूंगी। जहां आप रहेंगे, वहीं रहूंगी।" "ठीक है, रेखा। में तुम्हें भी जल्दी ही बुलवा लूंगा। जरा वहां के हालात तो देख लूं।" इन्द्र ने उसे टालने के लिए कहा।

"मै अब आपसे एक पल को भी दूर नहीं रहूंगी। आप बहुत जल्द बुलवाने की बात कर रहे हैं।"

"बहुत जिद्दी हो।"

"मैं तो आपकी गैर म:एजूऊदगी में भी दिल्ली नहीं छोड़ना चाहती थी। वह तो बलदेव अंकल न पापा की कसम देकर मुझे यहां आने पर मजबूर कर दिया था।" रेखा बोली।

"जानता हूं। बलदेव अंकल ने मुझे बताया था। वैसे उन्होंने तुम्हें यहां भेजकर बहुत अक्लमंदी का सबूत दिया।"

"यानि कि आप भी मुझे यहां छोड़कर अक्लमंद कहलवाना चाहते हैं?" रेखा ने स्पष्ट भाव से आंखें दिखाई।

"नहीं गुड़िया तुम मेरे साथ ही रहोगी। बेफिक्र रहो।" "भगवान् का शुक्र है कि मेरा भाई मेरे पापा जैसा न निकाला।" पापा के प्रति दिल की शिकायत रेखा के होंठों पर आ गई थी।

"पापा इत शरीफ इन्सान थे, रेखा। मेरे 'अपहरण से वह खौफजदा हो थे। ऐसे में उन्होंने मजबूरन तुम्हें खुद से जुदा किया। रेखा, वह तुम्हें बहुत चाहते थे और नहीं चाहते थे कि तुम जालिम चाचा की भेंट चढ़ जाओ।"

"उनका प्यार अपनी जगह, लेकिन मैं तो उनके प्यार से वंचित रह गई।"

"अब मैं जो हूं।" इन्द्र जज्बाती हो गया- "मैं तुम्हें इतना प्यार दूंगा कि तुमसे समेटा नहीं जाएगा। खैर, एक बात तो है रेखा कि जो लोग दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं-वह खुद भी कभी चैन से नहीं बैठते।"

"गलत!" हमारे चाचा तो चैन से हैं और मजे उड़ा रहे हैं। उनका तो -कुछ नहीं बिगड़ा।""एक अच्छी खबर सुनने को मिली है।" इन्द्र ने उसे चौंकाया। "वह क्या?"

"चाचा के तीनों बेटों में फूट पड़ गई है। सुना है, तीनों ने ही रमाकांत से जायदाद के बंटवारे की मांग की है।"

"भगवान् करे चाचा, जायदाद बांटने से इंकार कर दें, तब उन्हीं का कोई बेटा उनकी जान ले लेगा।" जले दिल से श्राप निकला था।

"ऐसा होना कोई बड़ी बात नहीं। जब रमाकांत जायदाद के लिए अपने भाई को मरवा सकता है तो उसी जायदाद के लिए कोई बेटा भी अपने बाप को खत्म कर सकता है।"

"ऐसा ही होगा। भगवान् के यहां देर है अन्धेर नहीं। जो जैसा बोता है-वैसा ही काटता है।"

इन्द्र कुछ क्षण खामोश रहा। फिर उसने अचानक ही पूछा- "अरे हां, रेखा। वह कमरा कहां है?"

"आप आराम करना चाह रहे हैं तो यही लेट जाएं और अगर अपने कमरे में जाना चाहते हैं तो चले मेरे साथ-मैं आपको आपका कमरा दिखा दूं।"

"ओ, बावा-मैं अपने कमरे की बात नहीं कर रहा हूं। मैं उस 'भूतहा कमरे' की बात कर रहा हूं जिसकी दीवारें काली हैं।" "ओह! वह कमरा।" रेखा बोली- "वह कमरा नीचे है। गंगा मौसी के कमरे के वराबर वाला है।"

"मैं उसे देखना चाहता हूं।" इन्द्र ने इच्छा व्यक्त की। "हां, जरूर देखें! मैं खुद चाहती हूं कि आप वह कमरा देखें-बड़ा

comicsmylife.blogspot.in

ही अजीबो-गरीब कमरा है।"

"चलें, अभी।"

रेखा कुछ सोचते हुए बोली- "मौसी ने अगर हमें उस कमरे में जाते हुए देख लिया तो परेशान हो जाएंगी,क्योंकि जिस आमिल तांत्रिक ने उस कमरे को ताला लगवाया था-उसकी हिदायत थी कि उस कमरे को कभी न खोला जाए।"

"फिर मैं कैसे देखूंगा?" इन्द्र निराश हो गया।

"रात को चलेंगे। एक बजे के बाद। जब सब सो जाएंगे।" रेखा ने तरकीब बताई।

"ओह! ठीक है।" इन्द्र आश्वस्त हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

रात का खाना सबने इकट्ठे खाया।फिर अमर, रेखा व इन्द्र को गाड़ी में घुमाने ले गया। गंगा मौसी भी साथ हो ली थी। लौटकर आए तो कॉफी का दौर चला और फिर सुनने-सुनाने की शुरूआत हो गई। गुंगा मौसी ही नहीं अमर भी इन्द्रजीत की आपबीती सुनने को बेकरार था।

इन्द्रजीत ने सुनाया कि किस तरह उसके चाचा रमाकान्त ने उसके कत्ल की साजिस की। किस तरह राजू मदारी नाम के एक जादूगूर ने अपना नजरबंदी का चमत्कार दिखाकर उसकी जान बचाइ। फिर किस तरह उस जादूगर ने उसे अपना गुलाम बना लिया। अब जादूगर के मरने के बाद ही वह आजाद हो सका।

इन्द्रजीत की आपवीती उन्होंने मंत्र-मुग्ध अवस्था मे सुनी। जव वह अपनी आपबीती सुना चुका तो अमर ने बड़ी दिलचस्पी से पूछा-

"फिर तो इन्द्रजीत साहब आपको भी जादू आ गए होंगे?" "हां, आते हैं।" इन्द्र मुस्करा दिया- "उस राजू मदारी ने कुछ खेल मुझे सिखाए थे और ये जादू से कम नहीं...।"

"फिर कुछ दिखाइये ना।" अमर बड़े शौक से बोला- "कोई कमाल हमें भी दिखाएं।"

इन्द्र सोचपूर्ण लहजे में बोला- "यू तो मुझे कोई जादू दिखाये एक मुद्दत हो गइ है-प्रेक्टिस नहीं रही-फिर भी कोशिश करता हू।"और तभी इन्द्र को ख्याल आया कि जब वकाल ने उसे रेगिस्तान की झोपड़ी में कैद किया था तो उसे अपनी पसन्द की खाने-पीने की इच्छा हाजिर करने के लिए एक मंत्र सिखाया था। इस तिलस्मी मंत्र द्वारा वह अपनी पसन्द की खाने की चीजें अपने सामने हाजिर कर लेता था।

उसने सोचा कि बकाल के सिखाये उस मंत्र की शक्ति को आजमा कर देखे कि वह मंत्र यहां इस लोक में भी कारगर है या उसका असर उसी मायावी रेगिस्तान में ही था और अब खत्म हो गया है।

इन्द्रजीत ने एक प्लेट मंगवाकर अपने सामने रखी और मौसी से सम्बोधित होते पूछा- "बताएं मौसी! क्या खाएंगी?"

"नहीं भई, मैं नहीं खा रही कोई चीज, पता नहीं कहां से मंगवाकर देंगे।"

"ओ हो, मौसी। आप भी कमाल करती हैं। मत खायें-पर किसी चीज को आने तो दें।" अमर बोल उठा। वह इर्स मामले में पूरी-पूरी दिलचस्पी ले रहा था।

"आने वाली चीज को तुम खाओगे?" मौसी ने उसे घूरकर देखा।

"हां-मैं खाऊंगा।" अमर ने उन्हें चिढ़ाने के लिए कहा। "इन्द्र-जरा इसे लोहे के चने मंगवा दो-देखें, कैसे चबाता है?" मौसी भी सुनककर बोली।सबने कहकहा लगाया। अमर खिसियाकर रह गया।

"अच्छा, मौसी मैं ऐसा करता हूं कि लोहे की बजाय मैं गर्म-गर्म चने मंगवा देता हूं।" इन्द्र ने कहा व फिर सम्भलकर बैठ गया। उसने अपने जहन को एकाग्र किया फिर बकाल के सिखाये मंत्र को होंठों-हीं-होंठों में दोहराया और अपना हाथ प्लेट की तरफ बढ़ाकर बोला-

"गर्म-गर्म चने।"

इन्द्रजीत को एकदम से एक झटका-सा लगा जैसे उसने बिजली के नंगे तार को छू लिया हो और प्लेट खाली की खाली रहा। रेखा ने उसे झटका खाते देखा तो परेशान हो गई। वह घवराकर बोली-

"क्या हुआ भैय्या।"

"एक जादू बेअसर हो गया।" इन्द्र निराशा से बोला- "लगता है वहां की चमत्कारी शक्तियां वहीं रह गई हैं।"

"अच्छा ही हुआ है।" रेखा ने लापरवाही से कहा।

"ठहरो, अभी एक और जादू आजमा कर देखता हूं।" इन्द्र ने कहा और फिर वह अमर से सम्बोधित हुआ- "अपनी घड़ी उतारें।"

comicsmylife.blogspot.in

एक व्यंगपूर्ण मुस्कान के साथ अमर ने अपनी घड़ी उतारकर इन्द्र के हाथ में दे दी। इन्द्र ने वह घड़ी अपने दोनों हाथों में बन्द कर ली। फिर अपने दोनो हाथ घुमाकर एकदम खोल दिये। अमर का ख्याल था कि घड़ी एकदम हाथ से नीचे गिर जायेगी, लेकिन ऐसा न हुआ।घड़ी गायब हो चुकी थी। इस चमत्कार पर रेखा ने खुश होकर तालियां बजाई।

"अमर गवां बैठे ना अपनी घड़ी?" मौसी ने हंसकर कहा। "नहीं मौसी-ऐसा कुछ नहीं है।" इन्द्र भी हंसा और फिर रेखा से कहा- "रेखा, तुम जरा इस खाली प्लेट को अंधा कर दो।" रेखा ने खाली प्लेट औंधी कर दी- "यह लीजिए।"

"अब सीधा कर दो।"

रेखा ने प्लेट सीधी की तो हैरत से उसकी चींख निकल गई।अमर की घड़ी सामने मौजूद थी। रेखा ने घड़ी उठाकर मुस्कराते हुए अमर की तरफ बढ़ा दी- "देख ले, ठीक-ठाक तो है?"

"बिल्कुल ठीक है।" अमर घड़ी को उलट-पुलटकर देखते बोला।

"इन्द्र! वेटे मुझे भी वताओ कि तुमने क्या मंत्र पड़ा था मौसी बोल उठी।और इन्द्र बड़ी संजीदगी से वोला- "मौसी, जादू वास्तव में शैतानी अमल है-इसे सीखने के लिए जो मंत्र पढ़ने पढ़ते हैं उनका सम्बन्ध शैतान की जात से होता है। नेकदिल बंदों को तो इनसे दूर ही रहना चाहिये। मैंने जो दिखाया है वह कोई मंत्र शक्ति नहीं, बल्कि यह ऐसा चमत्कार है जिनसे किसी को - नहीं पहुंचता।" वहस संजीदा न हो जाए और सब, खास तौर पर अमर, कुछ उल्टा-सीधा न सोचने लगे-इन्द्रजीत ने ऐसे ही दो-तीन नजरबंदी के करिश्मे और दिखाए।और यूं रात गये तक वे सब गपशप में मस्त रहे और फिर अंतत: लगभग बारह बजे सबने अपने-अपने कमरों का रुख किया। रेखा कुछ देर अपने भाई के कमरे में रुकी। उनका प्रोग्राम उस तावीज वाले भूतहा कमरे में जाने का था-रखा ने भाई से वक्त तय किया और फिर ऊपर अपने कमरे में आ गई। उन्होंने दो बजे के बाद नीचे जाने का प्रोग्राम बनायी था। नींद से बचने के लिए उसने वी० सी० आर० में एक पुरानी फिल्म की कैसेट लगाई व फिर रजाई में वैठकर आराम से फिल्म देखने लगी।

दो घन्टे यूं आसानी से बीत गए। दो बजते ही उसने वी० सी० आर० बद किया। कम्बल परे फेंका और काली चादर ओढ़ ली।

बाहर बहुत तेज हवा चल रही थी। उसने चादर अच्छी तरह ओढ़ ली थी। हवा बहुत ठंडी थी। चेहरे पर ब्लेड की तरह लग रही थी। चांद पूरी तरह रोशन था। इन्द्रजीत वाले कमरे को लाईट जल रही थी। खिड़की पर हालांकि पर्दा पड़ा क्या था-फिर भी रोशनी महसूस हो रही थी। तयशुदा सिगनल के तौर पर रेखा ने तीन बार खिड़की का शीशा बजाया और हर क्षणों बाद इन्द्र दरवाजा खोलकर धीरे-से बाहर आ गया और धीरे-से बोला-

"सब ठीक है।"

"हां-अभी तक तो ठीक है।" रेखा ने भी धीरे-से जवाब दियार-"आ जाइये, मेरे साथ।"

गंगा मौसी के कमरे की लाईट घुली हुई थी। उनके कमरे के आगे से होते हुए वे दवे-पांव चलते हुए बंगले के उस 'रहस्यमय कमरे' के सामने पहुंचे और रेखा ने इन्द्र को रुक जाने का इशारा किया। कमरे के दरवाजे के हैण्डल पर काले धागे से बंधा ताबीज' पूर्ववत: ही लटका हुआ था।

इन्द्रजीत ने दरवाजे को बड़े ध्यान से देखा। ताबीज पर भी नजर डाली। रेखा ने इस कमरे से सम्बन्धित जो कहानी सुनाई थी-उसके अनुसार यह कमरा उस प्रेत लोक या मायावी लोक में जाने का जरिये था, पर इससे भी कोई इन्सान उस 'स्वप्नलोक' तक तभी जा सकता था जब वहां का कोई गैर-इन्सानवासी उसकी मदद कर।

इस काले कमरे के रहस्यमय दरवाजे को देखकर क्षणभर के लिए इन्द्रजीत के बदन में सनसनी फैल गई। खुद रेखा के हवास भी काबू में नहीं रहे थे। उसके दिल की धड़कन अनायास तेज हो गई थी और हाथ-पांव बेजान से होने लगे थे। पूरा वजूद ही कम्पन का शिकार था।

रेखा ने फौरन खुद को सम्भाला। साहस बटोरा और हाथ बढ़ाकर दरवाजे के हैण्डल पर रख दिया। हैण्डल पर दवाव डालते हुए दरवाजे को हल्का-सा धक्का दिया।

"अरे!" रेखा के मुंह से निकला।

comicsmylife.blogspot.in

"क्यों क्या हुआ?" इन्दजीत ने आगे आ धीरे से पूछा। "आप जरा दरवाजा खोलें।" रेखा दरवाजे के आगे से हटते हुए बोली।

इन्द्रजीत ने आगे बढ़कर हैण्डल पर हाथ रखा और उसे दबाकर दरवाजा खोलना चाहा, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। दरवाजा लॉक्ड था, कैसे खुलता?

"दरवाजा लॉक है।" कहता हुआ इन्द्र पीछे हट गया। उसके पीछे हटते ही रेखा ने एक बार फिर दरवाजा खोलने की कोशिश की-पर दरवाजा लीक न होता-तभी ना। "बेकार है।" वह हताश-सी बोली- "आ जाइये।"

इन्द्रजीत खामोशी से उसके पीछे हो लिया और फिर अपने कमरे के दरवाजे पर पहुंचकर वह रेखा से बोला- "अच्छा, रेखा! तुम अपने कमरे मे जाओ। अब बात करेंगे।"

रेखा चिन्तित-सी अपने कमरे मे आ गई और सोचने लगी कि आखिर यह क्या हुआ? वह दरवाजा लीक्ड कैसे हो गया? किसने किया?

जाहिर है कि यह काम अमर या गंगा मौसी तो कर नहीं सकते थे। खास तौर पर अमर को तो इस कमरे की 'ताजा कहानी' मालूम ही नहीं थी। उसे यह मालूम नहीं था कि दरवाजा खुला है या 'लॉक्ड'। उसने तो आज तक उस दरवाजे को हाथ तक नहीं लगाया था। गंगा मौसी जरूर इस कमरे के वारे में थोड़ा बहुत जानती थी-पर उन्हें भी कमरे का ताला लगाने की क्या जरूरत थी?

इससे पहले रेखा कई बार इस कमरे में जा चुकी थी। उसे इस दरवाजे का ताला हमेशा खुला मिला था। पिछली रात भी वह 'मायावी लोक' से इसी कमरे मै पहुंची थी और दरवाजा खोलकर बाहर आई थी।

फिर यह अचानक क्या हुआ?

वह देर तक इस बारे में ही सोचती रही, पर त्छ समझ में नहीं आया। अंतत: उसे सोचते-सोचते ही नींद आ गई ओर फिर...। उसे रात को ख्वाब में दादा हरिओम दिखाई दिये। वह रेखा के कमरे में आकर एक कुर्सी पर इत्मीनान से बैठ गए और रेखा को प्यार से देखते हुए बोले-

"हां, रेखा! क्या बात है क्यों परेशान हो?"

"दादा, उस कमरे का दरवाजा लीक कैसे हो गया?" रेखा ने अपनी परेशानी सुना दी।

दादा हरिओम मंद-मंद मुस्कराये व फिर हौले से बोले- "वह हमने लीक किया है।"

"ओह! लेकिन क्यों? मैं मैया को दिखाना चाहती थी।" रेखा बोली।

"रेखा, तुम्हें तुम्हारा भाई मिल गया-क्या तुम खुश नहीं हो?" "मैं बहुत खुश हूं।"

"फिर अब तुम उस कमरे को भूल जाओ और जो कुछ बीता है उसे भी ख्वाब समझकर भूल जाओ। किसी भी बात की ज्यादा कुरेद अच्छी नहीं होती। तुम मेरी बात समझ गई ना।" दादा हरिओम ने समझाने वाले लहजे में कहा। उनके लहजे में एक तरह की चेतावनी भी थी।

"जी दादा।" रेखा धीरे से बोली- "अच्छी तरह समझ गई हू।"

"बस तो फिर विदा।" यह कहकर दादा कुर्सी से उठे और उठते ही अदृश्य हो गए।रेखा की आखें फौरन खुल गई।

अब उसे अन्दाजा हुआ कि वह खाब देख रही थी। इस खाब ने उस्की मानमिक उलझन दूर कर दी थी। उस कमरे को 'लॉक' करने वाले दादा हरिओम थे और यही दादा हरिओम ही तो थे जिन्होंने रेखा को इस कमरे की राह दिखाई थी और यह रास्ता उसे इन्द्रजीत तक ले गया था। जिसने राह खोली थी-आज वही उसे वंद कर गया था।

रेखा निश्चिन्त होकर फिर सो गई।

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत अव जिन रास्तों पुर जाना चाहता था, उसके लिए बंगलौर से लौट जाना' जरूरी था। वह दिल्ली जाने के लिए बेचैन था। गंगा मौसी के अपनत्वपूर्ण आग्रह पर ही वह दो-चार दिन रुका फिर दिल्ली जाने का फैसला कर लिया। रेखा को भी उसने साथ ले लिया।

रेखा की खाहिश पूरी हो गई थी।

वह जब दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गई तो गंगा मौसी ने उसे गले लगाते हुए कहा-

"रेखा! तुम्हारा कमरा मैं बंद करवा दूंगी-यह तुम्हारे लिए ही है। जब तुम्हारा दिल चाहे लौट आना।"

"जरूर, मौसी। हालात जरा किसी करवट बैठ जाएं-फिर भगवान् ने चाहा तो मैं आपको ही यहां से ले जाऊंगी।" रेखा ने अपने दिल की कही थी।

"वाह! और मुझ गरीब का क्या होगा?" अमर चहका। "तुम्हें अमीर बनाया जाएगा।" इन्द्र बोल उठा।

"वह किस तरह? क्या किसी जादू के जोर से?"

"नहीं! बल्कि तुम्हारी शादी करके।"

"हे प्रभु! मेरे सिर पर हाथ रख। ये लोग तो मुझे बर्बाद करने पर तुले हैं।" अमर ने कुछ ऐसे अंदाज में कहा कि मौसी व रेखा के साथ ही इन्द्र भी हम दिया था।

गंगा मौसी और अमर उन्हें एयरपोर्ट छोड़ने आए। दिल्ली के एयरपोर्ट पर अंकल बलदेव उनके प्रतीक्षक थे। इन्द्रजीत ने फोन पर अंकल को सूचना दे दी थी। यूं वे बलदेव अंकल के साथ सीधे अपनी माडल टाऊन वाली कोठी में पहुंचे।फिर अगले ही दिन अंकल बलदेव के आग्रह पर इन्द्रजीत अपने पापा के रेस्तरां में पहुंचा। रेस्तरां अब उसे ही सम्भालना था। उसने वहां का चार्ज सम्भाला और फिर अपने रेस्तरां में काम करने वालों में से एक बन्दे को चुना और उसे सुबह कोठी पहुंचने को कह दिया।

रंजीत एक मजबूत कद-काठी का नौजवान था। वह रेस्तरां में बिल क्लर्क की हैसियत से काम करता था। दूसरे जरूरी कामों से फुर्सत पाने के बाद इन्द्रजीत ने उसी रात अपने चाचा रमाकांत के नाम एक पत्र लिख डाला-उसने लिखा-

"आपने मेरे और पापा के साथ- जो कुछ किया है वह आप जानते ही हैं। प्रभु कृपा से में अपने घर वापिस आ गया हूं। मेरे साथ मेरी वहन रेखा भी है। अब आप शराफत से मेरे पापा की जमीनें-बाग व सावनपुर की हवेली का आधा हिस्सा दस दिन के भीतर खाली कर दें। मैं ग्यारहवें दिन सावनपुर आऊंगा। जमीनों की आमदनी का अब तक का हिसाब-किताब तैयार रखियेगा। मैं अब आपसे एक-एक पैसे का हिसाब लूंगा।"

आपका-इन्द्रजीत

इस खत को उसने एक लिफाफे में वंद किया व उस पर 'अपने चाचा का नाम व पता लिख दिया। सुबह रंजीत जब कोठी पहुंचा तो उसने लिफाफा उसके हवाले करते हुए उसे समझा दिया उसने यह पत्र कहां व किसे पहुंचाना है।

रंजीत के सावनपुर रवाना होने के वाद इंन्द्रजीत ने रेस्तरां का रुख किया और फिर रात तक रेस्तरां में ही रहा। रेस्तरां का मैनेजर बहुत ही मेहनती आदमी था। उसने रेस्तरां को बड़ी कुशलता से सम्भाला हुआ था। काम के हिसाब से उसकी तनख्याह कम थी। सो इस दिन इन्द्रजीत ने उसकी 'पै' में अच्छी खासी बढ़ोतरी करके उसे खुश कर दिया।

इन्द्रजीत के पापा एक कला-प्रेमी व्यक्ति थे और उन्होंने वकायदा एक आर्ट-गैलरी खोली हुई थी। इन्द्रजीत ने अगली सुबह आर्ट गैलरी में जाने का प्रोग्राम वनाया। आर्ट-गैलरी में ताला पड़ा हुआ था। इन्द्रजीत ने आर्ट-गैलरी रेखा के सुपूर्द करने का फैसला किया था कि यूं वह घर में अकेली रहकर बोर होने से बच जाएगी। इन्द्रजीत अभी सोकर भी नहीं उठा था कि एक नौकर ने जोर-जोर से उसके कमरे का दरवाजा वजाया। इन्द्रजीत ने दरवाजा खोला तो घर का यह नया नौकर परेशान खड़ा था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"क्या हुआ?" इन्द्र ने पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

"साहब जी-गेट पर एक लाश पड़ी है।"

"लाश केसकी लाश?"

"वो जी कल जो साहब यहां आए थे। उनकी लाश है जी।" "रंजीत की लाश ?" इन्द्रजीत ने जैसे खुद से सवाल किया-"यह कैसे हो सकता हैं?"

जो नहीं होना चाहिये था-वह हो गया था।

इन्द्रजीत कों आशा नहीं थीं कि ऐसा हो जाएगा। उसका तो ख्याल था कि जव रंजीत रमाकांत को उसका पत्र देगा तो रमाकांत पत्र पढ़कर कांपने लगेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ था-रमाकांत ने खुद कांपने की वजाय इन्द्रजीत को कंपा दिया था। उसने पत्र ले जाने वाले को उसके घर के दरवाजे पर फिंकवा दिया था। इससे ज्यादा दीदा-दिलेरी और क्या हो सकती थी?

इन्द्र अपने नौकर रामू के साथ गेट पर आया।

रंजीत की लाश गेट क बराबर दीवार के साथ पड़ी थी। इन्द्रजीत ने करीब से उसका जायजा लिया। रंजीत के बदन पर कहीं कोई चोट का निशान या घाव नजर नहीं आया। इन्द्र ने उसकी नब्ज देखी। नब्ज चल रही थी और दिल भी धड़क रहा था। रंजीत अभी जिन्दा है।

इन्द्रजीत ने अपनी गाड़ी निकाली। रेखा को सूरतेहाल से आगाह किया व फिर रंजीत को गाड़ी में डालकर फौरन एक अच्छे अस्पताल का रुख किया।

डॉक्टरों की एक-दो घन्टे की मेहनत के बाद रंजीत को अंतत: होश आ गया। अगले दो घन्टों में उसकी हालत बिल्कुल ठीक हो गई और फिर और एक घंटा रखकर उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

डॉक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार, रंजीत को कोई शारीरिक चोट नहीं पहुंचाई गई थी, बल्कि उसे एक नशीली दवा का तेज इंजेक्शन लगाकर फेंक दिया गया था। अगर रंजीत को तुरन्त डॉक्टरी मदद न मिलती तो-डॉक्टरों की राय के अनुसार-वो अपनी इस बेहोशी में मर भी सकता था।

इन्द्रजीत ने भगवान् का शुक्र अदा किया। रंजीत मर जाता तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जाना था। रंजीत की जेब से एक कागज बरामद हुआ-जिस पर लाल रंग की स्याही से लिखा था।

"ग्यारहवां दिन अभी बहुत दूर है। हमारी तरफ से पहले दिन का तोहफा कबूल करो।"

रमाकांत ने इन्द्रजीत की ग्यारहवें दिन की धमकी का बड़ी खूवसूरती से मजाक उड़ाया था।रात को अपनी गाड़ी भेजकर इन्द्रजीत ने रंजीत को अपनी कोठी पर बुलवा लिया और वलदेव अंकल की मौजूदगी में रंजीत ने अपनी सावनपुर की रिपोर्ट दी। उसने सावनपुर का हाल वयान करते हुए कहा-

"मैं सावनपुर की हवेली पर पहुंचा में मैंने रमाकांत से मिलने की ख्याहिश जाहिर की। मुझे फौरन हवेली के अन्दर पहुंचा दिया गया। कुछ देर वाद हवेली के आलीशान ड्राइंगरूम में रमाकांत तशरीफ लाए। बूढ़े होते हुए भी वह मुझे खास चाक-चौवन्द नजर आए। उन्होंने अपनी सुख खुंखार आंखों से मुझे पूरा और आने की वजह पूछी। मैंने आपका पत्र जेब से निकालकर उनकी तरफ बढ़ा दिया। इस वीन एक नौजवान शख्स, जो शायद उनका वेटा था, खामोशी से आकर वहां बैठ गया था।

"...मुझसे लिफाफा लेकर रमाकांत ने अपने बेटे की तरफ बढ़ा दिया। उसी ने पत्र निकालकर पढ़ा और उसके चेहरे की रंगत बदल गई। उसने रमाकांत से कहा- "आओ, पापा।" वेटे के साथ रमाकांत हवेली के अंदर चला गया। मैं ड्राइंगरूम में अकेला रह गया। देर बाद उनका वेटा दोवारा ड्राइंगरूम में आया और मुझसे बोला- "ठिक है तुम जाओ।" उसकी यह बात सुनकर मैं खामोशी से उठा और हवेली से बाहर निकल आया। मैंने मेन राड पर आकर वापसी के लिए वस पकड़ी और रात आठ बजे क्रम अपने घर पूहुंच गया। खाना खाकर मैंने सोचा कि यहां आकर आपको सूरतहाल से आगाह कर दूं।

"...मैं घर से निकलकर गली में आया तो अन्धेरे में खड़ी गाड़ी से अचानक तीन-चार बन्दे बाहर निकले और मुझे

comicsmylife.blogspot.in

जवरन गाड़ी में डालकर आगे बढ़ गए। मेरी आखों पर काली पट्टी बांध दी गई और रिवाल्वर की नाल पहलू में चुभोकर खामोश बैठे रहने की धमकी दी गई। एक लम्बे सफर के बाद मुझे गाड़ी से उतारा गया। किसी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे रास्ता दिखाया। मैं नहीं जानता मुझे कहां ले जाया गया। जहां ले जाया गया-वहां मुझे धक्का देकर गिरा दिया गया। मैं एक बिस्तर पर गिरा था। फिर मेरा कोट उतारकर, कमीज की आस्तीन चढ़ाई गई और अभी मैं अंदाजा नहीं लगा पाया था कि उनका इरादा क्या है कि मेरे बाजू में एक इन्जेक्शन झोंक दिया गया। दवा अन्दर जाते ही मुझे चक्कर आने शुरू हो गये और कुछ ही लम्हों बाद में अपने होश गवां बैठा। फिर जब मेरी आंख खुली तो मैं अस्पताल में था।"

"रंजीत तुम खौफजदा तो नहीं हो?" पूरी कहानी सुनने के बाद इन्द्रजीत ने पूछा।

"अरे, नहीं सर! खौफजदा होने की भला क्या बात है? वैसे मेरी समझ मैं एक बात नहीं आई कि वे कौन लोग थे और उन्होंने ऐसा क्यो किया? जवकि मेरी किसी से दुश्मनी भी नहीं है, सर।"

"असल में उनका मकसद तुम्हें खौफजदा करना नहीं था,बल्कि तुम्हारे जरिये मुझे खौफजदा करना था। वो कौन थे, मैं अच्छी तरह जानता हूं। उनकी दुश्मनी तुम्हारे साथ नहीं, मेरे साथ है। वहरहाल, तुम बेफिक्र हो जाओ। अगर चाहो तो एक-दो दिन घर पर रहो और आराम करो। जव तवियत विल्कुल ठीक हो जाए तो फिर रेस्तरां! आ जाना।" इन्द्रजीत ने हमदर्दी से कहा।

"नहीं सर-मैं विल्कुल ठीक हूं। आप मेरी फिक्र न करें। मैं कल अपनी ड्यूटी पर आऊगा।"

"ठीक है, फिर तुम जाओ।" इन्द्र वोला। साथ ही उसने नौकर रामू को पुकारा और उसे हिदायत दी- "ड्राइवर से कहो कि यह रंजीत साहब को उनके घर छोड़ आए।"

"सर, मैं चला जाऊंगा। इस जहमत की जरूरत नहीं।" "नहीं ड्राइवर तुम्हें छोड़ आएगा।"

"जैसी आपकी मजी, सर।"

"ओ० के०।" इन्द्रजीत ने खड़े होकर उसके साथ हाथ मिलाया और फिर उसके जाने के बाद, इन्द्र अब तक खामोश तमाशाई बने बैठे अंकल बलदेव से सम्बोधित हुए- "जी, अंकल! अव आप क्या कहते हैं, इस मामले के बारे में?" "रमाकांत ने बड़ा शातिराना अंदाज में वार किया है।" "उसके खिलाफ नामजद एफ० आई० आर० करवा दूं?" इन्द्र ने सलाह मांगी।

"किस जुर्म की?"

"मेरे मुलाजिम रंजीत को किडनैप कराने की।"

"पर तुम्हारे पास इस वात का क्या सबूत है कि उसने यह काम किया है। भई, यह सीधा-सादा एक ड्रग्स के आदी नौजवान का केस है-जो जरूरत से ज्यादा मात्रा में कोई नशा लेकर बेहोश हो गया। रमाकांत अगर उसका अगुवा ही करवाता तो फिर अपने इलाके से कराता। उसे मारना होता तो वकायदा हमला करवाता। ऐसा कुछ भी नहीं, हुआ। इन्द्र, में तो कहता हूं कि भगवान् न करे, रंजात अगर मर भी जाता तब भी हम रमाकांत का कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे।"

"और वह तहरीर जो उसकी जेब से बरामद हुई है?"

"ऐसी तहरीर कोई भी लिख सकता है। कहा जा सकता है कि वह तहरीर भी तुमने खुद ही लिखी-अपने दुश्मन चाचा को फंसाने के लिए।"

"हूं।" इन्द्र खामोश हो गया। हकीकत समझ गया था वह। "इन्द्र !" अंकल वलदेव वोले- "रमाकांत लोमड़ी की तरह चालाक और भेड़िये की तरह खुंखार शख्स है।"

"तो फिर मैं शेर बन जाता हूं। एक ही वार में उधेड़कर फेंक देता हूं।" इन्द्रजीत को तैश आ गया।

तभी रेखा ने अन्दर झांका व सिर्फ अंकल व भाई को देखकर अन्दर आ गई। उसने भीतर आते हुए इन्द्र का कहा सुन

comicsmylife.blogspot.in

लिया था। उसने घवराकर पूछा-

"क्या हुआ भैय्या यह तैश कैसा?"

"आओ, बेटी।" अंकल वोले- "तुम ही जरा अपने भाई को समझाओ। यह मरने-मारने पर तुला हुआ है!"

"रेखा तुम जानती हो कि रंजीत के साथ जो कुछ हुआ किसने किया?"

रेखा शांत भाव से बोली- "मैं अन्दाजा लगा सकती हूं कि वह मद अपने चाचा का किया-धरा है।" उसने बलदेव अंकल की तरफ देखा, पूछा- "क्यों अंकल, क्या आप मुझसे सहमत नहीं हैं?" "शत-प्रति-शत सहमत हूं।" बलदेव राज ने गहरा सांस लेकर कहा- "पर वच्चो, एक वात समझ लो कि तुम मेरे लिए वहुत कीमती हो। इन्द्र तुम अपनी बहन के लिए अनमोल हो। अपने खौफ व अपने प्यार की वजह से कृष्णकांत ने डसे मजबूरन अपने से दूर रखा। यूं रेखा को मां की ममता मिली न बाप का प्यार-दुलार। अब क्या तुम उससे भाई का प्यार और उसकी सुरक्षा भी छीन लेना चाहते हो?"

"भगवान् न करे।" इन्द्रजीत की प्यार भरी नजरें अपनी वहन की तरफ उठ गई।

"तो फिर शेर वनकर अपने चाचा रमाकांत को उधेड़ने की ख्वाहिश अपने दिल से निकाल दो। मैं तुम्हें जंगल में नहीं जाने दूंगा। जंगल का कानून नहीं अपनाने दूंगा। रमाकांत की मौत से हमारा केस और भी पेचीदा हो जाएगा।"

"अंकल, मेरा कलेजा तो ठण्डा हो जाएगा। उसने मेरे पापा को मारा है। इंतकाम लेने का हक है मुझे।" इन्द्रजीत अपने रोष को दबा नहीं पा रहा था।

"कातिल बनना चाहते हो।" बलदेव राज ने सवाल किया और फिर इससे पहले कि इन्द्रजीत कोई जवाव देता, वह रेखा से सम्बोधित हुए, उससे पूछा- "क्यों रेखा, क्या तुम चाहोगी कि तुम्हारा भाई कातिल बन जाए?"

"नहीं, अंकल! भूलकर भी नहीं।" रेखा तेजी से बोली- "मैं अपने भाई को खोना नहीं चाहती।"

"सुन लिया, इन्द्र। देखो, वेटे तुम्हारे आ जाने से हमारा दावा और हमारा केस अव बहुत मजबूत हो गया है। अव हम नये सिरे से रमाकांत पर मुकद्दमा करेंगे और आखिर उसे हमारी जमीनें, हमारी जायदाद हमारे हवाल करनी होंगी। रही बात इंतकाम की तो तुम यह क्यों भूल जाते हो कि भगवान् सवसे बड़ा न्याय करने वाला है। उस पर क्यों नहीं छोड़ देते इस इंतकाम की चाह को? वही लेगा हमारा इंतकाम और मेरा विश्वास है कि इस तरह लेगा कि दुनिया देखेगी। रमाकांत का अंजाम दुनिया भुला नहीं पाएगी।"

पता नहीं बलदेव अंकल के इन शब्दों में क्या असर था कि इन्द्रजीत के दिल को करार-सा आ गया। वक्ती तौर पर उसके दिल में भड़कते इंतकाम के शोले सर्द पड़ गए। रेखा भी कुछ निश्चिन्त-सी दिखने लगी थी। हालांकि वह खुद अपने जालिम चाचा के प्रति अपने दिल में प्रतिशोध की प्रचण्ड भावना रखती थी, पर अब समझ में आ रहा था कि हालात जच्चात से काम लेने र्का इजाजत नहीं दे रहे।

रेखा ने अंकल के दिशा-निर्देश से सहमति जताई और तय हुआ कि जमीन जायदाद की वापसी के लिए नया मुकद्दमा दायर किया जाएगा और कानून को अपने हाथ में लेने की कतई कोई कोशिश नहीं की जाएगी।

इन्द्रजीत खामोश वैठा सव सुनता रहा था-वोला कुछ नहीं। उसने फैसले को कबूल कर लिया था या फिर उसने अपने दिल में कोई और फैसला कर लिया था। कोई नहीं जानता था।

बहरहाल, बलदेव अंकल के सुझाव पर चलने हुए जायदाद की सुपुर्दगी के लिए वकील के जरिये लीगल नोटिस भिजवा दिया गया। कानूनी कार्रवाई आरम्भ हो गई और इस कानूनी कार्रवाई की निगरानी की जिम्मेदारी स्वयं वलदेव अंकल ने अपने जिम्मे ले ली।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत ने रेस्तरां का कार्यभार सम्भालने के बाद 'आर्ट-गैलरी' की तरफ ध्यान दिया।गैलरी का नये सिरे से 'रिनोवेशन' कराया गया। अभी तक यह 'आर्ट-गैलरी' उसके पिता कृष्णकांत का शौक था। यहां पर बड़े-बड़े ऊंचे पैमानों पर विख्यात आर्टिस्टों की कलाकृतियों का प्रदर्शन होता था। इन प्रदर्शनियों में आने वाले भी कला-पारखी व ऊंची सोसाइटी के गणमान्य आमंत्रित लोग होते थे।

लेकिन इन्द्रजीत ने 'आर्ट गैत्सी' को आम करने की ठानी। उसने गैलरी को पब्लिक के लिए खोल दिया।

सब कुछ सुचारू रूप से व्यवस्थित करने के वाद गैलरी रेखा के स्तर्द कर दी गई। रेखा का आर्ट से फितरी' लगाव था। उसका खुद का हाथ बहुत अच्छा था। वह एक प्रसिद्ध महिला आर्टिस्ट की शिष्या बन गई और बहुत तेजी से आर्ट की प्रारम्भिक वारीकियां सखि व समझ लीं। अब वह अपनी आर्ट गैलरी के दफ्तर में बैठी पेन्टिग बनाने में व्यस्त रहती।

एक दिन रेखा अपने काम में मस्त थी कि टेलीफोन की घंटी बजी।

"हैल्लो।" रेखा रिसीवर उठाकर बोली।

"देखिये, मुझे 'आर्ट गैलरी' के मालिक से बात करनी है- "उधर से किसी महिला की गरिमापूर्ण आवाज सुनाई दी।
"जी, फरमाइये।" रेखा ने कहा।

"क्या आप इस आर्ट गैलरी की मालिक हैं?" उधर से पूछा गया।

"मुझे दरअसल मालिक कहलवाना पसन्द नहीं है आप मुझे इस 'आर्ट गैलरी' की मैनेजर कह सकती हैं।" रेखा ने जवाब दिया- "मेरा नाम रेखा है।"

"देखिए, रेखा जी। मैं दरअसल दिल्ली में नहीं रहती। मुझे किसी ने इस आर्ट-गैलरी के बारे में बताया था। सोचा, बात कर लूं।"

"जी फरमाइये।" रेखा शालीनता के साथ बोली। "मेरे पास कुछ 'पेन्टिंग्स' हैं-मैं उनकी प्रदर्शनी के बारे में आपसे बात करना चाहती थी।"

"वेलकम।" रेखा बोली- "तशरीफ लाइये।"

"कल किस वक्त हाजिर हो जाऊं।"

"जब जी चाहे। ऐनी टाइम! मैं दिन भर यहीं होती हूं।" रेखा ने निमंत्रण दिया।

"फिर भी?"

"सुबह ही आ जाएं-ग्यारह वजे तक।" रेखा ने टाइम दिया।

"जी ठीक है। आई एम थैंककुल थैंक यू वैरी मच।" उधर से कहा गया व सम्बन्ध विच्छेद हो गये।

सम्बन्ध विच्छेद हो गए तो रेखा को ख्याल आया कि उसने फोन करने वाली का नाम तो पूछा ही नहीं और न ही यह पूछा कि वह बोल कहां से रही है?

"चलो, खैर। कल आएगी ही-तव पूछ लेगी।" यह सोचकर उसने बुश सम्भाला व 'केनवेस' पर रंग लगाना शुरू कर दिया। शाम को रेखा जब घर पहुंची तो इन्द्रजीत चाय की मेज पर उसका प्रतीक्षक था।

रेखा मुंह-हाथ धोकर चाय की मेज पर आ गई।

"हां, तो आर्टिस्ट साहिबा। कितनी तस्वीरें वनाई आज।" इन्द्र ने मुस्कराते हुए पूछा।

"तस्वीरें!" रेखा चकित-सी बोली- "मजाक क्यों कर रहे है, भैय्या मुझे तो एक पेटिंग पर ही काम करते हुए पन्द्रह दिन हो गए हैं।"

comicsmylife.blogspot.in

"ओह! ऐसी सुस्त रफ्तार से काम होगा--फिर तो पांच साल बाद ही पेन्टिंग्स की नुमाईश हो सकेगी।"

"खैर ये, नुमाईश की कोई जल्दी भी नहीं है।" रेखा ने मुस्कराते हुए कहा और कपों में चाय उंडेलने लगी।

"कोई हंगामा करो भई! तुम्हारी आर्ट गैलरी बड़ी ठण्डी जा रही है।"

रेखा को उस फोन काल का ख्याल आया, वह बोली- भैय्या आज किसी महिला का फोन आया था, वह अपनी 'पेन्टिंग्स' की नुमाईश चाहती है।"

"अगर पेन्टिंग्स अच्छी है तो फिर देर न करो।" इन्द्र ने सुझाव दिया।

"तस्वीरों का तो कल पता चलेगा। वह कल ग्यारह बजे आएगी।"

वे दोनों अभी इस वावत वातें ही कर रहे थे कि बाहर से गोलियों के धमाकों को आवाज आई।

"भैय्या, फायरिंग।" रेखा ने सहमकर कहा।

तभी ड्राइंगरूम के शीशों के टूटने की आवाजें आई। इन्द्र जल्दी से बोला- "रेखा, नीचे बैठ जाओ। ये गोलियां हमारे घर पर चल रही हैं।"

उन दोनों ने कुर्सियां छोड़ नीचे बैठने में देर नहीं लगाई थी। यह खेल मुश्किल से एक-दो मिनट का था। फायरिंग करने वाली गाड़ी, गोलियां बरसाकर जा चुकी थीं यह इत्मीनान हो जाने पर कि फायरिंग करने वाले उगा चुके हैं-तो दोनों बहन-भाई गेट पर पहुंचे। गेट पर भी निशानेबाजी की गई थी। गेट गोलियों से छलनी था। गेट के साथ वाली दीवार पर भी गोलियों के निशान थे। कोठी के ड़ाइंगरूम पर भी अच्छी खासी चांदमारी की गई थी। खिड़कियों के शीशे टूट चुके थे।

पास-पड़ोस के लोग भी वाहर निकल आए थे। किसी ने भी फायरिंग करने वालों को नहीं देखा था। नौकर रामू संयोग से साग-सब्जी लेने घर से बाहर गया हुआ था और जब वह वापिस आ रहा था तो उसने एक सफेट गाड़ी को खड़े हुए और उस गाड़ी से फायरिंग करने वालों को देखा था। वे संख्या में तीन थे। उनके चेहरे कपड़े से ढके हुए थे। फायरिंग दो व्यक्तियों ने एक साथ की थी। एक ने गेट को निशाना बनाया था-और दूसरे ने वैठक की खिड़की को- और फिर गाड़ि को तेजी से भगाते हुए गली में मुड़ गए थे।

गेट बंद करवाकर इन्द्रजीत वापिस चाय की मेज पर आ गया उसने रेखा को बैठने का इशारा करते हुए कहा-

"कमवख्तों ने चाय का मजा भी किरकिरा कर दिया।" "इस फायरिंग का क्या मकसद हो सकता है, भैय्या?" रेखा ने चिन्तित स्वर में पूछा। "हमें खौफजदा करना।" इन्द्र बेपरवाही से वोला- "अपन चाचा के हौसले बढ़ते जा रहे है।"

"भैय्या। वे लोग कोठी के भीतर भी आ सकते थे।" रेखा नें अंदेशा व्यक्त किया- "और तव कोई जानी नुकसान भी पहुंचा सकते थे। हमें सिक्योरिटी गाइस का इंतजाम करना चाहिये। "रेखा अभी भी सहमी हुई थी।

इन्द्रजीत ने इत्मीनान से चाय पी व फिर लॉन में रखे फोन की तरफ बढ़ गया।उसने कोठी पर होने वाली फायरिंग की सूचना बलदेव अंकल को दी। वलदेव अंकल ने पूरी वात सुनने की कोशिश ही नहीं की। उन्होंने कहा- "मैं आ रहा हूं।" और यह कहकर उन्होंने सम्बन्ध विच्छेद कर लिए थे।

वलदेव राज आया और उसने कोठी का निरीक्षण किया-दोनों की खैरियत पूछी-सत्र कुछ सविस्तार सुना,फिर वोले-

"चलो, पुलिस स्टेशन चलते हैं। इस वारदात की रिपोर्ट जरूरी है।"

थाने में रिपोर्ट दर्ज कर दी गई। फायरिंग के सिलसिले मे रमाकांत पर शुका जाहिर किया गया। पुलिस को बताया गया कि रमाकांत के अलावा उनका कोई दुश्मन नहीं। पिछले एस० एच० ओ० का ट्रांसफर हो चुका था। यह कोई नया इंस्पेक्टर आया था। इसका नाम नरेश यादव था। उसे रमाकांत के बारे में कुछ मालूम नहीं था। बलदेव राज ने उसे डिटेल में समझाया। यह भी वताया कि इस कोठी पर दो नौकरों का कत्ल भी हो चुका है।

बलदेव राज ने अपनी बात खत्म करते हुए बताया- "उन नौकर मियां-बीवी के कत्ल पर भी हमारा शंका यही था कि

comicsmylife.blogspot.in

उनका कल रमाकांत के वन्दों ने किया है, क्योकि वह देवगत कृष्णकांत की हत्या के बारे में बहुत कुछ जानते थे।"

पिछली वारदातों की तरह पुलिस ने इस फायरिंग के बारे में भी औपचारिक अंदाज में कार्रवाई की और फिर मामला ठंडे बस्ते में चला गया। बलदेव राज और इन्द्रजीत दोनों ही जानते थे कि ऐसा ही होगा, लेकिन उन्होंने यह रिपोर्ट महज कानूनी कार्रवाई के तौर पर की थी। चल रहे मुकदमों में यह रिपोर्ट मदद कर सकती थी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत ने दो सुरक्षा गार्ड रख लिए और उन्हें गेट की बजाय, कोठी में 'सर्वेन्ट क्वाटर्स' के करीब तैनात किया ताकि किसी सम्भावित हमले पर प्रभावशाली कार्रवाई कर सकें। यानि कि इन गार्डो को कोठी में गुप्त रूप से रहते हुए अपनी ड्यूटी अंजाम देनी थी।

अब इन्द्रजीत अपने पास भी हर वक्त भरा रिवाल्वर रखने लगा था। वह चाहता था कि अब रेखा घर से कम-से-कम ही निकले, लेकिन वह आर्ट गैलरी छोड़ने व घर में बंद होने पर राजी नहीं थी। तव इन्द्रजीत ने उसके लिए भी एक सशस्त्र गार्ड का इंतजाम कर दिया वो उसकी गाड़ी के पीछे-पीछे मोटर साइकिल पर चलाता था। रेखा फायरिंग की उस वारदात से खौफजदा हुई थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि वह घर से निकलना ही छोड़ देती।

वह तो अगले ही दिन अपने निश्चित वक्त पर आर्ट गैलरी पहुंच गई थी। उसने उस महिला आर्टिस्ट को ग्यारह वजे का टाइम दिया था-इस वक्त पौन ग्यारह वजे थे।

और जाने क्यों रेखा उस आर्टिस्ट से मिलने को बड़ी वेचैन थी।

वह आई और ठीक ग्यारह बजे आई। ठीक ग्यारह बजे आर्ट गैलरी के दरवाजे पर गाड़ी के हार्न की आवाज आई। चौकीदार ने गेट खोल दिया। गाड़ी अंदर आ गई। फिर कुछ ही देर में रेखा को राहदारी में खट-खट की आवाज सुनाई दी। यह ऊंची ऐड़ी कें जूतो की आवाज थी।

रेखा अपनी टेबल के पीछे सम्भलकर बैठ गई।

वह महिला भीतर आई। वह सफेद साड़ी में इतनी 'ग्रेसफुल' लग रही थी कि रेखा पलकें झपकाना भूल गई। उस महिला कें फौरन बाद ही सादा लिवास में एक स्टेनगनधारी शख्त अन्दर आया-उसने रेखा को घूरकर देखा-फिर कमरे का जायजा लिया और उलटे कदमों वापिस चला गया।

"माफ कीजिएगा, आप ही शायद मिस रेखा हैं?" आगुन्तिका ने झिझकते हुए पूछा।

"जी।" रेखा ने बस इतना ही कहा।

"आस्वर्य है।" वह आगे बढ़ते हुए वोली- "आप तो बहुत कम उम्र हैं।"

"आपका क्या ख्याल था कि आपको यहां कोई पच्चास-साठ की औरत बैठी मिलेगी।" रेखा ने हंसकर कहा।

"मेरा ख्याल था कि कोई कम-से-कम मेरी हम उम्र मेनेजर होगी।" उस आकर्षक महिला ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। "कमाल है।" रेखा ने खड़े होकर उसका हाथ थाम लिया। उसका हाथ बड़ा कोमल था और खूबसूरत भी। रेखा ने बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाकर उसे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया- "तशरीफ रखें।"

"धन्यवाद।" उसने भीनी-भीनी मुस्कान के साथ कहा। "कल आपका फोन आया था तो मुझे आपका नाम पूछने का ख्याल ही नहीं आया और आपने भी अपना नाम नहीं बताया था।"

"मेरा नाम बड़ा पुराना-सा है इसलिए वताने में संकोच करती हूं?"

"लो यह क्या बात हुई-नाम सिर्फ नाम होता है-पुराना या नया नहीं होता। अगर ऐसा होता तो लोग हर बीस साल बाद अपना नाम वदल लिया करते। हां, क्या नाम है आपका?"

'मेरा नाम पुष्पा है।"

"वाह, इतना प्यारा नाम तो है।" रेखा चहकी। फिर पूछा- "आपका काम कहां है?"

"मेरी पेन्टिग्स गाड़ी में हैं-अभी आपके सामने आई जाती है।"

पुष्पा ने अभी जवाब ही दिया था कि दो शख्स बड़े-बड़े फ्रेम उठाए अदर दाखिल हुए। ये कुल बीस कलाकृतियां थीं और पैक थी। इन पर भूरा कागज लिपटा हुआ था। ये तम्बीरें शायद सीधे फ्रेम करने वाले की दुकान स लाई गई थीं।

रेखा की उत्सुकता जागी थी। वह वोली- "अगर आप अनुमति दें तो इनका घूघट उठाकर देख लूं?"

comicsmylife.blogspot.in

"हां-हां...क्यों नहीं, लेकिन इन तस्वीरों को देखने से पहले यह बात जहन में रखिएगा कि मैं कोई बकायदा पेन्टर नहीं हूं।" ये सारी तस्वीरें मैंने बरसों में वनाई हैं। जव इतनी तस्वीरें एकत्रिक हो गईं तो जी चाहा कि इन्हें लोगों के सामने रखूं।"

"यह तो आपने वहुत ठीक सोचा। ऐसे काम का क्या फायदा जो लोगों के सामने न आए।"

"एक बात मैं और आपसे कहना चाहती हूं। मैं अपना काम आर्ट के चाहने वालों के सामने रोश तो करना चाहती हूं-लेकिन स्वयं सामने नहीं आना चाहती। अगर आपने इन तस्वीरों को प्रदर्शित करना स्वीकार कर लिया तो प्रदर्शनी में महज एक दर्शक की हैसियत से आऊंगी और खामोशी से लोगों की टिप्पणियां सुनना चाहूंगी।" यह कहते हुए उसने एक तस्वीर के ऊपर से कागज फाड़ दिया। और रेखा पहली ही तस्वीर देखकर दंग रह गई।

और जब उसने एक-एक करके सारी तस्वीरें देख ली तो वह जैसे गुंगी ही हो गई। हर तस्वीर देखने बाद हेरानी से पुष्पा की तरफ देखती। ये पेन्टिंग्स कला के तौर पर तो ज्यादा पुख्ता न थीं-लेकिन इन तस्वीरों में जो कुछ दिखाया गया था-वह बहुत पुख्ता था। इन तस्वीरों में आर्टिस्ट की निजी भावनायें विखरी पड़ी थीं।

सारी तस्वीरें देखने के वाद रेखा ने वड़े जोश से कहा- "मैं इन कलाकृतियों की प्रदर्शनी इस कदर धूमधाम से करूगी कि पूरे देश में आपके चर्चे हो जाएंगे।"

"मिस रेखा, मुझे प्रसिद्धि नहीं चाहिए।" पुष्पा धीमे से वोली। "हां, मुझे अंदाजा है, इसलिए आपने इन तस्वीरों पर अपना नाम भी नहीं लिखा।" रेखा ने अव सीधे पुष्पा की आंखों में झांकते हुए कहा था- "एक बात पूछ, सच-सच बताएंगी?"

"हां, पूछें मिस रेखा! में. झूठ क्यों बोलूंगी?" वह थोड़ा-सा हैरान होकर वोली थी।

"क्या आपका नाम वाकई पुष्पा है?" यह एक अजीव सवाल था।

इस प्रश्न पर पुष्पा को एकदम करन्ट-सा लगा। उसने एक नजर रेखा को देखा और अपनी खूबसूरत आंखों पर पलकों का शामियाना डाल लिया।

"नहीं।" वह धीमे से बोली- "यह मेरा असली नाम नहीं है।" "हुर्रे...!" रेखा जैसे खुशी से उछल पड़ी-"यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि यह आपका असली नाम नहीं है।"

"आपकी यह खुशी मेरे लिए आशचर्यजनक हैं। इससे क्या फर्क पड़ता है कि मेरा नाम पुष्पा है या मेनका?"

"आप ठीक कह रही हैं। इससे सच ही में कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका नाम पुष्पा है या मेनका, लेकिन अगर नाम नयना हो तो फर्क पड़ता है। बहुत फर्क पड़ता है।" रेखा अब उसे प्यार भरी निगाहों से देख रही थी और उसके होंठों पर शरीर-सी भेदपूर्ण मुस्कान थी।

रेखा के मुंह से यह सुनकर उसकी आंखें फैल गई। उसका नाम नयना ही था और रेखा ने तो उसे, उसकी पहली तस्वीर देखते ही पहचान लिया था कि वह राजकुमारी नयना के अलावा कोई और नहीं हो सकती।

उसकी पहली पेन्टिंग में पेड़-ही-पेड़ थे और इन्हीं पेड़ों के बीच पत्थर पर एक मर्दाना कमीज पड़ी हुई थी। बड़ा ही रहस्यमय व खूबसूरत 'लेण्डस्कैप' था। एक दूसरी तस्वीर में एक लड़का और लड़की घोड़ों पर बैठे बातें करते जा रहे थे और 'बैकग्राउन्ट' में खेत फैले हुए थे। एक अन्य पेन्टिंग में एक लड़की घोड़े पर सवार थी और उसके चेहरे के भावों से पता चलता था कि जैसे वह किसी को ढूंढ रही है। यानि कि जितनी भी तस्वीरें थीं वे सबकी-सब उस कहानी का हिस्सा थीं जो काले चिराग ने रेखा को सुनाई थीं और रामू मदारी नामक तांत्रिक के मंत्रजाल से छूटकर राजकुमारी नयना व उसके भाई इन्द्रजीत की कहानी थी।

अब इस बात में कोई सन्देह न रहा था कि यह आर्टिस्ट सुन्दरी और कोई नहीं उसके भाई इन्द्रजीत की नयना थी। नयना ही अपनी व्यथा को केनवेस पर उतार सकती थी।

"अपना नाम सुकर हैरान हो गई ना?" रेखा ने शोखी से कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" वह परेशान-सी बोली- "रेखा, आपको मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?"

"सब समझ में आ जाएगा। मैंने तय कर लिया है कि अब मुझे क्या करना है? मैं आपकी पेन्टिंग्स की प्रदर्शनी का उद्घाटन एक बहुत बड़ी हस्ती से कराउंगी। आप देखती जाएं कि मैं क्या करती हूं? उघाटन वाले दिन मैं आपको ऐसा सरप्राईज दूंगी कि आप जिन्दगी भर याद रखेंगी।"

फिर रेखा ने उसे चाय पिलाई। वह नयना की आवभगत उसकी शान के अनुसार ही कर रही थी। नयना वहां जितनी देर बैठी रही, रेखा से यही पूछती रही कि उसे उसका असली नाम कैसे मालूम हुआ, पर रेखा तो इस स्थिति से आनन्दित हो रही थी। वह रहस्य से पर्दा हटा अपना यह आनन्द नहीं खोना चाहती थी। उसने नयना को कुछ बताकर न दिया। बस यही कहा-

"नयना जी, आप बस उद्घाटन के दिन का इंतजार करें। इस राज से, कि मैंने आपको किस तरह पहचाना, अब उसी दिन पर्दा उठेगा।"

एक-डेढ़ धन्टे बाद नयना जब जाने के लिए उठी तो रेखा उसे बाहर तक छोड़ने आई। स्टेनगनधारी, जो नयना का बॉडीगार्ड था, ने नयना को आते देखा तो जल्दी-से गाड़ी का पिछला दरवाजा खोला! नयना के बैठने के बाद दरवाजा बंद किया और खुद ड्राइवर के बराबर वाली सीट पर वैठ गया।

गाड़ी जब गेट से बाहर निकल गई तो रेखा चूमती हुई अपने आफिस में आई। उसने नयना के बनाए चित्रों को एकएक कर दोबारा देखा।

मन चाह रहा था कि फोन करके भैय्या को बुला ले और उन्हें यह तस्वीरें दिखाये, लेकिन वह फैसला कर चुकी थी कि उद्घाटन वाले दिन से पहले एक-दूसरे के बारे में उन्हें हवा भी न लगने देगी। और जय ये अचानक एक-दूसरे को देखेंगे तो वह क्षण कैसे आनन्दप्रद होंगे।

उस दिन वह शाम को घर पहुंची तो प्रतिदिन की तरह इन्द्रजीत उसका प्रतीक्षक था। रेखा का अंग-अंग ही तो खुशी के हिलौरी में था। यह अपनी खुशी दबा नहीं पा रही थी।

इन्द्रजीत से भी उसकी मनोस्थिति छिपी न रही और वह पूछे बिना न रह सका-"भई खैरियत तो है।"

रेखा इस कदर खुश थी कि वह अपने भाई के गले में बाहें डाले बिना न रह सकी-"भैया! मेरे प्यारे भैया!" उसने खुशी से झूमते हुए कहा।

"हे प्रभु! खैर से।"

"आज मैं बहुत खुश हूं। इतनी खुश हूं कि बना नहीं सकती।" "ओह! लगता है वह आर्टिस्ट महिला कुछ ज्यादा ही अच्छी तस्वीरें लेकर आ गई है।"

"उफ...बस मत पूछो। उन तस्वीरों ने तो पागल ही कर दिया है और जब आप देखेंगे तो अपने होश गंवा बैठेंगे।"

"तस्वीरों को देखकर।" इन्द्र मुस्करा दिया।

"तस्वीरों को भी और उस सुन्दरी को भी।" बड़ी शोखी के साथ कहा रेखा ने।

"कोई बेहद खूबसूरत चीज है क्या?"

"बस, भैय्या मुझसे कुछ न पूछिये।"

"चलो, नहीं पूछने। हम खुद देख लेंगे। हमें आपकी आर्ट गैलरी में आने की इजाजत तो होगी ना।"

"इजाजत...या...उन तस्वीरों की पदर्शनी का तो उद्घाटन आपके हाथों होना है।"

"जग हंसाई कराने का इरादा है। बहन की आर्ट गैलरी-उद्घाटन करने वाला भाई। लोग क्या कहेंगे?" इन्द्र गम्भीर होते बोला।

comicsmylife.blogspot.in

"लोगों को मारो गोली। मैं बस इतना जानती हूं कि इस प्रदर्शनी का उद्घाटन आपके अलावा कोई नहीं कर सकता।" "पता नहीं भई, क्या सोच और कर रही हो। मेरे ख्याल में तुम्हें भूख लग रही है, इसलिए उल्टी-सीधी बातें हो रही हैं। आओ-खाना खा लो।"

"भैय्या!" रेखा उसे आंखें दिखाती बोली- "आप समझ रहे हैं कि मैं पागल हो गई हूं।"

"नहीं, भई।" इन्द्र मुस्कराया- "मैं भला ऐसा समझ सकता हूं।"

"मैं वाकई पागल हो गई हूं। वह आर्टिस्ट थी ही ऐसी।" "हे भगवान्!" इन्द्रजीत ने अपना सिर थाम लिया- "रेखा, प्लीज! अगर तुम्हें भूख नहीं है तो मत खाओ खाना, लेकिन मुझे तो खाने दो।"

"मुझे भूख क्यों नहीं है-मुझे तो जबरदस्त भूख लगी है।" यह कहकर रेखा खाने पर इस तरह टूट पड़ी जैसे बाराती शादी के खाने पर टूटते हैं।

और फिर उद्घाटन वाले दिन भी लोग को कुछ इसी तरह का हाल था।

लोग टूट पड़ रहे थे। रेखा ने अंकल बलदेव को बिश्वास में लेकर उन्हें इस उद्घाटन समारोह का इन्चार्ज बना दिया था। बलदेव राज एक कालेज में प्रोफेसर थे...असरो-रसूख भी था और लोगों से सम्बन्ध भी। उन्होंने इस समारोह में शहर के चुने हुए लोगों की भीड़ जुटा ली थी। नयना को रेखा ने अपने ऑफिस में बैठा दिया था। उसके साथ वलदेव अंकल की बेटी वर्षा व उसकी सहेलियां बैठी थीं। रेखा ऑफिस का दरवाजा वन्द करके निकल गई थी। इन्द्रजीत निश्चित वक्त पर पहुंच गया। आज उसने डार्क-ब्राउन सूट पहन रखा था। इस रंग ने गोरे-चिट्टे इन्द्रजीत के व्यक्तित्व को और भी निखार दिया था।

"फीता" काटने से पहले बलराज अंकल ने कुछ शब्द आर्टिस्ट के बारे में कहे-

"लेडिज एण्ड जेन्टलमेन ये पेंटिग्स देखकर आप यकीनन थोड़ा-सा चौंकेंगे। यह अनोखी -इनका कला की दृष्टि से मूल्यांकन तो कला-पारखी ही करेंगे लेकिन मैं इतना जानता हू कि 'विपय-वस्तु' के दृष्टिकोण से आप इन्हें नया पायेंगे।

"... ये सारी तस्वीरें एक कहानी है-और इन्हें जिस महिला आर्टिस्ट ने बनाई हैं वह पर्दे के पीछे रहना चाहती है। बहरहाल, आप देखिये और छिपे फनकार को दाद दीजिये। अब मैं इन्द्रजीत जी से अनुरोध करूगा कि वह 'रिबन' काटकर इस प्रदर्शन का विधिवत् उदघाटन करें। धन्यवाद।"

तब रेखा ने चांदी की प्लेट में रखी कैंची अपने भाई के सामने की। इन्द्रजीत ने मुस्कराते हुए कैंची उठाई और तालियों की गूंज में 'रिबन' काट दिया।

और फिर जब इन्द्रजीत दूसरे लोगों के साथ 'पेन्टिंग्स' देखने अंदर जाने लगा तो रेखा ने बड़े प्यार से उसका हाथ थाम लिया और सरगोशी में बोली-

"तस्वीरें देखने से पहले तस्वीर वाली को तो देख लें, भैय्या।" वह इन्द्र का हाथ पकड़े-पकड़े ऑफिस की तरफ बड़ी। "यानि कि वह देवी जो यहां मौजूद हैं।" इन्द्र ने हैरत दर्शाई। "जी।"

"लेकिन वह तो पर्दे के पीछे रहना चाहती हैं?"

"आपसे क्या पर्दा-उनका पर्दा तो लोगों से है।" रेखा अर्थपूर्ण अंदाज में मुस्कराई।

"देखो रेखा,कहीं पिटवा न देना।" इन्द्र ने चुटकी ली। "सामान तो कुछ पिटने-पिटवाने का ही है।" रेखा चहकी। अपने ऑफिस के दरवाजे पर पहुंचकर उसने दस्तक दी। दरवाजा वर्षा ने खोला। उसने इन्द्रजीत को दरवाजे पर देखकर 'नमस्कार' किया और फिर रेखा की तरफ देखा जैसे उसके आदेश की प्रतीक्षक हो।

"बर्षा, तुम जाओ। अपनी सहेलियों के साथ नुमाईश देखो।" "ओ० के०।" कहती हुई वर्षा पलट गई। उसके साथ ही इन्द्रजीत ने अन्दर जाने के लिए कदम उठाये तो रेखा ने हाथ के इशारे से रोकते हुए बदस्तूर शोखी के साथ कहा-

comicsmylife.blogspot.in

"सब्र जरा सब्र। धीरज धरे जरा भैय्या।"

तभी वर्षा अपनी सहेलियों के साथ कमरे से निकल गई। रेखा ने कमरे में झांककर देखा। नयना कुर्सी पर बैठी थी। दरवाजे की तरफ उसकी पीठ थी।

"जाइये, भैय्या अन्दर तशरीफ ले जाइये और मिलिए उस आर्टिस्ट से जो खुद अपने आपमें एक 'शहकार' है।"

"तुम भी चलो।"

"जो नहीं। मैं मेहमानों को अटेन्ड करने जा रही हूं। अंकल अकेले हैं। आपको अकेले ही अन्दर जाना होगा। डर नहीं।" "डर किस बात का।" यह कहकर इन्द्रजीत दरवाजा धकेल भीतर प्रवेश कर गया।

रेखा ने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया व मुस्कराती हुई प्रदर्शनी हाल की तरफ लौट गई।

रेखा के रवैये से उलझा इन्द्रजीत बहुत आहिस्ता से कमरे में दाखिल हुआ था। नयना उसकी तरफ पीठ किये बैठी थी। जब दरवाजा जोर से बन्द हुआ तो उसने एकदम पलटकर देखा। एक बिजली-सी चमकी! बादल गरजे और दिलों पर बूंदाबांदी-सी शुरू हो गई। इस तरह मिल जाएंगे कभी सोचा भी नहीं था। नयना दरवाजा बंद होने की आवाज पर पलटी थी और पलटकर देखते ही अहसास हुआ जैसे इस एक क्षण में उसकी किस्मत ही पलटा खा गई हो। कमरे में प्रवेश करने वाले इन्द्रजीत को उसने एके नजर में ही पहचान लिया था।

वह तो उसका प्यार था। उसका इन्द्रजीत था। वह तड़पकर उठी।

नयना का पलटना इन्द्रजीत के लिए भी तो एक भूकम्प से कम न था। यह उसकी निगाहों ने क्या देखा? यह उसके दिल के दरवाजे पर किसने दस्तक दी।

बीते वक्त की गर्द ने हालाकि दोनों सूरतें धुंधला दी थीं। पन्द्रह सालों में सूरतें कितनी बदल गई थीं, लेकिन करने वाले सिर्फ चेहरों से एक-दूसरे को नहीं पहचनते-आंखे से ज्यादा उनके दिल पुकार उठते हैं।

इन्द्रजीत के दिल ने भी पुकारा था- "अरे। यह तो उसकी नयना है।" वह तड़पकर आगे बढ़ा- नयना...यह तुम हो।" नयना बेअख्तयार उसकी बाहो में समा गई और रो दी- "हां...यह मैं हूं नयना...मेरे देवता।"

बेकरार इन्द्र ने उसे खुद से अलग किया। उसकी ठोड़ी को अपनी दो उंगलियों से उठाया। नयना की कजरारी आंखें आंसुओं से भीग रही थीं-कजरा फैल चला था।

"अरे, रोज मत नयना! देखो, आंखों का काजल फैलने लगा है। लोग देखेंगे तो क्या कहेगे।"

"मैने लोगों की परवाह कभी नहीं की इन्द्र।" वह पलकें झपकाती बोली- "जब तुम होते हो ती फिर कोई दूसरा नहीं होता। मैंने तो अपने पिताश्री की परवाह नहीं की। अपने मंगेतर के बारे में नहीं सोचा। मैं लोगों की भला क्या परवाह करूगी। आह! मेरे प्रियतम्। प्रभु भी कैसी परीक्षाएं लेता है! इन्द्र, मैं कल भी तुम्हारी थी और आज भी तुम्हारी हूं और जज्बे सच्चे हों तो भगवान् को भी झुकना ही पड़ता है।"

"त...तुम...सच कह रही हो, नयना।" इन्द्र भावुक हो उठा। "हां, इन्द्र! मैं तो अभी वहीं खड़ी हूं जहां तुम मुझे छोड़कर गए थे।" नयना को सम्भालते बोली- "क्या तुमने अभी तक मेरी पेन्टिंग्स नही देखी।"

"नहीं, अभी कहां? उस शरीर लड़की ने मुझे अंदर जाने ही कहां दिया। मुझसे उद्घाटन करवाया और फिर सीधे यहां ले आई।"

"तभी तो...। वर्ना तुम मझसे यह सवाल न करते।"

"बैठो, नयना।" इन्द्र ने उसे वापिस कुर्सी में बैठा दिया और उसे मुग्ध-सा निहारने लगा। नयना सम्भल चुकी थी। उसने पूछा- "यह लड़की कौन है, इन्द्र? उसने मेरे साथ इस कदर व्यवहार किया है कि मैं बता नहीं सकती। फिर...फिर उसने मेरी तस्वीरों से पहचान लिया-जबकि मैंने अपना नाम भी गलत बताया था।"

"वह तुम्हें कैसे न पहचानती।" इन्द्र मुस्करा दिया- "वह तो तुम्हें मुझसे ज्यादा जानती है।"

comicsmylife.blogspot.in

"क्या लगती है वह तुम्हारी?" नयना चौकन्नी नजर आने लगी-"क्या सम्बन्ध है तुम्हारा उससे?"

"बहुत निकट का सम्बन्ध है।" इन्द्र ने अपनी चमकती आंखों से उसकी तरफ देखा-"वह मेरी छोटी बहन है।"

"ओह !" नयना ने राहत का गहरा सांस लिया- बहुत पारी है।"

"हा, प्यारी भी और शरीर भी। देखं लो, उसने न मेरे बारे में तुम्हें कुछ बताया और न तुम्हारे बारे में मुझे...।"

नयना अपलक इन्द्र को निहारे जा रही थी। उसने पूछा-'इन्द्र! तुम कहां चले गए थे..?"

"बताउंगा-हर वह बात बताऊंगा जो तुम जानना चाहोगी। फिलहाल, बस इतना जान लो कि किसी ने मेरा अपहरण कर लिया था। मैं किसी के जादू में कैद था। मेरी यह बहन रेखा ही मुझे वहां से मुक्त कराकर लाई है।" इन्द्र बोला- "नयना, मैं तुम्हें कभी नहीं भूला। बरस बीत गए एक जिद्दी प्रेतात्मा की यातनामय कैद में। मिली तो तुम्हारे बारे में सोचते हुए भी भय लगता था। बरस गए थे और जाने क्या-से-क्या हो गया है कि तुम पहचानने से भी इंकार कर दो। यह सोचता रहता था, पर मन ' यह इरादा था कि एक बार तुम्हारी हवेली जाकर जरूर देखूंगा। मैं वहां आने का मन बना ही रहा था।"

नयना ने कुछ कहना चाहा, पर तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और दरवाजा खोल रेखा मुस्कराती हुई भीतर आ गई।

"आर्टिस्ट साहिबा! आप यहां विराजमान हैं और लोग वहां प्रशंसा के फूल बरसा रहे हैं। तारीफ-पर-तारीफ हो रही है और वहां यह नियामतें बटोरने वाला कोई नहीं है।" फिर वह इन्द्र से सम्बोधित हुई-"और वी० आई० पी० गेस्ट आपको ढूंढ रहे हैं कि बन्दा 'रिबन' काटकर किधर खिसक गया। अगर आप लोगों की मिलनी सम्पन्न हो हो तो प्रदर्शनी में तशरीफ ले चलें।"

"आओ,नयना! मुझे अपनी पेंस्टिग्स दिखाओ।"

"हां, चलिये ना।" नयना फौरन उठते हुए बोली।

वे रेखा के साथ हो लिए थे, पर नजरें अब भी चुरा रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

नयना क्या मिल गई थी-इन्द्रजीत की जिन्दगी की पतझड़ में जैसे बहार आ गई थी। कुछ ऐसा ही हाल नयना का भी था। नयना ने तो यह इतने बरस ही इन्द्र की याद में और उसके इंतजार में गुजार दिये थे।

जिस दिन इन्द्रजीत जंगल में गुम हो गया था-वह दिन नयना की जिन्दगी का बड़ा महत्वपूर्ण दिन था। इन्द्र के रूप में उतने अपना जीवन साथी और अपना प्यार पा लिया था। इन्द्रजीत को मदारी राजू के मंत्रजाल से निकालने में नयना ने बड़ी भाग-दौड़ की थी और अंतत: इन्द्र को पा लिया था।

उस दिन ही तो उसने और इन्द्रजीत ने सब तय कर डाला था। इन्द्रजीत ने उस दिन दिल्ली अपने घर अपने मां-बाप के पास वापिस जाना था और फिर अपने मां-बाप को बेहरामनगर लेकर आना था। नयना के पिता, राजा बहराम नगर-विदेशों की सैर को गए हुए थे। वह कुछे दिन में ही वापिस आने वाले थे। नयना ने इन्द्रजीत को पसन्द करने के बाद अपने पिता को साफ-साफ कह दिया था कि वह अपने मंगेतर बलराज से शादी नहीं करेगी और राजा साहब ने एक रवायती बाप बनने के बजाए नयना से कहा था कि वह उसके इंकार की वजह देखना चाहेंगे। तब नयना ने सोच लिया था कि इन्द्रजीत जैसे ही अपने मां-बाप के साथ वापिस आएगा तो वह अपने इंकार की 'वजह' यानि इन्द्रजीत को राजा साहब के सामने पेश कर देगी और उसे पूर्ण विश्वास था कि उसके पिता 'राजा साहब' इस 'वजह' को फौरन कबूल कर लेंगे।

लेकिन ऐसा नहीं हो सका था।

इन्सान सोचता कुछ है-होता कुछ है। भाग्य में कुछ और ही लिखा हुआ था। इन्द्रजीत अपने घर जाने से पहले ही-उसी दिन-जगल में कहीं गुम हो गया। नयना उसे पागलों की तरह जंगल में पुकारती और छूती रही, पर व्यर्थ। अब उसे क्या मालूम था कि उसके इन्द्रजीत को प्रेत-सुन्दरी बकाल ले उड़ी है। नयना को जंगल से इन्द्र की कमीज और उसका घोड़ा लेकर ही निराश लौटना पड़ा था।

फिर नयना रोज ही जंगल जाने लगी। वह दिन-दिन भर जंगल में भटकती फिरती, लेकिन उसकी हर कोशिश निष्फल रही। इन्द्र न मिलना था न मिला। इन्द्र की फेंकी हुई कमीज ही उसके लिए जीने का सहारा और पूजा की 'खड़ाऊं' बन गई थी। नयना उसे आंखों से लगाती उसे चूमती-सूंघती। इस कमीज में उसका प्यार-उसका इन्द्रजीत बसा हुआ था।

कुछ दिनों बाद राजा साहब भी अपनी विदेश-यात्रा से लौट आए। उन्होंने अपनी बेटी को उलझा हुआ व चिन्तित पाया तो वह स्वयं चिन्तित हो उठे। नयना उनकी इकलौती व लाडली बेटी थी। वह उसे किसी कीमत पर परेशान नहीं देख सकते थे, लेकिन अब

बेटी को जो दु:ख था उसका उपचार राजा साहब के पास भी नदी था।

कुछ दिन-माह बीत जाने के बाद राजा साहब ने चाहा कि वह नयना की शादी कर दे, लेकिन नयना ने सख्ती से इंकार कर दिया। इन्द्रजीत के बाद अव कोई उसकी जिन्दगी में नहीं आ सकता था।

राजा साहब ने नयना को अपने मंगेतर कुंवर वलराज के साथ शादी करने को मजबूर नहीं किया-लेकिन वह शादी के लिए जोर जरूर डालते रहे और यूं ही दवाव डालते-डालते वह चल बसे। इतनी बड़ी हवेली में नयना अकेली रह गई। नयना ने हिम्मत न हारी व अपनी जमींदारी को खुद सम्माल लिया। राजा साहब की जिन्दगी में सारे काम कारिन्दों ने सम्भाले हुए थे,इसलिए भी नयना को खास मुश्किल पेश नहीं आई।

बेराग-सा अपना रखा था नयना ने। सो खुद को व्यस्त रखने को उसने जनहित के सामाजिक कामों में वड़-चढ़कर हिस्सा लेना शुरू कर दिया। उसने अपनी जमींदारी में ही वहां के लोगों के लिए कई परियोजनाएं शुरू कीं। एक अच्छा स्तरीय अस्पताल बनाया, स्कूलों और कालेज की स्थापना की, गरीब लड़कियों की शादी-ब्याह में आर्थिक सहयोग की जिम्मेवारी अपने सिर ली। ऐसे भलाई के कामों से उसे राहत मिली।

लेकिन विछोह का गम-प्यार की कसक ही थी जो उसे कभी-कभी बेचैन कर देती थी। तब उसने पेन्टिंग की तरफ ध्यान दिया। इस शौक की खातिर प्रशिक्षण के लिए एक विख्यात 'पेन्टर' को कई माह तक हवेली में रखा। इस पेन्टर ने वहां की देहाती जिन्दगी को रंगों में उभारा और नयना को भी चित्रकारी सिखाई।

comicsmylife.blogspot.in

बस, फिर जब भी वक्त मिलता-मन उचाट होने लगता-वह अपने दिल के जख्म के मरहम के तौर पर पेन्टिंग करने बैठ जाती। इस तरह उसने इन्द्रजीत के नाम पर ही यह बरस बिता दिए। इन्द्रजीत की गुमशुदगी उसके लिए एक पहेली थी। दिल में एक फांस बनकर चुभ गई थी। एक टीस थी जो रह-रहकर उठती थी। नयना किसी 'सोशल' काम में व्यस्त होती कि अचानक ही इन्द्रजीत की याद घटा बनकर दिल पर छा जाती। फिर उसे कुछ याद न रहता कि वह कहां है, क्या कर रही है? वह होती और इन्द्रजीत के साथ बीते क्षण होते...उसकी यादें होती। कभी वह बहुत निराश हो जाती कि इन्द्रजीत अब कभी बापिस नहीं आएगा...और कभी उसके दिल में आशा के दीप जल उठते-नहीं वह जरूर आएगा।

यूं ही जिन्दगी बीतती गई।

और अब अंतत: उसके नाम पर जीने की तपस्या रंग लाई...उसका इंतजार सफल रहा। उसका इन्द्र आ गया था। उससे आ मिला था।

अब नयना के चारों तरफ रंग-ही-रंग थे...फूल-ही-फूल...थे...खूशबू-ही-खूशबू थी।

वह एक से अहसास के साथ गैलरी में यहां-वहां घूमती फिर रही थी। उसका इन्द्रजीत उसके साथ था। उसकी बनाई मुंह बोलती तस्वीरों को देखकर इन्द्र बहुतन खुश हुआ। उसे अंदाजा ही नहीं था कि नयना उसे इस कदर डूबकर चाहती है। हर तस्वीर में नयना की बेपनाह मुहब्बत मौजूद थी।

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्र खुद भी रेगिस्तान में एक मुद्दत तक कैद व बकाल की यातनामय वासना का शिकार रहा था। मर-मर कर जिया था। एकान्त के उन क्षणों में उसे भी नयना याद आती थी.. .बहुत याद आती थी, लेकिन उसकी याद में ऐसी तड़प न थी जो यह नयना की इन कलाकृतियों में देख रहा था। अगर उसके दिल में भी मुहब्बत की यही शिद्दत होती तो अपनी दुनिया में लौट आने के बाद उसने सीधा बहराम नगर की हवेली का रुख करना था। उसकी यह सोच ही उसे शर्मिन्दा कर रही थी।

आर्ट-गैलरी में नयना के रंग देखकर उसका जी चाह रहा था कि वह उसके कदमों में बैठ जाए...उसका दास बन जाए।

उस दिन रेखा ने चाहा कि 'प्रदर्शनी' का वक्त खत्म होने के बाद वह नयना को अपने साथ माडल टाऊन ले जाए और उससे रात भर बातें करे। न उसे सोने दे न खुद सोए, लेकिन इन्द्रजीत ने मना कर दिया। उसने कहा-

"नहीं रेखा। पहले हमें बहराम नगर जाना चाहिये। उसके बाद ही हम वहीं उसे अपने यहां आने की दावत देंगे।"

रेखा को भाई का कहना मानना पड़ा।

अगले ही दिन।

सुबह रेखा व इन्द्रजीत नाश्ता कर रहे थे। रेखा पटर-पटर नयना की बातें किए जा रही थ। वह जल्दी-से-जल्दी बहराम नगर जाना चाहती थी। इन्द्रजीत खुद बेचैन था सो-दोनों ने बहराम नगर जाने का अपना प्रोग्राम तय कर लिया और सुकून महसूस कर रहे थे।

अभी यह बातचीत चल ही रही थी कि नौकर रामू ने आकर इत्तला दी- "साहव जी! आपका फोन है ?"

"कौन है?" इन्द्र ने पूछा।

"वो जी-कोई प्रेम सागर साहब हैं।"

"उसे सुबह-सुबह क्या गया। इन्द्र ने जैसे कहा, फिर नौकर से वोला- "उन्हें बताओ किए मैं नाश्ता कर रहा हूं-अभी थोड़ी देर बाद उन्हें रिंग करता हूं।"

"जी।" नौकर पलट गया।

"यह प्रेम सागर साहव कौन है-भैंय्या रेखा ने पूछा।" इसे नहीं जानती।" इन्द्र बोला- "मेरा स्कूल का दोस्त है। कुछ दिन पहले संयोग से मुलाकात हो गई थी। वह भी अपने ही रेस्तरां में।"

"अच्छा...किसने पहचाना?" रेखा ने दिलचस्पी लेते पूछा। "मई, पहचाना तो मैंने ही।" इन्द्र ने बताया- "हुआ यह कि एक दिन मैं लंच के लिए घर आने के लिए निकल रहा था कि मैंने दो बन्दों को रेस्तरां में दाखिल होते देखा। इन दोनों में ही एक प्रेम सागर था। शक्ल जानी-पहचानी लगी-जहन पर जोर दिया तो याद आ गया कि यह तो अपना क्लास फेलो सागर है। क्लास में हम दोनों एक ही डेस्क पर बैठते थे और हममें खासी घनिष्ठता थी। उसका घर भी यहीं मॉडल टाऊन में ही था और हम एक-दूसरे के घर आते-जाते थे।

"उसे पहचाना तो किशोरावस्था की यादें उमड़ आई-मैंने घर आना कैसिल किया और रेस्तरां में लौट आया। वे दोनों एक मेज पर बैठ चुके थे। मैं उनके पास से गुजरा और उसे एक बार बड़े ध्यान से देखा। यकीन आ गया कि वह प्रेम सागर ही है। मैं अपने आफिस में आकर वैठ गया और सोचने लगा कि उससे किस तरह मुलाकात की जाए? वह खाना खाने आए थे। मुझे शरारत सूझी। मैंने उनके खाना खा लेने का इंतजार किया और इस वीच खुद भी खाना खा लिया। खाने के बाद उन्होंने कॉफी मंगवाई।

"जो बेचारा उन्हें अटेंड कर रहा था, उसे मैंने हिदायत की कि जब वे बिल मांगें तो बिल मुझसे लेकर जाए। मैंने एक बिल मंगवाकर उस पर राशि लिखने के बजाए एक डॉयलाग लिख दिया। जब उन्हांने बिल मंगवाया तो बेयरा मेरे पास आया। मैंने उसकी प्लेट में वह विल डाल दिया और समझा दिया कि जो साहब लाल टाई लगाये हुए हैं-विल उन्हीं के सामने जाकर रखे। बेयरे ने पूरे अदब के साथ बिल प्रेम सागर के सामने रख दिया। सागर ने अपने साथी से वातें कर रहा था। उसने बेध्यानि में बिल पर नजर डाली तो उसके चेहरे पर कई रंग आए और गए। उसकी सूरत ही

comicsmylife.blogspot.in

देखने वाली हो रही थी। उसने गुस्से से बेयरे की तरफ देखा और गुर्राया- "यह क्या बकवास है?"

बेयरे को मैंने समझा दिया था। वह आदरपूर्ण मुद्रा में और खामोश रहा।

"यह किसने लिखा है?" बेयरे को खामोश देखकर उसे और गुस्सा आ गया- "बोलते क्यों नहीं?"

"यह हमारे साहब ने लिखा है जी।" बेयरे ने धीमे से जवाब दिया।

"...रेखा, दरअसल मैंने बिल पर बात ही ऐसी लिख दी थी कि उसका आग-बबूला होना स्वाभाविक था! जानती हो मैंने क्या लिखा था। मैंने लिखा था कि-इतने बड़े रेस्तरों में 'आखिर -क्या सोचकर लंच लेने आ गए हों-तुम अपनी औकात क्यों भूल गए।" इन्द्र ने बताया व खिलखिला कर हंस दिया, फिर आगे बोला- "उसने बेयरे को घूरते हुए कहा- "कहां है तुम्हारा साहब? मुझे उसकी सूरत दिखाओ।" मैं ऐसे छ: रेस्तरों खरीदकर रख सकता हू। आखिर उसने मुझे समझा क्या है?"

"और फिर वह गुस्से से भरा हुआ मेरे आफिस में दाखिल हुआ, उसके पीछे-पीछे वह व्यक्ति भी था जिसके साथ वह लंच लेने आया था।" इन्द्र वताता गया- "मैं बड़े शहाना अंदाज में अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था। मैंने इत्मीनान से उसकी तरफ देखा व कहा- "यस। कहिये...।"

"मेरी सूरत देखते ही वह आगे बढ़ते-बढ़ते रुक गया। मुझे देखा व चौंका था। फिर मेरी आवाज सुनी तो मुझाए फौरन पहचान लिया और अपनी बाहें फैलाकर मेरी तरफ बढ़ा-

"ओये, कमीने तू...।"

"हां, मैं।" मैंने उसे गले से लगाते हुए कहा- "बड़े गुस्से में था। क्या इरादे थे?"

"मैं यह रेस्तरां खरीदने आया था।" उसने मुंह बनाते हुए कहा- "मैं हैरान था कि विल पर ऐसा जुमला लिखने वाला कौन हो सकता है? गंधा हूं मैं। मुझे समझ जाना चाहिये था यह जुर्रत सिर्फ तू ही कर सकता है।"

"सच, रेखा। प्रेम सागर से मिलकर बड़ा अच्छा लगा था। हमने बैठकर पिछली यादों को ताजा किया। उसे मेरी गुमशुदगी का पापा से मालूम हो गया था। वह जब तक मॉडल टाउन में रहा-यहां हमारे घर आता रहा था। फिर उसके पेरेन्टस बम्बई शिफ्ट कर गये। इधर मेरे मिलने की आस भी कम होती गई। उसका आना-जाना भी कम हो गया। कालेज से निकलकर उसने अपने पापा का ऑफिस सम्भाल लिया था। उसके पापा फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर थे। प्रेम सागर ने इस काम को आगे बढ़ाया और प्रोड्यूसर बन गया। उसे मालूम था कि यह रेस्तरां हमारा है, इसलिएल वह इस रेस्तरां में आता रहता था। कभी कभार पापा से भी मिल लिया करता था। इस तरह उसने मुझे किसी-न-किसी तरह याद रखा हुआ था।

"आज की तारीख में वह देश के बड़े फिल्म प्रोड्यूसरों में से है। उसे पापा के मर्डर के बारे में भी मालूम था। उसे इस वात में दिलचस्पी नहीं थी कि रेस्तरां अब कौन चला रहा है। उस दिन वह एक अर्से के बाद हमारे रेस्तरां में एक डायरेक्टर के साथ आया था। "उसकी सुनने के बाद, मैंने अपनी सुना। मैरी कहानी के बाद वह बड़ी संजीदगी से बोला कि- "यार, यह तो बड़ा सब्जेक्ट है-क्यों न इस कहानी पर फिल्म वनाई जाए। मैंने उसके सामने हाथ जोड़ दिये और बोझा- "यार, मुझे तो माफ ही कर! आज सुबह-सुबह जाने उसे क्या मुश्किल पेश आई है?"

"आपके दोस्त ने आपको हीरो बनाने की ऑफर नहीं की?" रेखा हंसते हुए बोली।

"यह तो वह कई बार कह चुका है।" इन्द्र मुस्करा दिया। रेखा एकदम संजीदा हो गई- "ओह नो! आप फिल्मों -के-चक्कर में मत पड़ जाइयेगा।"

"फिल्म देखता तो हूं नहीं, चक्कर में क्या खाक पड़ूंगा।" कहते हुए इन्द्रजीत फोन करने के लिए उठ गया।

उसने प्रेम सागर को फोन किया। सम्बन्ध स्थापित होने पर बोला- "हां, भई। खैरियत तो है।"

"यार, आज शाम को बिजी तो नहीं हो?" प्रेम सागर ने पूछा था।

comicsmylife.blogspot.in

"नहीं,क्यों?"

"फिर तू मेरे ऑफिस में आ जा।"

"आ जाऊंगा लेकिन तेरे दफ्तर भी तो कई हैं-कहां आऊं ?" "ग्रीन पार्क वाले ऑफिस में। वही ठीक रहेगा।"

"ठीक है, पर गुरु चक्कर क्या है?"

"यार, एक शख्स से तुझे मिलाना चाहता हूं। तेरे वापिस आ जाने की सुनकर वह तुमसे मिलने को बेचैन है।" प्रेम सागर ने बताया।

"ऐसा कौन शख्स है गुरु?" इन्द्रजीत सोच में पड़ गया। "यह सस्पेंस है। उसने अपना नाम बताने से मना किया है।"

"तू तो उससे अच्छी तरह वाकिफ है ना?" इन्द्र ने शंकित लहजे में पूछा।

"हां, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। अच्छा आदमी है। तू उसे मेरा दोस्त समझ।"

"वह मुझसे क्यों मिलना चाहता है?"

"यह वह तुम्हें खुद बताएगा।"

"अजीब चीज है वो। हर बात राज में रखना चाहता है।" "हां, अजीब तो है, लेकिन अजीब के साथ शरीफ भी है।" प्रेम सागर उसकी वकालत किये जा रहा था।

"अच्छा, ठीक है। मैं शाम को पहुंच जाऊंगा।" यह कहकर इन्द्रजीत ने रिसीवर रख दिया।

वह रिसीवर रखकर खड़ा हुआ कि रेखा भी वहां पहुंच गई। वह फिर बैठ गया और उसने रेखा को भी बैठने का इशारा किया। "खैरियत तो है" रेखा ने पूछा।

"हां, खैरियत है। कोई शख्स मिलना चाहता है और मजे की बात यह है कि मिलने से न यह अपना नाम बताना चाहता है और ना काम।"

"फिर? आपने क्या कहा?"

"शाम को मुलाकात का वायदा कर लिया है।"

"पता नहीं स्कैन है?" रेखा भी आशंकित हो उठी- वहा बोडीगार्ड के बिना न जाइएगा।"

"परेशानी की कोई बात नहीं है। सागर उससे अच्छी तरह वाकिफ है।" इन्द्रजीत ने इत्मीनान दिलाते हुए कहा।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

शाम को इन्द्रजीत, प्रेम सागर के ग्रीन पार्क वाले आफिस में पहुंच गया।

इन्द्रजीत वहां पहुंचा तो प्रेम सागर किसी शख्स से कारोबारी बातचीत में व्यस्त था। उसने खड़े होकर इन्द्र का स्वागत किया। सामने बैठे शख्त से उसका परिचय कराया। इन्द्रजीत ने उसे बड़े गौर से देखा, लेकिन पहचान नहीं सका।

इन्द्रजीत की सवालिया नजरों के ज़वाब में प्रेम सागर मुस्कराते हुए बोला-"जो तुमसे मिलना चाहता है, वह यह नहीं है इन्द्र! वह अन्दर बैठा है।" उसने अन्दरवाले अपने खास कमरे की तरफ इशारा किया- "उससे अन्दर जाकर मिल लो।"

इन्द्रजीत खामोशी के साथ आगे बढ़ गया। उसन बंद दरवाजा आहिस्ता से खोला और कमरे में दाखिल हो गया। अंदर एक शास्त्र मौजूद था, जो इन्द्र को देखते ही उठ खड़ा हुआ और इन्द्र की तरह तेजी से लपका।

इन्द्रजीत एक कदम पीछे हटा, उसने अपने बगली होलस्टर से रिवाल्वर निकालने में बड़ी फुर्ती दिखाई थी। रिवाल्वर उस शख्त पर तानते हुए तेजी से बोला-

"खबरदार जहां से उठे हो फौरन वहीं जाकर वैठ जाओ। वर्ना गोली चला दूंगा।"

वह शख्स वहीं रुक गया। तभी प्रेम सागर कमरे में आया और यह सब देखकर चीखा-

"अरे इन्द्र! यह क्या कर रहे हो?"

"सागर, तुमने बहुत बड़ी हिमाकत की है। क्या तुम इसको अच्छी तरह जानते हो।"

"हा, जानता हूं। मेंने तुम्हें बताया तो था।"

"यह अजगर की औलाद है-क्या इसने तुम्हें यह भी बताया था।" इन्द्रजीत रिवाल्वर अब भी साधे हुए था- "यह मुझे देखते ही लपका था। मैंने फुर्ती न दिखाई होती तो अब तक गर्दन इसके हाथ मे होती।"

वह शख्त इत्मीनान से खड़ा था। वह तो इन्द्र के इस रवैये पर मी हैरान नहीं था।

प्रेम सागर बोला- "इन्द्र, यह क्या बेवकूफी है? रिवाल्वर जेब में रखो। मैंने तुम्हें बुलाया है तो कुछ सोचकर ही बुलाया होगा।" "तुमने मुझे इस सपोले का नाम क्यों नहीं बताया था।" इन्द्रजीत भी गुस्से से बोला।

"मैंने मना किया था।" इस बार वह शख्स वोला- "इसलिए कि नाम जान लेने के बाद शायद आप मुझसे मिलने नहीं आते। क्यों?"

"दीपक अब तुम्हारा बाप और मेरे चाचा ने कौन-सा जाल फेंकने के लिए तुम्हें यहां भेजा है?" इन्द्रजीत बदस्तूर तीखे स्वर में बोला।

यह शख्त उसके दुश्मन चाचा रमाकांत का बेटा दीपक था। "मुझे बाबा ने नहीं भेजा है।" दीपक बोला- "मुझे तो उसकी सूरत से भी नफरत है।"

"मैं तुम पर कैसे ऐतबार कर लूं?" इन्द्रजीत उसे घूरते हुए बोला।

"मै कब तुझसे ऐतबार करने को कह रहा हूं?" दीपक बदस्तुरशांत भाव से बोला- "मै सिर्फ इतना चाहता हू कि तुम इत्मीनान से, बैठकर ठण्डे दिल से मेरी बात सुन लो।"

"तुम्हारे पास कोई हथियार है?"

"नहीं मेरी तलाशी लेना चाहो तो ले सकते हो।"

"हां, मैं तुम्हारी तलाशी जरूर लूंगा।" इन्द्र आगे बढ़ा। उसने सीधे हाथ से उस पर रिवाल्वर ताने रखा और बाएं हाथ से भली-भांति ही उसके जिस्म व कपड़ों को खंगाल डाला।

comicsmylife.blogspot.in

दीपक सच्चा था। उसके पास किसी किस्म का हथियार नहीं था। इन्द्र ने रिवाल्वर जेब के हवाले किया व एक कुर्सी खींच उस पर बैठते हुए बोला-"हां, दीपक! कहो क्या कहना चाहते हो।"

माहौल बेहतर होता देख प्रेम सागर, यह कहते हुए वाहर निकला गया- "अच्छा, तुम दोनों वातें करो-मैं बाहर जाता हूं।" दीपक भी कुर्सी पर बैठ गया और कितनी ही देर इन्द्रजीत को निहारता रहा।

"इन्द्रजीत! मेरे भाई! मैं तुमसे क्षमा चाहता हूं।" अंतत: वह बोला।

"किस वात की क्षमा? तुमने क्या किया है?" इन्द्र का लहजा भावहीन था।

"यह ठीक है कि मैंने कुछ नहीं किया, लेकिन मेरे बाप ने बहुत कुछ किया है। मैं उसी की माफी मांग रहा हूं।"

"तुम्हारे बाप ने मेरे बाप की जायदाद हथिया ली...उसने मेरे कत्ल की साजिश रची। उसने मेरे वाप को कत्ल किया। आखिर मैं किस-किस बात को माफ कर दूं।" इन्द्रजीत का दर्द उसके होंठों पर आ गया था।

"यह तुम क्या कह रहे हो? अंकल को पापा ने कत्ल किया था, लेकिन उन्होंने तो स्यूसाइड किया था।"

"मेरे पापा को भला आत्महत्या करने की क्या जरूरत थी? एक नेकदिल निस्वार्थ व्यक्ति भला खुदकुशी क्यों करेगा? उन्हें मारा गया है और उन्हें मारने वाला तुम्हारा बाप था-मेरा लालची चाचा। हुमारे घर का नौकर इस भेद से वाकिफ था, इसलिए उसे भी उसकी बीबी के साथ खत्म करवा दिया गया।" इन्द्र के लहजे में खट्टास बढ़ती ही जा रही थी।

"भगवान जानता है-मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।" "अभी कुछ दिन पहले ही मैंने अपना एक आदमी सावनपुर भेजा था। तुम्हारे बाप के नाम एक पत्र दिया था। उस आदमी का जो हश्र हुआ...क्या तुम उससे भी वाकिफ नहीं हो?"

"सिर्फ इतना जानता हूं कि कोई शख्स तुम्हारा खत लेकर सावनपुर गया था। उस आदमी के साथ क्या किया गया? मैं कुछ नहीं जानता।"

"क्या तुम सावनपुर में नहीं रहते ?"

"नहीं। मुझे तो सावनएउर छोड़े -एक अर्सा हो गया है। मैं ही या जिसने बाबा से जायदाद के बंटवारे की बात की। उन्होंने जायदाद के वंटवारे से इंकार कर दिया-लेकिन मुझे इतना रुपया दे दिया कि मैंने दिल्ली आकर एक सिनेमा खरीद लिया। इसी सिलसिले में प्रेम सागर से परिचय व फिर दोस्ती हुई। जब मुझे हवेली से यह खबर मिली कि लौट आए हो तो मैं तुमसे मिलने की सोचता रहा। इसे संयोग ही कहा जा सकता है कि प्रेम सागर तुम्हारा बचपन का दोस्त निकला और मेरे बार-बार कहने पर वह हमारी मुलाकात कराने को तैयार हो गया।"

"तुम यहां कहां रहते हो?"

"मै प्रति बिहार में रहता हूं।"

"कितने बच्चे हैं तुम्हारे?"

दीपक हौले से मुस्कराया, फिर बोला- "मैंने शादी नहीं की हैं।"

"अरे, क्यों?"

"बाबा-शादी ब्याह को कारोबारी निगाह से देखते हैं। लड़की चाहे लूली-लंगड़ी हो-लेकिन अमीर घराने की होनी चाहिये। मैं ऐसी शादी के लिए राजी न हुआ और इस जिम्मेवारी से बच गया। हां, सूरज भाई और विजय भाई की शादी हो चुकी है। दोनों जमींदार घरानों की जाहिल औरतें हैं। भाइयों की भी क्या कहूं? इन्द्र मैं पूछता हूं जमींदारी क्या सिर्फ जुल्म और दहशत का नाम है। मेरा उस हेवली मे दम घुटने लगा था। पता नहीं लोग किसी को दु:ख पहुंचकर किस तरह खुश रह लेते हैं।"

"देख लो। मिसाल तुम्हारे सामने है। तुम्हारे बाबा ने हमें कौन-सा घाव नहीं लगाया। फिर भी खुश है कि आज तक उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा।" इन्द्र ने तल्ख लहजे में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"ऐसा नहीं है। मैं उन्हें रात-रात भर हवेली के चक्कर काटता हुआ देखता रहा हूं। कभी-कभी तो उन्हे पूरी रात नींद नही आती। फिर विजय भाई और सूरज भाई से भी एक 'शीत युद्ध' है। इधर बाबा एक चालाक लोमड़ी बने हुए हैं। वह अपने जीते जी जायदाद का बंटवारा नहीं चाहते और उनके मरने के दूर तक आसार नहीं हैं। दोनों भाइयों को हर महीने एक बंधी रकम मिलती है। दोनों ही अब बाबा के अधीन नहीं रहना चाहते और बाबा जायदाद बांटकर अपने हाथ कटवाना नहीं चाहते, लेकिन आखिर कब तक...?" "क्या तुम अपने हिस्से की जमीनों पर अपना हक छोड़ चुके हो?" सूर! सोच पूछा इन्द्र ने।

"नहीं ।" दीपक ने दृढ़ शब्दों में कहा-"वैसे मैं अकेला हूं-और अव भी मेरे पास जो कुछ है, वह मेरे लिए बहुत है।" इन्द्र को सुनकर हैरत ही हुई थी।

"इन्द्र! तुम्हारे पापा मेरे आइडियल थे। मैंने जिन्दगी में उन्हीं जैसा बनने के सपने देखे हैं। यह जानकर बड़ा दुःख पहुंचा है कि वह मेरे बाबा के हाथों कत्ल हुए। अब तुमसे माफी भी मांगू तो किस मुंह से? मेरे नीच बाप तुम्हारे सामने मेरी गर्दन झुका दी है।"

उस दिन दीपक जितनी देर बैठा रहा, बस ऐसी ही बातें करता रहा लेकिन इन्द्रजीत उसकी बातों पर आंखें मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहता था। उसने उसकी बातों की दस्तीक की तो सब सच निकला। हवेली छोड़े उसे वाकई एक मुद्दत हो चुकी थी। वह अब दिल्ली में था और दिल्ली-गाजियाबाद सीमा पर छोटा-सा सिनेमा का मालिक था। फिल्म-वितरण क्षेत्र में भी हाथ-पांव मार रहा था। उसकी रिहायश प्रीत विहार में थी और वहां वह एक नौकर के साथ रहता था।

इन्द्रजीत उसको लेकर आशवस्त ही हुआ था।घर का भेदी लंका ढाने निकला था तो यह कोई अचरज की बात नहीं थी।

इन्द्रजीत इस मोहरे को इस्तेमाल की बावत सोचने व बलदेव अंकल से विचार विमर्श करने लगा था। रेखा बहराम नगर जाने को लिए बेचैन थी। उसने अपनी होने वाली भाभी, यानि राजकुमारी नयना कें लिए ढेरों तोहफे खरीद लिए थे। रेखा नयना से फोन पर बातचीत करती रहती थी। उसने नयना को अपने बहराम नगर पहुंचने के बारे में बता दिया था और नयना ने उनकी सुविधा के लिए ड्राइवर भेज दिया था ताकि बह उनका मार्गदर्शन कर सके। और इन्द्रजीत व रेखा अपनी गाड़ी में नयना के भेजी जीप के पीछे-पीछे ही बहराम नगर पहुंचे थे।

जब दोनों गाड़ियां गढ़ी बहराम नगर के गेट से अंदर दाखिल हुइं तो नयना, हवेली की खिड़की में खड़ी थी। उसकी बेकरारी का अजीब आलम था। जाने कितनी बार खिड़की का चक्कर काट चुकी थी वह।

इन्द्रजीत जब राजू मदारी की कैद से निकलकर पहली बार यहां इस हवेली में पहुंचा था, तो तब भी नयना की बेकरारी का यही आलम था। वह रात उसने आंखों में गुजारी थी-यह रात भी उसने करवटें बदलते बिताई थी। बरसों पहले का वह दिन और उसके मंजरों ने ही उसे सोने न दिया था।

आज इन्द्रजीत फिर आ रहा था। उसने अपना बरसों पुराना वायदा पूरा कर दिया था। हालांकि आज उसके घर में उसके मां-बाप नहीं थे-पर जो घर में था-उसे ही लेकर हवेली में पहच चुका था। नयना गाड़ियां देखते ही ऊपर नजरे मंजिल से फौरन नीचे आ गई और गढ़ी के दरवाजे पर उसने, इन्द्र और रेखा का स्वागत किया। स्वागत करने बाद मे नयना के साथ-हवेली का वफादार ड्राइवर रघुबीर सिंह भी था।

हवेली के दरवाजे पर यह इन्द्रजीत व नयना की दूसरी मुलाकात थी। इस दूसरी मुलाकात पर उन्हें पहली मुलाकात की एक-एक बात याद आ रही थी।

ड्राइवर रघुवीर सिंह ने बड़े अदब से झुककर इन्द्र को सलाम किया था व फिर नजरें झुका, हाथ बांधकर खड़ा हो गया।

"कैसे हो रघुवीर सिंह?" इन्द्र उसे पहचानते ही अपनत्व से बोला था और साथ ही उससे मिलाने के लिए अपना हाथ भी निसंकोच उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"साहब जी! आपको मेरा नाम भी याद है। मैं कितना खुशनसीब इंसान हूं?"

रघुबीर सिंह सचमुच ही एक खुशनसीब इंसान था। वह एक जमाने में ड्राइवर था। थोड़ा-बहुत पढ़ा लिखा था। नयना

comicsmylife.blogspot.in

क्या विश्वासपात्र था। सो, जब राजा साहब स्वर्ग सिधारे तो नयना ने रघुबीर को गढ़ी की देखभाल के लिए उसका निगरान नियुक्त कर दिया। अब यह बूढ़ा एक तरह से नयना का प्राइवेट सेक्रेटरी भी था।

बहरहाल, मेहमानों का भरपूर स्वागत हुआ था। दोपहर के खाने के बाद इन्द्रजीत कुछ देर आराम के लिए लेट गया था। शाम के वक्त दरवाजे पर दस्तक हुई तो उसने सोचा कि रेखा होगी। उसने आवाज लगाई-

"आ जाओ! कौन है?"

दरदाजा खुला तो पहले ट्रे नजर आई फिर वे हाथ जिनमें ट्रे थी। इन्द्र फौरन बेड से उतरकर उसके पास पहुंच गया- "अरे, नयना! आपने क्यों कष्ट किया?"

"मेरा जी चाहा कि तुम्हें अपने हाथों चाय पिलाऊं।" नयना मनमोहक अंदाज से मुस्कराई।

"रेखा कहां है?"

"उसको कम्पनी देने के लिए मैंने अपने स्कूल की दो टीचरों को बुला लिया था। वह उनके साथ है। बुलवाऊ।"

"बेवकूफ हुई हो।" इन्द्र शोखी से बोला- "उसे उधर ही रहने दो।" इन्द्र ने उसे ऐसी प्यार भरी नजरों से देखा कि वह उसकी नजरों की लख नहीं ला सकीं! उसने नजरें झुका लीं- "आखिर हमें भी तो दो बातें करने को वक्त मिलना चाहिए। क्यों?"

"इसीलिये तो आई हूं-जनाव के पास।" नयना ने जवाव दिया।

नयना ट्रे सेन्टर-टेबल पर रख चाय बनाने लगी। इन्द्र ने उसका केतली वाला हाथ पकड़ लिया और बोला- "तुम इस कदर प्यारी क्यों हो?"

"अरे...अरे...हाथ छोड़ो,चाय गिर जाएगी।"

"गिर जाने दो।"

"प्लीज इन्द्र...।" नयना ने गुहार की।

इन्द्र ने हाथ छोड़ दिया। नयना ने कप उसकी तरफ बढ़ाते, वह सवाल कर डाला जिसने उसे बरसों से हलकान कर रखा था- "इन्द्र! तुम जंगल में कहां गायब हो गए थे...?"

और जवाब में इन्द्र ने, चाय की चुस्कियों के दौरान, अपनी आपबीती संक्षेप में सुना डाली। नयना गुँग ही तो हो गई थी। वह सकते की अवस्था में बैठी अपलक उसे देखती ही रही। यह कैसी तिलस्मी कहानी थी? अविश्वसनीय। लेकिन यह सब उसके महबूब पर बीती थी। वह उसे कैसे झूठला सकती थी। फिर इन्द्र के पास रेखा के रूप में एक गवाह भी तो मौजूद था।

"क्या हुआ?" उसे संज्ञा-शून्य देखकर इन्द्रजीत ने उसकी आंखों के सामने अपना हाथ लहराया।

"भगवान् का लाख-लाख शुक्र है इन्द्र कि तुझे उस जादूगरनी की कैद से मुक्ति मिल गई। ना केवल मुक्ति मिली बल्कि तुम सकुशल वापिस भी आ गए। अगर तुम्हारा चेहरा दीमकजदा ही रहता तो फिर...तो फिर...।" नयना कापकर रह गई थी।

"मेरी तो जिन्दगी ही एक श्राप बनकर रह जाती। मैं अपने दीमकजदा चेहरे को छिपाये फिरता और बस...।" इन्द्रजीत ने ठण्डी सांस लेकर कहा।

नयना को तो अब जैसे इस बावत बातें करने से ही घबराहट हो रही थी। वह बोली- "कहीं बाहर निकलते हैं। मैं घोड़े कसवाती हूं तुम तब तक लिवास बदल लो।"

इन्द्र खिल उठा, बोला- "हां-मेरा जी भी घुड़सवारी को चाह रहा था। बरसों वीत गए हैं घुड़सवारी किए...।"

comicsmylife.blogspot.in

यूं...कुछ देर बाद ही जब वे दोनों हवेली से बाहर निकले तो घोड़े तैयार खड़े थे। दोनों ही सफेद रंग के घोड़े थे। इन्द्रजीत और नयना घोड़ों पर सवार हो गए। रेखा हवेली के दरवाजे पर खड़ी थी। सफेद घोड़ों पर सवार वे दोनों रेखा को बहुत अच्छे लगे। उसके मुंह से दोनों के लिए लम्बी उम्र की दुआ निकली और वह उस वक्त तक हवेली के दरवाजे पर खड़ी रही जब तक वे बड़े दरवाजे से बाहर नहीं निकल गए।

कुछ दूर तक वे दोनों बातें करते, धीरे-धीरे चलते रहे। फिर खुले इलाके में पहुंच इन्द्रजीत बोला- "क्या ख्याल है, जंगल की तरफ चलें?"

इन्द्रजीत की आपबीती सुन लेने के बाद नयना जंगल का रुख नहीं करना चाहती थी, लेकिन इन्द्र की इच्छा के आगे वह चुप रही। वह भयभीत होने का अहसास भी नहीं होने देना चाहती थी, तुरन्त बोली- "चलें...।"

दोनों ने घोड़ों को ऐड़ लगाई और दोनों घोड़े हवा से बातें करने लगे।

जंगल में दाखिल हो वे उस स्थान पर पहुच गए जहां एक चनूतरा बना हुआ था। यही वह जगह थी जहां प्रेतात्मा बकाल इन्द्रजीत को मायावी रेगिस्तान में ले गई थी! इस चबूतरे पर निगाह पड़ते ही इन्द्र एकाएक खौफजदा हो गया।

चबूतर पर उसने जो कुछ देखा, उसे देखकर उसके होश उड़ गए। सख्त सर्दी के वाबजूद भी उसका बदन पसीने से भीग गया। सामने चबूतरे पर बीचो-बीच एक उल्लू एक टांग पर खड़ा था और उसकी एक आख बंद थी।

उसे देखते ही इन्द्रजीत ने अपने घोड़े को मोड़ा व लगभग चींखते हुए बोला- "नयना! भागो।"

नयना ने भी उस विशालकाय उल्लू को देख लिया था और उसे देखकर उसका दिल धक्क से रह गया था। उसने फौरन अपने घोड़े की लगामी खीची और उसका रूख मुड़कर ऐड़ लगा दी। पवा से बाते करते,दोनो घोड़े कुछ ही देर मे जंगल से बाहर थे। उनमें कोई बात नहीं हुई और वे घोड़े दौड़ाते रहे। उन्होंने गढ़ी के दरवाजे पर ही पहुंचकर दम लिया। बड़े दरवाजे से हवेली की असली इमारत खासी दूर थी। अन्दर एक विशाल व विस्तृत बाग था। इन्द्रजीत को दूर एक लीन पर रेखा बैड-मिल्टन खेलती नजर आई। वे दोनों बड़े दरवाजे के पास ही घोड़ों से उतर गए। घोड़े गेट पर मौजूद नौकरों ने सम्भाल लिए थे।

वे दोनों रेखा की तरफ बढ़ गए थे। रास्ते में नयना ने सहमी आवाज में पूछा-

"इन्द्र वह क्या था?"

"कुछ नहीं कह सकता-मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" इन्द्रजीत भी तो अभी तक उलझन का शिकार था।

"किसी उल्लू को, एक टांग पर खड़े मैंने पहली बार देखा है। क्या वह उल्लू लंगड़ा था और फिर उसका आकार...। उफ...।" नयना ने झुरझुरी-सी ली।

"भगवान् ही बेहतर जानता है कि वह क्या चीज था?" इन्द्र अपने होंठों पर जिन्हा फिराते बोला- "हमसे गलती हो गई। हमें जंगल की तरफ नहीं जाना चाहिए था।"

इन्द्र भुक्तभोगी था। वह अंदर तक सिहर उठा था। यूं ही बातें करते हुए रेखा के पास पहुंच गए। रेखा ने उनसे भी बैड-मिन्टन खेलने को कहा। ध्यान बंटाने को वे कुछ देर तक इस खेल में मस्त रहे और फिर हवेली में आ गए।

इन्द्रजीत किसी अनिष्ट की आशंका से ग्रस्त था। वह रात के खाने से पहले जाना चाहता था, लेकिन नयना ने आग्रह करके रोक लिया। वह रात उन्होंने हवेली में ही बिताई। तीनों रात गए तक बातें करते रहे थे। सुबह देर से उठे और फिर लगभग दस बज नाश्ता करने के बाद रेखा व इन्द्रजीत ने नयना से इजाजत ली और अपनी गाड़ी में दिल्ली का रुख किया।

इन्द्रजीत एक टांग पर खड़े विशालकाय उल्लू को अपने जहन से नहीं निकाल पाया था।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

दिल्ली में नयना के रिश्ते के चाचा रहते थे।

उनकी भव्य-विशाल कोठी दिल्ली के गोल्ड-लिंक के इलाके में थी। यह एक भरा-पूरा घर था और नयना का दिल इस घर में बहुत लगता था। नयना प्राय: दिल्ली आती रहती थी। चाचा काफी समय हुआ देहान्त हो "रुका था-घर में अब चाची थी।

नयना के चाचा चार भाई और बहनें थीं। एक छोटी बहन के सिवाय सबकी शादियां हो चुकी थी।

इन्द्र से मिलने की चाह ही नयना को इस बार फिर दिल्ली खींच लाई थी। रेखा उसे अपने यहां आने का निमत्रंण देकर आई थी।

दिल्ली पहुंचकर नयना ने सबसे पहले रेखा को फोन किया। नयना की आवाज सुनकर रेखा झूम गई। वह चहकती-सी बोली- "कस से बोल रही हैं, आप?"

"तुम्हारे शहर से।" नयना ने बताया- "दिल्ली पहुंच गई हूं।" "अच्छी खबर है। भैय्या सुनेंगे तो खुश हो जाएंगे।" रेखा ने चुटकी ली।

"तुम अपनी कहो।"

"मै अपनी क्या कहूं?" रेखा ने ठण्डी सांस ली- "मेरा तो जी चाहता है कि आपको कहीं जाने ही न दूं।"

"ओह!" नयना ने हंसकर दिखाया, फिर बात बदलते हुए कहा- "आज का क्या प्रोग्राम है?"

"आप घर आ जाएं हमारे। कहें तो गाड़ी भेज दूं।"

"घर आना कोई प्राब्लम नहीं है। गाड़ी है मेरे पास।" नयना ने कहा- "मैं कुछ और सोच रही थी।"

'वह क्या?"

"आज फिल्म 'मुगले आजम' रिलीज हो रही है।" नयना बोली- "क्यों न उसका पहला शो देखा जाए। काफी समय से कोई फिल्म नहीं देखी है मैंने।"

"आइडिया बुरा नहीं।" रेखा खिल उठी-"मैं...भैय्या से इजाजत ले लेती हूं। आप आ जाएं और हां, रात का खाना आपको हमारे साथ ही खाना होगा।"

"मन्जूर...।" नयना ने चहककर कहा।

फिल्म का पहला दिन और पहला शो था और इस

फिल्म के लिए भीड़ का टूट पड़ना स्वाभाविक था। वे सिनेमा हाल पर पहुंचीं तो मायूसी का ही सामना करना पड़ा। 'हाऊस-फूल' का बोर्ड गेट के पास ही रखा उनका मुंह चिढ़ा रहा था।

"गलती हो गई।" रेखा पछताते हुई बोली- "भैय्या से कहा होता तौ वह टिकट मंगवाकर रखते।"

नयना भी निराश नजर आ रही थी। वह कुछ कहने को ही थी कि तभी एक शख्त उनके पास आया और बड़े ही आदर के साथ बोला-"मैं इस थिएटर का मैनेजर हूं। आप यहां क्यों खड़ी हैं। आप मेरे आफिस में आएं-आपको टिकट मिल जाएगी।" रेखा व नयना ने उस शख्स पर नजर डाली व फिर एक-दूसरे की तरफ देखा। सफेद शर्ट-पेन्ट में वह शख्य उन्हें शरीफ-सुशील ही लगा था। नयना ने सोचा कि शायद उसे राजा बहराम नगर की बेटी की हैसियत से पहचान लिया हो और रेखा ने यह सोचा कि उसके भाई इन्द्रजीत की वजह से उन पर यह इनायत की गई हो। बहरहाल उन्हें दो टिकट चाहिये थे जो उन्हें पूरे सम्मान के साथ दिए जा रहे थे तो भला उन्हें क्या एतराज हो सकता था? वे मैनेजर के साथ हो लीं। मैनेजर उन्हें अपने ऑफिस में ले गया और उन्हें सोफे पर बैठने का इशारा किया और फिर उसी आदर व शालीनता के साथ पूछा-

"आपके लिए क्या मंगवाऊं चाय या ठण्डा?"

comicsmylife.blogspot.in

"थैंक्स इस कष्ट की जरूरत नहीं।" नयना बोली- "हमें टिकट मिल जाएं यही हमारे लिए बहुत है। वर्ना हम तो मायूस लौट रहे थे।"

लेकिन शख्त नहीं माना और उसने मना करने के बावजूद कोका कोला मंगवा ली, इतना ही नहीं एन्ट्री शुरू होने से पहले ही खुद उनके साथ जाकर उन्हें उनकी सीटों तक बैठाकर आया। उसने तो टिकट की पैमेन्ट तक से इंकार कर दिया था। रेखा और नयना आखिरी वक्त तक हैरान परेशान रही। इस शहर के इस प्रमुख थिएटर पर उन्हें जो बी० आई० पी० ट्रीटमेंट दिया गया था-वह उन दोनों की समझ से बाहर था।

बहरहाल, मैटिनी शो देखकर वे दोनों जब घर पहुंची और रेखा ने इन्द्रजीत से सारा माजरा बयान किया तो वह मुस्करा दिया। "क्या हुआ भैय्या आप मुस्करा रहे है।"

"इस फिल्म का डिस्ट्रीब्यूटर अपना प्रेम सागर है।" इन्द्र ने बताया- "मैंने प्रेम सागर के बारे में तुम्हें बताया था ना और इस थिएटर में भी उसकी थर्टी परसेन्ट की भागीदारी है।"

"ओह, माई गॉड! तभी तो मैं कहूं कि आखिर हमें इतना महत्त्वपूर्ण समझने वाला शख्स यहां कौन है?"

"क्या वह तुम लोगों के सामने आया था?" जाने क्या सोच इन्द्रजीत ने पूछा था।

"नहीं।" रेखा बोली।

"क्या तुम उसे पहचानती हो?"

"नहीं!" रेखा ने जवाब दिया- "पर वो शख्स यकीनन मैनेजर ही था। वह उम्र में आपसे कहीं बड़ा लगता था, जबकि आपके स्कूलके दोस्त प्रेम सागर को तो आपकी उम्र का होना चाहिये।"

"तुम्हारे दिमाग की दाद देनी पड़ेगी।" इन्द्र मुस्कराते हुए बोला- "खैर, कभी मिलवाऊंगा तुम्हें उससे। वह जवान ही नहीं, मुझसे ज्यादा खूबसूरत, स्मार्ट व मधुर भाषी भी है। कितना व्यवहारिक होगा, इसका अंदाजा तो तुम इसी से लगा सकती हो कि उसका नाता 'वालीबुड' से है वह एक दूरदर्शी फिल्म प्रोड्यूसर जाना जाता है। वैसे मैं जानता हूं कि किसी का भी चेहरा देखकर उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को आइने की तरह समझने की खासियत रखती हो तुम। इस दोस्त के वारे में भी वताना।" रेखा ने चौंककर ही अपने भाई की तरफ देखा। भाई की यह ख्वाहिश उसे बड़ी अजीब लगी थी। वैसे यह सच था कि रेखा को इन्सानी चेहरे पढ़ने में दक्षता प्राप्त थी। वह किसी का भी चेहरा देखकर उसके बारे में अच्छी या बुरी राय बना लेती थी। यूं ही नहीं कहा जाता कि इन्सान का चेहरा उसके भीतर का आइना होता है और यह आइना कभी झूठ नहीं बोलता। वस, आइना देखना आना चाहिये।

रेखा की अपनी जिन्दगी भी तो दर्पण की तरह निर्मल व स्वच्छ थी। उसने बड़े दुःख उठाए थे। मां उसे जन्म देने के कुछ माह वाद ही मर गई थी, और इससे भी बड़ा दुःख यह था कि वह बाप के होते हुए भी बाप के प्यार व लाड़-दुलार से वंचित रही। चाचा के जुल्म सहे। रेगिस्तान के तूफानों से खेली। एक के बाद एक परीक्षा आती गई और वह इन आजमाइशों में ऐसी उलझी रही कि कभी अपने वारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिला।

अब जिन्दगी ने उसे थोड़ी राहत दी थी।

रात को बेड पर करवटे बदलते हुए उसकी कल्पनाओं में मायावी प्रेतलोक का रासमोन आ जाता। उसकी दी हुई गुलाब की चमत्कारी कली उसके पास अब भी थी और एक खूबसूरत चांदी के फूलदान में उसके बेड की साइड टेवल पर रखी हुई थी और यह ऐसी जगह थी जहां उठते-बैठते उस पर नजर पड़ती रहती थी। इस गुलाव की कली की ताजगी और खुशबू में कोई फर्क नहीं आया था।

रेखा इस प्यार के तोहफे पर अगर नजरें जमा देती-या ऐसे ही उसे देख-लेती तो रासमोन का मासूम चेहरा उसकी निगाहों में उभरने लगता। रासमोन सच ही में उससे मुहब्बत करने लगा था, पर रेखा उसकी मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से कैसे दे सकती थी? वह जानती थी कि रासमोन, उस लोक का वासी था जो गैर-इन्सानों की दुनिया थी। रेखा न तो उसकी दुनिया में रह सकती थी और न ही उसे अपनी दुनिया में बुला सकती थी। फिर प्यार बढ़ाने या रूपने देखने से क्या फायदा?

हकीकत यह थी कि अब रेखा, निश्चिन्तता व उमंगों भरे इन दिनों में अपनी दुनिया के रासमोन को ढूंढने लगी थी।

comicsmylife.blogspot.in

चाहत का सागर उसके भीतर ठाठें मारने लगा था।और ऐसे में ही यह सुखद संयोग हुआ था।

वह सोच भी नहीं सकती थी कि ऐसा भी हो जाएगा। पर ऐसा होना उसके भाग्य में लिखा था।

वक्त गुजारी के लिए रेखा के हाथ बहुत अच्छा शुगल लग गया था। वह अपनी आर्ट गैलरी में बैठी पेन्टिंग में व्यस्त रहती। हाथ साफ हो गया था और कल्पनाएं भी साथ देने लगी थी। दिल के सुकून के लिए यह चित्रकारी एक अच्छा शौक सावित हो रहा था।

एक दिन वह अपनी कल्पना को केनवेस के रंगों में उतार रही थी कि चपरासी ने आकर सूचना दी-

"मैडम कोई आपसे मिलने आया है।"

"कौन है? नाम नहीं बताया अपना।" रेखा ने ब्रुश चलाते हुए पूछा।

"जी नहीं। बस इतना ही कहा है कि रेखा जी से मिलना है।" "अच्छा बुलाओ।" रेखा ने ब्रुश रखकर, हाथ कपड़े से साफ किए व कुर्सी पर जा बैठी।

चपरासी पलट गया।

"मैं अंदर आ सकता हूं।" कुछ क्षण बाद ही उस शख्त ने दरवाजे पर से इजाजत मांगी।

रेखा ने नजरें उठाकर आगन्तुक को देखा तो उसके दिल की धड़कनें अनायास मी तीव्र हो उठीं। जाने क्या हुआ कि उसने अपनी नजरें सामने एंजिल पर लगी पेन्टिंग पर टिका दीं। वह इस कदर बौखला गई थी कि क्या कहे...क्या करे...। कभी ऐसा भी होगा-यह तो उसने सोचा भी नहीं था।

"जी आइये।" उसके मुंह से जैसे बेअख्तयार ही निकला था। आगन्तुक प्री-पीस सूट पहने हुए था...गौरवर्ण व चुम्बकीय आकर्षण का स्वामी। वह इत्मीनान की चाल चलता हुआ, मेज के करीब आया और एक कुर्सी घसीटकर बैठ गया।

रेखा के माथे पर इस सदी मैं भी पसीना चुधिया आया था। उसे हालात की यह करवट बेचैन कर गई थी और वह अपनी मस्त जिन्दगी में कोई तूफान नहीं चाहती थी। वह अपने होंठों पर जिव्हा फिराने लगी।

"क्षमा कीजिएगा। मैंने आपको डिस्टव तो नहीं किया।" आगन्तुक बड़ी नम्रता व बड़े अपनत्व से बोला था।

और हालांकि अब ऐसी ही अपनत्व को रेखा तड़प रही थी...और इस शख्स ने उसके सपनों पर अपना अधिकार जमा रखा था-पर रेखा को उसका अपनी जिन्दगी में लौटकर आना वर्दाश्त नहीं था। वह अपने सामने रासमीन को देख रही थी। एक गैर इन्सान को-मायावी प्रेतलोक के प्राणी को जो उसकी जिन्दगी में तूफान ला सकता था।

रेखा ने खुद को सम्भाला-वह बोली-"आप यहां क्यों आए हैं?"

"आपसे मिलने?" आगन्तुक के होंठों पर दिलफरेब मुस्कान थी और वह बेहद खुश नजर आ रहा था।

"पर क्यों?" रेखा फट ही तो पड़ी, उसकी आवाज में रोष--के साथ-साथ खौफ भी शामिल था।

आगन्तुक के चेहरे के भाव वदले। रेखा के इस अन्दाज से उसे ठेस ही पहुंची थी। वह धीमे से व गम्भीर आवाज में बोला- "अगर आपको मेरा आना नागवार गुजरा है तो मैं वापिस चला जाता हूं। वैसे मुझे आपसे इस रुखेपन की उम्मीद नहीं थी। यकीनन आपका मूड ठीक नहीं है, पर मैं अपना परिचय तो दूंगा ही। मैं आपके लिए अजनबी हूं-पर मेरा नाम प्रेम है। प्रेम सागर। मैं चलता हूं। नमस्कार।" यह कहकर वह खड़ा हो गया और फिर रेखा की तरफ देखा विना ही दरवाजे की तरफ क्षुब्ध-सा बढ़ गया। रेखा का सिर चक्करा गया- "मैं आपके लिए अजनबी हूं-पर मेरा नाम प्रेम है। प्रेम सागर।" आगन्तुक के ये शब्द रेखा के दिमाग में चक्रवात बनकर गूंजने लगे।

रासमोन-प्रेम सागर...प्रेम सागर-रासमोन...यह कैसी समानता थी...यह कैसा चमत्कार था। यह प्रेम सागर कैसे हो सकता है-यह तो रासमोन है। इस बदहवासी में रेखा को आभास हुआ जैसे हमशक्ल होते हुए भी-आगन्तुक व रासमोन में कई अन्तर थे। आवाज का अन्तर...मुख्य था। यह रासमोन नहीं था। उसने उसे रासमोन समझा-शायद

comicsmylife.blogspot.in

इसलिए कि रासमोन उसके दिलो-दिमाग पर हावी था और कुछ समानताओं के सबब आगन्तुक में उसे रासमीन ही नजर आया था।

उफ यह क्या हो गया?रेखा ने उस आवाज देनी चाही...लेकिन आवाज कंठ में फंसकर रह गई। इस बीच वह दरवाजे से निकल गया। रेखा तेजी से उठकर दरवाजे पर आई तो वह बरामदे की सीढ़ियां उतर रहा था। गेट के वाहर उसकी गाड़ी खड़ी थी। देखते-ही-देखते वह गाड़ी में बैठा और गाड़ी को तेजी से निकाल ले गया।

रेखा बरामदे में खड़ी उसकी गाड़ी को जाते देखती रही। फिर अपने कमरे में आ वह अपनी कुर्सी पर धम्म से गिरी।

"यह उसने क्या किया...यह उसे क्या हो गया था...उसे यूं बेरुखी से पेश नहीं आना चाहिये था।" रेखा शर्मिन्दा थी। शर्मसार थी, लेकिन अब तो जो होना था, हो चुका था।पर क्या दो हस्तियों में ऐसी समानता सम्भव है? वह प्रेम सागर था। वह कितना 'ग्रेसफुल' लग रहा था। ऐसे आकर्षक मर्द कम ही देखने में आते है।

फिर उसे एकदम झटका-सा लगा-उसे जैसे होश आ गया। वह यह क्या बेकार-सी बातें सोचने लगी है। उसे अपने आप पर हेरत हुई। ध्यान बंटाने को ब्रुश उठा लिया व फिर केनवेस को तरफ ध्यान दिया और ब्रुश रंगों से खेलने लगी।

comicsmylife.blogspot.in

लेकिन उसकी एकाग्रता जाती रही थी। उसे यूं महसूस हो रहा था कि उसका कुछ गुम हो गया है, लेकिन क्या गुम हो गया है, इस बारे में वह प्रयत्नोपरान्त भी कुछ न जान सकी।

वह दिन भर खोई-खोई-सी रही। रात को खाने की मेज पर भी उसके हाथ बहुत बेटिली से उठ रहे थे। इन्द्रजीत उसे बड़े गौर से देख रहा था। अंतत: उससें रहा न गया तो उसने पूछा-

"रेखा, तुम्हारी तबियत तो ठीक है।"

"जी भैय्या।"

"फिर क्या बात है, खाना क्यों नहीं खा रही?"

"खा तो रही हूं।"

"क्या खा रही हो, खाक। ऐसे खाते हैं खाना। एक नवाला मुंह रख लिया फिर सो गये?" इन्द्र के लहजे में प्यार भरी डपट थी।

"भैय्या भूख नहीं है।" रेखा असहाय-सी वोली।

"खैर, तो है।" इन्द्र चिन्तित हो उठा- "आज तुम्हारी भूख कैसे उड़ गई?"

रेखा कुछ क्षण सिर चुकाए बैठी रही। फिर बोली- भैय्या एक बात आपको बताऊं?" उसने सिर उठा भाई की तरफ देखा। "बताओ।"

"भैय्या...! वो...आज... आज गैलरी में आपके वो दोस्त हैं ना प्रेम सागर...वह आए थे। "रेखा का ख्याल था कि इस वात की इन्द्र पर तीव्र प्रतिक्रिया होगी और इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करेगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

"अच्छा...। " यह कहकर वह फिर तन्मयता से खाना खाता रहा। फिर उसने एक नजर रेखा पर डाली और शांत भाव से पूछा- "अच्छा, फिर।"

"कमाल है भैया। आपको इस बात पर हैरत नहीं हुई कि आपका एक दोस्त मुझसे मिलने आया।"

"हैरत इसलिए नहीं हुई कि मैं जानता था कि वह तुमसे मिलने पहुंचेगा।" विचित्र रहस्योद्घाटन हुआ।

"वह क्यों?" रेखा परेशान हो गई।

"असल में मैने ही उससे कहा था कि वह तुमसे मिल ले।" "आपने कहा था। मगर किसलिए...?"

"क्या उसने तुमसे कोई वात नहीं की " बहन की तरफ देखते उल्टा सवाल कर डाला था इन्द्र ने।

"मैंने उसकी नौवत ही नही आने दी। उनके कुछ कहने से पहले ही वापिस चलता कर दिया। वह अपना नाम वता लौट गए।" रेखा ने बताया- "पर भैय्या, आपको कुछ बताना तो चाहिये था।" "पर क्यों?" इन्द्र को हैरत हुई। रेखा ऐसी वदमिजाज और रूखी तो नहीं थी।

"वो...वो... मैंने...।" रेखा वताते-वताते रुक गई, अब वह भैय्या को रासमोन व उसको लेकर अपनी चिन्ताओं व भावनाओं का खुलासा तो कर नहीं सकती थी। वह हकलाकर रह गई। "तुमने क्या...? क्या हुआ था तुम्हें...?"

"जा...वो.. दरअसल मेरा ध्यान पेन्टिंग बनाने में था और किसी का आना मुझे शायद नागवार गुजरा था।" रेखा ने जल्दी से वात बनाई- "जव उनका नाम जाना तो मारे शर्मिन्दगी के कुछ बोल ही नहीं पाइ और वह चले गए।"

"तुमने कोई बदतमीजी तो नहीं की थी?" जाने क्यों इन्द्र चिन्तित हो उठा था?

"बदतमीजी तो नहीं-अलबत्ता थोड़ी बदसलूकी जरूर की है।" रेखा ने बताया व सिर झुका लिया।

comicsmylife.blogspot.in

"हुआ क्या था, आखिर ?"

रेखा ने अपनी गलतफहमी का भेद छुपा, जो कुछ हुआ था,इन्द्र को सुना डाला। इन्द्रजीत सोच में पड़ गया था। उसे खामोश देखकर रेखा ने ही पूछा-

"बताएं ना पैरा! वह मुझसे मिलने क्यों आए थे?"

"एक सम्पन्न, सभ्रान्त दभुगरा-एक सुशील, कुमारी से मिलने क्यों आता है?" इन्द्र ने जवाव दिया, सवाल की सूरत में ही। भैय्या का मंतव्य समझ रेखा का दिल धड़कने लगा- "यह आप क्या कह रहे हैं, भैय्या?"

"यह बलदेव अंकल का सुझाव है। उन्होंने बात चलाई तो मैंने प्रेम सागर से कहा कि वह पहले तुमसे मिल ले, देख और समझ ले। खैर, इसमें परेशान होने की जरूरत नहीं है। यह रिश्ता मंजूर करना तुम्हारे हाथों में है।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।" रेखा उलझकर रह गई।

"फिलहाल तुम इत्मीनान से खाना खाओ।" इन्द्र ने सुझाव दिया।

"बस-मैं खा चुकी।" यह कहकर रेखा उठने लगी।

"रेखा, एक बात सुनो।"

"जी, भैय्या।" रेखा जाते-जाते रुक गई।

"रेखा, अब तुम्हारी मां-बाप और भाई सब मैं ही हूं और मुझे अपनी जिम्मेवारियों का अहसास है। मैं चाहता हूं कि तुम प्रेम सागर और प्रपोजल के बारे में गौर कर लो। तुम्हारा जो भी फैसला हो मुझे सुबह बता देना।" इन्द्र ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा। "जी, अच्छा।" रेखा जल्दी से बाथरूम में जा घुसी। उसने साबुन से हाथ धोए व आइने में अपनी शक्ल देखी। उसे अपना चेहरा कुछ बदला-बदला-सा दिखाई दिया।रेखा जब से दिल्ली आई थी-गंगा मौसी को नहीं भूली थी। दूसरे-तीसरे दिन उन्हें फोन कर ही लेती थी। कुछ अपनी सुनाती थी-कुछ उनकी सुनती थी।

इस परेशानी व उलझन में रेखा को एकाएक गंगा मौसी की ही याद आई। वह अपने कमरे में पहुंची-पेड़ पर बैठकर टेलीफोन अपनी गोद में रखा और गंगा मौसी का नम्बर मिलाने लगी। कॉल गंगा मौसी ने ही रिसीव की थी। रिसीवर उठा वह अपुने विशिष्ट अंदाज में बोली थी-

"जी, कहिये।"

"हां, मौसी! क्या हो रहा है?" नमस्ते-नमस्कार के विना रेखा ने सीधे पूछा था।

"ओह अच्छा, यह हो।" गंगा मौसी के लहजे में खुशी भर आई थी- "तुम मेरी बच्ची! कैसी हो?"

"मौसी! मैं ठीक नहीं हूं।"

"अरे, क्या हुआ?" मौसी चिन्तित हो उठी।

"मुझे आपकी बहुत याद आ रही है।" रेखा ने अपने दिल की कही।

"तुम दो-चार दिन के लिए यहां आ जाओ...।"

"जी तो यही चाह रहा है कि उड़कर इसी वक्त आपके पास पहुंच जाऊं।"

"खैर तो है। तुम परेशान लग रही हो।"

"परेशान भी हूं और उलझन में भी।"

"अरे, कुछ बताएगी भी?"

comicsmylife.blogspot.in

"बात दरअसल यह है कि भैय्या के एक दोस्त हैं प्रेम सागर! भैय्या और बलदेव अंकल ने उन्हें मेरे लिए पसन्द किया है। अब आप बताएं मौसी कि मैं क्या करू? यह सब क्या हो रहा है।" "अरे तो इसमें परेशान होने की क्या बात है?" गंगा मौसी के लहजे में 'चाव' भर आया था- "जहां 'बैरी' होती है वहां पत्थर आते ही हैं।"

"मौसी, में 'बैरी' नहीं हूं कि कोई भी बैर तोड़ने की सोचने लगे।"

"हां, तुम 'बैरी' नहीं हो-लड़की हो, इसीलिये तो पत्थर नहीं रिश्ता आया है।" मौसी हंस दी थी।

रेखा ने अपनी उलझन बताई- "भैय्या ने सुबह तक फैसला मांगा है। फैसला मुझ पर छोड़ा गया है।"

"तो फिर दे दो फैसला।"

"मौसी, मुझे रोना आ रहा है।"

"तो रो ला-रोने में तो कोई हर्ज नहीं है। जब पहला रिश्ता आता है तो लड़कियों की यही हालत होती है।"

"हे भगवान्...मौसी आप भी बस।"

और मौसी उसकी बात काटते बोली- "सुना है यह प्रेम सागर बहुत खूबसूरत हे- शरीफ है और सबसे बड़ी बात यह कि पैसे वाला है। परेशान मत होओ। हां, कोई गलत फैसला करने से पहले उससे एक बार मिल लेना।"

"मिल चुकी हूं। आपका कहा सही है, पर मुझसे एक बदससूकी हो चुकी है।"

"वह क्या?'रेखा ने उन्हें भी प्रेम सागर के आने व अपने रवैये के बारे में सुना दिया।

"हद की तुने भी। यह भी क्या कोई सलीका होता है किसी आने वाले से मिलने का। ऐसा तो कोई किसी गैर से भी नहीं करता ।" अब रेखा उसे अपने भ्रम व अपनी क्षणिक बदहवासी के बारे में क्या बताती।

"बस मौसी, जरा उखड़े मूड में बैठी थी।" रेखा बोली, एकर जैसे उनकी बात पकड़ते पूछा-"लेकिन मौसी, आपने उसके बारे में कैसे सुना? आपको उसके वारे में किसने वताया?"

"तुम्हारे बलदेव अंकल ने बताया था।" मौसी ने बताया- "बलराज ने ही पहले इस रिश्ते के वारे मे सोचा था और उसी ने इन्द्रजीत को सुझाया था।"

"लेकिन मौसी, यह प्रेम सागर मेरे लिए एक अजनबी...!" मौसी नें फिर उसकी बात काट दी, बोली- "क्या तू बलदेव अंकल और इन्द्र को इतना ही बेवकूफ समझती है।"

"वेवकूफ तो नहीं समझती-हां, दोनों को ही सीधा जरूर समझती हू।"

"तुम्हारे भाई के वारे में कुछ नहीं कह सकती-लेकिन मुझे बलदेव राज के वारे में यकीन से कह सकती हूं कि वे सीधे विल्कुल नहीं हैं। लिया देखी है उन्होंने।"रेखा न एक गहरा सांस लिया, फिर पूछा- "मुझे वताओ मौसी कि मैं क्या करू

"लड़के से मिल लो-अच्छा लगे तो हां कर दो।"

"यानि कि आपको भी यह रिश्ता पसन्द है। आप इसके पक्ष में हैं।"

"बलदेव राज को पसन्द है...इन्द्रजीत को पसन्द है...तो फिर मुझ क्यों पसन्द न होगा।"

"चाहे मुझे पसन्द हो या न हो?" रेखा झल्लाकर वोली। "अगर तुम इन्कार कर दोगी तो फिर तुम्हें कोई मजबूर नहीं करेगा।" मौसी ने फौरन कहा- "लेकिन मैं अपना मशवरा फिर दोहराऊंगी कि प्रेम सागर से मुलाकात के बिना इंकार न करना।" "ठीक है, मौसी।" रेखा ने सहमति दर्शाई, फिर दो-चार इधर-उधर की वातें करके उसने सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

comicsmylife.blogspot.in

वह रात रेखा ने लगभग आंखों में काटी।उसे नींद नहीं आई। वह सारी रात सोचती रही। प्रेम सागर में उसे रासमोन नजर आया था। यह समानता अनूठी थी। क्या रेखा का रासमोन की ना सही-इस प्रेम सागर की जीवन-संगनी होना लिखा था। रासमोन के प्रति भी उसकी भावनाएं बेअख्तयार ही नहीं भड़की थीं, पर मजबूरियां आड़े थी। अब प्रेम सागर के रूप में उसे रासमोन ही उपलब्ध था जिसे इन्द्रजीत ही नहीं, वलदेद अंकल भी पसंद कर थे।

वह रही और सोच-सोचकर परेशान होती रही। वह कभी करवटें बदलती, कभी विस्तर छोड़कर टहलने लगती।

उसकी नजरें बार-बार 'गुलाब की कली' पर जा ठहरतीं। कली पर नजर पड़ती तो दिल में कसक की एक लहर दौड़ जाती और वह 'गुलाव की कली' उसे कुछ मुर्झायी-मुर्झायी-सी दिखाई देती। प्रात: नाश्ते पर इन्द्रजीत उसका इतजार ही करता रहा। आज तक ऐसा नहीं हुआ था कि दोनों ने एक साथ नाश्ता न किया हो। इंतजार से बेचैन हो उसने नौकर रामू से रेखा के बारे में पूछा- "रेखा, मेम साहब कहां है?"

"उनके कमरे का दरवाजा वन्द है-शायद वो अभी उठी नहीं।"इन्द्र नाश्ता छोड़कर उठ गया।

उसने रेखा के कमरे का दरवाजा पहले आहिस्ता से फिर जोर से बजाया। कोई जवाव न मिला तो उसने दरवाजा जोर-जोर से पीटा साथ ही रेखा को आवाजें दीं, रेखा ने फौरन उठकर दरवाजा खोल दिया।

"क्या हुआ रेखा....तुम अभी तक सो रही थी।" इन्द्र उसके कमरे में कदम रखते बोला।

रेखा के वाल विखरे हुए थे व आखें सुर्ख व नींद से बोझिल थीं। कमरे की लाइट भी जल रही थी।

"जी, भैय्या।"

"तुम्हारे कमरे की बती भी जल रही है।" इन्द्र उसे घूरते हुए बोला- "क्या तुम रात भर जागती रही हो।"

"जी, भैय्या।" रेखा ने धीरे से कहा। वह वेड पर बैठी और दोनों हाथ मुंह पर रखकर रो पड़ी।

"अरे, रेखा-यह क्या? त्म ये रहा हो...। क्या वचपना है? मुंह-हाथ धोकर वाहर आ जाओ। नाश्ता ठण्डा हो रहा है।" उसने रेखा का सिर थपथपाया और बाहर निकल आया।

थोड़ी देर बाद जव रेखा नाश्ते की मेज पर आई तो वह अपने आपको काफी सम्भाल चुकी थी। वह चुपचाप नाश्ता करने लगी। इन्द्र कुछ देर तक तो उसकी सूरत देखता रहा, फिर सीधा सवाल किया-

"हां, रेखा! क्या हम प्रेम सागर को इंकार कर दें।"

रेखा ने कोई जवाब नहीं दिया-वस; सिर झुका लिया। "रेखा, क्या वचपना है। शर्माने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारा जवाव सुनना चाहता हूं।"

"मै यह अधिकार आपको देती हूं। आप फैसला कर लें। मुझे आपका हर फैसला मंजूर होगा।" रेखा धीरे से बोली।

"मजबूरन।"

"नहीं-खुशी से।"

"क्या आज रात मैं उसे डिनर पर बुला लूं?"

"शौक से बुलाएं।" रेखा ने नजरें झुकाए-झुकाए कहा। "अगर इजाजत हो तो नयना को भी बुला लूं।" इन्द्र ने वोझिलता मिटाने को कहा।

"इजाजत है।" रेखा अपनी नजरें उठाते एकदम बोली थी। इन्द्र ने शोखी से ही उसका शुक्रिया अदा किया था।वे नाश्ता करते रहे।

"भैय्या आज मैं बलदेव अंकल के यहां वर्षा से मिलने जाऊंगी।" रेखा वोली- "और लंच वहीं लूँगी।"

comicsmylife.blogspot.in

"जरूर, पर सिक्योरिटी गार्ड को अपने साथ जरूर ले जाना।" "सिक्योरिटी गार्ड के साथ जाना बड़ा अजीब-सा लगता है। लोग बड़ी हैरत से देखते हैं। बड़ी उलझन होती है।"

"मजबूरी है।" इन्द्रजीत संजीदगी से बोला- "हमें सुरक्षा की तरफ से लापरवाह नहीं रहना चाहिये।"

इन्द्रजीत के जाने के बाद रेखा ने वर्षा को फोन करके अपने आने की सूचना दी। फिर तैयार -होकर शक्तिनगर की तरफ चल दी। वह गाड़ी खुद ड़ाइव कर रही थी। बाडी गार्ड, गाड़ी के पीछे अपनी मोटर साइकिल पर था।

जब उसकी गाड़ी राना प्रताप बाग के प्राचीन ईटों के गेट से गुजरी और उसकी निगाह वाएं हाथ के फुटपाथ पर पड़ी तो उसने एक तमाशा दिखाने वाली को देखा। वह औरत बंजारों की वेशभूषा में थी और उसके साथ एक रीछ और वन्दर भी था। रेखा ने गाड़ी की रफ्तार कम कर उस तमाशा दिखाने वाली की तरफ देखा। लगभग पैंतीस वरस की यह तमाशा दिखाने वाली रंग-रूप व नैन-नक्श के लिहाज से खासी आकर्षक थी। देखने में वह तीस-इक बरस की ही दिखती थी।

इस औरत को देखकर रेखा के जेहन में एक ख्याल बिजली की तरह कौंधा। उसने अपनी गाड़ी रोक ली व गाड़ी से उतरकर उसके निकट आने की इंतजार करने लगी। जब रीछ वाली औरत ने एक गाड़ी वाली को अपना इंतजार करते देखा तो उसने जल्दी-जल्दी कदम उठाए व रेखा के निकट जाकर बोली-

"जी, मेम साहब।"

"यह बताओ तुम तमाशा दिखाने का क्या लेती हो?" रेखा ने मुस्कराकर पूछा।

"यहा फुटपाथ पर देखेंगी तमाशा।" तमाशे वाली हैरान होकर बोली।

"नहीं-अपने घर पर। यह को, तुम पूरे दिन में क्या कमा लेती हो?"

"कभी सौ कभी पच्चास...।" औरत आशा भरी नजरों से रेखा को देखते बोली।

रेखा ने पर्स से सौ का नोट निकालकर उसकी हथेली पर रखते हुये कहा- "तुम कल मेरी कोठी पर आ जाना। मैं तुम्हें पांच सौ रुपये और दूंगी, लेकिन तुम्हें वहां पांच-छ: घन्टे गुजारने होंगे।"

बंजारन उलझन में पड़ गई। उसने झिझकते हुए पूछा- "मेम साहब मेरा क्या करना है?"

"मै तुम्हारी तस्वीर बनाऊंगी। अपने साथ रीछ और वंदर को लाना न भूलना।"

'नहीं जी। इनको मैं कहां छोड़ सकती हूं? ये तो मेरे साथ होंगे। पर जी, आऊं कहां?"

"माडल टाऊन आना होगा।" रेखा ने एक कागज पर उसे अपनी कोठी का पता लिखकर थमा दिया- "इस पर मेरा पता लिखा है। माडल टाऊन देखा है तुमने?"

"वो जी आजाद पुर के पास है।"

"हां, वहीं। वहां पहुंचकर किसी से यह पता पूछ लेना। मैं सुबह दस बजे तपम्हारा इतजार करूगी।"

"ठीक है, मेम साहव। मैं पहुंच जाऊंगी...।" उसने कहा व फिर वह कागज व सौ का नोट वड़े अहतियात के साथ अपनी चोली में रख लिया।रेखा अपनी गाड़ी में वैठ गई और गाड़ी स्टार्ट कर आगे बढ़ा दी।

और फिर।अगले दिन वह तमाशेवाली ठीक दस बजे माडल-टाऊन वाली कोठी पर पहुंच गई थी। रामू ने गेट खोला और अपने सामने एक रीछवाली को देख मुंह बनाते बोला-

"ओ चल, आगे बढ़ यहां कोई नहीं तेरा तमाशा देखने वाला...।"

"ओ, भैंसे के से मुंह वाले! अन्दर जौकर मेग साहब को बोल कि तमाशेवाली आई है।"

comicsmylife.blogspot.in

"मेम साहब। कौन मेम साहब? यहां कोई मेम साहब नहीं रहती।"

रेखा, तमाशेवाली की प्रतीक्षक थी। घंटी की आवाज पर वह भी रामू कें पीछे बाम निकल आई थी। रामू को उसने गेट पर किसी से उलझले हुए देखा तो वह तेजी से गेट की तरफ आ गई।रीछवाली ने उसे आते हुए देखा तो वह रामू को घूरते हुए बोली- "झूठ बोलता है। वो क्या आ रही हैं मेम साहब।"

राजू ने पीछे मुड़कर देखा तो रेखा ने उसे इशारे से कहा- "इसे अन्दर आने दो।"

रामू को हैरत हुई, लेकिन उसने गेट खोल दिया। वह अपने रीछ व बन्दर के साथ अन्दर आ गई और वोली-

"मेम साहब! मुझे देर तो नहीं हुई।"

"तमने कमाल कर दिया। विल्कुल ठीक टाइम पर आई हो।"

रेखा ने मुस्कराते हुए कहा।

और फिर रेखा शुरू हो गई। तमाशेवाली के रूप में उसे एक दिलचस्प विपय मिल गया था, चित्रकारी के लिए। वह तैयार ही थी। उसने पहले अपने कैमरे से उस औरत के विभिन्न पोजों में तस्वीरें उतारीं फिर उसने उसे लीन में एक पेड़ के नीचे एक स्ट्रल पर बैठा दिया और 'एंजिल' पर लगे केनवेस पर उसका स्केच करने लगी।

इन्द्रजीत का रूटीन था कि वह दोपहर को खाना घर पर ही खाता था। खाना खाकर दो-ढाई घन्टे आराम करता था और फिर शाम की चाय पीकर रेस्तरां का रुख करता था। आज भी वह ठीक है...बजे घर पहुंच गया।

गाड़ी का हार्न सुनकर रामू ने गेट खोला और इन्द्रजीत गाड़ी को अन्दर ले आया।

गाड़ी की पिछली सीट पर उसका 'बाडी गार्ड' वैठा था। जबकि दुसरा गार्ड कोठी के आहते में अलर्ट खड़ा था।

इन्द्रजीत ने गाड़ी से उतरकर रेखा की तरफ बड़ी दिलचस्पी से देखा जो बड़ी तन्मयता के साथ तस्वीर बना रही थी। रीछवाली पर अभी उसकी नजर नहीं पड़ी थी, लेकिन रीछवाली ने उसे गाड़ी से उतरते ही देख लिया था।और इन्द्रजीत को देखते ही उस पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। एकाएक ही जैसे बिजली-सी दौड़ गई थी उसमें।

वह विधुतीय गति से उठी। पलक झपकते ही अपनी कमीज में से एक लम्बा चाकू निकाला और निकट आते हुए इन्द्रजीत का निशाना बड़ी महारत के साथ लिया। इन्द्रजीत ने उसे अपनी तरफ चाकू फेंकते हुए देख लिया था। वह फौरन एक तरफ हो गया। इस तरह वह चाकू जिसने यकीनन उसके दिल में पैवश्त हो जाना था-अपना लक्ष्य चूक गया और उसके बाजू में जा घुसा।

दोनों गार्डों ने अपनी स्टेनगने सीधी कर लीं, लेकिन इन्द्र ने चींखकर कहा- "नहीं!"

इन्द्रजीत ने उस रीछवाली को पहचान लिया था। वह कटारी थी-तात्रिक राजू मदारी की बेटी कजरी।

कुछ ही क्षणों में जाने क्या-से-क्या हो गया था। इन्द्रजीत अगर अपने गार्डों को मना न करता तो अब तक कटारी की लाश जमीन पर पड़ी तड़प रही होती। चाकू का वार करने के बाद कटारी ने एक क्षण भी नहीं गंवाया था। वह अपने रीछ और बन्दर के साथ तेजी से भागती हुई गेट से बाहर निकल गई।

रामू अभी पर ही मौजूद था। वह गेट बंद कर रहा था। उसने कटारी को इन्द्रजीत पर चाकू फेंकते-हुए देख लिया था। उसने चाहा कि गेट बंद करके भागती कटारी को रोक दे। इधर से गार्ड भी उसे अपनी गिरफ्त में के लिए आगे बड़े।

तब इन्द्रजीत ने फिर उन्हें आवाज दी- "उसे जाने दो।" रामू और गार्ड हाथ मलते रह गए। रेखा हतप्रभ गुंग बनी खड़ी थी। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाया हुआ था। दिल धाड़-धाड़ कर रहा था और टांगें कांप रही थीं। उसे क्या मालूम था कि वह ही अपने भाई की मौत को दावत दे आई है। खुद ही कातिल को घर बुला लाई है। कैसा विचित्र तमाशा था?

चाकू इन्द्रजीत के बाजू में पैवश्त था, लेकिन आर-पार नहीं हुआ था और हड्डी भी प्रभावित नहीं हुइ थी। वह कोट पहने हुए था इसलिए बचाव हो गया। इन्द्रजीत ने चाकू को हत्थे से पकड़कर खींच लिया और रक्तरंजित चाकू रामू

comicsmylife.blogspot.in

की तरफ बढ़ाते हुए बोला- "इसे धोकर रख लो।"

फिर उसने गार्ड की मदद से कोट उतारा-जख्म पर रूमाल बांधा और गाड़ी की तरफ बढ़ता हुआ बोला- "चलो, अस्पताल चलो।"

रेखा भी लपककर आई और फौरन इन्द्र के साथ पिछली सीट पर बैठ गई। वह अब भी फटी-फटी आंखों से अपने भाई को देखे जा रही थी।

"रेखा, मुझे कुछ नहीं हुआ। मामूली जख्य है ठीक हो जाएगा। तुम बिल्कुल फिक्र न करो।" उसने रेखा को हौसला दिया।

रेखा ने कुछ कहे बगैर उसके कंधे पर सिर रख दिया। उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

अस्पताल में पुलिस कार्रवाई के बाद फौरन मेडिकल एड् मिल गई। जख्म गहरा था, लेकिन घातक नहीं था। भगवान् ने उसे बचा लिया था। कटारी ने सीधे दिल पर वार किया था और अगर उसका निशाना न चूकता तो इन्द्रजीत की मौत यकीनी थी। जिस चाकू से उस पर वार किया गया था उस चाकू को इन्द्र अच्छी तरह पहचानता था। वह राजू मदारी का चाकू था जो वो हमेशा अपने पास रखता था।

राजू मदारी धोखे में मारा गया था। उसका इरादा इन्द्रजीत पर पक्का जादू करके उसे हमेशा के लिए अपनी कैद में ले लेने का था और अपने इस मकसद में उसने काफी कामयाबी भी पा ली थी, लेकिन वह अमावस की काली अन्धेरी रात खुद उसकी जिन्दगी को मौत के आगोश में कैद कर गई थी।

राजूमदारी के मंत्रपाश से इन्द्र को मुक्त कराने को राजकुमारी नयना ने अपने ड्राइवर रघुबीर सिंह के माध्यम से एक सपेरे तांत्रिक योगी दयाल की सेवाएं प्राप्त कर ली थीं और इस योगी दयाल ने अनुष्ठान करके राजू मदारी पर ऐसा घातक वार किया था कि उसके बचने का कोई रास्ता न रहा। राजू मदारी खुद को बड़ा जबरदस्त और शक्तिशाली तात्रिक समझता था और यह घमण्ड ही उसे ले डूबा था। वह इन्द्रजीत को मंत्रपाश द्वारा अपना गुलाम बना, कैद करते हुए खुद मौत की गिरफ्त में आ गया था। हालांकि अन्तिम क्षणों में वह जान गया था कि उस पर कौन-सा तात्रिक वार किया गया है और यह वार किसने किया है-लेकिन तब कुछ नहीं हो सकता था। वह तड़पकर मर गया था।

दूसरे दिन जब जंगल से उसको बाप घर नहीं पहुंचा था तो कटारी चिन्तित हो उठी थी। उसने एक दिन और इंतजार किया-और राजू मदारी जब तीसरे दिन भी घर नहीं आया तो कटारी अपने रीछ और बैदर को लेकर जंगल की तरफ गई। अंतत: उसने अपने बाप की लाश खोज निकाली। उसके बाप की लाश हालांकि शिनाख्त योग्य न थी-लेकिन वहां मौजूद दूसरी चीजों से कटारी को यह अंदाजा लगाने में देर न लगी कि यह उसके बाप की ही लाश है।

वहां इन्द्रजीत भी मौजूद नहीं था। कटारी ने रीछ की खाल में गड़ा हुआ चाकू खींच लिया और उसी क्षण अपने बाप की सौगन्ध खाई कि वह इन्द्रजीत से अपने बाप के कत्ल का इंतकाम जरूर लेगी कि इन्द्रजीत अगर उसका नहीं हुआ तो फिर किसी का भी नहीं होगा।

यूं इंतकाम की आग में सुलगती कटारी ने दिन बाद ही शहरों का रुख किया और आखिर दिल्ली पहुंच गई। चाकू फेंककर मारने का फन उसके बाप ने उसे सिखा रखा था-इस कला में उसने और दक्षता प्राप्त कर ली थी। कबीले के बहुत से नौजवान उससे शादी के खाहिशमंद थे, लेकिन उसने अपने कबीलेवालों से साफ-साफ कह दिया था कि वह जब तक अपने दुश्मन से इंतकाम नहीं ले लेगी-कभी किसी खुशी का मुंह न देखेगी। चाहे अपने दुश्मन को तलाश करने में उम्र ही क्यों न बीत जाए।

और यूं उम्र नाकामयाबियों की नजर हो रही थी। उसकी जिन्दगी एक तमाशा बनी हुई थी। कटारी यहां-वहां भटक रही थी कि यह यूं अचानक ही उसकी मंजिल उसके सामने आ गई थी। इन्द्रजीत को अचानक अपने सामने देखकर वह शेष सब कुछ भूल गई व आनन-फानन वह कर दिया जिसकी उसने अपने बाप की लाश पर कसम खाई थी।

वार करके वह क्षणभर के लिए भी वहां नहीं रुकी थी। उसने यह भी नहीं देखा था कि उसका वार कारगर भी हुआ है या नहीं। उसका दुश्मन जिन्दा है या मर गया। उसे अपने वार पर यकीन था। जानती थी कि उसके हाथ से निकला हुआ चाकू कभी बेनिशाना नहीं हुआ, पर इसका क्या कीजिए कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा।

comicsmylife.blogspot.in

यह इन्द्रजीत की जिन्दगी में एक नया उफान आया था। दुश्मनों में एक और दुश्मन की वृद्धि हो गई थी।

नयना को जब इन्द्रजीत पर हुए हमले की सूचना मिली तो वह फौरन अस्पताल पहुंची। यह संयोग ही था कि वह इन दिनों दिल्ली में ही थी। वह अस्पताल के प्राइवेट रूम में पहुंची तो वहां
मेला-लगा हुआ था।

नयना के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। रेखा ने नयना को अस्पताल से ही फोन किया था-उस वक्त इन्द्रजीत एमरजेन्सी मिनी ऑपरेशन थिएटर में था। छोटा-सा ऑपरेशन था। घाव साफ करके टांके लगा दिए गए थे। रेखा ने नयना को विवरण नहीं बताया था। बस इतना ही कहा था कि भैय्या जख्मी हैं-वह फौरन अस्पताल आ जाए।

नयना को देखकर रेखा ने उसे गले से लगा लिया और बोली- "परेशान न होयें। भैय्या अब बिल्कुल ठीक हैं।"

इन्द्रजीत तकिये से टेक लगाए अधलेटा पड़ा था-वह नयना को देखकर मुस्कराया और बोला- "आओ, नयना...।" इस प्राइवेट रूम में इस वक्त इन्द्रजीत का बचपन का दोस्त प्रेम सागर, अंकल बलदेव राज उनका परिवार और रेखा थी। नयना के आने पर प्रेम सागर ने जाने की इजाजत चाही। उसके जाने के बाद कमरे में घर के ही लोग रह गये। हालांकि बलदेव राज ने प्रेम सागर को रुकने को कहा था-पर प्रेम सागर ने ही रुकना मुनासिब नहीं समझा था। बहरहाल, नयना सबसे परिचित थी।

"यह कैसे हुआ?" नयना ने पूछा। उसकी आवाज में तड़प थी।

"तुम्हें रेखा ने कुछ नहीं बताया।" इन्द्र ने रेखा की तरफ देखा।

"नहीं भैय्या।" रेखा बोली- "मैंने जानकर नहीं बताया था कि परेशानी होंगी।"

तभी बलदेव अंकल हंसकर बोले- "परेशानी की कोई बात नहीं है बेटी! आपके इन्द्रजीत ने यह जख्म हंसकर खाया है।" "क्या मतलब?" नयना हैरान ही हुई थी- "अंकल, मैं आपकी बात समझी नहीं।"

"कातिला से इन्होंने पूरा सहयोग किया। उसे पूरे इत्मीनान से फरार होने का मीको इनायत किया।"

"कातिला यह आप क्या कह रहे हैं, अंकल क्या इन्द्र पर कातिलाना हमला हुआ है?"

"जी। कातिलाना हमला और वह भी एक औरत ने किया है?"

"कौन थी वह? आप पहेलियां बुझा रहे हैं।"

इस बार इन्द्र बोला- "आपकी दोस्त!" और साथ ही हंस भी दिया।

"मेरी दोस्त!" नयना उसका मुंह तकने लगी।

भैय्या, क्यों परेशान कर रहे हैं। बता भी दो न।" रेखा बोल उठी।

"रेखा, तुम बताओ।" नयना बोली- "कौन थी वह?"

"कटारी नाम है उसका।" रेखा ने बताया- "और उस कमीनी को मैंने खुद घर बुलवाया था।" रेखा के लहजे में पछतावा था। "तुम क्यों शर्मिन्दा हो रही हो। तुम्हें क्या मालूम था कि वह कौन है और तुम्हारे भैय्या की दुश्मन है।"

"कटारी...वह कटारी थी।" नयना इन्द्र को घूरने लगी- "राजू मदारी की बेटी।" वह रेखा की तरफ मुट्ठी-- "रेखा, प्लीज! मुझे डिटेल में सारी बात बताओ।"

रेखा ने सड़क पर कटारी से मुलाकात और उसे घर बुलाने व फिर बाद के सारे हादसे से नयना को आगाह कर दिया।

"इन्द्र, आपने यह क्या किया?" नयना ने सारा वाकया सुन इन्द्र से कहा।

"मैंने क्या किया? मैंने तो कुछ नहीं किया।"

comicsmylife.blogspot.in

"उस कुतिया की लाश क्यों नहीं गिराई। उसे फरार होने का मौका क्यों दिया ?" नयना के स्वर में रोष भर आया था।

इन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया। सच यही था कि उसे खुद मालूम नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया?

बहरहाल नयना ने भी अपने रब का शुक्रिया अदा किया कि इन्द्रजीत, कटारी के चाकू से बाल-बाल बच गया था।पर-अस्पताल से घर जाने के वाद-जख्म भर जाने तक नयना ने इन्द्रजीत से बार-बार यही सवाल किया कि उसने कातिलाना हमले के बावजूद कटारीं को क्यों निकल जाने दिया, लेकिन इन्द्रजीत उसे कोई सन्तोज्जनक जवाब नहीं दे पाया।

वैसे वह खुद भी अपने इस रवैये के बारे में बराबर सोचता रहा था।

फिर एक दिन रेखा ने भी यही सवाल इन्द्रजीत से कर डाला। वह बोली- "भैय्या यह चुभन तो जिन्दगी भर मेरे दिल में रहेगी कि मेरी मूर्खता से मेरे भाई पर घातक हमला हुआ, लेकिन यह सवाल भी मेरे दिल में फांस बनकर चुभी हुई है कि आपने उस कमीनी को बचकर निकल जाने दिया। भैय्या, कुछ बताएं तो आपने ऐसा क्यों किया?" "यह सवाल नयना भी मुझसे कई बार पूछ चुकी है-और रेखा, सच तो यह है कि मैं खुद भी अपने इस रवैये पर चकित हूं और इस बावत निरन्तर सोचता रहा हूं और मैं अब इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि शायद सच्चाई मैं नयना से कभी नहीं कह सकूंगा। रेखा, तुमसे क्या छिपाना? मैंने शायद उसे इसलिए निकल जाने दिया कि मैं उसे कोई खुशी देना चाहता था।"

सुनकर रेखा को हैरत हुई थी। वह लगभग चींख ही तो उठी थी- "खुशी देना चाहते थे... एक कातिला को खुशी? कमाल है, आपने जख्म इसलिए खाया कि जख्म लगाने वाला खुश हो सके।" इन्द्र एकाएक ही बेहद संजीदा नजर आने लगा वह बोला- "रेखा तुम तो मेरी आपबीती से वाकिफ हो। कटारी का बाप मेरा मोहसिन था। उसने मुझे कत्ल होने से बचाया था, वर्ना चाचा के भाड़े के कातिलों ने मेरी लाश बिछा देनी थी, पर उसका दुर्भाग्य रहा कि वो मेरे ही कारण मारा गया। कटारी बहुत मासूम लड़की है रेखा और तुम जानती हो कि वह मुझे टूटकर चाहती थी। मैं ही उसकी चाहत का जवाब मुहब्बत से नहीं दे सका था। मेरा विश्वास है कि कटारी को मेरी व नयना की गुप्त मुलाकातों की खबर थी। इस पर भी उसने संयम का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। तुम अन्दाजा कर सकती हो रेखा, कि जब उसने अपने बाप कतई क्षत-विक्षप्त लाश जंगल में पाई होगी और मुझे वहां से गायब पाया होगा तो उसके दिल में प्रतिशोध की भावना का भड़क उठना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। बात असल में यह है रेखा कि मैं कटारी के बारे में हमेशा एक अपराध-बोध का ही शिकार रहा हू। उसको जाने देकर मैंने अब इस अपराध-बोध से मुक्ति पा ली है। मेरा ख्याल है तुम मेरी बात अच्छी तरह समझ गई होगी।"

पता नहीं रेखा उसकी बात समझी या नहीं। वह बस इतना कहकर चुप ही रही- "भगवान्, आप पर रहम करे, भैय्या।" और यह भगवान् की ही दया थी कि इन्द्रजीत, कटारी के जानलेवा वार से साफ बच गया था।

और फिर यह भी हुआ था कि इन्द्रजीत को उसी दिन शाम तक घर जाने की इजाजत दे दी गई थी। इन्द्रजीत अस्पताल से घर जा रहा था कि दीपक आ पहुंचा था। हालांकि प्रेम सागर ने उसके सिनेमा के मैनेजर को इस वाकये की सूचना दे दी थी, पर तब दीपक काम से निकला हुआ था और उसे यह इतला लौटने पर ही मिली थी।

दीपक खड़े पांव पलट लिया था और सीधे अस्पताल पहुंचा था। उमे सिर्फ यही इतला मिली थी कि इन्द्रजीत पर कातिलाना हमला किया गया है और वह फना अस्पताल में है। उसने इस घिनौनी कार्रवाई को अपने बाप रमाकांत की ही एक चाल समझी थी,सो वह चिन्तित होने के साथ-साथ शर्मिन्दा भी था।

"इन्द्र, क्या हुआ? खैरियत तो है। किसने हमला किया तुम पर?" उसने पहुंचते ही था।

"हां, सब खैरियत है।" इन्द्रजीत मुस्करा दिया था- "बाजू में मामूली जख्य है। हैसिंग कर दी गई है। मुझे अस्पताल छोड़ने की इजाजत है। दीपक तुम हमारे साथ घर चलो।"

दीपक ने प्रेम सागर की तरफ देखा-वह आते हुए प्रेम सागर को भी अपने साथ ले आया था।

यूं वे इन्द्रजीत के साथ कोठी पर पहुंचे थे।

अंकल बलदेव अस्पताल से ही अपने घर चले गए थे। कोठी पर नयना व रेखा इन्द्र के साथ उसकी कार में व प्रेम सागर, दीपक के साथ उसकी कार में पहुंचे थे। कोठी पर पहुंचकर रेखा व नयना तो अन्दर चली गई थी और इन्द्र

comicsmylife.blogspot.in

दीपक व प्रेम सागर के साथ ड्राइंगरूम में बैठ गया था। दीपक ही नहीं, प्रेम सागर भी इस हमले का विवरण जानने को बेताब था।

दीपक के पूछने पर जब इन्द्रजीत ने उन्हें कटारी के बारे में अब इस हमले का सबब मोटे तौर पर समझाया तो दीपक ने मन-ही-मन भगवान् का शुक्रियम अदा किया था और राहत की गहरी सांस ली थी। वह इन्द्रजीत क सामने और अधिक शर्मिन्दा होने से बच गया था।

चाय पीने के बाद जब दीपक ने जाने की इजाजत मांगी कि उसका एक बेहद जरूरी काम से वापिस जाना जरूरी था तो इन्द्र ने प्रेम सागर को जबरदस्ती रोक लिया। उसने कहा- "दीपक की तो मजबूरी है, पर तुम खाना खाये विना नहीं जाओगे।"

प्रेम सागर रुक गया।

रेखा को जब मालूम हुआ कि इन्द्र ने प्रेम सागर को रोक लिया है तो उसने अपनी खास निगरानी में खाने की तैयारी शुरू कर दी। समय-समय पर वह बैठक के फेरे भी लगाती रही। नयना भी उसके साथ ही होती। इन्द्रजीत, प्रेम सागर को अपनी आप वीती सुना रहा था। जब इन्द्र की कहानी खत्म हो गई तो-अब होने वाली बातों में नयना व रेखा भी शरीक थी।

फिर एक वक्त ऐसा भी आया कि इन्द्रजीत बाथरूम जाने की इजाजत लेकर वहां से उठ गया। नयना ने कुछ सोचा और कुछ देर बाद वह भी उठकर बाहर चली गई। अब ड्राइंगरूम में रेखा प्रेम सागर के साथ अकेली रह गई थी।खुद को अकेली महसूस करते ही रेखा अन्दर-ही-अन्दर कसमसाने लगी। उसे नयना पर बड़ा गुस्सा आया कि वह एकाएक ही और कुछ कहे बिना ही ड्राइंगरूम से चली गई थी।

जाहिर है-अब रेखा अगर चाहती भी तो उठ नहीं सकती थी, क्योंकि प्रेम सागर को अकेला छोडू देना अभद्रता होती। वह हिम्मत करके बैठी रही। प्रेम सागर जी अभी नयना से बड़ी बेतकल्लुफी से बात कर रहा था-अचानक खामोश हो गया था-जैसे उसे साप सूंध गया हो।

प्रेम सागर कुछ देर खामोशी से नजरें झुकाये बैठी रेखा को देखता रहा। रेखा प्रेम सागर से अपनी पहली मुलाकात पर अपने व्यवहार से आत्मग्लानी हो रही थी।

रेखा ने अचानक नजरें उठाई और उसे देखा। वह सोफे पर पूर्ण निश्चिन्तता के साथ बैठा था। उसी क्षण उसने भी नजरें उठाकर रेखा को देखा। नजरों-से-नजरें मिलीं और फिर दोनों ही जैसे पलकें झपकाना भूल गए।

आखों-ही-आखों में कोई बात हुई और नजरों के ये तीर ही जैसे दोनों के दिलों में उतरते चत्ते गए।

न किसी ने कुछ कहा-न किसी ने कुछ सुना-फिर भी बहुत कुछ कहा गया-बहुत कुछ सुना गया। बेरूखी गायब थी-शिकायतें जाती रही थीं।

जो, जो कुछ कहना चाहता था-खामोशी की जुबान ने ही दूसरे तक पहुंचा दिया।

कुछ देर बाद नयना वापिस आ गई और उन दोनों को खामोश देख चकित-सी बोली-

"अरे, ऐसा सन्नाटा! यह चुप्पी! बैठक में कदम रखते मुझे तो लगा था जैसे यहां कोई है ही नहीं।"

"कमाल है। बहरहाल, अब तो यकीन आ गया कि हम यहां मौजूद हैं।" प्रेम सागर बोला।

"हां-तो यकीन करना पड़ रहा है, लेकिन एक बात पर फिर भी हैरत है।"

"वह क्या?" प्रेम सागर ने पूछा तो रेखा ने चौंककर नयना की तरफ देखा।

"इस कद्र खामोशीं क्या आप दोनों को बात करने की मनाही है?" नयना हौले से हंस दी थी।

"जिस तरह एक हाथ से ताली नहीं बजती-वैसे ही एक तरफा बातचीत भी नामुमकिन है।" प्रेम सागर ने कनखियों से रेखा की तरफ देखते जवाब दिया।

comicsmylife.blogspot.in

"अरे!" नयना बवार शोखी से बोली- "क्या आपकी वात का रेखा ने जवाब नहीं दिया।"

"ओ-नहीं। ऐसी अभद्रता की आप उनसे कैसे उम्मीद रख सकती हैं।" प्रेम सागर तेजी से वोला- "दरअसल मैंने कोई वात ही नहीं की। हुआ यह कि मेम साहब सिर झुकाए कुछ सोच रही थी-मैंने इन्हें डिस्टव करन अच्छा नहीं समझा। वैसे, मिस नयना! मैं आपको एक बात वता दूं। कभी-कभी खामोशी भी जुवान बन जाती है और ऐसी खामोशी पर हजार लफ्ज कुर्बान किए जा सकते हैं।"

"सुना है-और अनुभव भी किया है।" नयना ने भी शोखी अपनाई- "कि जव लब खामोश हों तो आंखों-ही-आंखों में भी वातें हो ही जाती हैं। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि वातें नजरों-नजरों में हो रही थी।"

'मैं अभी आती हूं।" रेखा एकदम हड़बड़ाकर उठी। यही अहसास दिल धड़का गया था जैसे नयना ने उसकी चोरी पकड़ ली हो। वह घवरा-सी गई। उससे बैठा नहीं रहा गया।

"कहां जा रही हो?" नयना ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की।

"किचन में।" कहते हुए वह तेजी से बाहर निकल गई।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

रंजिशें जाती रही थीं। रेखा, प्रेम सागर को भा गई थी, इसलिए नहीं कि यह रिश्ता उसके अपनों यानि उसके दोस्त इन्द्रजीत व बलदेव राज अंकल की स्वाहिश थी, बल्कि इसलिए कि रेखा में उसे वह सब-कुछ नजर आया था जो वह अपनी जीवन-संगनी में चाहता था।

रेखा ने हां कर दी थी और कव उसके दिल की धड़कनों में भी प्रेम सागर था,पर अभी लज्जा-संकोच की दीवारें नहीं दही थीं। यूं ही एक दिन जब रेखा अपनी आर्ट-गैलरी में अपने आफिस में एक पेन्टिंग को 'फाइनल-ट्विस' दे रही थी कि दरवाजे पर किसी की दस्तक से चौंकी। उसने पलटकर देखा जे प्रेम सागर दरवाजे पर खड़ा उससे अन्दर आने की अनुमति मांग रहा था। "मैं अन्दर तो आ सकता हूं ना...?"

उसे देखकर न जाने क्यों रेखा के हवास गुम हो जाते थे। वह करनी-अंदर सिमटने लगती थी। उसे लज्जा आने लगती थी।इस वक्त भी यही हुआ। वह उसे देखकर गड़बड़ा गई। ब्रुश भी ठीक से रखा नहीं गया। वह उल्टकर रेखा के कपड़ों पर गिरा और एक सुर्ख धब्बा बना गया।

"जी...आइए।" वह खुद को सम्भालने का यत्न करते वाली।

प्रेम सागर बड़ी लापरवाही से अन्दर आया और कुर्सी घसीटकर बैठ गया। रेखा ने तौलिये से अपने हाथ और कपड़े साफ किये और सिकुड़ी-सिमटी-सी अपनी कुर्सी पर आकर वैठ गई। उसकी नजरें मेज पर थीं।

प्रेम सागर आज निर्णायक मूड में आया था। वह कुछ क्षण उसे निहारता रहा फिर धीरे से बोला- "रेखा।"

उसके मुंह से अपना नाम सुनकर रेखा को एक खुशी का अहसास हुआ। उसने अपनी घनेरी पलकें उठाई-और अपनी काली खूबसूरत आंखों से उसे देखा- "जी।"

"आपके बड़ों ने कुछ सोचा व चाहा था-उसका जवाब मैं आपके होंठों से सुनना चाहता हूं। चाहे, यह जवाव इंकार में ही क्यों न हो, लेकिन इंकार करने से पहले यह जरूर सोच लीजिएगा कि शायद फिर मैं जिन्दगी भर शादी की सोचूं ही नहीं।"

उफ्! यह बेवाकी। यह अधिकारपूर्ण लहजा और यह जाने क्या-क्या समझाती धन्यकी। रेखा का दिल धड़कने लगा। सब कुछ ही तो रेखा को मूदगुदा भी गया था। उसने भी हिम्मत जुटाई व धीमे से बोली- "मने इसका फैसला अपने बड़ों पर ही छोड़ दिया है।

"और आपके बड़ों का फैसला क्या है?"

"यह आप बड़ों से ही पूछें।" प्रेम सागर को मुस्कराते देख, रेखा भी अपनी मुस्कान रोक न पाई थी और फिर शायद विषय वदलने को पूछा- "आपके लिए क्या मंगवाऊं ठण्डा या गर्म...?" "शुक्र है कुछ तो औकात आकी आपने हमारी।"

"प्लीज! आप मुझे शर्मिन्दा करने की कोशिश न करें। उस दिन मैंने आपके साथ बदसलूकी की-में क्षमा प्रार्थी हूं।" रेखा ने कई बार सोचा था-आज अवसर मिला था, तो उसने फौरन माफी मांग ली थी।

"माफी तो मुझे मांगनी चाहिये।" प्रेम सागर वोला- "इन्द्र से तय करने के वाद ही मझे आपसे मिलने आना चाहिये था।" तान अव आप ऐसी कोई वात नहीं करेंगे...।" तभी घंटी के जबाज में चपरासी ने अन्दर कदम रखा और रेखा ने पूछा- "हां, तो क्या?"

"कॉफी मिल जाएगी...।"

"हां, क्यों नहीं?" रेखा वोली व फिर चपरासी से सम्बोधित हुई- "कॉफी बनाओ-अच्छी-सी।"

"रेखा-ऐसा नहीं हो सकता कि हम कुहीं बाहर चलकर कॉफी पीयें?" प्रेम सागर ने आगे झुकते हुए और झिझकते हुए धीमे स्वर में फरमाइश की।

"क्यों नही हो सकता?" रेखा अब खुशदिली दिखा रही थी। "तो फिर चलो कहीं बाहर चलते है।"

comicsmylife.blogspot.in

चपरासी जाते -जाते रुक गया था और जैसे रेखा के जवाब का प्रतीक्षक था। रेखा उससे बोली- "रहने दो। कॉफी की जरूरत नहीं है। हम बाहर जा रहे हैं।"

यह मुलाकातों की शुरुआत थी।

दो-चार मुलाकातों मे ही बात कहां से कहां पहुंच गई। दोनों ने एक-दूसरे को विश्वसनीय एवं अपने योग्य पाया। जिस दिन वे मिल न पात थे-तो रात को अपने बिस्तरों पर लेटे टेलीफोन के तारों के जरिये अपनी भावनाओं को व्यक्त करते।

यही हाल कुछ इधर भी था। इधर यानि इन्द्रजीत और राजकुमारी नयना के बीच। प्रेम सागर और रेखा की मुहब्बत तो नई-नई थी--लेकिन नयना व इन्द्रजीत तो बरसों से एक-दूसरे को जानते थे-चाहते थे। हां-यह दूसरी वात थी कि उनके सपने भी एक लम्बे समय बाद साकार हुए थे। अव हाल यह था कि जव तक वे एक-दूसरे को मिल नहीं लेते थे-वेकरार दिलों को चैन नहीं आता। फिर एक दिन सवाल पैदा हुआ- "आखिर कब तक?" और यह सवाल रेखा ने न प्रेम सागर से किया या-न नयना ने इन्द्रजीत से। यह सवाल अंकल बलदेव ने किया था।

इस सवाल को सुनकर इन्द्रजीत को जैसे होश आ गया था। अंकल वलदेव ने बहुत सही वक्त पर यह सवाल उठाया था। दो प्रेम कहानियां लिखी जा रही थीं, परवान चढ रही थी और अब इतना वक्त गुजर चुका था कि अब इन कहानियों पर 'दी एण्ड' लिखा जाना जरूरी था।

और यह 'दी एण्ड' अन्तत: शादी था और अंकल बलदेव व गंगा मौसी इस खुशी को बड़ी धूमधाम से मनाना चाहते थे। तब तय यह हुआ कि पहले मंगनी की जाए और मंगनी की रस्म किसी बड़े होटल में पूरी हो। किसी भी तरफ पैसे की कमी तो थी नहीं-सो इन्द्रजीत और प्रेम सागर की मंगनियां एक ही होटल में और एक ही वक्त में होने का प्रोग्राम तय हो गया।

नयना के मां-बाप नहीं थे। वह अकेली थी। ले-देकर उसके चाचाजाद भाई थे और उधर प्रेम सागर की पारिवारिक स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। रेखा व इन्द्रजीत के मां-बाप भी कहां थे? रेखा के,सिर पर हालाकि इन्द्रजीत मौजूद था-लेकिन इन्द्रजीत के सिर पर कोई नहीं था। ले-देकर एक अंकल बलदेव थे, इसलिए सभी ने उन्हें ही अपना सरपरस्त व अविभावक बना लिया।

अब बलदेव अंकल लड़की वाले भी थे और लड़के वाले भी। यू उन्द्रें एक महत्वपूर्ण केन्द्रीय हैसियत व भूमिका प्राप्त हो गई। गंगा मौसी को बंगलौर बुला लिया गया था। एक सप्ताह बाद मंगनियां होने वाली थीं-इसलिए अमर अभी नहीं आया था। उसका प्रोग्राम एक दिन पहले आने का था। गंगा मौसी बरसों बाद अपने शहर यानि दिल्ली आई थी। यहां आकर उन्हें अपनी जवानी याद आ गई थी।

रेखा, गंगा मौसी के आने से बहुत खुश थी। वह बार-बार उनके गले में बाहें डालकर बस यही कह रही थी- "मौसी! मैं आपको जाने नहीं दूंगी।"

"क्या मतलव है तेरा-क्या तू यहीं बैठी रहेगी?"

"ओह, मौसी!" रेखा हंस दी- "मेरा मतलब यह था कि आपको शादी से पहले नहीं जाने दूंगी।"

"अरी पगली अभी तो तेरी शादी को दो महीने हैं। मंगनी के बाद मुझे जाना होगा। अमर वहां अकेला है। हां-शादी से पहले आ जाऊंगी-यह वायदा पक्का।"

"अमर मेरा की तो उतपको फिक्र हैं-यहां कोई और मी अकेला है... इसकी फिक्र नहीं आपको?"

गंगा मौसी नें एकदम चौंककर रेखा को देखा। उन्हें रेखा से ऐसी किसी बात की आशा नहीं थी। उन्हें रेखा का इशारा तो समझ में आ गया था फिर मी अपना सन्देह दूर करने के लिए पूछ.-

"किसकी बात कर रही हो?"

"उसकी जो सारी रात अकेला खड़ा बारिश में भीगता रहा।" रेखा ने बेशर्मी दिखाई, अपने ही अंदाज में गंगा मौसी की जवानी के प्यार की तरफ इशारा कर डाला।

comicsmylife.blogspot.in

"नही, रेखा नहीं !" गंगा मौसी ने अपनी आखें बन्द कर ली-"मुझसे ऐसी बातें न करो।"

पर रेखा ने तो जैसे कुछ और ही ठान रखी थी। वह शिकायती, लेकिन अपनत्वपूर्ण स्वर में बोली-"हालांकि बलदेव अंकल से कभी इस बारे में वात नहीं हुई हैं, लेकिन यह बात मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूं कि वह बहुत अकेले हैं। वह आपको बहुत मिस करते- हैं, मौसी।"

"जो होना था-वह हो चुका।" गंगा मौसी ने आंखे खोलीं तो दो आंसू उनकी आंखों से निकलकर गालों पर लुढ़कने लगे। हालांकि आपसे भी मैंने कभी इस विपय पर बात नहीं की है।" रेखा अपनी ही धुन में बोले गई- "लेकिन मैं यह भी अच्छी तरह जानती हूं कि आप खुद भी बहुत अकेली है। आप भी ओज तक उन्हें मिस करती हैं...।"

"बस कर रेखा, बस।" उनकी आवाज गले में रुधने लगी-"सूख चुके घावों को अब न कुरेद। मैं वह सब याद नहीं करना चाहती।"

"आप शादी क्यों नहीं कर लेती बलदेव अंकल से...?" रेखा थी कि चुप होने को तैयार नहीं थी। लह अपने दिल की वात अंतत: निर्लज्ज बन जुबान पर ले आई।

"ऐसा नहीं हो सकता-ऐसा कैसे हो सकता है यह कहकर गंगा मौसी रेखा के कमरे से निकल गई।

रेखा ने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की। आज के दिन के लिए इतना ही काफी था। उसने बरसों की राख मे दबी हुई चिंगारी को अच्छी तरह कुरेद दिया था। अब इस चिंगारी को थोड़ी हवा देने की जरूरत थी ताकि वह भड़क -उठे और यह काम वह पूरे धैर्य व धीरज के साथ करना चाहती थी।

गंगा मौसी के जाने के बाद रेखा अपने कमरे से निकली। किचन में रामू शाम की चाय की तैयारियों में व्यस्त था।

"साहब कहां हैं ?" रेखा ने उससे पूछा।

"साहब अभी उठे हैं, शायद बाथरूम में हैं।"

"ठीक है। मैं बाहर लॉन में जा रही हूं। हम चाय वहीं पीयेंगे। साहब से कह देना।"

"जी अच्छा।"

रेखा टहलती हुई उस पेड़ के नीचे पहुंची जहां उसने कटारी को बैठाकर उसकी तस्वीर बनाना शुरू की थी-तो एकाएक ही उसकी आंखों के सामने उस दिन का सारा दृश्य घूम गया। उसे मलाल हुआ कि उसने खामखाह ही एक तमामशेवाली को कोठी मे बुला लिया था। अगर उसका चाकू ठीक निशाने पर लग जाता तो वह यकीनन इस हादसे से पागल ही हो जाती।

कटारी भी अजीब औरत थी। उसकी मुहब्बत नफरत में बदल चुकी थी। यह तो भगवान् ने इन्द्रजीत को बचा लिया था-बरना मदारी की यह बेटी तो अपना हाथ दिखा चुकी थी।

इन्द्रजीत ने राजू मदारी के इस चाकू को अपने पास रख लिया था। यह वही चाकू था-जिसने बचपन में इन्द्रजीत को कत्ल होने से बचा लिया या और इन्द्रजीत के चाचा के भाड़े के वह चारों कातिल-राजू मदारी के जादू के प्रभाव में इन्द्रजीत के कटकटकर गिरने वाले अंगों को देखकर मारे दहशत के भाग निकले थे। (पाठक यह रोमांचक घटना पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'स्वाहा' में पढ़ चुके है)

रेखा नहीं चाहती थी कि इस बालू को घर में रखा जाए, लेकिन इन्द्रजीत ने इस चाकू को बेटरूम में सजा लिया था। वह चाकू उसने खूबसूरत जग मे साइड टेविल पर रखा था और अब उस्ते-बैख्ते उस पर उसकी नजरें पड़ती रहती थीं।

रेखा इन्हीं ख्यालों में गुम थी कि-"खैरियत तो है-कहां गुम थी?" इन्द्रजीत लॉन में बिछी मेज की तरफ बढ़ते हुए बोला। रामू इस मेज पर चाय के वर्तन सजा रहा था।

"मझे वह कमीनी याद आ गई थी...।" रेखा बोली। "कटारी।" इन्द्रजीत हंसा।

comicsmylife.blogspot.in

"उस मनहूस का नाम न लिया करें।" रेखा जलकर बोली-"जैसा नाम वैसा ही काम।"

"रेखा अब उस हादसे को भूल भी जाओ। अब तो मेरा बाजू भी ठीक हो गया है।"

"मैं उसे भूली नहीं हूं। यह जिस दिन भी नजर आ गई-अपने गार्ड को हुक्म देकर गोलियों से छलनी करवा दूंगी।" रेखा ने गुस्से से कहा।

" छीक है-जो मर्जी आए करना। चलो, अब चाय भी लो।" इन्द्रजीत कपों में चाय उंडेलने लगा। हां, वह गंगा मौसी कहां है? उन्हें नहीं बुलाया बाहर?"

"नहीं। मैं उनकी चाय लेकर उनके कमरे में जाऊंगी।" रेखा ने अपना इरादा स्पष्ट किया- "मुझे जरा आपसे एक बात करनी है।"

"ऐसी कौन-सी बात हैजो उनके सामने नहीं की जा सकती।" "है न एक ऐसी ही बात।" रेखा के लहजे की खट्टास जाती रही थी।

"वह क्या?" इन्द्र की दिलचस्पी जागी।"उनकी शादी की बात।"

"उनकी शादीकीवात!" इन्द्रजीत ने हैरत से दोहराया-"यानि गंगा मौसी की शादी की बात।" उसने जैसे पुष्टि चाही थी। "जी।" रेखा मुस्करा दी।

"किससे?"

"आप फिर परेशान हो गए।" रेखा मुस्कराए जा रही थी- "बलदेव अंकल से और किससे?"

"ऐ।"इन्द्रजीत उछल ही तो पड़ा।

और अब जब रेखा ने इन्द्रजीत को उन दोनों की इष्क की कहानी सुनाई तो इन्द्र को और भी हैरत हुई। अनूठी कहानी थी। दोनों युवावस्था में एक-दूसरे को चाह थे और शादी नहीं हो सकी थी तो अब तक कुंवारे थे।इन्द्र व रेख-देर तक इसी विषय पर वातें करते रहे।

"देखना भेब्द-" मैं इनकी शादी करवाकर रहूंगी।" रेखा ने किसी जिद्दी बच्ची की तरह अपना संकल्प दोहराया- "और आपको मेरी मदद करनी होगी।"

इन्द्रजीत को वायदा करना पड़ा था।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

गंगा मौसी का मामला अभी दूर था। अभी तो खुद रेखा की मंगनी सिर पर थी।

और फिर जब मंगनी का दिन आया तो वह हो गया जिसकी किसी ने कल्पना ही नहीं की थी।

उस दिन उस 'थ्री-स्टार' होटल का 'मैरिज हाल' मेहमानों से भरा हुआ था। हर तरफ रंग-ओ-नूर की बारिश थी। नयना, रेखा और इन्द्रजीत स्टेज पर आ वैठे थे। प्रेम सागर अभी नहीं पहुंचा था। हालांकि उसे भी अब तक पहुंच जाना चाहिये था।

रेखा की नजरें बार-बार उठती और फिर निराश होकर लौट आतीं। इन्द्रजीत भी फिक्रमंद नजर आ रहा था।

परेशान बलदेव राज भी था। वह जानता था कि प्रेम सागर और दीपक ने एक साथ आना था और अभी तक उनमें से कोई भी नहीं पहुंचा था। मेहमानों की वेचैनी भी अब साफ नजर आ रही थी। कुछ सोच बलदेव राज नें इन्द्रजीत के पास जाकर कहा- "तुम्हारी और नयना की रिंग सेरेमनी' कर देते हैं। मेहमान परेशान हो रहे हैं।"

"नही अंकल! अपनी मंगनी से पहले मैं अपनी वहन की मंगनी

की-रस्म अदा करना चाहूंगा।"

"और भगवान् न करे।" बलदेव राज ने झिझकते हुए कहा- "किसी वजह से प्रेम सागर न पहुंचा तब।"

"तो मेहमानों को बगैर मंगनी के ही खाना खिला दिया जएगा।" इन्द्रजीत ने निर्णायक स्वर में कहा।

जब निश्चित समय से एक घन्टा ऊपर हो गया तो चारों तरफ खलवली मच गई। वलदेव राज एक वार फिर इन्द्रजीत के पास आए और बोले-

"इन्द्र! समझ में नहीं आ रहा कि मामला क्या है? प्रेम सागर न घर पर है न अपने ऑफिस में। मेंने दीपक को भी फोन कर कांटेक्ट करने की कोशिश की है। वह भी कहीं उपलब्ध नहीं है। उन दोनों ने इकट्ठे ही आना था। मुझे लगता है कि कुछ खास ही घटा है, वरना दीपक भी अपनी रेखा वहन की मंगनी को लेकर वहुत खुश था। दीपक भी अपने घर पर नहीं है और उसके सिनेमा के मैनेजर ने बताया है कि वह आज घर पर आए ही नहीं हैं।"

"फिर अव...।" इन्द्रजीत की तो जैसे आवाज ही नहीं निकल रही थी।बलदेव राज जल्दी से बोले- "मैं खुद जाकर देखता हूं...। शादी-ब्याह के मौके पर देर हो ही जाती। कहीं वह ब्यूटी पार्लर न चला गया हो।" इस मजाकिया टिप्पणी के साथ उन्होंने जैसे मामले की गम्भीरता को कम करना चाहा और फिर वह फौरन ही हाल से निकल गया।

हकीकतन वह खुद रेखा या इन्द्र से ज्यादा परेशान थे। मेहमान परेशान हो रहे थे कि आखिर 'रस्म' कब अदा की जाएगी। जब एक घन्टा और बीत गया और अंकल बलदेव भी पलटकर न आए और न ही फोन पर उनकी इतला आई तो इन्द्रजीत ने खाना शुरू करवा दिया।

बिना रस्म के खाना शुरू होने पर सवाल उठे और इन्द्रजीत को इन सवालों का सामना करना पड़ा। बहरहाल, सस्पेंस भरे माहीम में ही मेहमानों ने खाया खाया और मेहमान विदा होने शुरू ही हुए थें कि तभी अंकल बलदेव लौट आए। उनका मुंह लटका हुआ था। वह यकीनन कोई अच्छी खबर नहीं लाए थे।

"क्या हुआ?" उन्हें एक तरफ ले जाकर इन्द्रजीत ने पूछा। "प्रेम सागर को किडनैप कर लिया गया है।" बलदेव राज ने अविश्वसनीय खबर सुनाई।

"किडनैप!" यह खबर विजली बनकर इन्द्रजीत पर गिरी- "यह आप क्या कह रहे हैं? उसकी किसी से क्या दुश्मनी है?"

"उसका ताल्लुक फिल्म इण्डस्ट्री से है और उस दुनिया में रोसे अपहरण किसी-न-किसी अण्डरवर्ल्ड के इशारे पर होते है। दुश्मनी नहीं, फिरौती के लिए खेले जाते हैं यह घिनौने खेल। यह बात तो मैं यकीन से कह सकता हूं कि उसकी किसी से दुश्मनी नहीं हो सकती।"

"कहां से किया गया उसका किडनैप?" इन्द्र के माथे पर पसीना चुधिया आया था।

comicsmylife.blogspot.in

"उसके घर के बाहर से।"

"प्लीज अंकल। मुझे डिटेल बताओ।"

और वलदेव राज ने बताया- "मैं जब उसे ढूंढता हुआ उसके ग्रीन पार्क वाले बंगले पर पहुंचा तो देखा कि गेट पर ताला पड़ा हुआ था। मुझे वहां देख उनके पड़ोस की कोठी में रहने वाली कोई मिसेज बत्रा फौरन बाहर आई और यह जानने में बाद कि में प्रेम सागर के वाकिफकारों में से हूं-उसने वताया- "प्रेम सागर ने हमें अपनी मगनी में चलने की दावत दे रखी थी। हमने यहां से इकट्ठे ही निकलना था। निश्चित समय पर हम अपनी गाड़ी से बाहर निकले तो हमने अपने गेट पर से ही देखा कि वह अपने बंगले से बाहर खड़ी अपनी कार की तरफ आ रहे थे। उनके साथ उनका कोई दोस्त भी था और फिर हमारे देखते-ही-देखते एक सूमो उनकी गाड़ी के पास आकर रुकी और सूमो से तीन रिवाल्वर धारी कूटकर वाहर आए। उनमें से दो ने उन्हें अपने रिवाल्वरों के निशाने पर धकेलते हुए उनकी ही गाड़ी में बैठाया और तीसरे ने ड्राइवर को वाहर खींचकर ड्राइविंग खुद सम्भाल ली और फिर वे गाड़ी को ले उड़े। सूमो उनके पीछे हो ली थी। वे आनन-फानन में नजरों से ओझल हो गये। मेरे हसबैंड ने दौड़कर ड्राइवर को सम्भाला और__।"

"कुछ मालूम हुआ उसके साथ उसका वह दोस्त कौन था?" इन्द्रजीत ने बात काटते हुए पूछा।

"पड़ोसन उसे नहीं पहचानती थी-पर मेरा ख्याल है कि उसके साथ जरूर दीपक रहा होगा।"

बलदेव राज ने कहा-- "उन दोनों ने इकट्ठे ही यहां पहुंचना था। यह मुझे मालूम है।"

"वह दीपक ही होगा।" इन्द्र के चेहरे पर तमतमाहट के भाव उभरे- "वह दीपक ही था अंकल और मैं दावे से कह सकता हूं कि अपहरण की यह साजिश प्रेम सागर के लिए नहीं, दीपक के लिए रची गई थी। किडनैपर-प्रेम सागर को जान-बूझकर या फिर मजबूरी के कारण अपने साथ ले गए हैं। क्या उस पड़ोसी ने इस वारदात की रिपोर्ट पुलिस को की है?"

"मिसेज बत्रा ने बताया कि उसके हसबैण्ड ड्राइवर के साथ स्टेशन ही गए हैं। उन्होंने शायद सूमो का नम्बर नोट कर था।"

"मेरी समझ में मामला आ रहा है। हमें पुलिस स्टेशन चलना चाहिए। मैं समझ सकता हूं कि यह किसका किया-धरा है। आओ, चलें।"

"पर तुम्हारी मंगनी।"

इन्द्रजीत उनकी बात काटते हुए बोला- "अपनी बहन की मंगनी से पहले मैं अपनी मंगनी कैसे कर सकता हूं। आप चलें।" "और यह मेहमान।"

"मेहमान खाना खा ही चुके हैं। इन्हें गंगा मौसी देख लेंगी। उनसे कह देते हैं...।" वे गंगा मौसी के पास पहुंचे और पीछे की जिम्मेवारी उन्हें सौंपते हुए बलदेव राज बोले-

"गंगा-कोई मेहमान खान खाये बिना न जाये, यह आपने देखना है। मैं इन्द्र के साथ थाने जा रहा है।"

"हे भगवान्, खैर तो है।"

बलदेव राज ने उन्हें संक्षेप में अपहरण की कहानी सुनाई और फिर इन्द्र के साथ बाहर निकल गया।

मंगनी स्थगित करने के सिवाय अब कोई चारा नहीं था। वैसे भी यह बात छिपने वाली नहीं थी और इस बात को छिपाने की जरूरत भी नहीं थी। सबको मालूम हो गया।

इस वारदात का सबसे ज्यादा असर रेखा पर पड़ा था। वह हंसती-हंसती एकदम खामोश हो गई। यह खबर सुनते ही वह एकदम साकते हो गई।

नयना उसके बराबर ही वैठी थी। उसने उसे फौरन सम्भाल लिया। नयना को भी इस महत्त्वपूर्ण व खूबसूरत समारोह में विघ्न पड़ने का बहुत अफसोस था, लेकिन वह इतनी स्वार्थी भी न थी कि अपनी उंगली में मंगनी की अंगूठी

comicsmylife.blogspot.in

पहनकर बैठ जाती। वैसे भी वह रेखा को अब बहुत चाहने लगी थी। रेखा का दुःख अब उसका अपना दुःख था।

रेखा ने सम्भाल लिया। मेहमानों को विदा कर वह भी नयना, गंगा मौसी और बलदेव राज के परिवार के सदस्यों के साथ कोठी पर लौट आई।इन्द्रजीत की ही तरह उसका दिल भी यही कह रहा था कि अपहरण प्रेम सागर का नहीं, बल्कि जरूर दीपक का हुआ है और यह अपहरण भी उसके खलनायक कमीने चाचा रमाकांत ने कराया है।

दीपक के प्रति अब रेखा या इन्द्रजीत के मन में कोई घृणा कोई वैमनस्य नहीं रहा था। दीपक खुद ही दुश्मनों की पक्ति से निकल आया था ओर इन लोगों ने उसे दुत्कारा नहीं था। जाहिर है, दीपक का रेखा व इन्द्र से जा मिलने की खबर उसके बाप से छिपी न रही होगी और उस जैसे हिंसक प्रवृति के शख्त को यह कैसे बर्दाश्त हो सकता था?

पर प्रेम सागर! क्या उसका अपहरण महज इस कारण हुआ था कि वह उस दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी में दीपक के साथ था या फिर प्रेम सागर को भी जान-बूझकर निशाना बनाया गया था। जाहिर था-रमाकांत रेखा व इन्द्रजीत को बटोरते कैसे देख सकता था, पर यह गुत्थी रेखा को परेशान हुए थी और इन्द्रजीत को भी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इन्द्रजीत और रेखा का अन्देशा गलत नहीं था।

दीपक का, अपने बेटे का अपहरण करने की साजिश रमाकांत की ही थी। उसी के भाड़े के टट्टू दीपक को किडनैप करने पहुंचे थे।

सावनपुर की अपनी हवेली के बरामदे में रमाकांत बड़ी बेचैनी से टहल रहा था। उसकी नजरें बार-बार अपनी कलाई घड़ी पर पड़ रही थीं। उसके बाकी दोनों बेटे सूरज और विजय भी अपने कमरों से निकल आए थे। उन्हें भी दीपक के आने की इन्तजार थी। इस बात की सूचना उन्हें मिल ही चुकी थी कि दीपक को उसके एक दोस्त के साथ अपने कब्जे में कर लिया गया है।

थोड़ी देर बाद ही हवेली का गेट खुलने की आवाज आई। दो गाड़ियां, एक लम्बी विदेशी कार व एक सूमो अन्दर दाखिल हुई। रमाकांत के होंठों पर मुस्कान नाच गई। वह हवेली के अन्दर चला गया और अपने कमरे में जाकर उस ऊंची कुर्सी पर बैठ गया जिस पर वैठकर वह को खुदा समझा करता था।

कुछ देर बाद राहदारी में भारी कदमों की आवाज आई-फिर खुले दरवाजे से सबसे पहले दीपक अन्दर आया। उसके पीछे दो रिवाल्वरधारी थे। उनके पीछे सूरज ओर विजय थे।"बाबा !" सुरज ने अन्दर आते ही बताया- 'यह लोग इसके साथ इसके एक दोस्त को भी उठा लाए हैं। क्या उसे भी यहां ले आयें?"

"दोस्त को!" रमाकांत अपनी सुर्ख आखों से रिवाल्वरधारियों को पूरा।

"मजबूरी थी, मालिक।" उनमें से एक बोला- "ये दोनों इकट्ठे कहीं जा रहे थे। हमने उसे पीछे छोड़ना ठीक नहीं समझा। ओह! यह अच्छा ही हुआ। हमें उसके पास से एक रिवाल्वर मिली है। वह कार भी उसी की है।"

"ओह!" रमाकांत ने गहरी सांस ली- "कोई तोप ही होगा इसका वह हमदर्द। खैर, उसे बाद में देखेंगे। हां बेटे !" उसने अपनी खूनी आखें दीपक पर टिका दीं- "कौन है तुम्हारा यह दोस्त?" "प्रेम सागर! और वह सचमुच ही एक तोप है।" दीपक निर्भय, बल्कि गुस्से में बोला- "तुम्हे यह पंगा महंगा पड़ेगा, बाबा! प्रेम की मंगनी थी आज। हम रिंग सेरेमनी में जा रहे थे। उसे जाने दो तो बेहतर है।"

"मंगनी? प्रेम सागर से !" रमाकांत के माथे पर सिलवटें उभरीं- "ओह, तो यह है रेखा का होने वाला मंगेतर! अजीब संयोग है। तो हमारा बेटा, रेखा की 'रिंग सेरेमनी' में तशरीफ ले जा रहा था। मुकाबरक हो। आपको अपनी बहन की मंगनी मुबारक हो।"

"बाबा! यह आपने अच्छा नहीं किया।" दीपक अपने रोष को दबाते हुए बोला।

"और यह तूने अच्छा किया है कि बाप से पूछे बिना इन्द्रजीत और रेखा से रिश्ते बना लिए।" रमाकांत ने भी सख्त लहजे में कहा था।

"मैं अपना अच्छा-बुरा खूब समझता हूं।"

"तभी राक ऐसी लड़की को अपनी बहन बना लिया है जिसके बाप का भी पता नहीं।"

"रेखा, मेरे ताया कृष्णकांत की बेटी है।"

"ओह, ताया कृष्णकांत!" रमाकांत के स्वर में व्यंग भर आया- "तुझे शायद पता नहीं कि तेरे इस ताया के यहां जो बेटी पैदा हुई थी, वह मर चुकी है। हमारे पास इसके सबूत मौजूद हैं।" "मैं सब जानता हूं।" दीपक बोला- "मैं यह भी जानता हूं कि मेरे ताया को किसने कत्ल किया है।"

"अच्छा!" रमाकान्त ने उसे घूरते हुए पूछा-"तू और क्या-क्या जानता है...?"

"मैं यह भी जानता हूं कि आज से बीस-बाइस साल पहले मेरे भाई इन्द्रजीत को मरवाने की साजिश किसने की थी?" दीपक ने अपने बाप की आंखों में आखें डालकर जवाब दिया।

"सूरज...विजय...सुन रहे हो भई।" रमाकांत ने अपने दोनों बेटों की तरफ देखा व फिर दीपक की तरफ मुड़ते हुए

comicsmylife.blogspot.in

पूछा- "वह किसने की?"

"आपने बाबा! आपने।" दीपक घृणास्पद लहजे में वोला- "आपने वड़े जुल्म किए हैं उन लोगों पर।"

"सुन रहे हो तुम दोनों!" रमाकांत ने फिर अपने बेटों की- तरफ देखा- "हमने बड़े जुल्म किए हैं उन लोगों पर। यह तो अपना बेटा लगता ही नहीं। पता नहीं किस वक्त की पैदाइश है? इसमें जमींदारों वाली कोई बात नहीं है। यह बात मैं तुम दोनों को हमेशा कहता आया है इसीलिए मैंने इस मुसीबत को कुछ दे-दिलाकर यहां से निकाल दिया था। मुझे अगर यह मालूम होता कि दिल्ली जाकर यह हमारे दुश्मनों से मिल जाएगा तो मै इसे कभी वहां न जाने देता। भई, यह तो बहुत ही बेवकूफ साबित हुआ।" वह दीपक से मुखातिब हुआ- "अब तू ही बता। मैं तेरा क्या करू?"

"मै तुम लोगों से कोई नाता नहीं रखना चाहता।" दीपक बोला- "मुझे वापिस जाने दो।"

"ताकि राम हमारे उन दुश्मनों के हाथ पक्के कर सको। भई खूब! बहन बनाया और फिर उसकी शादी भी अपने ही एक दोस्त से करा रहे हो कि वह नागिन एक-दो संपोले पैदा करके हमारे लिए और मुस्किलें पैदा करे। विजय-इस बेवकूफ को कुछ अक्ल सिखा और जब तक इसे अक्ल न आ जाये-इसे हथेली में कैद रख। जा-इस उल्लू को मेरे सामने से ले जा।"

"और बाधा! वो इसका दोस्त।" विजय ने पूछा।

"वह भी अभी हवेली का मेहमान रहेगा। मैं सोचता हूं उसके बारे में कुछ...।" कहते हुए रमाकान्त खलनायकों की तरह चलता हुआ कमरे से निकल गया।

आओ-हिलो भाई।" विजय दीपक के पास आकर बोला। "बिजय, मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"भाई आपने कहीं नहीं जाना।" विजय भी नाटकीय अंदाज में बोला-"बस, सिर्फ अपने ही कमरे तक जाना है। वहां चलकर आप-आराम फरमाये।"

"नही-बिल्कुल नहीं। मैं इस मनहूस हवेली में एक क्षण भी नहीं रहूंगा। मैं इसी वक्त वापिस दिल्ली जाऊंगा। मेरे दोस्त का लौटना जरूरी है। वहां सब हमारे लिए परेशान हो रहे होंगे।" दीपक ने दरवाजे की तरफ कदम बढ़ाए।

पर तभी विजय तेजी से चलकर उसके सामने आ गया और हाथ फैलाकर उसका रास्ता रोक लिया। इसके साथ ही उसने अपने भाई सूरज को कोई इशारा किया।

सूरज ने इस इशारे को समझते ही जोर से आवाज लगाई- "कालू-बून्दे-नाटे...।"

उसकी आवाज सुनकर पलक झपकते ही तीन खूंखार बन्दे भीतर आ गये। वे तीनों ही सशस्त्र थे। तीनों अंदर आकर विजय के पीछे खड़े हो गए। उनमें से एक बोला-

"हुक्म सरकार...।"

"अब क्या कहते ही भाई?" विजय ने मुस्कराकर दीपक की तरफ देखा।

"यह सब ठीक नहीं कर रहे।"

"ठिक तो नहीं कर रहै भाई। दुश्मनो से जा मिले हो। आप बहुत सीधे आदमी हो। वो बहन-भाई तुम्हें लूटना चाहते हैं। तुम्हें उल्लू बना कुछ भी करा सकते हैं। हम हिमाकत को अपनी का तमाशा बनते नहीं देख। आप अपने कमरे में चलें...।"

दीपक कुछ नहीं बोला। उसने सिर झुका लिया और कुछ सोचते अपने कमरे का नख किया।

हवेली का यह कमरा उसका अपना था। उसने कमरे में दाखिल होकर चारों तरफ निगाह डाली और फिर एक कुर्सी पर ढेर हो गया। कमरे में सब-कुछ ज्यों-का-त्यों था। दीपक को यह कमरा छोटे बरसों हो गए थे और एक लम्बे समय तक कमरा बन्द रहने की वजह से यहां धूल-मिट्टी होनी चाहिए थी, लेकिन ऐसा नहीं था। कमरे में हर चीज शीशे की तरह चमक रही थी। अभी हाल ही में कमरे की सफाई करवाई गई थी, यानि कि इन्हें दीपक के अपहरण में सफलता

comicsmylife.blogspot.in

का पूरा-पूरा यकीन था।

दीपक चिन्तित था। अपने से ज्यादा प्रेम सागर को लेकर चिन्तित था। वे दरिन्दों के फन्दे में आ फंसे थे जो कुछ भी कर सकते थे। दीपक को एकाएक दिल्ली की याद आई। उसके दिल की धड़कनें तेज हो गई। उसके साथ ही प्रेम सागर भी लपेटे में आ गया था। वे निश्चित वक्त पर होटल नहीं पहुंच सके थे। जाने वहां क्या हुआ हो?प्रेम सागर के वहां न पहुंचने पर सारा प्रोग्राम ही गड़बड़ा गया होगा।

वह परेशानी की हालत में उठकर टहलने लगा।

वह अब प्रेम सागर के बारे में सोच रहा था। रेखा और इन्द्रजीत की परेशानियों के बारे में सोच रहा था।

करीब पन्द्रह मिनट बाद दरवाजे पर आहट महसूस हुई-जैसे ताला खोला जा रहा हो। फिर दरवाजा खुला और एक नौकरानी खाने की ट्रे लेकर अन्दर आई। उसने ट्रे मेज पर रखी व बड़े आदर से बोली-

"खाना खा लें सरकार।"

दीपक कुछ नहीं बोला। नौकरानी वापिस चली गई और दरवाजा फिर बन्द हो गया।

दूसरे दिन सुबह जब विजय एक नौकर कें साथ नाश्ता लेकर आया तो उसने देखा कि दीपक सूट पहने ही बेड पर पड़ा है। विजय ने उसे हिलाया- "भाई नाश्ता कर लो। उठ जाओ। सुबह हो गई है।"

दीपक ने आखें खोल दीं और उठकर बैठ गया। उसने विजय को घूरकर देखा और बोला-

"मेरे दोस्त का क्या हुआ?"

"वह सकुशल है। नाश्ता कर रहा है। हमारा मेहमान है। बेचारा!" विजय के होंठों एक मुस्कान नाच गई- "मंगनी की हसरत दिल ही में रह गई बेचारे के। भाई, यह तो बताओ तुम्हारी यह रेखा बहन क्या सचमुच बहुत खूबसूरत है?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम आखिर चाहते क्या हो?" "आ जाएगा। वह भी समझ में आ जाएगा। फिलहाल तो अपनी कहो-तुम क्या चाहते हो न तुम्हारा यह भाई तुम्हारी क्या सेवा कर सकता है?"

"मुझे टेलीफोन चाहिये।" दीपक बोला।

विजय ने हसंकर दिखाया- "क्यों क्या पुलिस को फोन करने का इरादा है?"

"बेकार बातें मत करो।" दीपक सर्द लहजे में बोला- "मुझे रेखा से बात करनी है। चाहे तुम खुद मुझे नम्बर मिला कर देना।" "बाबा से पूछना पड़ेगा।" विजय बड़ी मासूमियत से बोला। "यह तुम बाबा के इतने आज्ञाकारी कैसे बन गए?" विजय ने मुंह बनाते पूछा।

"मजबूरी हैं भाई।" विजय बोला व हंस दिया- "पर मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर तुम उस इन्द्रजीत और रेखा के चक्कर मे कैसे फंस गए? दुश्मनों से हाथ मिलाना अक्लमंदी तो नहीं होती।"

"तुम लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए...।" दीपक ने स्पष्टवादिता से काम लेते कहा।

"ओह! पर भाई, अश्व भगवान् के लिए पाप-पुण्य पर भाषण देना न शुरू कर देना। हम दुनिया में इसलिए नहीं आए हैं पाप-पुण्य का हिसाब लेकर बैठे जाएं। दो दिन की जिन्दगी है-अगर वह भी ऐश में न गुजारी तो फिर इस जिन्दगी का क्या फायदा?" "जिस तरह की जिन्दगी तुम लोग गुजार रहे हो, देखना एक दिन इसका फल मिलेगा तुम्हें और यह अंजाम कोई अच्छा नहीं होगा, विजय।"

"भाई! हम तो सिर्फ गुलाम हैं। देखते नहीं कि बाबा जमीन जायदाद पर सांप बने बैठे हैं। बंधी-वधाई रकम मिलती है। तुम तो फिर भी खुशकिस्मत हो कि दिल्ली में ऐश करते हो। बाबा ने तुम्हें इतना कुछ दे दिया...।"

"मुझे जो कुछ उन्होंने दिया है, वह मेरे हिस्से की जायदाद का एक परसेन्ट भी नहीं है। यह बात तुम अच्छी तरह जानते हो।" विजय हंस दिया, बोला- "लेकिन भाई, तुम तो दरवेश आदमी हो। तुम्हें जमीन-जायदाद की इच्छा ही

comicsmylife.blogspot.in

नहीं।"

"जरूरत से ज्यादा की ख्वाहिश ही इन्सान को शैतान बना देती है।"

"और शैतान को क्या बना देती है भाई?" विजय ने दांत निकालते पूछा- "अब हमारी गिनती इन्सानों में तो हो नहीं सकती।"

"तुम मतलब की बात करो।" दीपक ने बहस से किनारा करते हुए कहा- "मैंने तुमसे कहा है कि मैं रेखा से बात करना चाहता हूं। तुम इसका बन्दोवस्त करो।"

"कमाल है।" विजय बोला-"तुम्हारा वह दोस्त प्रेम सागर भी रेखा से बात करना चाहता है। वह रेखा की अपनी सलामती की खबर देना चाहता है। तुम भी यही चाहते हो। मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है।"

"कैसा आइडिया?"

"यही कि क्यों न मैं तुम्हारी इस बहना और तुम्हारे उस दोस्त की होने वाली पत्नी को मै बुद फोन करू? तुम्हारी सलामती की खुशखबरी हूं और साथ ही फिरौती की मांग भी कर दूं।""क्या?" चींख ही तो उठा दीपक- "फिरौती उसे क्या जरूरत पड़ी है फिरौती देने की?"

"अपहरण और फिरौती का तो चोली-दामन का साथ होता है भैय्या। प्रेम सागर खद भी मालदार है और वह रेखा का होने वाला पति है...अपपनी जिन्दगी के लिए उसे भी तो कुछ कुर्बानी करनी चाहिये।"

"तुम्हारा यह जुल्म तुम्हें जेल की हवा खिला सकता है। तुम नहीं जानते यह प्रेम सागर कितनी बड़ी चीज है।"

"बाबा से बड़ी तो होगी नहीं। है भी तो अगुवे के साथ-साथ फिरौती वसूली का जुर्म भी अगर आनद होगा तो बाबा पर ही तो होगा। अच्छा है, उन्हें काले पानी की सजा हो। पिण्ड तो छूटे हमारा।"

"तुम्हें फिरौती चाहिये?"

"अगर तुम्हें आजादी चाहिये?" विजय बड़ा ढीठ साबित हो रहा था।

"हां, मुझे आजादी चाहिये।" दीपक ने उसे घूरा-"अपनी भी और अपने दोस्त प्रेम सागर की भी।"

"ठीक है तो फिर कुछ सोचसे हैं।"

"फिलहाल टेलीफोन के सारे में सोचो।"

"विजय कुछ सोचते हुए केला- "भाई तुम कपड़े बदलकर मुंह हाथ धो लो, नाश्ता कर लो फिर में हवेली का एक चक्कर लगाकर आता हूं। टेलीफोन इस कमरे में नहीं आसकता। फोन मैं तुम्हें अपने कमरे से कराऊंगा, लेकिन इस मामले की हवा सूरज भाई या उस बूढ़े को नहीं लगा? चाहिये। समझ-गए न भाई?"

"ठीक है।" दीपक उठ खड़ा हुआ और तौलिया लेकर बाथरूप में जा घुसा।

बह फ्रेश होकर निकला तो बड़े जोर- की भूख लग रही थी। उरसने डटकर नाश्ता किया व बिजय की इन्तजार करने लगा। दोपहर को एक नौकरानी खाना लेकर आई और विजय का सन्देशा दे गई कि वह कर बजे तक आगया और विजय ठीक चार बजे आ पहुंचा। यह बह वक्त था, जब रमाकांत आराम फरमाया करते थे। आराम तो सूरज भी करता था, लेकिन यह आज सुबह-मुझ ही कहीं चला गया था।

लाइन क्लीयर थी, लेकिन विजय अपना इत्मीनान कर लेना चाहता था। उसने दीपक से पूछा- "आपने रेखा से क्या वात करनी है?"

"सिर्फ यह कहना है कि हम सकुशल हैं।"

"आपके ख्याल में क्या उसे आपके अगुवा की इतला हो गई होगी?"

comicsmylife.blogspot.in

"जरूर हो गई होगी।" दीपक बोला- "वैसे तो शायद न भी होती, लेकिन तब प्रेम सागर व रेखा की मंगनी का प्रोग्राम था। उन लोगों को प्रेम सागर की इन्तजार रही होगी और फिर तुम्हें शायद यह नहीं मालूम कि प्रेम सागर के एक पड़ोसी ने हमारा अपहरण होते देख लिया था। उन लोगों का शक सीधा तुम लोगों पर ही होगा और वे खामोश बैठने वाले नहीं हैं।"

"शक होने दो-लेकिन आप इस बात का ख्याल रखेंगे कि उसे यह आभास भी होने देने की कोशिश नहीं करेंगे कि आप इस वक्त कहां हैं और यह सारा क्या मामला है?"

"ठीक है। मैं वायदा करता हूं।"

"आप सिर्फ एक ही बात कहेंगे और उससे ज्यादा मैं आपको नहीं बोलने।"

"ठीक।" दीपक ने उसकी यह वात भी मान ली।

"तो आ जाएं फिर।" विजय उठता हुआ वोला।

विजय उसे अपने ड्राइंगरूम में ले आया और टेलीफोन उठाकर अपनी गोद में रखते हुए बोला- "हां, भाई! नम्बर बोली।"दीपक ने नम्बर बताया। उसने नम्बर डायल किया। लाइन पहली कोशिश मे ही मिल गई। दो घन्टिया बजने के बाद उधर नौकर रामू ने कॉल रिसीव की।

"मुझे रेखा जी से बात करनी है।" विजय बोला- "उन्हें फौरन बुलाए।"

"जी अच्छा। आप होल्ड करें।" रामू ने कहा।

"किसी मर्द ने फोन उठाया था-वह रेखा की बुलाने गया है।" विंजय ने दीपक को बताया। तभी उधर से एक नारी स्वर सुनाई दिया- हैल्लो।"

"आप कौन हैं? क्या आप मिस रेखा हैं?" विजय ने पूछा।" जी...मैं रेखा बोल रही हूं।" उधर से घबराकर कहा गया।
"लीजिए, अपने दीपक भाई से वात कीजिए...।" यह कहकर विजय ने रिसीवर दीपक की तरफ बढ़ा दिया।
टेलीफोन उसने अपनी गोद में ही रहने दिया था और अपनी जंगली क्रेडिल-पर रख ली ताकि लाइन काट सके।

"रेखा-हम जहां भी हैं-विल्कुल ठीक हैं। भगवान् ने चाहा से जन्दी ही आप तक पहुंच जाएंगे। किसी प्रकार की फिक्र न करना।"

"बस।" कहते हुए विजय ने क्रेडिल दबाकर लाइन काट दी। दीपक उधर से रखा का जवाब भी नहीं सुन सका। उसने रिसीवर विजय को थमा दिया।

"हो गई रेखा वहन से बात।" विजय रिसीवर रखते हुए बोला।

"विजय मैं शुक्रगुजार हूं।"

"यह किया है। अगर 'जेलर साहब' यानि अपने बाबा को मालूम हों गया कि मैंने उसके 'कैदी' को टेलीफोन की सुविधा उपलब्ध कराई है तो वह मेरी गर्दन ही उड़ा देगे।" बिजय कुटिल मुस्कान के साथ बोला।

"तुम बाधा से इतने डरते क्या हो...?" कुछ सोच पूछा दीपक ने।

"आप बाबा को नहीं जानते, भाई!"

"मैं जितना उन्हें जानता हूं-उससे ज्यादा जानने की ख्याहिश भी नहीं है।" दीपक वोला- लेकिन एक बात जरूर कहूंगा कि उनके पापों की हांडी भरने में अब ज्यादा देर नहीं है।"

"मेरा आल है कि अपने बाबा 'शतक' पूरा किए बिना विकट नहीं छोड़ेंगे।" विजय ने हंसकर कहा- "आओ भाई! चलो अपने कमरे मे आ गया। बिजय का वक्त खत्म हो गया है।" दीपक चुपचाप कमरे में आ गया। विजय रात को आने का वायदा करके दरवाजा बन्द करके चला गया।

comicsmylife.blogspot.in

दीपक रात देर से ही सो पाया था। वह अपने मौजूद हालात व प्रेम सागर के बारे में सोचता रहा था। प्रेम सागर को एक अलग कमरे में बंद किया गया था और दीपक उससे मिल भी नहीं पाया था।

बहरहाल, जैसे-जैसे नींद आई थी और सोने से पहले उसने बहुत-से फैसले ले डाले थे।

और फिर।

वह जाने रात का कौन-सा पहर था कि अचानक दीपक की आंख खुल गई। उसका गला सूख रहा था। उसने उठकर पानी पिया। गला तर हुआ तो हवास भी बहाल हुए। उसने तकिये के नीचे से अपनी कलाई घड़ी निकाल-वक्त देखा-इस वक्त एक बजे रहा था।वह उठकर खिड़की की तरफ आया। उसने खिड़की खोली तो एकदम पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। जैसे कोई विशाल पक्षी किसी निकट के पेड़ से उड़ा हो। रात अंधेरी थी। सर्दी का मौसम दम तोड़ रहा था। फिर मी हल्की-सी ठण्डक थी।

दीपक ने आंखें फाड़-फाड़कर कर वाहर देखा-लेकिन अंधेरे में कुछ नजर नहीं आया खिड़की मे सलाखें लगी थीं। उसने दो सलाखों को पकड़कर ताकत से हिलाया, लेकिन सलाखें टस सं मस नहीं हुई।

वह अभी खिड़की बन्द कर ही रहा था कि पंखों की फड़फड़ाहट फिर सुनाई दी। यूं तगा जैसे कोई पक्षी पेड़ पर आकर वैठा हो। फिर कुछ ही क्षणों बाद आवाज आनी शुरू हो गई। यह उन्त के बोलने की आवाज थी। वड़ी अजीब, रहस्यमय व सनसनीखेज-सी। दीपक ने सामने नजर डाली तो उसे दो गोल-गोल आंखें चमकनी नजर आई। वह कांप उठा।

उसने फौरन खिड़की बन्द कर दी।

खिड़की बन्द करते ही उसे यूं लगा जैसे बहुत-से उन्तुओं ने एक साथ चींखना आरम्भ कर दिया हो।

वह वेड पर अकार बैठ गया।

वह मनहूस आवाजें निरन्तर आ रही थीं। यह बड़ा अशुभ संकेत था। जग जाहिर है कि जिस जगह उल्लू बोलने लगते हैं-वहा वीरानी व वहशत दरसनी शुरू हो बनाती है। दीपक सोचे बिना न रह सका। क्या इस हवेली का आखिरो वक्त आ गया है?

वह अभी यह सब सोच ही रहा था कि दरवाजे पर खड़खड़ाहट महसूस हुई।

दीपक की नजरें दरवाजे की तरफ उठ गई। कौन हो सकता है? हालांकि विजय ने रात को ही आने को कहा था-और वह अभी तक आया नहीं था। क्या अब वही आया है? रात के एक बजे जब हवेली अन्धेरे मे डूबी हुई है और उल्लू अपनी मनहूस आवाजों में वोल- रहे हैं। यह का कौन-सा वक्त है भला?

अन्तत: दरवाजा खुला तो दीपक चौंक उठा। विजय की बीबी कामिनी मुस्कराती हुई अन्दर प्रवेश कर रही थी।

लेकिन वह अकेली न थी उसके पीछे ही फौरन विजय का चेहरा भी दिखाई दिया था। विनय ने अन्दर आकर दरवाजा वन्द कर दिया।

"भैय्या जाग रहे थे।" कामिनी मुस्कराती हुई उसकी तरफ "भाई, कामिनी आपसे मिलने की जिद कर रही थी। मैंने कहा कि दिन के उजाले में तो यह मुमकिन नहीं-रात को चलेंगे। सो, यह मुझे उठा लाई।" विजय ने बिसात बिछाई।

"हां, आओ कामिनी-वैठो।" दीपक ने कुर्सी की तरफा इशारा किया- "बस, अभी थोड़ी देर पहले मेरी आंख खुली थी। उठकर पानी पीया तो बाहर से उल्लूओं की मनहूस आवाजे आने लगीं। यह उल्लू यहां हवेली में कैसे आ गए? जहां उल्लू बोलने लगते हैं-उस जगह को वीरान होते ज्यादा देर नहीं लगती।"

"यही तो मैं भी कहती हूं-पर यह माने तब ना।" कामिनी ने शिकायती नजरों से विजय की तरफ देखा- "भैय्या। ये आवाजें कई दिनों से सुनाई दे रही हैं। मुझे बड़ा डर लगता है। सभी जानते है कि उल्लू बड़ा मनहूस पक्षी है।"

"क्या बेवकूफों बातें कर रही हो।" विजय बोला- "मैं भला क्या करू? उन्हें बोलने से कैसे रोकूं?"

comicsmylife.blogspot.in

"अच्छा, छोड़ो यह बेकार बातें। मुझे भैय्या से बाते करने दो।" वह दीपक की तरफ घूमी- "हां मेरा। अपनी सुनाओ। मजे में तो हो। अच्छा किया जो यहां से पिण्ड छुड़ा लिया। अब तो अपने भाई इन्द्रजीत और बहन रेखा से खूब निभ रही है। यह बता रहे थे कि कल उन दोनों की मंगनी थी, पर बाबा ने सब गुड़-गोवर कर दिया! साथ-साथ रेखा के मंगेतर को भी उठवा लिया। अब क्या?"

"बाबा ने अपनी बर्वादी को दावत दे डाली है।" दीपक फुफकारा- "बुढापे मे उनकी मति मार रखी है।"

"सुन।" कामिनी ने विजय की तरफ देखा- "यही मै भी कहती हूं ना।" वह फिर दीपक से मुखातिव हुई - "खैर, हुए! सुनाओ। तुमने भी कोई लड़की-बड़की पसन्द की या नहीं। अब ता बड़े-बड़े लोगों में उठना-बैठना है तुम्हारा-वह भी दिल्ली जैसे शहर के बड़े लोगों में।"

"पसन्द कर ली है।" दीपक यूं ही बोल उठा- "जल्ही ही शादी भी कर रहा हूं।"

"बधाइ हो।" कोमिनी ने आंखें नचाई- "आप अपनी शादी में गुझे तो बुलाएंगे ना?"

"शादी में तो उस वक्त बुलाऊंगा जब तुम लोगों की कैद से आजाद होऊंगा।" दीपक बोल उठा।

"तो भैय्या, यह कौन-सी बड़ी बात है?" कामिनी को जैसे अपने दिल की बात कहने का मौका मिल गया था-"आप जमीनों के कागजात पर दस्तख्त कर दें -फिर आजादी-ही-आजादी है।" "भाई, बात यह है कि आपको जमीन-जायदाद से कोई दिलचस्पी है नहीं। मोटी रकम हथिया ली है बाबा से और शहर में अपना धन्धा जमा लिया है। भाई, आप ऐसा क्यों नहीं करते कि...।" विजय कुछ कहते-कहते रुक गया-फिर उसने अपनी बीवी की तरफ देखा और कहा- "तू बोल कामिनी।"

दीपक ने भी कामिनी की तरफ देखा और उसने अपनी इस भाभी की आंखों में हवास व लालच की चमक साफ-साफ देखी। दीपक को अपनी तरफ देखते पा, कामिनी के होंठों पर मुस्कान तिर आई और वह बोली-

"बात यह है भैय्या कि यह दुनिया कुछ लो, कुछ दो के उसूलों पर चल रही है। आपको आजादी चाहिये हमें आपका हिस्सा चाहिये। आप अपने हक से हाथ खींच लें। अपना हक हमारे सुपुर्द कर दें। हम आपको आजादी देते हैं।"

"वाह, कामिनी बहुत खूब! तुम तो अपने शौहर से भी दो हाथ आगे निकलीं।"

"क्या करू भैय्या बच्चों के लिए आखिर कुछ सोचना ही पड़ता है। इन्हें तो अपने बच्चों के विषय की कोई फिक्र है ही नहीं।" कामिनी ने बड़ी ढिठाई से जवाब दिया।

"मुझे मंजूर है।" दीपक ने पूर्ण गम्भीरता से जवाब देकर सब को चौंका दिया।

"ऐं क्या कहा?" विजय को तो जैसे यकीन ही नहीं आया था। दीपक इतनी आसानी से मान जाएगा। वह सोच भी नहीं सकता था।

"मैंने कहा है कि मुझे मंजूर है।" दीपक बोला- "मुझे जो मिल चुका है, में उसी में सन्तुष्ट हूं लेकिन एक बात याद रखना विजय! अपने हक को छोड़ने वाले कागजात पर मैं यहां इस हवेली में साइन नहीं करूगा।"

"फिर कहां करोगे?"बड़ी बेचैनी से पूछा विजय ने।

"दिल्ली में-अपने घर में बैठकर। मेरी यह शर्त मंजूर हो तो ठीक है, वरना तुम जो चाहे करो।"

"ओह शायद तुम यह समझते हो कि मैं तुमसे पेपर्स भी साइन करा लूंगा और यहां से जाने भी नहीं दूंगा।"

"हां, मैं यही समझता हूं।" दीपक ने साफ शब्दों में कहा। "और भाई, अगर तुम अपने शहर में जाकर बदल गए-तुमने दस्तख्त करने से इंकार कर दिया। फिर क्या होगा?"

"विजय, तुम जानते हो कि मैं ऐसा नहीं करूगा। में अपने वायदे से फिरने वाला आदमी नहीं है।"

विजय भी जानता था कि उसे यह चांस लेना ही पड़ेगा। वह एकदम बोला- "हां, मैं यह बात जानता हूं तो फिर बात

comicsmylife.blogspot.in

पक्की?" उसने अपना पंजा आगे वड़ा दिया।

"बिल्कुल पक्की।" दीपक ने उसका हाथ थाम लिया। "अच्छा तो फिर मैं चलता हूं। सुबह चार वजे आऊंगा। तैयार रहना। हम यहां से निकल चलेंगे।"

"हमारे साथ मेरा वह दोस्त भी होना चाहिये।"

"अरे हां।" विजय ने उसकी तरफ देखा, फिर मुस्करा दिया- "अपने चक्कर में मैं उसे तो फर- दी गया था। ठीक है-वह भी हमारे साथ ही चलेगा।"

विजय आपकी बीबी के साथ लौट गया।दीपक को हालत की इस करवट की तो कतई उम्मीद नहीं थी। वह सोच भी नहीं सकता था कि उसे यूं आसानी से मुक्ति मिल जाएगी। वह अपने बाप की फितरत से वाकिफ था। उस दरिन्दे कतई नजर में तो जपने वेटे की भी कोई कीमत नहीं थी। उसके वाप को तो यह भी बर्दाश्त नहीं हुआ था कि उसका बेटा अपने चाचाजाद भाई-बहन के पाले में चला जाए। दीपक जानता था कि उसका अपहरण उसको खत्म कराने को ही किया गया है-क्योंकि उसका बाप अपने रास्ते के कांटे इसी एक हल के साथ निकालने के पक्ष में रहता था।पर विजय व उसकी लालची बीबी ने दीपक के लिए हालात आसान बना दिये थे।

दीपक सोचता रहा कि उसे अब अगला कदम क्या उठाना है न जाहिर था विजय ने दिल्ली पहुंचकर पेपर्स साइन करने की उसकी बात यूं ही नहीं मान ली थी। उसने भी अपना कोई जाल यकीनन फैला रखा होगा।

बहरहाल, विजय ठीक चार बजे आ पहुंचा। प्रेम सागर उसके साथ था। प्रेम सागर मुस्कराते हुए ही दीपक के गले मिला था। वह कतई चिन्तित नहीं था और इन हालात से लुक लेता नजर आ रहा था।

वे दोनों विजय के साथ हवेली के एक गुप्त द्वार से बाहर निकले। प्रेम सागर की गाड़ी दरवाजे पर मौजूद थी। ड्राइविंग सीट पर शक्ल से ही खतरनाक दिखता एक व्यक्ति बैठा था। एक और शख्त भी ड्राइवर के साथ वाली सीट पर आ वैठा था। वे तीनों पिछली सीट पर थे।गाड़ी चल पड़ी।

कुछ दूर निकल आने के बाद दीपक ने कुछ सोच पूछा- "विजय, क्या बाबा को हमारे यहां से जाने का इल्म है?"
"नही। उन्हें अगर मालूम होता तो हमें खुफिया रास्ते से निकलने की क्या जरूरत थी?"

दीपक का अपना भी यही अंदाजा था कि विजय यह खेल अपने तौर पर पर खेल रहा है। वह अपने वाप को भी डबल-क्रास कर रहा था। अपनी अलग खिचड़ी पका रहा था।

"पर विजय, यह वात छिपी तो रहेगी नहीं।" दीपक ने विजय को उसकी पोजीशन का अहसास कराना चाहा- "उन्हें मालूम हो गया तो फिर क्या होगा?"

"तुम बेफिक्र रहो।" विजय ने पूर्ण निश्चिन्तता के साथ कहा- "वाया को मैं अब देख लूंगा। उनसे अब दो हाथ करने का वक्त आ गया है।"

"वाप से लड़ोगे।"

"जब कोई वाप हक न दे तो फिर हक छीनना पड़ता है। यह पाठ उनका ही पढ़ाया हुआ है। वहुत गुलामी हो गई उनकी भाई।" विजय के लहजे में कुछ ऐसा था कि बाप से लाख अनवन होते हुए भी दीपक ने अपन भीतर एक सर्द-सी लहर दौड़ जाती नजर आई।

ठीक कहते हैं-भगवान् के घर देर है अन्धेर नहीं और यह भी कि भगवान् की लाठी आवाज नहीं करती। रमाकांत को अपने किये का फल शायद उसका खून ही चखाना चाहता था।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

विजय सुबह चार बजे हवेली से निकला था।

वह उसी दिन शाम को दिन ढलते ही हवेली वापिस पहुंच गया। वह अपनी पत्नी को समझाकर निकला था कि अगर वावा उसके बारे में पूछें तो क्या जवाब देना है। अपने दूसरे भाई सूरज की तरफ से उसे कोई फिक्र नहीं थी-क्योकि वह चण्डीगढ़ गया हुआ था। सूरज को पॉलीटिक्स का चस्का था। सावनपुर सीमान्त प्रदेश में था और इस प्रदेश में चुनाव होने वाले थे। वह इन चुनावों में एक प्रमुख पार्टी का टिकट हासिल करने को घर से निकला हुआ था।

यानि कि सूरज की वापसी एक सप्ताह से पहले मुमकिन नहीं थी।और किस की निगाह में यह बड़ा अच्छा वक्त था। विजय इस वक्त से फायदा उठा लेना चाहता था।

वह दिल्ली से अपने बाप की कहानी निपटा देने के पूरे-पूरे इन्तजाम के साथ लौटा था और यूं आज की रात इन मियां-वीवी के लिए उनके मन्सूवों की कामयावी की रात थी।

"बिल्कुल दीपक के सहयोग के वाद उसके हौसले बुलन्द थे।

हवेली पहुंचकर विजय सीधा अपनी बीबी के पास पहंचा। कामिनी ने नशीली मुस्कान कंs साथ पूछा था- "यानि कि कामयाब होकर लेटे हो।"

"विल्कुल। दीपक तो सचमुच ही त्यागी जीव निकला।" विजय हंस दिया- "वह तो पाप की दौलत से हाथ झाड़कर बहुत खुश हुआ था।"

"हे भगवान् शुक्र है कि कोई गड़बड़ नहीं हुई। यह हमारे लिए अच्छे दिनों के लक्षण हैं।"

"इधर की सुना।" विजय बोला- "इधर सब ठीक है ना।" "ठीक से भी ज्यादा ठीक है।" कामिनी बोली- "जैसा कि हमारा ख्याल था, बाबा आज अपने ही चक्करों में लगे हुए हैं। वस, एक वार मुझे बुलाकर कहा कि तुम जब जागो तो मैं तुम्हें होशियार रहने और कैदियों का ख्याल रखन को कह दु।"

विजय हंस दिया। उसे अपने बाप के सारे चक्करों का पता था। वह भली-भांति जानता था कि हर पन्द्रह-वीस दिन बाद उसके बाप के खास कमरे में क्या होता है। नवावी दिखाते थे वह। थिरकते वदन...तबले की थाप...घुंघरूओं की झंकार...जामों की खनक और मचलते यौवन की महक...। सब रात गए तक चलता था यह सिलसिला।

जमींदार रमाकांत की ऐसी ही महफिल का प्रोग्राम देवयोग से आज के ही दिन था और आज के दिन और यह रात रमाकांत को किसी और वात की सुध रहनी ही कहां थी?

महफिल जमी हुई थी-सो विजय को महफिल के खत्म होने की इन्तजार करनी पड़ी।

रात के लगभग साढ़े तीन बजे जब यह महफिल खत्म हुई और रमाकांत अपने खास कमरे से अपने वेडरूम में आकर कपड़े वदल रहा था तो विजय कमरे में दाखिल हुआ।

रमाकांत स्लिपिंग गाउन की डोरियां कसता और अपनी भद्दी आवाज में गुनगुनाता बाथरूम से निकला तो उसने विजय को कमरे में बड़े आदर से पीठ पर हाथ बाधे खड़े पाया तो एक क्षण को वह चौंका। फिर मुस्कराते हुए आगे बढ़ा और बोला-

"क्या बात है विजय? इस वक्त।"

"कुछ नहीं, बावा जी। बस जरा आपसे बात करनी थी। काफी देर से आपके फारिग (खाली) होने का इन्तजार कर रहा था। जैसे ही मालूम हुआ आप अपने कमरे मैं चले गए हैं। मैं आपसे मिलने आ गया।"

"ऐसी क्या एमरजेन्सी हो गई, सुवह आ जाते। क्या दिन नहीं निकलना था- "रमाकांत बात करने के मूड में नहीं था उसने रुखेपन से टालना चाहा।

"सुबह ही हो रही है बावा। यह कौन-सी रात है। जरा वक्त देखिये।"

comicsmylife.blogspot.in

"अच्छा, बात कर जल्दी...मुझे नींद आ रही है।" रमाकांत ने बदस्तूर रूखेपन से कहा।

"वह बाबा, दरअसल आपके दस्तख्त लेने हैं।" विजय ने साजिश की पिटारी खोली।

"दस्तख्त।" रमाकांत चौंका। उसका नशा हिरण हो गया- "वह किसलिए?"

"बाबा। यह आपके यादगार दस्तख्त होंगे। इन दस्तखतों के वाद मुझे आपके दस्तखतों की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं आपको कष्ट नहीं दूगा।"

"क्या बकवास कर रहे हो-खुलकर बक, क्या कहना चाहता है?" रमाकांत ने अपनी सुर्ख से उसे घूरा।

विजय अभी तक खड़ा हुआ था। उसके दोनो हाथ पीठ पीछे थे। उसने दोनों हाथ आगे किए। उसके हाथ में एक फाइल थी। वह फाइल लेकर आगे बढ़ा, रमाकांत अब अपनी उस कुर्सी पर बैठ चुका था जिस पर वैठकर वह इंसान नहीं रहता था। शैतान वन जाता था।

"बाबा-इन कागजात पर नजर डाल लें।" विजय ने नाटकीयता पूर्ण नम्रता के साथ कहा।

रमाकांत ने फाइल थाम ली। उसे घूरते हुए पूछा- "कैसे कागजात हैं यह?"

"भाई दीपक हक से अपने हाथ खींच क्या है। उसने दस्तख्त कर दिये हैं। दूसरा कागज आपकी 'विल' और आपकी तरफ से मुख्तियारनामा यानि पावर आफ अटार्नी है। इन पर आपको दस्तख्त करने हैं। विजय वादस्तुरू नम्रता के साथ वोला- "क्योंकि आप बूढ़े हो चुके हैं। जमीन-जायदाद का इन्तजाम सम्भालना अब आपके बस का नहीं रहा। आज के वाद वह जिम्मेवारियां मैं सम्भालूंगा।" "ओह, तो मेरे विश्वास का नाजायज फायदा उठाकर यह खेल खेला है। अच्छा हुआ कि तेरी हकीकत भी मेरे सामने आ गई। मैं तो पर अंधा विश्वास करने लगा था।"

"बाबा मेरे पास वक्त कम है। आप दया करके इस पॉवर आफ अटार्नी पर साइन कर दें...।" विजय ने फिर अनुरोध किया। रमाकांत का चेहरा दहकता अंगारा बन गया- "तूने क्या सोचा है कि तू कहेगा और मैं दस्तख्त कर दूंगा।"

"मैंने तो यही समझा था बावा। हमारी तो संस्कृति यही रही है कि बूढ़े होने पर राजा अपने राजकुमार को गद्दी पर स्वयं संन्यास ले लेते थे।" विजय यकीनन अपने बाप की बेबसी से आनन्दित हो रहा था। उसने अपनी जेब में हाथ डालकर रिवाल्वर निकाल लिया- "और फिर यह अनुरोध मे नहीं यह कर रहा है।" उसने रिवाल्वर लहराकर दिखाया-"जल्दी करें वाबा।"

"ओह!" रमाकांत के चेहरे पर घबराहट के भाव उभरे उसकी जुबान लड़खड़ा गई- "ठीक है, करता हूं। तुम यह रिवाल्वर नीची रखो। कहां है मेरा चश्मा...पैन...? वह उधर दराज में होंगे। मैं ले लूं।"

"ठीक है...विजय ने शाही अंदाज में इजाजत दे दी। रमाकांत अपनी ऊंची कुर्सी से उठा... अपने बेड के पास आया। फिर साइड टेबल की पहली दराज खोलकर झुककर अन्दर हाथ डाला। दराज के अन्दर लगे एक गुप्त बटन को तीन वार जल्दी-जल्दी दबाया, फिर उसी दराज में रखा चश्मा और पैन उठा लिया।

चश्मा व पैन लेकर वह फिर अपनी उसी ऊंची कुर्सी पर आ बैठा-जिस पर वैठकर वह इंसान नहीं रहता था।

विजय-विजयी अंदाज में अभी तक रिवाल्वर ताने था। बाप को चश्मा आंखों पर लगाकर पैन खोलते देखकर उसने रिवाल्वर अपनी जेब में डाल लिया जैसे अव कोई खतरा न रहा हो। रमाकांत ने फाइल खोलकर पूछा- "कहां करू दस्तख्त, बेटे?"

"मैं बताता हूं बाबा।" विजय खुशी से झूमता हुआ आगे बढ़ा। कामयाबी दो कदम के फासले पर खड़ी मुस्करा रही थी। तभी धाड़ से बेडरूम का दरवाजा खुला। विजय ने चौंककर पीछे मुरकर देखा तो उसके छक्के छूट गए।

वे चार थे और चौरो स्टेनगन लिए हुए थे।वे ट्रेण्ड कमांडोज की तरह आगे बड़े और पलक झपकने में विजय को घेरे में ले लिया।

रमाकांत ने पैन बन्द करके चश्मा आंखों से उतारा। उसे बड़े इत्मीनान से केस में रखा, फिर फाइल बन्द करते हुए

comicsmylife.blogspot.in

मुस्कराकर अपने पुत्र की तरफ देखा।

"अरे, तुमने तो अपना रिवाल्वर जेब में रख लिया हैं बेटे।" वह बोला- "बड़े बेवकूफ हो। खैर कोई वात नहीं, निकाल लो रिवाल्वर-लेकिन एक बात का ख्याल रखा कि तुम्हारे रिवाल्वर से एक गोली नहीं निकलेगी-इतनी देर में कम से कम सौ गोलियां तुम्हारे शरीर में पेवस्त हो जाएगी।"

विजय ने उन चारों को देखते ही जेब में हाथ डाल लिया था, लेकिन अब जेब से रिवाल्वर निकालना वेकार था। उसने अपना हाथ वाहर निकाल लिया। वह हाथ कांप रहा था। जो कुछ था, यह सब आशा के विपरीत हुआ था। घर का भेदी था, लेकिन यह नहीं जानता था कि उसके बाप ने किसी आड़े वक्त के लिए जो फोर्स रखी हुई थी-वह अब अचानक किस तरह हरकत मैं आ गई है।

पासा पलट गया था। उसका 'खुद मुख्तयारी' का ख्वाब चकनाचूर हो गया था।

रमाकांत ने वह फाइल उसके मुंह पर दे मारी। कागजात इधर-उधर बिखर गए।

"तुमने क्या समझा था कि तुम रिवाल्वर के जोर पर मुझसे पॉवर ऑफ अटर्नि । पर दस्तख्त करवा लोगे।" वह फुफकारा-"तुम शायद यह भूल गए कि मैं तुम्हारा बाप हूं। मैं बूढ़ा हो गया तो क्या हुआ-लेकिन मेरा दिमाग बूढ़ा नहीं हुआ है।"

"बाबा-मुझे माफ कर दीजिये।" विजय ने कांपती आवाज में कहा और अपने बाप के कदमों में गिरने लगा।

"नहीं...।" रमाकांत इतने जोर से चींखा कि वह कदमों में झुकता-झुकता सीधा खड़ा हुआ और फिर डरकर दो कदम पीछे हट गया।

"आस्तीन में सांप पालने का शोक नहीं है मुझे।" वह आगे बोला, उसने उन चारों में से एक को इशारा किया- "इस मनहूस को मेरे सामने से ले जाओ। अभी नींद आ रही है। इसका फैसला मैं सुबह करूगा। जाओ, ले इसे। हां, एक बात का ख्याल रखना-यह खुद को बड़ा शातिर समझता है। कोई होशियारी दिखाए तो इसके जिस्म में इतनी गोलियां उतार देना कि सांस लेना मूस्किल हो जाए।"

लफ्ज नहीं अंगारे निकल रहे थे उसके मुंह से। वह उस कुर्सी पर जो बैठा था, जिस पर वह इंसान नहीं रहता था।

"प्लीज, बाबाजी मुझे माफ कर दें...।" बिजय ने गिड़गिड़ाते हुए हाथ जोड़े।

रमाकांत ने हाथ से इशारा किया और वह कमाण्डो विजय का हाथ पकड़ उसे खींचते हुए ले गया। उनके जाने के बाद रमाकांत ने अपने कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द किया और गाउन की डोरियां खोलते हुए बेड की तरफ बढ गया।

बेड पर बैठकर उसने एक जोरदार जम्हाई ली और मुलायम कम्बल ओढ़कर पुत्सुकून अंदाज में टांगें फैला दी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

अपने हिस्से की जमीन-जायदाद अपने भाई विजय के नाम करने में दीपक को जरा भी अफसोस नहीं हुआ था।

विजय उन्हें लेकर सूरज निकलते ही दिल्ली पहुंच गया था। वह दीपक को एक परिचित वकील के यहां ले गया था। प्रेम सागर को भी साथ रखा गया था। विजय के तेवर देखकर दीपक ने खुद ही प्रेम सागर से अपने साथ रहने का अनुरोध कर डाला था। वकील ने विजय के पक्ष में विजय की इच्छानुसार कागज तैयार करवाये। विजय ने एक पॉवर आफ अटार्नी भी तैयार करा ली थी, जिस पर वह अपने बाप के दस्तख्त करवाने का खतरनाक इरादा रखता था। दीपक ने उसे यह कदम न उठाने की सलाह भी दी थी, लेकिन विजय नें उसकी सलाह हंसी में उड़ा दी थी।

"विजय, मुझे उम्मीद नहीं कि बावा, अपनी मौत के इस परवाने पर आसानी से दस्तख्त कर देंगे।" दीपक ने कहा था।
"आसानी से न किए तो मुश्किल से करेंगे। दस्तख्त तो उन्हें हर-हाल में करने पड़ेंगे। चाहे रिवाल्वर की नोंक पर ही क्यों न करें।" विजय ने हंसने हुए लेकिन दृढ़ शब्दों में कहा था।

जब कागजात तैयार होकर आ गये तो दीपक ने उस वकील के यहां ही उन पर दस्तख्त कर, सारे अधिकार विजय के नाम कर-हकीकत में ही राहत की सांस ली थी।

अब विजय ने उन दोनों को खुशी-खुशी विदा किया। वह उन दोनों को बाहर तक छोड़ने आया विजय ने प्रेम सागर से हाथ मिलाते कहा- "मिस्टर प्रम सागर-मुझे अफसोस है कि हमारे बाप की जिद पर आपको खामखाह की जहमत उठानी पड़ी। अफसोस, इस बात का है कि हमारी घरेलू दुश्मनी के चलते एक बड़े शुभ अवसर पर

यह सब कुछ हुआ। रेखा, हमारी बहन है। इस नाते से आप हमारे जीजा हुये। बधाई कबूल करो और हां, हमें अपनी शादी पर बुलाना न भूलियेगा...।"

प्रेम सागर भर दिया था।

वैसे वह अभी तक दीपक की वेवकूफी को समझ नहीं पाया था।

दीपक से भी उसने बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाया था। दीपक के इशारे पर प्रेम सागर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी थी।

"यह क्या किया तुमने दीपक...?" प्रेम सागर ने पहली बार मुह खोला था।

"प्लीज, प्रेम!" दीपक ने हाथ उठा उसे खामोश कर दिया-"यूं समझो कि मैंने जिन्दगी का सुकून खरीदा है। हम इस बारे में बाद में बातें करेंगे, बल्कि मैं तो चाहता हूं कि हम इस वारे में कोई बात न ही करें तो अच्छा है। मुझे मलाल है तो सिर्फ इस वात का कि हमसे ज्यादा परेशानी इन्द्र और रेखा को हुई होगी। कितना बुरा यह सब, यह खुद मैं ही जानता हूं।"

"ठिक है।, प्रेम सागर बोला- "अब क्या इरादा है, कहां चलें?"

"तुम तो मॉडल टाउन जाना चाहोगे।" दीपक ने पूछा। "जाना तो वहीं चाहिये।" प्रेम सागर बोला- "तुम कहो,तुम क्या चाहते हो?"

"मै मॉडल टाउन जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा।" दीपक धीमे से बोला- "क्या ऐसा नहीं हो सकता अभी तुम अकेले जाओ.. और उन्हें मेरी मजबूरियों से आगाह कर दो।"

"ठिक है।" प्रेम सागर ने सिर्फ इतना ही कहा।और फिर अंगले ही चौक पर उसने माड़ी सड़क किनारे करके रोकी और दीपक को उतार दिया।

प्रेम सागर अब दीपक के घर के हालात व इन दौलत की हवस के मारो के बारे में बहुत कुछ जान गया था। मॉडल टाउन इन्द्रजीत की कोठी की तरफ जाते हुए उसने दीपक के बारे में सोचना बन्द किया व रेखा के बारे में सोचने लगा।

प्रेम सागर जब मॉडल टाउन पहुंचा तो साढ़े बारह बजे का वक्त था।

हॉर्न की आवाज पर गेट नौकर रामू ने खोला था। प्रेम सागर गाड़ी अन्दर ले गया। एक गार्ड अन्दर अलर्ट खड़ा हुआ

comicsmylife.blogspot.in

था, लेकिन वह प्रेम सागर और उसकी गाड़ी को पहचानता था। वह इत्मीनान से खड़ा हो गया।नौकर रामू ने ही बताया था कि रेखा मेम साहब अपने कमरे में हैं।

अपने आने की इतला भिजवाने की वजाय प्रेम सागर खुद उसके कमरे तक पहुंचा। रेखा के कमरे का दरवाजा अधखुला था। प्रेम सागर ने दरवाजे पर ठिठककर एक निगाह अन्दर डाली। रेखा बेड पर सिर झुकाये उदास बैठी थी। वह किसी गहरी सोच में थी। प्रेम सागर ने दरवाजा थोड़ा और खोला-लेकिन रेखा ने निगाह उठाकर नहीं देखा।

प्रेम सागर ने दरवाजे पर धीमी-सी दस्तक दी व अपने चहकते अंदाज में बोला- "क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?"

आवाज सुनकर रेखा ने यूं ही बेख्याली में दरवाजे की तरफ देखा। उसकी दुनिया ही बदल गई। हर तरफ खुशियों के रंग बिखर गये। अरे, यह कौन आया?

वह वेअख्तयार होकर उठी और हवा के तेज झोंके की मानिन्द अपने प्रेम से जा लिपटी, पर फिर तुरन्त ही उसे अपनी इस निजता और व्यग्रता पर लज्जा आई। उसने पीछे हटना चाहा, पर प्रेम सागर ने उसे पीछे नहीं हटने दिया।

वह अब प्रेम सागर की वाहों के घेरे में जो थी।

"प्रेम, क्या हुआ था?" रेखा ने उसके सीने में मुंह छिपाते हुए पूछा- "कहां चले गए थे तुम?"

"गया नहीं था-ले जाया गया था।" प्रेम सागर चहका- "वह भी अपनी ससुराल। हमारी मंगनी थी सो ससुर-सालों का आशीर्वाद लेने चला गया था।"

"भैय्या, बता रहे थे, आपको किडनैप किया गया था और दीपक भाई भी आपके साथ थे।" रेखा, प्रेम को सकुशल देख खुश थी तो वारदात का विवरण जानने को बेचैन थी।

"हां, कुछ हुआ तो ऐसा ही था।" प्रेम लापरवाही से बोला- "पर शायद यह दुनिया का सबसे अनोखा अपहरण था। बाप ने वेटे का अपहरण करवाया था। दीपक के साथ-साथ मुझे भी हांक ले गए थे।

"बाप ने-यानि चाचा रमाकांत ने!" रेखा कुछ बदहवास हो गई-"फिर उसने आपको छोड़ कैसे दिया?"

प्रेम सागर ने उसे अपनी वांहों से मुक्त किया, हालाकि जी तो चाह रहा था किए यह यूं ही उसे अपनी बांहों में लिए खड़ा रहा-और एक कुर्सी पर बैठ गया।

"हमें तुम्हार चाचा ने नहीं, बल्कि तुम्हारे विजय नाम के भाई न मुक्त किया है। हमें यहां दिल्ली तक छोड़कर गया है। बेचारे दीपक को अपने हिस्से की जमीन-जायदाद इस विजय के नाम लिखनी पड़ी हैं।" प्रेम सागर ने जवाव दिया और फिर उसने संक्षेप में ही रेखा को सब कुछ बता दिया।

"भगवान् का शुक्र है कि बेटे की लालच की वजह से ही सही-आप उस दरिन्दे के चंगुल से बच आए हो। दीपक भाई भी आए है।"

"नहीं। वह शर्मिन्दा था कि महज उसकी वजह से हमारी मंगनी जैसा प्रोग्राम पूरा न हो सका।"

"आपका? दीपक भाई को साथ लाना चाहिये था।" रेखा बोली- "खैर, मैं भैय्या को इतला सुर! दू। आपके आने की खुशखबरी सुना हूं। वैसे वह आने ही वाले होंगे। रखा ने घड़ी पर नजर डालकर कहा।

"गंगा मौसी कहां है?" प्रेम सागर को ख्याल आया तो उसने पूछा।

"यही हैं। वह बहुत परेशान थी।"

"क्या तुमसे भी ज्यादा ।"

"हां, मुझसे भी ज्यादा।" रेखा ने शोखी से कहा और उसे गहरी निगाहों से दखकर मुस्करा दी।

फिर जैसे-जैसे प्रेम सागर के सकुशन लौट आने की सूचना मिलती गई, वैसे-वैसे लोग आते गए। शाम की चाय पर

comicsmylife.blogspot.in

सव लोग इकट्ठे हो चुके थे। मिठाई मंगवाई गई। मिठाई खाई गई।

प्रेम सागर ने नयना से खास तौर पर खेद व्यक्त किया। वह बोला- "नयना जी। मैं आपसे बहुत शर्मिन्दा हूं। मेरी वजह से आपकी मंगनी भी रुक गई।

"तो फिर क्या हुआ?" नयना लज्जाती-सी मुस्कान के साथ बोली- "न हम कही गए है न इन्द्र जीत कहीं गए हैं। फिर हो जाएगी मंगनी।

"अरे नयना! खैर ये मंगनी तो फिर हो जाएगी, लेकिन तुम जरा इन प्रेम सागर साहव से वायदा ले लो कि कहीं यह फिर खे अगुवा नहीं हो जाएंगे।" गंगा मौसी ने हंसते हुए कहा।और उनकी हंसी में दूसरों की हंसी भी शामिल थी। रात गये तक यह हंगामा जारी रहा।

रात को जव रेखा बेड पर लेटी तो वह बहुत खुश थी-वरना पिछली दो रातें तो उस पर कयामत बनकर गुजरी थी। दोनों रातें आखों में कट गई थीं और वह निरन्तर रोती रही थी और-इन्ही आंसूओं के दौरान उसे काले चिराग की याद आई थी।

मायावी दुनिया की यह रहस्यमय-हस्ती किस कदर मेहरवान थी । उसने इनकी कितनी मदद की थी। अगर वह न होता तो रेखा और इन्द्रजीत का उस मालावी रेगिस्तान से निकल पाना ही नामुमकिन हो जाना था।

रोते-रोत रेखा ने कई बार सोचा था कि क्या वह काला चिराग दोवारा उसकी मदद को नहीं आ सकता और हर बार उसके दिल व उसके दिमाग ने यही जनाव दिया था कि काले चिराग, उसकी वह दुनिया और उन हालात को एक भयावह ख्वाव समझकर भुला देना चाहिये।

आज रात वह विस्तर पर लेटी तो उसके अंग-अंग से फूट रही थी। अब जबकि प्रेम सागर उसके दरिन्दे चाचा...के फन्दे से सकुशल निकल आया था, तो न जाने क्यों यह ख्याल, रेखा के जहन में उभरा था कि इस रिहाई में कहीं-न-कहीं काले चिराग का हाथ है।

यह ख्याल उसे क्यों आया? इस दारे में वह कुछ नहीं जानती थी।

इन्हीं ख्यालों मे गुम रेखा ने जव करयट बदली तो उसकी नजरें साइड टेवल पर रखे नाजुक से फूलदान में सजी उस गुलाब की कली पर पड़ी जो उसे मायावी लोक, के रासमोन ने भेंट दी थी। वह कली पूरी तरह तरोताजा थी और खुवू महक रही थी।

रेखा उस कली का निहारने लगी-और देखते-ही-देखते उसकी आंखें वन्द हो गई।

और फिर वह गहरी नींद की आगोश में थी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

रेखा, सुबह जब नाश्ते की मेज पर पहुंची तो उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। रात को वह जितनी खुश थी, इस वक्त वह उतनी ही...बल्कि उससे ज्यादा परेशान थी। इन्द्रजीत ने उसका चेहरा देखा तो वह खुद भी परेशान हो गया। यही हाल गंगा मौसी का हुआ।

"क्या हुआ रेखा?" इन्द्रजीत ने पूछा।

"भैय्या! रात को मैने दादा हरिओम को सपने में देखा है। "अरे, दादा हरिओम को!" गंगा मौसी उनका नाम सुनते ही चिन्तित हो गई- "क्या कह रहे थे वह?"

"मौसी, वह एक पेड़ के नीचे बैठे थे। जब मैं उनके सामने पहुंची तो उन्होंने मुझे देखते ही कहा।" अरे, उस मनहूस को निकाल घर से वरना नुकसान उठाएगी।" और फिर इससे पहले कि मैं उस मनहूस का नाम उनसे पूछती कि अचानक एक वहुत बड़ा रीछ कहीं से प्रगट हुआ और मेरी तरफ लपका। मैं उसे देखकर चींखी और भागी। ठोकर लगी-और तभी मेरी आख खुल गई।" रेखा ने बताया और फिर इन्द्र की तरफ देखते हुए बोली- "भगवान् रहम करें, भैय्या जरूर कुछ होने वाला है।"

"अरे, कुछ नहीं होगा रेखा। तू परेशान न हो।" इन्द्रजीत नें तसल्ली दी, लेकिन यह झूठी तसल्ली थी। हकीकत में वह खुद अन्दर से सहम गया था।

"नहीं भैथ्या। जरूर कोई गड़बड़ है।" रेखा चिन्तित-सी बोली- "मेरी समझ में नहीं आ रहा कि हमारे घर में ऐसी मनहूस कौन-सी चीज है जिसे निकाला जाए। वह कमबख्त रीछ जाने कहा तो आ गया, वरना मैं दादा से उस चीज का नाम जरूर पूछ लेती।" "ओह, हां!" इन्द्रजीत का मुंह खुला-का-खुला रह गया। जैसे उसकी समझ में कुछ आ गया हो।

"आपको क्या हुआ?" रेखा चौंकी।

"तुम यह बता, तुम पर रीछ झपटा था ना।" इन्द्रजीत ने तस्वीक चाही।

"जी...उसकी वजह से ही तो बात अधूरी रह गई।"

"वात मेरी समझ में आ गई।" इन्द्र सिर हिलाते हुए बोला- "मैं अभी आता हूं।" यह कहकर वह तुरन्त उठ गया। वह तेजी से चलता हुआ अपने कमरे में पहुचा। उसने अपने बेड की साइड टेबल पर एक प्लेट में वह खुला हुआ चाकू रखा हुआ था जो कटारी ने उस पर फेंका था। यह चाकू राजू मदारी का था और राजू मदारी के शरीर पर इस कद्र बाल थे कि वह इंसान कम ज्यादा लगता था। दादा हरिओम ने सपने में जो इशारे दियेथे यकीनन इस चाकू की ही निशानदेही कर रहे थे।

इन्द्रजीत ने उस चाकू को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उस पर नजर पड़ते ही उसका हाथ खुद-व-खुद रुक गया। चाकू के चमकते फल पर ताजा-ताजा खून लगा हुआ था-जैसे उससे अभी-अभी किसी को जिबह किया गया हो।

इन्द्रजीत ने रामू को पुकारा- "रामू जल्दी आओ।"

रामू डायनिंग टेबल के निकट खड़ा था-वह आवाज सुनते ही भागा-भागा आया।

"जी साहब!"

"इन्द्र क्या हुआ?" गंगा मौसी और रेखा भी उसके पीछे-पीछे आ गई थी।

"रामू! तुमने इस चाकू से कोई मुर्गी-बुर्गी तो जिबह नहीं की?"

इन्द्रजीत ने चाकू की तरफ इशारा किया। रात रामू ने चिकन-बिरयानी वनाई थी और वह इसके लिए मुर्गी लाकर खुद जिबह किया करता था।

"नहीं, साहब जी।" रामू ने चाकू को घूरते हुए जवाब दिया- "किचन में दूसरे चाकू है ना जी।"

comicsmylife.blogspot.in

"फिर इस पर यह खून केते लग गया?"

"खून!" गंगा मौसी सहमकर दो कदम पीछे हट गई। रेखा ने दो कदम आगे बढकर बाबू को देखा-

"हां, वाकई इस पर तो खून लगा हुआ है-यह खून कैसे लगा?" वह भी रामू को लगी।

"मुझे नहीं मालूम।" ने साफ शब्दों में कहा।

"रामू इसे प्लेट सहित यहा उठाकर ले जाओ और इसे धोकर पास अपने कमरे में रख लो।" इन्द्र बोला।

"जी ठीक है साहब जी।" यह कहकर उसने प्लेट उठाई और उस खुल-अछूता चाकू को गौर से देखता हुआ बाहर निकल गया। "मुझ यूं लगता है जैसे दादा हरिओम का इशारा इस चाकू की तरफ ही हो।" इन्द्र बोला।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।" रेखा ने सहमति जताई- "इस मनहूस नाक के अलावा हमारे घर में कुछ और है भी नहीं, लेकिन आपने उस क्यों दे दिया। इसे कही वाहर क्यों नहीं फिंकवा दिया। "एक रात और देखना चाहता हूं।" इन्द्र ने जवाव दिया। वे वातें करते हुए नाश्ते की मेज पर आ गए।

बैठे-विठाये यह एक और मुसीवत गले पड़ गई थी। दादा हरिओम ने भी कोई बात खुलकर नहीं कही थी। हालांकि ऐसा कभी नहीं आ था। वह जब भी सपने में नजर आए थे-उन्होंने हर वात बड़े विस्तार से समझाई थी। अब पता नहीं उन्होंने इस चाकू को मनहूस करार दिया था या घर में कोई और चीज थी जिस पर अब तक उनकी नजर नहीं पड़ी थी।

पर फिर यह मामला ज्यादा देर तक पहेली न रहा। दोपहर खाना खाने के बाद, रेखा इन्हीं सोचों के साथ जरा दो के लिए लेटी तो उसकी आंख लग गई और सपने में उसने फिर दादा हरिओम को देखा।

दादा हरिओम एक पेड़ तले बैठे हुए थे। यह कोई हरा-भरा वाग था। ठण्डी हवा चल रही थी। रेखा भी उस बाग में टहलती हुई वहां जा निकली थी-जहां दादा बैठे थे।

रेखा को देखते ही दादा ने उसे डांटा- "अरी-दिमाग नाम की चीज भी हैं तुम्हारी खोपड़ी में या नहीं। उस मनहूस को निकालो

घर से-नही तो खून की नदियां वह जायेंगी।"

"दादा क्या आपका इशारा उस चाक्रू की तरफ है?" रेखा ने तुरन्त पूछा।

"हां, उसे फौरन घर से बाहर निकालो।"

"पर दादा, करे क्या उसका? उसे तोड़कर फेंक दें या किसी नदी-नाले में फेंक दे?" रेखा ने पूछा।

"उसे शीघ्र-अति-शीघ्र किसी कब में फिकवा दो और यह काम खुद इन्द्रजीत करे।" दादा ने की।

रेखा के पूछने पर उन्होंने बताया कि चाकू पर क्या पढ़कर फूंकना और कब्र में उसे किस तरह डालना है?

तभी रेखा के कानों में रेखा-रेखा की आवाजें आने लगीं। कोई उसे उठा रहा था। रेखा की अखि एकदम खुल गई। उसके सामने गंगा मौसी खड़ी थी।

"ओह, आप मौसी! क्या बात है?" रेखा ने खुद को सम्भालते हुए पूछा।

"वह प्रेम सागर आए हैं।" मौसी ने बताया- ड्राइंगरूम मँ बैठे हैं।"

रेखा पलंग से उत्तरी, वोली- "और क्या भैय्या भी घर में हैं?" "हां-प्रेम के साथ ही वह भी वैठक में है।"

comicsmylife.blogspot.in

"मौसी।" रेखा ने वेतावी से बताया- "दादा जी को मैंने फिर सपने में देखा है।"

"अच्छा! कुछ मसला हल हुआ?"

"हां-सारी बात डिटेल से हो गई।" रेखा ने जवाब दिया और सब कुछ मौसी को सुना दिया।

मौसी ने भगवान् का शुक्रिया अदा किया- कि यह समस्या हल हो गई। अब दस चाकू को किसी कब्र के सुपूर्द करना था।

रेखा, मौसी के साथ बैठक में पहुंची। प्रम सागर को नमस्ते कह वह इन्द्र के साथ वैठ गई और फिर उन्हें भी सपने में दादा से मिली हिदायत कह सुनाई।

इन अविश्वसनीय शक्तियों के वारे में ही बातें करते हुए उन्हौने चाय दी और फिर इन्द्रजीत और प्रेम सागर, दादा की हिदायत का पालन करने के लिए कब्रिस्तान जाने के लिए निकल लिए। प्रेम सागर घर के एक सदस्य की तरह ही इन हालात में दिलचस्पी ले रहा था।

वे मधुरा रोड स्थित पुराने कब्रिस्तान में पहुंचे। बाबू इन्द्र के पास था। काफी तलाश के बाद उन्हें अंतत: टूटी कब नजर आई। इस कब में काफी बड़ा सुराख था। इन्द्र या सागर ने इस कव्र में झांकने की कोशिश नहीं की थी।

इन्द्रजीत ने दादा हरिओम कां हिदायत के मुताबिक मंत्र पढ़कर उस चक्र पर फूंका और उसे वन्द करके अपनी मुट्ठी मे जकड़ा, फिर उसने पर बैठकर अपना हाथ कव्र में डाला और चाकू हाथ से छोड़ दिया।

इसके साथ ही वह फौरन पीछे हट गया था।

चाकू के कब्र में गिरते ही सुराख से -पुर का एक चक्रवात-सा निकला ओर हवा में लीन होता चला गया।

इस काम को निपटा वे कब्रिस्तान से निकले न फिर गाड़ी में बैठकर रेस्तरां की तरफ चले गए।

रेस्तरां में पहुंचकर इन्द्रजीत ने कोठी फोन करके रेखा को यह सूचना दे दी कि उसने चाकू को ठीक दादा की हिदायत के अनुसार कब्र में दफनाने का काम सम्पन्न कर दिया है।

रेखा ने यह सुनकर रहित की सांस ली थी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

जमींदार रमाकांत अपनी ऊंची कुर्सी पर बड़ी शान से बैठा था।

उसकी गर्दन अकड़ी हुई थी। कमर अकड़ी हुई थी। पूरा शरीर अकड़ा हुआ था। पूछे तनी हुई थीं। हाथ में छड़ी थी। हाथ सीधा तना हुआ था। मतलब यह कि उसकी कोई चीज ऐसी न थी जिसमें तनाव न हो, अकड़ाव न हो और ऐसा क्यों न होता, वह उस कुर्सी पर बैठा हुआ था जिस पर बैठकर वह इंसान नहीं रहता था। उसके निकट ही एक नौकर सिर झुकाए, हाथ बांधे खड़ा था। कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। कुछ देर बाद एक और नौकर वड़े आदर से चलता हुआ अन्दा आया व उसके निकट आ सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"क्या खबर लाए हो?" रमाकांत ने अपनी भारी आवाज मे पूछा।

"सरकार वह सपेरा आया है-लाल मोती। नौकर ने जवाव दिया।

"ओह, क्या बेहूदा और बेवकूफाना नाम रखा हुआ है अपना उसने? बुलाआ उसे।"

"जी।" नौकर उल्टे कदमों चलता कमरे से वाहर निकल गया। और फिर कुछ ही क्षणों बाद वह वापिस आया तो अकेला नहीं था। उसके साथ ही एक और व्यक्ति भी था-जो बड़ी लापरवाह चाल चलता हुआ अन्दर आया था।

रमाकांत ने गौर से उसका चेहरा देखा। वह खासे लम्बे कद का एक सांवले रंग का व्यक्ति था। बाल बड़े-बड़े और कन्धों पर फेले हुए। एक कान मे बाली। एक हाथ में लोहे का कंगन। स्याह कपड़े। हाथ में बीन। कन्धे पर झोली। यह 'लाल मोती' था। सपेरे लाल मोती ने अपने कन्धे से झोली उतारकर जीन पर रखनी चाही-मगर रमाकांत ने उसे हाथ के इशारे से रोक दिया।

"तुम्हारी बात हो गई?" रमाकांत ने पूछा।

"हा,जी। मेरी वात हो गई।" लाल मोती ने जवाव दिया। "तुमने सारी वात अच्छी तरह समझ ली।"

"हां, जी। मैंने सारी वात अच्छी तरह समझ ली।"

"तो फिर जाओ...।" रमाकांत ने उसकी चमकती काली आखों में झाका- "और देखो, काम होशियारी से करना। किसी किस्म की गलती तुम्हें भारी पड़ सकती है। मैं गलती माफ करने का आदी नहीं नहीं बात का खास ख्याल रखना।"

"लाल कहिके से आज तक कोई गलती नहीं हुई है...आज भी कोई गलती नहीं होगी।"

"ठीक है, तो जाओ।"

वह नौकर और 'लाल मोती' कमरे से बाहर निकल गए।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

विजय को आज तीन दिन बाद तहखाने से बाहर लाया गया। इन तीन दिनों में उसके साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं हुआ था। वक्त पर उम्दा खाना-चाय-पानी-किसी चीज की कोई कमी नहीं रखी गई थी। हां, यह काल कोठरी जैसी कैद जरूर थी।

विजय की चिन्ता व खौफ हर बीतते क्षण के साथ बढ़ता ही रहा था। वह अपने वाप को अच्छी तरह जानता था। उसके दरिन्दे बाप ने किसी को माफ करना तो सीखा ही नहीं था-फिर विजय ने तो उसको रिवाल्वर दिखाया था। कागजात पर दस्तख्त कराने के वाद उसे मार डालने का इरादा भी रखता था। अब जाने उसका बाप उसको क्या सजा दे?

आज तीसरे दिन का सूरज, विजय के लिए 'ब्लैक वारंट' लेकर निकला था!

दो हथियारबंद शख्त तहखाने में उतरे। विजय को बाहर चलने का इशारा किया।

विजय खामोशी से सीढ़ियां चढ़ते हुए तहखाने से बाहर आ गया। फिर उसे जीप में बैठकर हवेली गेट पर ले जाया गया। गेट पर एक घोड़ा कसा हुआ तैयार खड़ा था। एक रिवाल्वरधारी ने विजय को घोड़े पर सवार होने का इशारा किया। विजय जब घोड़े पर सवार हो गया तो उस शख्त ने कहा-

"बड़े सरकार, बूढ़े बरगद के पेड़ के नीचे घोड़े पर सवार आपके प्रतीक्षक है। शायद आपके शिकार पर ले जाना चाहते है।"

"अच्छा ।" विजय घोड़े पर सवार हो गया, पर बाप का यह कदम उसको उलझन में डाल गया था।

"एक वात का और ख्याल रखियेगा छोटे सरकार! सीधे हे बरगद की तरफ ही जाइएगा। अगर इधर-उधर भटकने की कोशिश की तो भटक नहीं पायेंगे-हर तरफ शिकारी कुत्ते मौजूद हैं।" विजय की मुंडी हिली, उसने कहा- "जानता हू।"

"तो फिर जाइये, छोटे सरकार प्रणाम !"

विजय ने फौरन घोड़े को पैर लगाई और बूढे बरगद की तरफ चल दिया। यह दे ला बरगद हवेली से कोई एक के फासले पर था। इस वरगद चारो तरफ खेत-ही-खेत थे।

विजय जव एक पगडण्डी पर अपना घोड़ा दौड़ा रहा था-तो काले कपड़े पहने एक लम्बे कद का शस्त्र-जिसके हाथ में वीन थी-अचानक खेतों से निकलकर उसके सामने आ गया। यह सपेरा उसे हाथ उठाकर रुकने का इशारा कर रहा था।

विजय ने लगाम खींची। यह शख्स उसके लिए कतई अजनवी था। उसके काले कपड़ों व हाथ में वीन होने की वजह से ही अनुमान लग सका कि वह कोई सपेरा है।

विजय उसके निकट पहंचा तो, सपेरे ने उसे इशारे से ही घोड़े से उतरने को कहा। विजय घोड़े से कूद आया। सपेरे ने उसका हाथ पकड़ा व उसे खेतों में खींचता हुआ ले गया।

और फिर थोड़ी देर वाद-जब सपेरा खेतों से निकला तो विजय उसके साथ नहीं था-वो खेत में वेसुध पड़ा था। वह लाल मोती था। लाल मोती, अपनी झोली कंधे पर डाले व वीन हाथ में लिए-खेतों से निकलकर पगडण्डी पर आया तो दो घुड़सवार उसके पास आकर रुक गये।

"क्या हुआ?" उनमें से एक ने पूछा।

"वह सामने खेत में उसकी लाश पड़ी है। जाकर बड़े सरकार को इतता कर दो।"

"ठीक है, अब तुम फौरन बूढ़े बरगद के नीचे। वहां एक जीप खड़ी है जो तुम्हें तुम्हारे ठिकाने तक पहुंचा।

लाल मोती बूढ़े बरगद की तरफ बढ़ गया। वे दोनों घुड़सवार जव एक नजर विजय की लाश पर डालकर हवेली की तरफ लौट गर! तो लाल मोती वही निकट ही एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।कुछ देर बीती-फिर एक सूमो खेतों को

comicsmylife.blogspot.in

रौधती हुई उस खेत के निकट आकर रुकी। गाड़ी से रमाकांत बाहर निकला। उसने एक नजर अपने पीछे डाली तो उसे सावनपुर के लोग दौड़कर अपनी तरफ आते दिखाई दिये। वे विजय को सांप द्वारा काटे जाने की खबर सुनकर दौड़ आए थे। अच्छा-खासा हजूम था जो दौड़ा चला आ रहा था।

रमाकांत ने इत्मीनान का सांस लिया और उस खेत में दाखिल हो गया। जहां विजय की लाश पड़ी थी और अभी ड्रामेबाज रामकांत ने- मेरे बेटे कहकर रोना-पीटना शुरू ही किया था कि वह लाश बड़ी फुर्ती से उठकर खड़ी हो गई। इस लाश के हाथ में एक चमकती हुई कुन्हाड़ी थी।

अपने वेटे विजय को जीवित और उसके हाथ में चमकती हुई तेज धार वाली कुल्हाड़ी देखकर रमाकांत की सिट्टी गुम हो गई। वह तो बड़ा खुश-खुश-लम्बे-लम्बे डग भरता खेत में था और वस इस ड्रामे का आखिरी सीन रह गया था और इस सीन उसने के लोगों के सामने पेश करके अपनी करस्तानी की दाद लेनी थी, लेकिन यहां तो मामला ही उल्टा हो गया थी।

रमाकांत ने बड़ी सूझ-बूझ की साजिश रची थी।

पर हुआ यह था कि सपेरे न ही रमाकांत की उम्मीदों पर पानी फेर दिया था। लाल मोती ने विजय को सव कुछ साफ-साफ बता दिया था कि अभी कछ देर बाद यहां क्या ड्रामा होने वाला है। विजय को अपनी हत्या की योजना के रहस्योद्धाटन पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ था। वह अच्छी तरह जानता था कि उसका दरिन्दा हिंसक प्रवृत्ति का बाप उसे कभी जिन्दा नहीं छोड़ेगा और कत्त भी इस तरह करेगा कि साफ बचकर निकल जाएगा।

विजय को हैरत तो इस वात पर हुई थी कि इस सपेरे ने एक भारी रकम लेकर क्यों पला खाया। उसने उसके बाप की साजिश का भेद उसके सामने क्यों खोला?

और वह सपेरे से पूछे बिना नहीं रह सका था- "योगी, एक वात बता। मेरे बाप ने जो कुछ किया, मेरी निगाह में ठीक ही किया, लेकिन तूने रुपया लेने के वावजूद वादा खिलाफी की। इसकी क्या वजह है?"

वह काले कपड़े वाला सपेरा उसका सवाल सुनकर मुस्कराया-उसकी मुस्कान बड़ी आकर्षक थी-वह बोला-

"चौधरी विजय! पहली बात तो यह है कि मैं वो सपेरा नहीं हूं जिसने रकम वसूल की वो सपेरा तो अपनी झोंपड़ी में मरा पड़ा है। वैसे भी तुम्हारे वाप ने तुम्हारी मौत के वाद उसे मरवा देना था।रह गई यह वात कि मैंने तुम्हे तुम्हारे बाप की इस साजिश से क्यों आगाह किया तो इसके पीछे एक राज है। मैं वह नहीं हूं जो तुम्हें नजर आ रहा हूं। नहीं...कोई सवाल मत करो। वक्त बहुत कम हैं... मेरे पास भी और तुम्हारे पास भी! यह कुल्हाड़ी पकड़ा और इसके ऊपर लेट जाओ। जव हुम्हारा बाप तुम्हारी लाश पर रोने आये तो लाठी की तरह सीधे खड़े जाना। अगर तुम वार करने से एक क्षण को भी चूक गये तो समझ सकते हो क्या होगा? बाप के पास जर्मन रिवाल्वर रहता है जिसे निकालने में उस देर नहीं लगनी। लो यह कुन्हाड़ी पकड़ो-खुद जिन्दा रहना चाहते हो तो उस दरिन्दे के जितने भी टुकड़े किए जा सकें, कर देना।"

इसके वाद विजय ने उस 'काले कपड़े' वाले से कोई सवाल नहीं किया। अब किसी सवाल की कोई गुंजाइश भी नहीं रही थी। उसने कुल्हाड़ी जमीन पर डाली और उस पर लेटकर उसे अपने शरीर के नीचे छिपा लिया था।

रमाकांत जिस सूमो में यहां तक पहुंचा था-उसे उसका दूसरा वेटा सूरज ड्राइव कर रहा था। वह कत्ल रात ही चण्डीगढ़ से लौट आया था। उसे पार्टी का टिकट नहीं मिल सका था और फिर उसे हवेली वापिस पहुंचकर एक नई ही कहानी सुनने को मिली और जो रंज उसे टिकट न मिलने पर हुआ था, वह रज एकदम ही खुशी में वदल गया था, क्योंकि अब भविष्य में सावनपुर का सब-कुछ उसका ही होने वाला था और एक बार घना सेठो की जमात मे नाम लिखे जाने के वाद उसे हर छोटी-बड़ी पार्टी ने टिकट दे देना था।

सूरज, रमाकांत के पीछे ही मृत्यु! से उतरा। वह अपने बाप से दस-पन्द्रह कदम ही पीछे था। उसक दिल में भी लददू फूट रहे थे। बस, अव कलाई मेक्स रह गया था।

कुछ देर वाद ही, हाथपर के लोग अपने छोटे सरकार की लाश देखेंगे-जिसे किसी बहद जहरीले सांप ने डंस लिया था। छोटे सरकार घोड़े पर सवार होकर अपनी जागीर की सैर को निकले थे कि एक खेत में उस अय्याश शख्त ने एक लड़की देखी और वह घोड़े से उतरकर उस लड़की के पिछे गये। खेतो मे काला सांप मौजूद था-उसने उन्हें डंस लिया

comicsmylife.blogspot.in

और एक मासूम कुंवारी की इज्जत बच गई।

छोटे सरकार यानि विजय की मौत की यह कहानी गढ़ी गई थी। इस ड्रामे का हर पात्र अपनी जगह तैयार था और अपनी बारी आने पर अपना रोल निभाने व डायलॉग बोलने का प्रतीक्षक था। लेकिन यहां तो बिसात ही उल्ट गई थी।

वह काले लिबास वाला सपेरा विसात को उल्ट गया था। औंधे पड़े विजय के कानों में अभी 'मेरे बेटे' की आवाज आई थी कि वह उछलकर खड़ा हो गया और फिर उसने एक भी क्षण गंवाये बिना, कुल्हारी तलवार की तरह घुमाई। बूढ़े रमाकांत का घमण्डी सिर तन स जुदा होकर जमीन पर जा पड़ा। फिर बिना सिर का धड़ भी किसी शहतीर की तरह धड़म से जमीन पर आ पड़ा। विजय पर जुनून सवार हो गया था। उसने तेज से अपने बाप के शरीर को लकड़ी तरह फाड़कर रख। सुरज जब खेत में दाखिल हुआ तो अपने भाई विजय को जीवित देंखकर उसके जिस्म में सनसनी फैल गई। वह खून में नहाया हुआ था और पागलों की तरह कुल्हाड़ी बरसा रहा था। सूरज ने फौरन रिवाल्वर निकाल लिया ओर इसस पहले कि विजय उसकी तरफ आकर्षित होता, उसने रिवाल्वर को तमाम गोलियां विजय के सिर व पीठ में खाली कर दी।

विजय अपने ऊपर गोली चलाने वाले को न देख सका। वह अपने वाप की लाश के टुकड़ों पर गिरा। उसकी आत्मा भी उसके शरीर को छोड़ गई थी।

इमली के घने पेड़ पर बैठा वह काले लिवास वाला सपेरा-इस दृश्य को देखकर मुस्कराया। अंतत: जुल्म अपने अंत को पहुंचा। हर जुल्म की एक हद होती है। जव वह हद से निकला है तो मिट जाता है। दो जालिम दरिन्दे मारे गये थे। बस एक जालिम बाकी वचा था और उसका भी अंत दूर नहीं था।

वह काले लिबास वाला सपेरा 'लाल मोती' पेड़ पर एक खाली पिंजरा लिये बैठा था। जैसे ही सूरज ने अपने भाई विजय का शरीर छलनी किया-उसने खाली पिंजरे का बड़ा-सा दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलना था कि पंखों की फड़फड़ाहट शुरू हो गई। उस खाली पिंजरे म बड़े-बड़े उल्लू निकलकर हवा में-उड़ने लगे। देखते-ही-देखते बेशुमार उल्लूओं उस खेत को अपने घेरे में ले लिया।

इन उल्लूओं को देखकर सूरज की सिट्टी गुम हो गई थी। वह भागकर अपनी सूमों में पहुंचा और शीशे चढ़ाकर बौठ गया। सावनपुर के लोग जो अब नजदीक आ गये थे, वे भी पीछे ही रुक गय थे। उन उड़ते हुए उन्तुओं ने हर व्यक्ति को हैरत में डाल दिया था। फिर इन आश्चर्यचकित लोगों व सूरज ने बड़ा ही भयानक व अजीब मंजर देखा।

वे उल्लू रमाकांत के टुकड़े-टुकड़े हुये बदम पर झपटे और उसके विभिन्न अंगों को अपने पंजों में दबाकर उड़ने लगे। ये उल्लू खासे विशालकाय थे। रमाकांत की लाश के टुकड़े लेकर उड़ना उनक लिए कठिन काम नहीं था।

सूरज ने एक उल्लू को अपने बाप के सिर को पंजों में दवाये उड़ते देखा। इस उल्लू का रुख हवेली की तरफ था। सूरज ने उसे कुछ दूर तक उड़ते देखा, फिर वह अचानक नजरों से ओझल हो गया।यही हाल उल्लूओं का भी था।

वे जिस तेजी से प्रगट हुए थे-उसी तेजी से गायब हो गये। उल्लूओ के गायब हो जाने के बाद सूरज सूमों से उतरा। नीचे उतरकर चारों तरफ देखा। अब दूर तक कोई भी उल्लू उड़ता हुआ नजर नहीं आ रहा था।

सूरज भागकर खेत में पड़ा। उसके भाई विजय की लाश मौजूद थी, लेकिन उन उल्लूओं उसका हाल कुछ इस तरह कर दिया था कि वह पहचानी नही जा रही थी-और उसके बाप रमाकांत के जिस्म का एक टुकड़ा भी जमीन पर मौजूद नहीं था। वे गिद्धुनुमा' उल्लू उसके अंगों को जाने कहां ले उड़ गये थे।

और घनी इमली पर वैठा वह काले लिवास वाला 'लाल मोती' भी अपनी जगह से गायव हो चुका था।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

दीपक इस शाम जल्दी ही लौट आया था।

वह प्राय: 'इवनिंग शो' शुरू करवाने के बाद ही अपने सिनेमा से घर लौटता था, पर आज उसकी तबियत सुबहू से ही भारी थी, सो यह शाम होते ही वापिस लौट आया था।

घर पहुंचकर उसने सीधा अपने वेडरूम का रुख किया था और कपड़े वदले विना ही बिस्तर के हवाले हो गया था।

बंगले में उसके हाथ, उसके अलावा सिर्फ एक नौकर विशन ही रहता था। दीपक को निढाल देखकर उसने चिन्तित स्वर में पूछा- "सर जी, आपकी तबियत तो ठीक है ना?"

"नहीं, विशन! कुछ गड़बड़ है। तुम ऐसा करो चाय बना लाओ।"

"ठीक है सर जी!" यह कहकर विशन मुड़ा ही था कि तभी कॉलवेल बजी।

"विशन देखना तो कौन है दरवाजे पर?" दीपक ने सीधा होकर लेटते हुए कहा।

विशन थोड़ी देर बाद ही लौटकर अन्दर आया। उसने वताया- "सर जी! बाहर गाड़ी में एक बीबी जी बैठी हैं। कहती हैं सावनपुर से आई हैं और अपना नाम कामिनी बताती हैं ।" "कामिनी।" दीपक बिस्तर से कुछ इस तरह उठा-जैसे उसे किसी बिच्छू ने काट लिया हो।

वह तेजी से चलता हुआ बाहर। गाड़ी में वाकई विजय की पत्नी कामिनी ही थी। वह दीपक को देखकर नीचे उतर आई। "कामिनी क्या हुआ कुशलता तो है।"

"कुशलता कहां भैय्या। हमारा सव बर्बाद हो गया।" यह कहकर वह वेअख्तयार ही दीपक से लिपट गइ और विलख-बिलखकर रोने लगी।

दीपक ने बड़ी मुस्किल से उसे अपने से अलग किया और उसे सहारा देकर अपने कमरे में ले गया। विशन, कामिनी के लिए पानी का गिलास ले आया था।

"हां, कामिनी क्या हुआ?" दीपक ने धड़कते दिल से पूछा। कामिनी ने फिर रोना कर दिया। वह विलख-बिलखकर रो रही थी और अपना सीना भी पीट रही थी। दीपक ने उसके हाथ में बड़ी मुश्किल से पानी का गिलास थमाया और बोला-

को सम्भालो कामिनी पानी पी लो।"

कामिनी ने बड़ी मुश्किल से पानी पिया-बड़ी मुश्किल से खुद को सम्भाला। मुश्किल से चुप हुई।

वह बड़ी अवसरवादी ओर शातिर चीज थी। ससुर और पति की मौत के बाद हवेली में सिर्फ सूरज वचा था। सूरज की बीवी से कामिनी की बनती नहीं थी। मौजूदा हालात में, जमीन-जायदाद सारी-की-सारी ने हड़प कर जानी थी।

शातिर कामीनी ने दीपक को परख लिया था। जानती थी दीपक एक नेकदिल इंसान था...लालच, स्वार्थ व हवस से कोसों दूर...। अब यह दीपक ही उसे इन्साफ दिला सकता था। हालांकि उसके पति विजय ने दीपक को अपने हक में 'अधिकार-पत्र' लिखने को मजबूर कर दिया था। बड़ी ज्यादती दिखाई थी, पर इस पर भी कामिनी को विश्वास था कि वह जव आंसू बहाती दीपक के कदमों में गिरेगी तो दीपक उसे माफ कर देगा।

कामिनी इसीलिए सीधे दिल्ली आई थी। वह अपना दु:ख बयान करके दीपक की हमदर्दी समेट लेना चाहती थी।और आ भी यहीं।

कामिनी अपना ममेबाजी से दीपक की हमदर्दी बटोरने में कामयाब रही।

सावनपुर से वह एक बड़ी और बुरी खबर लेकर आई थी।दीपक का वाप और भाई दोनों एक साथ चल वसे थे। यह एक पागल कर देने वाला हादसा था, लेकिन दीपक ने जब इस बारे में सुना तो उसके चेहरे से जरा भी दु:ख जाहिर नहीं हुआ।

comicsmylife.blogspot.in

दो दरिन्दे अपने ही हाथों मारे गये थे। हालांकि बाप-भाई थे, पर दीपक ने मुद्दतों पहले इन रिश्तों की चिंता जला दी थी। वे किसी कें बाप-भाई न थे। पैसा उनका वाप और जायदाद उनका भाई था। ऐसे लोगों की मौत पर तो दिखावे के दो आंसू बहाना भी बेकार था।

कामिनी हालांकि अकेली वापिस जाने को तैयार नहीं थी-वह दीपक का अपने साथ ले जाना चाहती थी-लेकिन दीपक ने झूठे दिलासे देकर उसी रात रवाना कर दिया। कामिनी के

के वाद दीपक अपने बेडरूम मे आ गया और बेड पर बैठकर उसने मॉडल टाउन इन्द्रजीत को फोन किया। उधर घंटी वजनी हुई तो दीपक ने वाल-क्लाक पर नजर डाली। रात को नौ बजे थे। तीसरी घंटी के बाद उधर किसी ने रिसीवर उठाया। कॉल नौकर रामू ने रिसीव की थी।

"हा रामू।" मैं दीपक वोल रहा हूं।" दीपक बोला- "सब लोग कहां हैं?"

"नमस्कार साहव जी। " नौकर आदर से बोला, फिर उसने बताया- "सव लोग खाना खा रहे हैं, साहव जी। आप होल्ड कीजिए, मैं जाकर बताता हूं।"

"ठहरो रामू मेरी वात ध्यान से सुनो। मैं फोन बन्द कर रहा हू। आंधे घंटा बाद फिर फोन करूगा। मेरी कॉल के बारे में उन्हें तुम्हें अभी कुछ नहीं बताना है। मेरी बात समझ गए ना।" "जी साहब जी। समझ गया जी।"

रामू ने खाने के दौरान तो न वताया, लेकिन जैसे ही वे लोग खाने से हुए तो उसने रेखा को दीपक की कॉल के बारे में बता दिया। फोरन फोन की तरफ बढ़ी। उसने दीपक का नम्बर लगाया और फिर सम्बन्ध स्थापित होने पर बोली-

"आपने फोन किया था, भैंय्या।"

"जी, किया तो था।" दीपक धीरे से वोला।

"रामू को मना क्यों किया था? आखिर आप ऐसा तकल्लुफ क्यों दिखाते हैं? क्या हम खाना छोड़कर आपका फोन नहीं सुन सकते?" रेखा के लहजे में शिकायत थी।

दीपक ने उसकी उानसुनी-सी करते हुए कहा- "रेखा, एक खबर सुनो। तुम्हारे बाप का कातिल इस दनिया से उठ गया है।" दीपक का स्वर एकदम भावहीन था।

"यह क्या कह रहे हैं आप?" रेखा का दिल धड़कने लगा। "और इन्द्रजीत के कत्ल की साजिश में शरीक विजय भी चल बसा।" दीपक ने आगे बताया।

"दीपक भैय्या मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रहे हैं। आप होल्ड रखें, मै इन्द्र भैय्या को बुलाती हूं।" रेखा बदहवास हो रही थी।

और फिर जब दीपक ने इन्द्रजीत को सब-कुछ खुलकर कह सुनाया तो इन्द्रजीत ने फौरन कहा- "दीपक, मैं अभी तुम्हारे पास आ रहा हूं।"

इतना कहकर इन्द्रजीत ने सम्बन्ध विच्छेद कर लिए। रिसीवर रख वह कुछ देर सोचता रहा और फिर उसने रिसीवर उठाकर बलदेव अंकल के नम्बर डायल किये। सावनपुर की खबरें सुन इन्द्रजीत का दिमाग चकरा रहा था।

अंकल बलदेव को उसने सारा वाकया बताया तो उन्होंने कहा- "यह तो बहुत हुआ है इन्द्र बहरहाल, वे लोग जैसे भी थे दीपक के भाई-बाप फौरन दीपक के पास शोक के लिए जाना चाहिये। फिर मरने वाले भी तो कुछ थे।"

"जी अंकल।" इन्द्र खुद सोच ही रहा था- "मैं रेखा के साथ वहां जा रहा हूं आप भी वहां पहुंच जाएं।"

और फिर!

जव इन्द्रजीत, रेखा के साथ दीपक के बंगले पर पहुंचा तो दीपक उसे देखते ही बेअख्तयार उससे लिपट गया और रोने लगा। इन्द्रजीत ने उसे अपनी वाहों में भींच लिया और फिर धीरे-धीरे उसका कंधा थपथपाता रहा...बोला कुछ नहीं।

comicsmylife.blogspot.in

कुछ देर बाद दीपक उससे अलग हुआ और अपनी आंसू भरी आंखे पोछ बोला-

"यह मत समझना कि मैं अपने वाप-भाई की मौत पर आंसू बहा रहा हूं मुझे तो इस बात पर रोना आ रहा है कि मैं एक शैतान बाप का और जालिम भाई का भाई हूं। इस कलंक के टीके को मैं अपने माथे से मिटाना चाहूं भी तो नहीं मिटा सकता...।" "दीपक...मत करो ऐसी वातें। मैंने अपने बाप के कातिल को माफ किया। मैंने अपने कल की साजिश करने वाले को भी माफ किया। क्यों रेखा, तुम क्या कहती हो?"

"मैं भी वही कहती हू जो आपने कहा।" रेखा धीमे से वोली। "आओ दीपक! चलें। हमें वहां जाना चाहिये।" यूं सावनपुर जाने का प्रोग्राम बन गया।

जव वे सावनपुर पहुंचे तो सुवह हो रही थी। गाड़ी इन्द्रजीत ड्राइव कर रहा था। दीपक उसके साथ अगली सीट पर बैठा था और पिछली सीट पर अंकल बलदेव के साथ रेखा बैठी थी। तीन-धार उन्हों का यह सफर लगभग खामोशी में कटा था।

हर व्यक्ति अपनी जगह सोचों में गुम था।

दीपक की सोचें कुछ ज्यादा ही संजीदा थीं। उसे अंदाजा नहीं था कि अब उसके जिन्दा बचे भाई सूरज का रवैया उसके प्रति कैसा होगा?

जब वे सावनपुर पहुंचे तो सूरज पूर्वांचल से अपना सिर उभार रहा था। सावनपुर में यह एक नया सवेरा था। नया सूरज था-जिसकी नर्म किरणें हवेली के ऊंचे दरवाजे को रोशन कर रही थीं। जुल्म का अंधेरा दूर हो रहा था। यह एक नई चमकती सुबह की शुरुआत थी।

हवेली के दो 'काले सूरज' अस्त हो चुके थे। एक सूरज रह गया था। उसके बारे में भी एक बुरी खबर हथेली में उनकी प्रतीक्षक थी।

हवेली का आखिरी 'काला सूरज'-जिसका नाम ही सूरज था-भी चल बसा था।

हुआ यह था कि सूरज जब विजय की गोलियों से छलनी करने के बाद सूमो में बैठा तो वह बेशुमार उल्लूओं की तवज्जो का केन्द्र बन गया था। फिर उसके देखते-ही-देखते उसके बाप रमाकांत की लाश के टुकड़े विशालकाय उल्लू-ले उड़े, वहां पड़ी विजय की लाश का चेहरा उक्को ने नोच-खसोंटकर सत-विक्षप्त कर डाला और अब खुद सूरज के लिए मैदान साफ था। वह अन्दर से बहुत खुश था। अब उसे एक नेता बनने से कोई नहीं रोक सकता था। वह सूमो पर निकल लिया था। वह खुशी-खुशी हवेली की तरफ चला, पर अभी वह ज्यादा दूर नहीं पहुचा था कि अचानक उसे फुफकार की आवाज सुनाई दी। उसके बराबर वाली सीट पर एक बेहद खतरनाक-चमकीला काल नाग कुण्डली मारे बैठा था। यह सांप अचानक ही कहीं से प्रगट हुआ था और फिर उस नाग ने सूरज को सम्भलने का मौका नहीं दिया। सांप अविश्वसनीय तेजी से सूरज की तरफ उछला और उसने सूरज की गर्दन में दांत गाड़ दिए।

फिर चलती गाड़ी खुद ही रुक गई और क्यों न रुकती-खुद सूरज की जिन्दगी की गाड़ी जो तबाह हो चुकी थी।

सूरज के दुःखद अंत की यह कहानी उन्हें सावनपुर पहुंचकर ही सुनने को मिली थी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

वक्त ने एक नई करवट ली थी।

यह एक नए दौर की शुरुआत थी। जुल्म के बादल, इन्साफ की हवाएं ले उड़ी। अन्धेरे छंट गए। हर तरफ खुशबू भारी हवाएं चलने लगी। बाहर का मौसम अंगड़ाई लेकर उठ बैठा। हर तरफ हुस्न-हीं-हुस्न बिखरा था।

अब कोई रुकावट न रही थी। अब तो खुशियां लुटाने व समेटने के दिन थे। एक समस्या थी और वह समस्या गंगा मौसी और अंकल बलदेव की शादी की थी। रेखा की उन्हें एक साथ देखने की बड़ी ख्याहिश थी। उसने तय कर लिया था कि चाहे कुछ हो जाये, वह उन दोनों को प्रणय सूत्र में बांधकर रहेगी और यह रेखा की कोशिशों का नतीजा था कि वे अंतत: एक होने पर राजी हो गये थे।

रेखा चाहती थी कि उनकी शादी धूमधाम से हो, लेकिन इसके लिए न गंगा मौसी राजी थी और न ही अकल बलदेव। वह चाहते थे कि अब चुपचाप किसी मन्दिर में फेरे ले लें और यूं यह शादी भी अंकल बलदेव रेखा व इन्द्रजीत की शादी के बाद करना चाहते थें। इधर इन्द्रजीत की यह इच्छा थी कि वह अपनी शादी से पहले रेखा को विदा करे और रेखा चाहती थी कि पहले वह भाभी घर में लाए-फिर वह घर से जाये।

बहस ने जन्म लिया और इन्हीं मुद्दों पर बहस होती रही। फिर अन्तत: इन समस्याओं का हल यूं निकला कि 'पहले आप-पहले आप' की बजाय-'हम सब एक साथ' पर अमल किया जाए।

सो एक बड़े होटल में शादी का हॉल बुक करवा लिया गया। इसके साथ हो तीन 'डबल बेड' रूम भी रिजर्व करवा लिये गए थे। ये तीनों कमरे बराबर-बराबर थे और पूरे दस दिन के लिए बुक किए गए थे।

शादी समारोह में-खास अतिथि आमत्रित थे। स्टेज पर तीन दुल्हे और तीन दुल्हनें थीं। सबसे दिलचस्प जोड़ी गंगा मौसी और अंकल की थी। गंगा मौसी को पार्लर वालों ने बड़े सलीके से संवारा था। इस उम्र में भी चेहरे पर दुल्हनों वाला रूप आ गया था। वह बहुत प्यारी लग रही थी।नयना और रेखा तो खैर थीं ही सुन्दर, लेकिन मेकअप ने नयना की उम्र कुछ और ही घटा दी थी। इन तीनों में सबसे कम उम्र दुल्हन रेखा थी। हल्के से मेकअप से ही उसका चांद-सा चेहरा और भी खिल उठा था।

तीनों दुल्हनें एक-सी साड़ियों मे थीं। यही हालत दुल्हो की थी। उनके सूट भी एक रंग के थे। जिस तरह दुल्हनों में रेखा नम्बर वन थी-वैसे ही मुस्कराते चेहरे वाला प्रेम सागर दूल्हों में नम्बर बन था।

अतत: सामूहिक शादियों का यह महकता समारोह सम्पन्न हुआ। विदाई का वक्त आया।

सबसे पहले इन्द्रजीत ने अपनी बहन को विदा किया। फिर अंकल ने इन्द्रजीत व नयना को आशीर्वाद दे रुख्सत किया। रह गये गंगा मौसी और अंकल बलदेव-उन्हें दीपक उनके कमरे तक छोड़कर आया।

इस महकते समारोह में सबसे ज्यादा भाग-दौड़ दीपक को ही करनी पड़ी थी और उसकी खुशी व कार्य-कुशलता सचमुच ही देखने वाली थी।

यह एक बेहद ही हसीन रात थी और क्यों न होती यह छ: दिलों के मिलाप की रात थी। धीमी आच देती हुई सरगोशिया, सांसों की महक, मुस्कराहटें, नीची निगाहों का नशा, खनकती चूड़ियां, खिलती हुई झुके, खुशबू भरे बदन, सनसनी फैलाती हुई ख्याहिशें, निखरते हुए अरमान, तपती भावनाएं...क्या नहीं था वहां।

यह एक बेहद हसीन महकर्ता-महकाती रात थी।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

पर यह रात तात्रिक राजू मदारी की बेटी कटारी पर कयामत बनकर।बड़ी बेचैन थी वह और इस बेचैनी से बेचैन वह आखिरकार अपनी झोपड़ी से बाहर निकली। उस पर वहशत व्याप्त थी। यूं महसूस होता था जैसे कोई उसका गला दबा रहा हो। धड़कनें बन्द हुई जा रही थीं। इस वहशत में उसने अपने रीछ को खोल लिया। बन्दर निकट ही सो रहा था। वह कटारी को करीब पाकर फौरन उठ गया और 'कौ-कौ' करके कलाबाजियां खाने लगा।

कटारी ने उसकी भी रस्सी खोल ली ओर फिर उन दोनों से बोली-

"चलो, मेरे साथ।"

खट्र-पटर की आवाज सुनकर पड़ोस की झोपड़ी में रहने वाली शायमा की आंख खुल गई। वह इतनी रात गए कटारी को अपने जानवरों के साथ निकलते देखकर हैरान रह गई। वह फौरन बाहर आ गई।

"अरे कटारी! इतनी रात में कहां जा रही हो?" उसने-कारी से पूछा।

"कहीं नहीं, मौसी! तू सो जा।" कटारी ने रूखे लहजे में जवाब दिया।

"अरी, फिर भी कुछ बता तो...।" शायमा मौसी चिन्तित हो उठी।

"क्या बताऊं मौसी? मैं रखुद ही नहीं जानती।" कटारी

असहाय-सी बोली। उस पर न क्या बीत रही थी।

"तू पागल हुई है क्या?" मौसी उसे घूरने लगी।

"हा मौसी! पागल ही हो गई। मैं जा रही हूं मौसी। मुझे अब मत ढूंढना। मै किसी के के ढूढे मिलूंगी।" कटारी के स्वर में कम्पन था। यह कहते हुए उसका गला रुध गया था।

फिर वह रुकी नहीं। अपने रीछ और बन्दर के साथ निकल पड़ी। नहीं जानती थी कि उसे कहा जाना है? बस, कदम उठ रहे थे और वह चल रही थी।

जाने वह कब तक चलती रही। उसे होश नहीं था। दिल में जुनून व्याप्त था और यह विक्षिप्तता उसे ले जा रही थी। वह अपनी बस्ती से बहुत दूर निकल आई थी और अब रेल की पटरी के साथ-साथ चली जा रही थी।

उसकी निगाहों में इन्द्रजीत घूम रहा था। उसके साथ बीते दिन, उसकी आंखों के सामने सजीव हो रहे थे और उसका जेहन अपने आपसे और अपने इर्द-गिर्द से बेगाना होता जा रहा था। वह नहीं जानती थी कि वह कहां चल रही है...क्यों चल रही है? और वह ट्रेन अचानक ही उसके सिर पर आ पहुंची थी। कटारी पटरियों के बीच चल रही थी। उसके साथ रीछ था और रीछ की पीठ पर बन्दर बैठा हुआ था। इससे पहले कि कटारी को कुछ होश आता-पूरी ट्रेन ही धड़-धड़ करती उस पर से गुजर गई।

उन तीनों में से कोई भी जिन्दा न बचा।

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

इस खबर को सबसे पहले दीपक ने देखा था।

हालांकि वह कटारी की सूरत से परिचित नहीं था-लेकिन अखबार में छपी उसकी फोटो देखकर और उसका नाम पढ़कर-उसे जाने क्यों यह महसूस हुआ कि यह इन्द्रजीत वाली ही कटारी है। ट्रेन के हादसे ने उसे दो हिस्सों में काट डाला था। उसका चेहरा बिल्कुल साफ था। कोई घाव तक न आया था। उसकी खूबसूरत आखें पूरी तरह हुई थीं। हादसे के बावजूद, चेहरे पर किसी प्रकार की पीड़ा भाव नहीं थे। हां, आखों से प्रतीक्षा की पीड़ा जरूर झलकती थी। इस ट्रेन एक्सीडेंट में उसके साथ ही उसके दोनों वफादार जानवर भी चल बसे थे।

खबर पढ़ने के बाद दीपक ने चाहा कि वह फोन पर इन्द्रजीत को हादसे की खबर दे दे, लेकिन फिर वह रुक गया कि खामखाह क्यों हनीमून मनाते जोड़े को डिस्टर्ब करे। उसने उस अखबार को सम्भालकर रख लिया।

तीसरे दिन दीपक ने उन तीनों- की दावत की। जब रात को सबने खाना इत्यादि खाना खा लिया और गप्पें शुरू हुई तो दीपक को ख्याल आया और.." वो अखबार निकाल लाया। इन्द्रजीत के पास बेठकर उसने उसे वह तस्वीर दिखाई।

"जरा इसे देखना।"

इन्द्रजीत ने उसके हाथ से अखबार लेकर जैसे ही उस तस्वीर पर नजर डाली...उसके दिल की धड़कनें तेज हो गई और उसके मुंह से निकला-

"अरे, यह तो कटारी है।"

कटारी का नाम सुनकर नयना एकदम चौंकी। वह फौरन उठाकर इन्द्र के पास आ गई।

रेखा प्रेम सागर के पास बैठी थी। उसने वहीं से पूछा- 'क्या हुआ कटारी को।"

"वह रेल के नीचे आकर कट गई।" दीपक ने बताया। "चलो, अच्छा हुआ, वरना वह मेरे हाथों मारी जाती।" वह नफरत से बोली।

"उसकी इस टिप्पणी पर इन्द्रजीत ने उसे घूरकर देखा लेकिन बोली कुछ नहीं।

"साले साहब! वह शादी वाली रात ही मरी है। वाह, क्या सिज्यूशेन थी। एक तरफ हीरो अपनी सुहाग-भैय्या पर अपनी नइ जिन्दगी की शुरुआत कर रहा था, तो दूसरी तरफ अन्धेरी रात में रेल की पटरी पर एक ठुकराई हुई औरत अपनी मौत की आगोश में जा रही थी। वाह! वाह! क्या सिजूऐशन है। कट इधर...कट उधर, एक तरफ रोशनी...एक तरफ अन्धेरा...।"

प्रेम सागर अपनी धुन में जैसे फिल्म की शूटिंग किए जा रहा था। फिर वह एकाएक संजीदा होकर वोला-" मतलब है कि यह कितनी अजीब बात है इन्द्र कि उसकी मौत का वक्त वही है जो तुम्हारी शादी का है। क्या वह तुम्हारी शादी बर्दाशत नहीं कर सकी, लेकिन दिलचस्प सवाल यह है कि उसे तुम्हारी शादी का पता कैसे चला? फिर अपने तौर पर तो वह तुम्हें कल्ल कर चली थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि अपने बाप का बदला लेने के लिए उसने तुम पर हमला जरूर किया-लेकिन कातिलाना नहीं। वह यकीनन जानती थी कि तुम बच जाओगे।"

प्रेम सागर जाने क्या-क्या कहता रहा, लेकिन इन्द्रजीत उसकी बात कहां सुन पा रहा था। वह तो अखबार में छपी कटारी की तस्वीर में ही खोया हुआ था और उसके चेहरे पर धीरे-धीरे उदासी की मलीनता उभरती आ रही थी।

फिर ऐसी ही उदासी की मार रेखा पर भी पड़ी।

होटल में खुशियों के दस दिन गुजारने के बाद-प्रेम सागर ने अपने बंगले, इन्द्रजीत ने मॉडल टाउन और अंकल बलदेव ने शक्ति नगर का रुख किया। तीनों अपनी-अपनी दुल्हनों को अपने-अपने घर ले गये।

ये दस दिन तो जैसे पलक झपकते ही बीत गए थे।

बारहवें दिन इन्द्रजीत ने सबको अपने घर पर आमंत्रित किया। रेखा घर पहुंचते ही सीधी अपने कमरे में गई। उसका

comicsmylife.blogspot.in

बेडरूम लीक्ड था। रामू ने दरवाजा खोला। रेखा अन्दर आई व दरवाजा बन्द कर लिया। उसके कमरे में एक अजीब-सी उदासी फैली हुई थी-जैसे कमरे की हर शै उसकी याद में उदास हो।

पर्स बेड पर फेंककर उसने सबसे पहले उस नाजुक से फूलदान की तरफ ध्यान दिया-जिसमें मायावी लोक की दी हुई गुलाब की कली सजी रहती थी। जो एक मुद्दत से तरो-ताजा थी और खुशबू बिखेरती रहती थी, लेकिन अब जो उसने उस पर नजर डाली तो वह काली फूलदान पर लटकी हुई नजर आई। कली मुरझा चुकी थी। उसकी खुशबू भी खत्म हो चुकी थी।

रासमीन ने रेखा को वह कली देते हुए कहा था कि जब यह कली मुरझा जाएगी तो समझ लेना कि वह इस दुनिया में नहीं रहा। "ओह !" रेखा के दिल से एक ट्रक-सी उठी। यह क्या हो गया, वो क्यों भर गया? कली को देखकर अंदाजा होता था जैसे उसे मुरझाये हुए दस-बारह दिन हो चुके हों।

"ओह !" तो क्या रासमोन भी रेखा को किसी और की बनती देखकर बर्दाश्त न कर सका। अजीब स्थिति थी। अविश्वसनीय, लेकिन सत्य।

"रासमान मुझे माफ कर देना।" रेखा ने उस सूखी कली को गुलदान से निकालकर अपने कोमल होंठ उस पर रख दिये। उसने अपनी आखें बन्द कर लीं।

दो आसू उसकी आंखों से निकलकर उसके गालों पर बह आए।

उसने वह सूखी कली अपने पर्स में डाल ली। तभी अचानक उसकी नजरें फूलदान पर पड़ीं। फूलदान के नीचे एक कागज दबा हुआ नजर आया।

उसने वह कागज उठा लिया उसे खोलकर देखा तो उस पर कुछ लिखा हुआ नजर आया। कुछ पक्तियां थीं। वह उन्हें पड़ती चली गई।

"मंगनी वाली रात जब दीपक के साथ ही प्रेम सागर का भी अपरहण हो गया तो वह रात तुम पर कयामत की तरह टूटी। उस रात तुमने मुझे रोक याद किया। क्या जानती हो कि मैं तुम्हें दुःख में नहीं देख सकता। मैं तुम्हारी मदद को पहुच गया। मैंने तुम्हारी जिन्दगी के कांटे अपनी आंखों से चुन लिये। दुश्मनों को चुन-चुनकर मार दिया। अब तुम्हारी तुम्हारे भाई की जिन्दगी में कोई दुश्मन नहीं। मेरी शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं। सदा खुश रहो...यही दुआ कर सकता हू। तुम्हारा अपना काला चिराग।

पत्र पढ़ते-पढ़ते वे शब्द धुँधताने लगे और फिर देखते-ही-देखते उस कागज पर से लुप्त हो गया। कोरा कागज रह गया। रेखा ने भावावेश में उस कागज को अपनी मुट्ठी में भींच लिया। उसके कांपते होंठों से निकला- "आप बहुत महान् हैं, काले चिराग! मेरी जिन्दगी की तमाम खुशियां आपके दम से हैं। आप मेरे मोहसिन हैं। मैं आपको प्रणाम करती हूं। मेरे दिल में आप किसी रोशन चिराग की तरह हमेशा जगमगाते रहेंगे।"

❑❑❑

❑❑❑

comicsmylife.blogspot.in

सावनपुर का सरबछ अब दीपक के हाथ में आ गया था। और दीपक ने साथ पूरा-पूरा इंसाफ किया था। उसने अपने भाइयों विजय व सूरज की बीवियों व बच्चों को जो उनका हक बनता था-वह तो दिया ही-उसके अलावा भी उसने उन्हें बहुत कुछ बख्श दिया।

इन्द्रजीत को सावनपुर और देहाती जिन्दगी व ग्रामीण वातावरण से दिली लगाव था। वह सावनपुर की अपनी पुश्तैनी हवेली को नये सिरे से बनाने के ख्वाब देखा करता था। आज उसका यह ख्वाब पूरा हो गया था। उसने यह हवेली खरीद ली थी। इस हवेली में जिसका जितना हिस्सा बनता था-वह इन्द्रजीत ने अदा कर दिया था।

जमींदारी के जुल्मों की प्रतीक इस हवेली को तोड़ा जा रहा था।

हवेली के खात्मे के साथ ही तो जमींदार रमाकांत के इल्मों की दास्तानें भुलाई जा सकती थीं। रमाकांत को अपने जुल्मों का हिसाब देना पड़ा था। उसके पार्थिव शरीर को तो चिंता की आग भी नसीब नहीं हो सकी थी।

पर मरने के बाद भी जैसे उस दुष्टात्मा को दूसरों की खुशियां बर्दाश्त नहीं थीं।

जिस ठेकेदार को हवेली तोड़ने का काम दिया गया था-उसके लिए यह काम जारी रखना मुश्किल हो रहा था। यह भूतहा वाकया जैसे-जैसे बार-बार सामने आ रहा था-त्यों-त्यों मजदूर भागते जा रहे थे।

पहले ठेकेदार को भी इस अनहोनी पर विश्वास न था, लेकिन जब उसने अपनी आखों से वह सब कुछ देखा...तो उसे भी मजदूरों की बात का यकीन करना पड़ा और अब इसके सिवाय कोई चारा नहीं था कि वह दिल्ली जाए और इन्द्रजीत को सारी सूरतें-हाल बता दे, क्योंकि इस भयावह मंजर की दहशत से एक कमजोर दिल मजदूर बुखार का शिकार होकर चल बसा था।

और मजदूरों की दहशत बेवजह भी न थी।

हो यह रहा था कि जैसे ही हवेली का कोई नया कमरा तोड़ा जाता तो उसे कमरे में जमींदार रमाकांत की वह ऊंची कुर्सी मौजूद होती, जिस पर बैठकर वो इन्सान नहीं रहता था और इस कुर्सी पर एक भयानक खोपड़ी रखी होती थी। यह देख जब दरवाजा खोलने वाले मजदूर खौफ के मारे भागकर हवेली में काम करते हुए दूसरे

मजदूरों इकट्ठा करते, उन्हें उस कमरे में लाते तो वह कुर्सी

खोपड़ी गायब हो जाती।

ठेकेदार ने जब इस प्रेत लीला की दास्तान इन्द्रजीत को

तो वह फौरन ही सावनपुर जाने के लिये तैयार हो गया और

के साथ चल दिया।

सावनपुर के निकट उन्हें बारिश ने आ घेरा। तेज हवा व मूसलाधार वारिश सावनपुर की कच्ची सड़क। इन्द्रजीत बड़ी सम्भालकर जीप चला रहा था। ठेकेदार उसके बराबर वाली सीट पर बैठा था।

एक- घन्टे पहले तक मौसम अच्छा-खास खुशगवार था। बस जैसे-जैसे वे सावनपुर के करीब पहुचते गए-काली घटाओं ने दोपहर के चमकते सूरज अपनी में ले लिया। दिन होते हुए भी

चारों तरफ अंधेरा छा गया। इतना अन्धेरा कि इन्द्रजीत को जीप कीर हैड लाइट्स आन करनी पड़ी।

यूं अचानक बदले इस में वे थोड़ा-सा ही आगे बड़े थे कि उन्हें हैड लाइट्स की रोशनी उस कच्ची सड़क के बीचो-बीच एक श्वेत वस्त्रधारी बुजुर्ग दिखाई दिये जो अपने दोनों हाथ फैलाये खड़े थे।

इन्द्रजीत ने फौरन गाड़ी रोक ली व बन्द जीप की खिड़की का शीशा उतारकर पूछा-

"क्या बात है बाबा?"

comicsmylife.blogspot.in

"कोई बात नहीं है बेटा! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था कि तुम आ जाओ तो तुम्हारे साथ सावनपुर चलूं।"

इन्द्रजीत इन बुजुर्ग का मंतव्य नहीं समझ सका, फिर भी उसने पिछला दरवाजा खोल दिया और बोला- "आ जाइये।"

वह बुजुर्ग बड़े इत्मीनान से गाड़ी में बैठ गए। गाडी स्टार्ट करने से पहले इन्द्रजीत ने गर्दन मु ाकर इन बुजुर्ग पर नजर डाली। और उसके आश्चर्य सीमा न रही-जब उसने देखा कि बारिश में खड़े होने के बावजूद उनके कपड़े बिल्कुल सूखे थे। इन्द्रजीत ने उनका चेहरा गौर से देखने के लिए बैक-व्यू-मिरर का कोण ठीक किया। वह एक उम्रदराज बुजुर्ग थे। सफेद लिबास, सिर पर सफेद टोपी-भौंहें तक सफेद, लेकिन चेहरे पर सुर्खी...एक दिव्य-सी आभा। उनके बैठते ही जीप में एक मुग्ध कर देने वाली खुशबू फैल गई थी।

"बेटा, अब मुझे देखते ही रहोगे या गाड़ी भी आगे बढ़ाओगे। तुम उस शैतान के बच्चे को नहीं जानते। आज उसने रक्तपात करने का फैसला कर रखा है।" बड़े ठण्डे स्वर में बड़ी अजीब-सी बात कर दी थी।

इन्द्रजीत ने घबराकर गाड़ी स्टार्ट की और घबराकर पूछा- "आप किसकी बात कर रहे हैं?"

"उस खोपड़ी वाले की जो मरने के बाद भी कुर्सी छोड़ने को तैयार नहीं। मेरी बात समझ गए हो या उस शैतान की औलाद का नाम भी लूं।" बुजुर्ग ने आगे को झुकते हुए जवाब दिया था। अब कुछ कहने-सुनने की जरूरत कहां रही थी? अब तो इन्द्रजीत जल्द-से-जल्द हवेली जाना चाहता था। हवेली पहुंचते-पहुंचते बारिश बन्द हो थी। बादल फट गए थे और सूरज फिर से निकल आया था।

उन बुजुर्ग ने इन्द्रजीत को रमाकांत के बेडरूम की तरफ चलने को कहा।

रमाकांत का बेडरूम तोड़ा जा चुका था। अलबत्ता उसकी बाकी थीं। इन्द्रजीत ने उन को बैडरूम के पास -फिर उसने जल्दी-जल्दी उन के आदेशानुसार सूखी लकड़ियों के ढेरों से उस कमरे को भरवा दिया।

वह बुजुर्ग लकड़ियों के ढेर से थोड़े फासले पर एक पत्थर पर बैठ गये।

उनके होंठ हिले और वह कुछ पढ़ने लगे। फिर उन्होंने पढ़ते-पढ़ते इन्द्रजीत को इशारा किया। इन लकड़ियों पर मिट्टी का तेल छिड़का जा चुका था। इशारा पाते ही इन्द्रजीत ने लकड़ियों के ढेर को आग लगा दी।

देखते-हीन्देखते आग के शोले आकाश से बातें करने लगे। हवेली से शोले उठते देखकर सावनपुर के लोग हवेली की तरफ भागे। फिर इन्द्रजीत ने एक अजीब नजारा देखा। उसने एक कुर्सी आग के शोलों पर उतरते देखी। इस पर एक भयानक खोपड़ी रखी हुई थी। देखते-ही-देखते वह शोलों में गिरी और तब एक दिल दहला देने वाली चींख दी।

फिर कुछ बाकी न बचा। न वह कुर्सी रही, न सत्ता रही, न कुर्सी वाला रहा। सब कुछ जलकर भस्म हो गया। इन्द्रजीत फौरन पलटकर उन बुजुर्ग की तरफ भागा,लेकिन ठिठक गया। वहां कुछ नहीं था। वह पत्थर खाली पड़ा था-जिस पर वह बुजुर्ग बैठे। इन्द्रजीत इन तिलस्मी शक्तियों के चक्रव्यूह से निकलकर आया था। पुण्य-आत्माओं व दुष्टात्माओ के चमत्कारों से वाकिफ था। साफ था, कोई पुण्यात्मा जो रमाकांत की दुष्टात्मा से हवेली को मुक्त कराने को उसके साथ चली आई थी।

पर वह बुजुर्ग थे कौन? उनसे यह पूछने की हसरत इन्द्रजीत के दिल में ही रह गई थी।

बाद में...।

दिल्ली ' जब इन्द्रजीत ने पूरी घटना रेखा और प्रेम सागर को तो, रेखा ने उन का हुलिया पूछा।

ने उनका हुलिया सहित बताया।

और उन का हुलिया सुनते ही रेखा खुशी से चींखी- "अरे, वह दादा हरिओम थे, भैय्या।"

भूत-प्रेतों के चककर में फंसे इन्द्रजीत और रेखा की कदम-कदम पर मदद करने वाले दादा हरिओम की पुण्यात्मा ने आखिर उन्हें हवेली के प्रेत से मुक्ति दिला दी थी।

comicsmylife.blogspot.in

लंगड़ा प्रेत

समाप्त

comicsmylife.blogspot.in